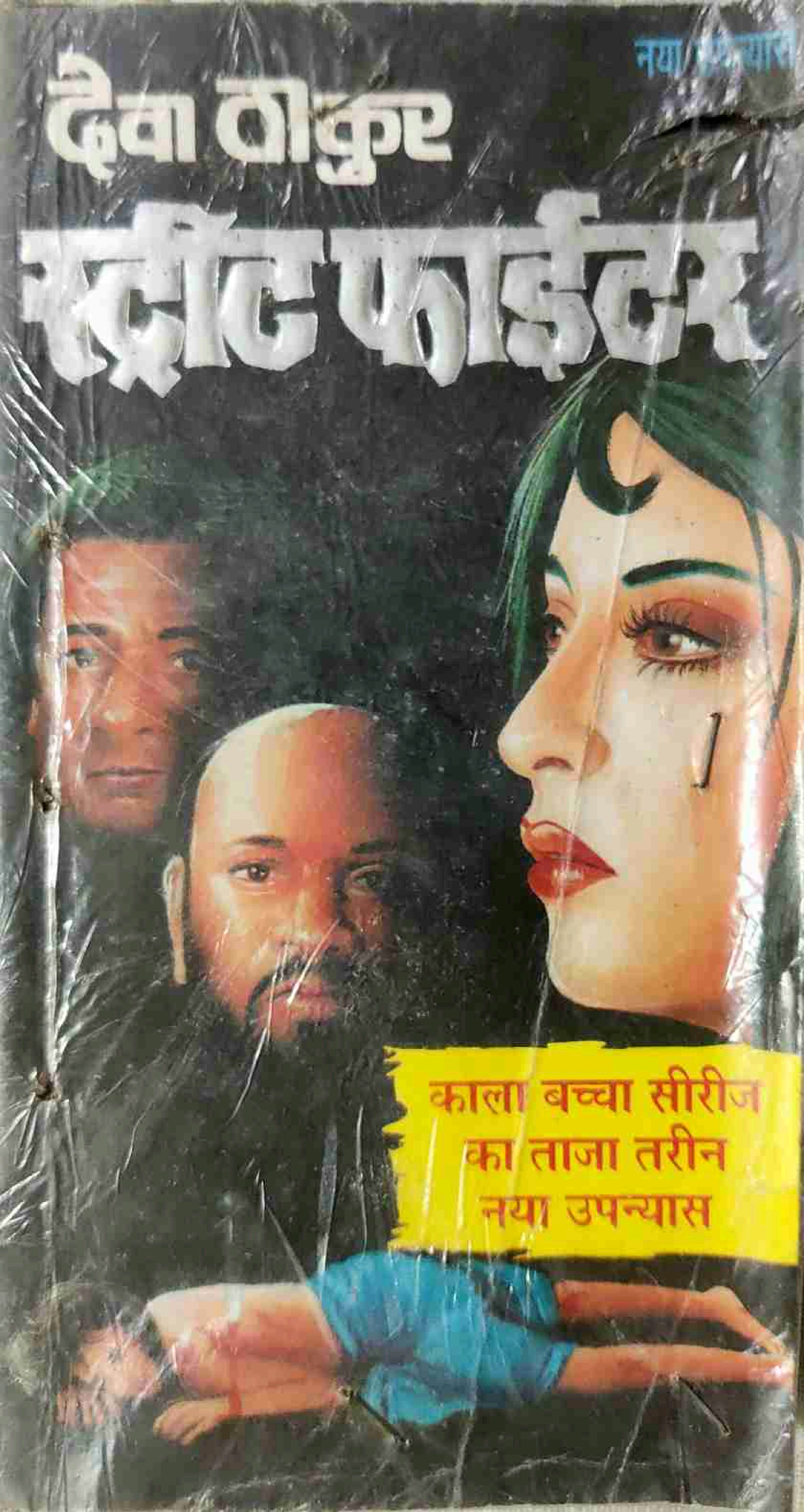
नया
टैक्स ठाकुर
स्ट्रीट फाईटर
काला बच्चा सीरीज
का ताजा तरीन
नया उपन्यास

PUSTAK SANGRAHALAYA

FOR COMICS, NOVELS AND BOOKS REQUEST

join @comics4nostalgia @pustaksangrahalaya

दास्तान शुरू होती है सिंगापुर से—एक बहुत बड़े गिरोह को तलाश है एक बच्चे की—बच्चा भी वह जिसका नाम ही काला बच्चा है। काला बच्चा मौत से बचता हुआ सिंगापुर से कुवालाम्पुर और फिर कुवालाम्पुर से पहुंचता है बैंकाक।

और यहीं से काला बच्चा मौत की तरफ पलट पड़ता है—मौत पर हमला करने के लिए बैंकाक की सड़कों पर खौफनाक जंग का नाम है 'स्ट्रीट फाइटर'

मुकाबले में एक तरफ है 'काला बच्चा' और दूसरी तरफ तमाम मुजरिमों के ठट्ठ के ठट्ठ हैं।

देवा ठाकुर

एकदम ताजा नवीनतम उपन्यास

स्ट्रीट फाइटर

मनोज पॉकेट बुक्स की एक यादगार सौगात

अब तक प्रकाशित

देवा ठाकुर

के उपन्यास

- शोला (शोला सीरीज)
- गोली (शोला सीरीज)
- ज्वालामुखी (शोला सीरीज)
- कौन जीता कौन हारा (शोला सीरीज)
- पावर हाउस (शोला सीरीज)
- शोला का डंका (शोला सीरीज)
- काला बच्चा (काला बच्चा सीरीज)
- स्ट्रीट फाइटर (काला बच्चा सीरीज)
  (प्रस्तुत उपन्यास)
- शेरों की कछार (काला बच्चा सीरीज)
  (प्रेस में)

काला बच्चा सीरीज

का आगामी नया उपन्यास

शेरों की कछार

शेरों की कछार में काले शेर

(काला बच्चा) का हमला

मायापॉकेटबुक्स

केदार कॉम्पलैक्स, देहली गेट, मेरठ-250 002

काला बच्चा सीरीज
का अद्भुत सुपरफास्ट
नया उपन्यास

स्ट्रीट फाइटर

21/11/201

देवा ठाकुर

New Market

दो पहलवान मुकाबले में आमने-सामने
एक तरफ मौत दूसरी तरफ यमराज

उपन्यास	स्ट्रीट फाइटर
लेखक	देव ठाकुर
कॉपीराइट	प्रकाशकाधीन
प्रकाशक	माया पॉकेट बुक्स आर-10, केदार कॉम्प्लैक्स, देहली गेट मेरठ-250 002 फोन : 530095
लेजर टाइपसैटिंग	*मित्तल कम्प्यूटर्स,* मेरठ-250 002 फोन : 612740
मुद्रक	न्यू रिषभ ऑफसैट, मेरठ।

स्ट्रीट फाइटर उपन्यास देव ठाकुर

मूल्य : पच्चीस रुपये मात्र [25/-]

इस उपन्यास के पात्र, स्थान व घटनाएं सर्वथा काल्पनिक हैं।

स्ट्रीट फाइटर

उस रात मास्टर होचिन काला बच्चा को जिमनाजियम ले आया। काला बच्चा ने पहला कत्ल किया था, वह भी एक जबरदस्त स्ट्रीट फाइटर का। जिमनाजियम में आते ही होचिन ने फोन पर महाराज को परिस्थिति से अवगत करा दिया था। उसके तकरीबन आधे घण्टे बाद मास्टर होचिन काला बच्चा और थाईवांग को लेकर वहां से रवाना हो गया। इस बन्द वैन में उनके साथ तीन आदमी और भी थे। वैन बैंकाक की सीमा से निकलकर नानधाबोरी की तरफ जाने वाली सड़क पर दौड़ने लगी।

शहर से तकरीबन बीस मील निकलने के बाद मास्टर होचिन ने वैन एक कच्ची सड़क पर मोड़ ली। इस सड़क पर पहले तो दोनों तरफ धान के खेत थे और फिर जंगल का सिलसिला शुरू हो गया। जंगल गुंजान होता जा रहा था। तकरीबन पांच मील का फासला और तय करने के बाद वैन एक खुली जगह पर रुक गयी।

काला बच्चा वैन से उतरकर हैरत से चारों तरफ देखने लगा। एक बहुत बड़ा मैदान था, जिसके चारों तरफ गुंजान जंगल था। मैदान के एक तरफ चंद झोंपड़ें बने हुए थे। सिर्फ एक झोंपड़ी में मद्धिम-सी रोशनी नजर आ रही थी। जबकि बाकी झोंपड़े अंधकार में डूबे हुए थे। वैन रुकने के चंद सेकिण्ड बाद ही एक तरफ से गुर्राती हुई आवाज सुनकर काला बच्चा चौंक गया। उस तरफ झाड़ियों में कोई आदमी छुपा हुआ था और गुर्राती आवाज में थाई जुबान में कह रहा था–

"तुम सब लोग मेरी राइफल की जद में हो, अपने हाथ ऊपर उठा लो।"

मास्टर होचिन ने उस तरफ मुड़कर देखा और वह आदमी झाड़ियों से निकलकर दौड़ता हुआ करीब आ गया और मास्टर होचिन के सामने झुक गया।

Pinku Library
New Market, M.

"इस वक्त तुम्हें यहां देखकर हैरत हो रही है मास्टर! यह कौन है?" उस शख्स ने कहते हुए थाईवांग और मेरी तरफ देखा।

"मेहमान हैं।" मास्टर होचिन ने जवाब दिया—"हांगसो को जगाओ, मैं ज्यादा देर यहां नहीं रुकूंगा।"

वह शख्स एक झोंपड़े की तरफ दौड़ गया और फिर चंद मिनट में ही झोंपड़े में सोये हुए सब लोग जाग गये। वहा एक बड़े झोंपड़े में आ गये, जिसके फर्श पर चटाई बिछी हुई थी।

मास्टर होचिन हांग सो को काला बच्चा के बारे में बता रहा था और हांगसो इस तरह बार-बार गर्दन हिला रहा था जैसे सारी बातें उसकी समझ में आ रही हों। वह बार-बार काला बच्चा की तरफ देख भी रहा था।

मास्टर होचिन अपने आदमियों को लेकर सुबह होने से पहले-पहले वापस चला गया। हांगसो उन दोनों को एक छोटे झोंपड़े में ले आया। यहां भी चटाई बिछी हुई थी। उसने थाईवांग से कुछ कहा और बाहर चला गया।

"रात खत्म होने वाली है।" थाईवांग ने चटाई पर बैठते हुए कहा—"सो जाओ, बातें सुबह होंगी।"

मैं भी उससे जरा हटकर चटाई पर लेट गया। तकिए की जगह पत्थर थे, जिन पर पुआल या उसी से मिलती-जुलती किसी पौधे की बहुत बारीक शाखें लिपटी हुई थीं। पूरी रात भागदौड़ में गुजर गयी थी। नींद की तीव्रता से आंखों में जलन-सी हो रही थी लेकिन खुरदुरी चटाई पर देर रात तक उन्हें नींद नहीं आ सकी और जब आंख लगी तो फिर कुछ होश ही नहीं रहा।

काला बच्चा दोपहर तक सोता रहा। थाईवांग उससे पहले जाग गयी थी, लेकिन वह भी झोंपड़े ही में बैठी हुई थी। काला बच्चा उठकर झोंपड़े से बाहर आ गया।

काला बच्चा को सबकुछ अजीब-सा लगा। दस बारह झोंपड़े थे। उनके सामने खुला मैदान, जहां बीस-बाईस आदमी विभिन्न किस्म की एक्सरसाइज में व्यस्त थे। काला बच्चा को यह समझने में देर नहीं लगी कि यह भी एक ट्रेनिंग कैम्प था, जहां भिक्षुओं को मोयेथाई की ट्रेनिंग दी जाती थी।

एक भिक्षु काला बच्चा को देखते ही उस तरफ आ गया। काला बच्चा गंजे सर वाले भिक्षुओं को मर्द ही समझता था, लेकिन जब वह करीब आया तो पता चला कि वह मर्द नहीं औरत थी। उसने पहले काला बच्चा की तरफ देखा फिर झोंपड़े में भागते हुए थाईवांग

से कुछ कहा। थाईवांग भी बाहर आ गयी। वह उस औरत के साथ एक और झोंपड़े में आ गये।

खाने में उन्हें चावलों का वही मसाले वाला दलिया दिया गया, जो वह पहाड़ों वाले पिगोडा में भी खा चुका था।

यह दिन काला बच्चा की आजादी का दिन था। वह इधर-उधर घूमता रहा। झोंपड़ियों के पिछली तरफ तकरीबन तीस गज के फासले पर जंगल में एक नहर भी बह रही थी। जिसका पाट आठ-दस फुट से कम नहीं था। नहर पर एक जगह दरख्त का तना रखा हुआ था, जो पुल का काम दे रहा था।

इस दिन काला बच्चा आजादी से इधर-उधर घूमता रहा। यह जगह यद्यपि बहुत सुरक्षित थी, लेकिन उसने जंगल में तो भिन्न-भिन्न जगहों पर दो ऐसे आदमियों को भी देखा, जो आटोमेटिक रायफलें उठाए हुए थे।

शाम से पहले खाना खाकर कुछ भिक्षु तो अपने-अपने झोंपड़ों में चले गये और कुछ मैदान में एक दायरे की सूरत में बैठकर बातें करने लगे। काला बच्चा थाईवांग के साथ झोंपड़े के सामने बैठा हुआ था कि हांगसो भी आ गया और उनके सामने आलथी-पालथी मारकर बैठ गया।

हांगसो की बातों से अन्दाजा हुआ कि आबादी से दूर इस जंगल में रहते हुए भी वह बहुत बाखबर आदमी था। शहर के हालात की उसे पूरी तरह वाकफियत थी। उसकी बातों से यह सनसनी-खेज रहस्योद्घाटन भी हुआ कि मास्टर फू के कत्ल के बाद अगले रोज महाराज ने शहर में टाइगर के कई ठिकानों पर हमले किए थे और उन हमलों में टाइगर के कम से कम तीन आदमी मारे गये थे। टाइगर और महाराज के आदमियों में बाकायदा जंग छिड़ गयी थी। जिसकी वजह से पूरे शहर में आतंक फैल गया था। आम शहरी खौफजदा थे। दो-तीन दिन के अन्दर-अन्दर शहर के नाइट क्लब वीरान हो गये थे, क्योंकि हर हंगामें की शुरुआत किसी न किसी नाइट क्लब से होती थी। लोगों ने नाइट क्लबों में जाना छोड़ दिया था। शहर का प्रशासन बिल्कुल बेबस होकर रह गया था। पुलिस कमिश्नर दोनों पार्टियों में राजीनामा कराने की कोशिश कर रहा था और महाराज ने मांग की थी कि मास्टर फू के कातिलों को उसके हवाले कर दिया जाए तो वह टाइगर को माफ कर देगा, लेकिन टाइगर उसके लिए तैयार नहीं था।

पिछली रात तुम्हारे हाथों जो आदमी मारे गये थे, जानते हो

वह कौन थे। हांगसो ने काला बच्चा की तरफ देखते हुए कहा फिर जवाब का इंतजार किए बगैर बात जारी रखते हुए बोला—"वह टाइगर के गिरोह के थे। उनमें से शांग टाइगर का खास आदमी था जिसे तुमने मार डाला।" उसने उंगली से काला बच्चा की तरफ इशारा किया—"किसी को भी तुमसे इस काम की आशा नहीं थी। शांग के बारे में कहा जाता है कि वह टाईगर के गिरोह का सबसे खतरनाक आदमी था। महाराज तुम्हारे इस कारनामें से बहुत खुश हैं। शांग की मौत के बाद टाइगर तूफान खड़ा कर देगा। शहर में तुम्हारे लिए खतरे हो सकते हैं, इसलिए तुम्हें यहां भेज दिया गया है ताकि तुम्हारी हिफाजत के साथ-साथ कम से कम वक्त में तुम्हारा प्रशिक्षण पूरा किया जाए और तुम्हारी इन बाहों में फौलाद भर दिया जाए।" उसने काला बच्चा के दोनों बाजू पकड़ कर मसल्स दबाये—"तुम खुशकिस्मत हो कि महाराज तुम पर इस कदर मेहरबान हैं। हम जैसे लोग तो उनके करीब जाने का तसव्वुर भी नहीं कर सकते।"

"यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि पिछली रात दो आदमी हमारे हाथों मारे गये हैं।" काला बच्चा ने सवालिया निगाहों से उसकी तरफ देखा।

"मुझे मास्टर होचिन ने सब कुछ बता दिया था।" हांगसो ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया—"दो मर्तबा तुम्हारी ट्रेनिंग शुरू हो गयी और दोनों मर्तबा अधूरी रह गयी लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। यह हमारा सबसे सुरक्षित कैम्प है, किसी खतरे का अन्देशा नहीं है। कल से मैं खुद तुम्हारी ट्रेनिंग शुरू कर दूंगा। महाराज का हुक्म है कि तीन महीने के अन्दर-अन्दर तुम्हें पूरी तरह तैयार कर दिया जाए।"

"और मुझे क्या करना होगा?" थाईवांग ने पूछा।

"तुम्हें भी हिफाजत के लिए यहां भेजा है।" हांगसो ने जवाब दिया—"अगर चाहो तो तुम भी ट्रेनिंग ले सकती हो। वैसे तुम पर कोई पाबन्दी नहीं है। तुम चाहो तो खाना पकाने में नीशा और चांगी का हाथ बटा सकती हो। अब तुम लोग आराम करो सुबह मुलाकात होगी।

हांगसो चला गया और वह दोनों देर तक वहां बैठे बातें करते रहे। बातों के लिए उनकी जुबानें तो चल ही रही थीं, उनके दोनों हाथ भी निरन्तर हरकत कर रहे थे। मच्छरों की इस कदर बहुतायत थी कि उन्हें मारने के लिए दोनों हाथों को निरंतर हरकत में रखना जरूरी था।

इन मच्छरों की वजह से रात को नींद भी बड़ी मुश्किल से आ

सकी थी। सुबह छः बजे काला बच्चा को जगा दिया गया। यह गनीमत थी कि उसे पहले की तरह भिक्षु जैसा लबादा नहीं पहनाया गया था बल्कि एक निकर दे दी गयी थी और फिर उसकी ट्रेनिंग का नया दौर शुरू हो गया।

यह ट्रेनिंग पहले से ज्यादा सख्त थी और लगता था कि हांगसो वाकई तीन महीने में उसे तैयार कर देगा। जौगिंग, एयरोबक्स, योगा, स्ट्रीचिंग, किकिंग, पंचिंग उसकी शुरुआती ट्रेनिंग का हिस्सा था। यह कोई जिमनाजियम नहीं था, न ही यहां एक्सरसाइज के लिए आधुनिक मशीनें थीं—लेकिन ट्रेनिंग का मैयार किसी तरह भी आधुनिक जिमनाजियम से कम नहीं था। एक्सरसाइज मशीनों का काम जंगल के दरख्तों से लिया जा रहा था—पंचिंग बैडज भी दरख्तों की मोटी शाखों से लटके हुए थे और किकिंग के लिए भी दरख्तों से ही काम लिया जाता था।

एक महीना गुजर गया सुबह से शाम तक की मशक्कत उसे बुरी तरह थका देती थी। रात का खाना खाते ही वह इस तरह सो जाता कि सुबह से पहले उसे कोई होश ही नहीं रहता। मोटे-मोटे मच्छर रात भर उसका खून चूसते रहते, मगर उसे पता ही न चलता।

थाईवांग भी कभी भिक्षुओं के साथ योगा, एयरोबक्स और स्ट्रीचिंग वगैरह में शामिल हो जाती लेकिन उसमें कोई बाकायदगी नहीं थी। उसका ज्यादा वक्त नीशा और चांगी के साथ खाना वगैरह तैयार करने में गुजरता था। खाना वही चावल का दलिया, जो जायकेदार बनाने के लिए विभिन्न तरीकों से तैयार किया जाता था। जिस तरह की वह मशक्कत कर रहे थे, उसके पेशनजर यह खाना बिल्कुल ना काफी था, लेकिन हैरत की बात थी जिस्म का तारतम्य बहाल रखने के लिए चावल का यह दलिया तमाम आवश्यकतायें पूरी कर रहा था। इस दलिए के अलावा रात को सोने से पहले उसे एक गिलास शर्बत भी पीने को दिया जाता था। गाढ़ा-सा यह शर्बत बहुत जायकेदार था और काला बच्चा का ख्याल था कि जड़ी-बूटियों से तैयार किए हुए इस शर्बत में ऐसी कोई बात थी, जो जिस्म का संतुलन बरकरार रखे हुए थी और कदाचित दलिए में जो मसाले डाले जाते थे, उनमें भी ऐसी कोई चीज शामिल जरूरी होती थी।

एक महीने बाद काला बच्चा की ट्रेनिंग का नया पड़ाव शुरू हुआ। रेत का एक बहुत बड़ा ढेर था। हांगसो ने उसे हुक्म दिया कि वह उस ढेर पर उस वक्त तक पंचिंग करता रहे जब तक उसे रुकने को न कहा जाए। काला बच्चा ने बड़ी खुशी से उस ढेर पर

पहला पंच मारा। उसका बाजू कुहनी तक अंदर धंसता चला गया लेकिन इसके साथ ही उसे यों लगा जैसे उसने अपना हाथ दहकती हुई भट्टी में दाखिल कर दिया,हो। रेत बहुत गरम थी। उसने हांगसो की तरफ देखा। उसने मुस्कराते हुए सिर हिला दिया, इसका मतलब था प्रैक्टिस जारी रखी जाए। इंकार की इजाजत नहीं थी। काला बच्चा ने दूसरे हाथ का पंच मारा।

शुरू के दो-चार पंच मारने से उसे उंगलियों की पोरों से लेकर कुहनी तक जलन महसूस हुई। लगता था जैसे खाल झुलस रही हो लेकिन उसके बाद तो गोया उस पर जनून-सा सवार हो गया। वह रेत के ढेर पर पंच मारता रहा। उसका जिस्म पसीने से सराबोर हो रहा था। लगता था जैसे रेत की तपिश उसके पूरे जिस्म में समा रही हो।

दस मिनट बाद हांगसो ने उसे हाथ रोक लेने का हुक्म दिया और फिर वह काला बच्चा के दोनों हाथ और बाजू देखने लगा उसके होठों पर हल्की-सी मुस्कुराहट आ गयी।

काला बच्चा को उस रात नींद नहीं आ सकी। दोनों हाथ और बाजू जैसे सुलग रहे थे। शाम को जब थाईवांग ने उसके हाथ और बाजू देखे तो वो दहल गयी थी।

"क्या यह तुम्हारे साथ जुल्म नहीं हो रहा?" वह काला बच्चा के बाजू सहलाती हुई बोली।

"नहीं।" काला बच्चा ने मुस्कराकर जवाब दिया—"यह तो मेहनत है, अगर मैं मेहनत नहीं करूंगा तो यह फन कैसे सीखूंगा? दुश्मन का मुकाबला कैसे करूंगा? मेरे मां-बाप मेरी आंखों के सामने सिंगापुर में मारे गये, दारा और उसके साथियों ने उन्हें कत्ल किया था—मैं देखता रहा और उन्हें बचा न सका—मैं बुजदिलों की तरह भाग गया, छुप गया और फिर वे लोग मुझे खत्म करने के लिए हमले दर हमले करने लगे। चाचा प्रतापसिंह अपनी जान पर खेलकर मुझे बचाता रहा फिर वह भी मारा गया, वह मुझे बचाने के लिए कुवालाम्पुर लाया, तो वहां भी दारा ने पीछा नहीं छोड़ा फिर बैंकाक में दारा के आदमी पीछे लग गये। मैं बुजदिलों की तरह भागता रहा और मेरी हिफाजत करने वाले मारे जाते रहे, अगर मैं यह फन जानता होता, अगर मैं भी कोई स्ट्रीट फाइटर होता तो मैं उनका मुकाबला करता और यों न उनसे छुपता फिरता।"

"तुम्हारी उम्र उस वक्त बारह साल थी और अब भी कोई ऐसी उम्र नहीं, जो ऐसे लोगों से मुकाबला कर सको।"

"यह न भूलो कि हमने मिलकर दो आदमी तो उनके मार ही

डाले, अब मैं पूरी तैयारी चाहता हूं।"

"ठीक कहते हो।" थाईवांग ने कहा—"कामयाबी मेहनत के बाद ही हांसिल होती है।"

तपती हुई रेत पर उसकी प्रैक्टिस कई रोज तक जारी रही और उसके बाद एक और मरहला आया जो उससे ज्यादा खतरनाक था। अब उसे कांच के टुकड़ों पर पंचिंग करनी थी। शीशे के छोटे-छोटे टुकड़ों का ढेर गरम रेत से ज्यादा कष्टदायक था। हांगसो उसके करीब खड़ा था। उसने काला बच्चा को समझाया कि कांच के इस ढेर पर पंच किस तरह मारा जाए। गलत पंच हाथ को नुकसान पहुंचा सकता है।

मार-धाड़ में ज्यादा अहमियत पंचिंग और किकिंग को दी जाती है, इसलिए इन दोनों चीजों की प्रैक्टिस पर भी ज्यादा जोर दिया जाता। इस प्रैक्टिस से यह बात भी काला बच्चा की समझ में आ रही थी कि किस तरह कम से कम ताकत इस्तेमाल करके प्रतिद्वंद्वी को ज्यादा से ज्यादा नुकसान पहुंचाया जा सकता है।

मोयेथाई के अलावा उसे मार्शल आर्टस के कुछ दूसरे स्टायल्ज के भी कुछ दांवपेंच सिखाये जा रहे थे। हर हफ्ते किसी न किसी भिक्षु के साथ फाइट भी करवाई जाती, जिसमें उसे बताया जाता कि प्रतिद्वंद्वी पर किस तरह हमलावर होना चाहिए और प्रतिद्वंद्वी के हमले से किस तरह बचा जा सकता है। उसे यह भी बताया गया कि इंसानी जिस्म में कितने और कौन-कौन से नाजुक प्वाइंटस होते हैं और किस प्वाईंट पर किस तरह वार करके क्या परिणाम निकाला जा सकता है।

हांगसो ने उसे यह भी समझाया कि अगर खाली हाथ किसी प्रतिद्वंद्वी से आमाना-सामना हो जाए तो वहां किसी भी ऐसी चीज को हथियार या ताकत के सरचश्म के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है जिसे उठाना भी सम्भव न हो। मसलन आस-पास मौजूद कोई दरख्त या दीवार उसे अगर प्रतिद्वंद्वी पर फ्लाईंग किक लगानी है और वह उसे इसका मौका नहीं दे रहा है तो ऐसे मौके पर उसे चाहिए कि वह दौड़ता हुआ दीवार की तरफ जाए और फ्लाईंग किक के अन्दाज से कम से कम चार फुट ऊपर दोनों पैर दीवार से लगाये और दीवार को पूरी कुव्वत के साथ धकेले और पलटकर अपने प्रतिद्वंद्वी पर फ्लाइंग किक लगा दे, इस टैक्नीक से उसके हमला करने की क्षमता दुगनी हो जायेगी और प्रतिद्वंद्वी को ऐसी करारी चोट लगेगी कि उसके लिए उठना मुश्किल रहेगा।

उस रोज वह दिन भर यही प्रैक्टिस करता रहा लेकिन उसे

कोई विशेष सफलता नहीं मिल सकी।

उस रात वह गहरी नींद सो रहा था कि उसे यों लगा जैसे उसे कोई कंधे से पकड़कर जगा रहा हो। उसने बड़बड़ाते हुए करवट बदली लेकिन दूसरे ही लम्हें फिर किसी ने उसे कंधे से पकड़कर हिला दिया। उसने आंखें खोल दीं लेकिन अंधकार में कुछ नजर नहीं आया, अलबत्ता हल्की-हल्की कराहों ने उसे चौंका दिया। उसने अपने कंधे पर रखा हुआ हाथ टटोलकर महसूस कर लिया कि वह थाईवांग थी, जो धीरे-धीरे कराह रही थी।

"क्या हुआ थाई--तुम्हारी तबियत तो ठीक है ना।" उसने मद्धिम स्वर में पूछा।

"मेरी हालत बिगड़ रही है।" वह कांपी-"मैं कई रोज से बर्दाश्त कर रही हूं-लेकिन अब बर्दाश्त करने की शक्ति जवाब देती जा रही है।"

"क्या मतलब?" काला बच्चा ने कहा फिर चौंक गया। थाईवांग ने उसके दोनों बाजू पकड़ लिए और उंगलियां मसल्स में गाड़ने की कोशिश कर रही थी लेकिन मेरी दिन रात की मशक्कत और प्रैक्टिस ने मेरे मसल्स पत्थर की तरह कर दिए थे। थाईवांग की यह कैफियत देखकर उसे अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई कि उसे क्या तकलीफ थी, उसने लगभग डेढ़ महीने पहले उसकी पीठ पर हंटर बरसाये थे। उसे पन्द्रह सोलह दिन बाद पिटाई की जरूरत पड़ती थी और काला बच्चा को हैरानी थी कि वह डेढ़ महीने तक कैसे खामोश रही थी। शायद सूरतेहाल को देखते हुए वह बर्दाश्त करती रही थी और अब कदाचित उसकी बर्दाश्त करने की शक्ति जवाब देती जा रही थी।

"मतलब तुम समझते हो।" थाईवांग ने कहा-"अब मुझसे बर्दाश्त नहीं होता प्लीज।"

"परिस्थिति को समझने की कोशिश थाई।" काला बच्चा ने सरगोशी की-"सब लोग सो रहे हैं, आवाज सुनकर उठ जायेंगे और हमारे बारे में क्या सोचेंगे? रात गुजर जाने दो किसी तरह। सुबह सबसे पहले तुम्हारा काम करूंगा।"

रात का बाकी हिस्सा किस तरह गुजारा, यह उसका दिल ही जानता था। थाईवांग की वजह से एक लम्हे को भी नहीं सो सका। सुबह पांच बजे से पहले ही वह उठकर झोंपड़े से बाहर आ गये। उस वक्त सन्नाटा था। सब लोग झोंपड़े में सो रहे थे लेकिन काला बच्चा जानता था कि इस कैम्प की निगरानी करने वाले कहीं न कहीं

मौजूद होंगे।

थाईवांग की हालत वाकई काबिले-रहम थी। काला बच्चा ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे खींचता हुआ झोंपड़ों के पीछे नहर की तरफ ले आया। नहर के करीब पहुंचकर उसने एक वृक्ष की झुकी हुई शाख तोड़ ली। थाईवांग घुटनों के बल झुककर बैठ गयी और काला बच्चा उसकी पीठ पर छड़ी से प्रहार करने लगा। वह पहले तो कराहती रही फिर उसके मुंह से सिसकारियां निकलने लगीं।

वह जमीन पर औंधा गयी। काला बच्चा ने छड़ी एक तरफ फेंक दी और थाईवांग के करीब झुककर देखने लगा। छड़ी के कुछ वार उसके कंधे पर भी पड़े थे, जिससे कंधे पर सुर्ख धारियां बन गयी थीं।

"तुम ठीक तो हो थाई।" उसने हौले से पूछा।

"हां...म...मैं ठीक हूं।" वह कराही। उसकी हालत उस शराबी जैसी थी, जो नशे में धुत्त हो रहा हो—"तुमने यद्यपि हल्की चोटें मारी हैं, मगर तुम्हारे बाजुओं में बड़ी ताकत आ गयी है। तुम जाओ, मैं आ जाऊंगी।"

मगर उसने वापस जाने की बजाए नहर में छलांग लगा दी। तकरीबन सारे ही भिक्षु सुबह या शाम इस नहर में नहाया करते थे। आज वह सबसे पहले आ गया था। नहर ज्यादा गहरी नहीं थी। पिछले चंद रोज के दौरान इस नहर में उसे तैरना भी सिखाया गया था। वह नहाते हुए बार-बार थाईवांग की तरफ देख रहा था। वह किनारे पर बेसुध पड़ी हुई थी।

इस दौरान में दो भिक्षु नहर की तरफ आते हुए नजर आये। वह दोनों संदिग्ध नजरों से कभी काला बच्चा को और कभी थाईबांग को देख रहे थे। वह पानी से निकल आया। थाई का हाथ पकड़कर उठाया और उसे सहारा देकर चलता हुआ झोंपड़ी की तरफ आ गया। थाईवांग चटाई पर औंधी लेट गयी। काला बच्चा जानता था वह कई घण्टे इसी तरह पड़ी मार का लुत्फ उठाती रहेगी।

उस रोज हांगसो काला बच्चा को पकड़कर अलग ले गया। काला बच्चा समझ गया कि उसे उन दोनों भिक्षुओं ने कुछ बताया होगा, लेकिन बात कुछ और निकली। उन दोनों भिक्षुओं ने उसे कुछ नहीं बताया था। बल्कि कैम्प की निगरानी करने वाले रक्षक ने उसे थाईबांग की पिटाई करते हुए देख लिया था। हांगसो के पूछने पर उसे सारी बात बतानी पड़ी।

"ओह!" हांगसो के मुंह से गहरा सांस निकल गया—"अब

तुम फिक्र मत करो—मेरे पास इसका इलाज है। वह ठीक हो जायेगी और फिर उसे पिटाई की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

उस रोज उसे एक और करतब सिखाया जाने लगा। काला बच्चा के लिए वह करतब ही था लेकिन वास्तव में यह भी किक का एक स्टायल था। इसका तआल्लुक ताईक्वान्डो से था। इस टैक्नीक में दौड़ते हुए उछलने के साथ कलाबाजी खाते हुए बुलन्दी पर रखी हुई किसी चीज को किक लगाई जाती थी।

इसकी प्रैक्टिस में उसे बारह दिन लगे और तेरहवें दिन वह कैम्प के तमाम लोगों के सामने प्रदर्शन करके दाद वसूल कर रहा था।

एक भिक्षु बिल्कुल सीधा खड़ा था। उसके कंधों पर दूसरा भिक्षु खड़ा हो गया। उसने दस्ते की तरफ से एक खंजर दांतों में दबा रखा था। खंजर की नोक पर एक सेब फंसा हुआ था। काला बच्चा लगभग पन्द्रह फुट दूर से दौड़ता हुआ आया—विशेष निशान पर पहुंचकर उछला और हवा में कलाबाजी खाते हुए किक लगाई और पैर के अंगूठे से खंजर की नोक पर लगे हुए सेब को हवा में उछाल दिया। खंजर अपनी जगह से हिला तक नहीं था। वह भिक्षु भी अपने साथी के कंधे पर उसी तरह खड़ा रहा।

उसके इस कामयाब मुजाहरे पर भिक्षुओं ने उसे कंधों पर उठा लिया। वह कामयाबियों के रास्ते पर बढ़ता रहा। उसकी इस कामयाबी की सबसे बड़ी खुशी थाईवांग को थी, अगर किसी कठिन मरहले पर वह हिम्मत हारने लगता तो वह काला बच्चा की हौंसला अफजाई करती। काला बच्चा को आगे बढ़ाने में उसका बड़ा हाथ था। यह किकिंग भी मार्शल आर्टस की प्रैक्टिस में बड़ी अहमियत रखती है, उसे इसमें भी महारत हासिल हो गयी थी और वह चार-चार इंच की ऊपर-नीचे रखी हुई दो पुख्ता ईंटों को खड़ी हथेली से बड़ी आसानी से तोड़ लेता था। नारियल को तो उंगली से ही छेद करके तोड़ देता था।

रोजाना शाम को उसकी भिड़ंत कराई जाती। कभी एक, कभी दो और कभी तीन-तीन आदमियों से लड़ा दिया जाता। उसकी ट्रेनिंग का मकसद सिर्फ स्पोर्टस मैन की तरह फन सीखना नहीं था बल्कि उसे एक मुकम्मल जंगजू बनाया जा रहा था ताकि वह अपनी जिन्दगी में अपने दुश्मनों का मुकाबला कर सके।

भिड़ंत के दौरान यर्लीग Yelling पर जोर दिया जाता। मार्शल आर्ट्स के तमाम हमलों में यर्लीग पर भी विशेष ध्यान दिया जाता

है। प्रतिद्वंद्वी पर हमलावर होते वक्त हलक फाड़कर चीखने का मकसद न सिर्फ प्रतिद्वंद्वी पर दहशत तारी करना होता है बल्कि इस तरह अपने अन्दर का जज्बा भी उभरता है।

उसकी ट्रेनिंग को तीन महीने हो गये थे। हांगसो उसकी ट्रेनिंग से संतुष्ट था। अब ज्यादा जोर फाइट पर था। उसके मुकाबले रोजाना बाकायदगी से कराये जाते थे और हांगसो उसके इस डिमोंस्ट्रेशन से संतुष्ट था और फिर एक रोज सूचना मिली कि महाराज वांग अगले रोज यहां आ रहा है।

कैम्प में खलबली-सी मच गयी। महाराज कभी यहां नहीं आया था। ट्रेनिंग कैम्पों के मुआयने के लिए हमेशा मास्टर फू ही जाया करता था। मास्टर फू अब नहीं रहा था और शायद यह जिम्मेदारी अब मास्टर होचिन को सौंप दी जाये लेकिन यह सूचना हांगसो के लिए बड़ी सनसनीखेज साबित हुई थी कि महाराज यहां खुद आ रहे हैं और शायद वह उनके आने का मतलब भी समझ गया था।

महाराज दूसरे रोज चार बजे के करीब कैम्प में पहुंचा था। उसके साथ मास्टर होचिन और दो आदमी और थे। हांगसो ने महाराज के स्वागत की तमाम तैयारियां पूरी कर रखी थीं। महाराज के आने के थोड़ी ही देर बाद कैम्प में ट्रेनिंग हासिल करने वालों का डेमोस्ट्रेशन शुरू हो गया।

काला बच्चा की बारी भी आई। उसके फन के मुजाहरे का आगाज काताज से शुरू हुआ और समरसोल्ट पर खत्म हुआ। काताज दरअसल दो भिन्न-भिन्न स्टायल होते हैं, जिन्हें फाइट में बुनियादी हैसियत हासिल होती है इसी से ही करारे फाइटर प्रतिद्वंद्वी पर हमलावर होने की अगली पोजीशन बनाता है।

आखिर में मुकाबले के खेल में आमतौर पर बैल्ट कलर और नियमानुसार बाउट होते हैं लेकिन इस कैम्प में बैल्ट कलर का कोई नियम नहीं था, अलबत्ता ट्रेनिंग के दौरान में फाइट के वक्त वेट का किसी हद तक ख्याल रखा जाता था। मुकाबले होते रहे और उनमें हिस्सा लेने वाले दूसरों से दान हासिल करते रहे। आखिर में काला बच्चा की बारी थी। उसके बाउट में जिस शख्स को उसके मुकाबले पर लाया गया उसे देखकर सब ही चौंक गये थे।

वह थंगचो था। इस कैम्प का सबसे ताकतवर और खतरनाक भिक्षु, उसका कद छः फुट के लगभग था। उम्र बत्तीस के करीब रही होगी। उसका जिस्म यद्यपि दुबला-पतला था लेकिन वह चीते की तरह ताकतवर और फुर्तीला था। ट्रेनिंग के दौरान भी कैम्प के दूसरे

...। आमतौर पर उससे दूर ही रहा करते थे।

नुमाइशी मुकाबले में आमतौर पर हैड केयर इस्तेमाल किए जाते हैं ताकि सिर पर चोट न लगे लेकिन काला बच्चा के बाउट में कुछ भिन्न तरीका इख्तियार किया गया था। उन दोनों को न तो हैडकेयर्स दिए गये थे और न ही बॉक्सिंग ग्लब्स। इससे ज्यादा खतरनाक बात यह थी कि काला बच्चा के प्रतिद्वंद्वी थंगचो के हाथों पर रस्सियां लिपटी हुई थी। बान जैसी खुरदुरी रस्सियों पर छोटी-छोटी गिरहें लगी हुई थीं। मोयेथाई के मुकाबलों में प्रतिद्वंद्वी को ज्यादा से ज्यादा नुकसान पहुंचाने के लिए बड़े अजीबो-गरीब हथकंडे इस्तेमाल किए जाते थे। ग्लब्स में कोई ऐसी सख्त चीज छुपायी जाती जिससे प्रतिद्वंद्वी को ज्यादा चोट लगती लेकिन यह सब कुछ चोरी-छिपे होता था और यहां तो सूरतेहाल ही भिन्न थी। थंगचो ने हाथों में गिरहों वाली जो रस्सियां लपेट रखी थीं, वह सबकी नजरों में थीं जबकि काला बच्चा खाली हाथ था।

काला बच्चा ने महाराज की तरफ देखा। उसकी आंखों में भी उलझन-सी नजर आ रही थी और थाईवांग के चेहरे पर तो खौफ के साये नुमायातौर पर नजर आ रहे थे लेकिन काला बच्चा खौफ़जदा नहीं था। उसे अपने आप पर भरोसा था।

रैफरी का कर्तव्य एक सीनियर को सौंपा गया था। काला बच्चा अपने प्रतिद्वंद्वी के सामने खड़ा था। उन दोनों ने एक दूसरे को बो किया और रैफरी का इशारा मिलते ही मुकाबला शुरू हो गया। थंगचो उसके सामने उछल रहा था। उसने अचानक ही किक लगाने के लिए पैर उठाया, काला बच्चा ने उल्टे हाथ की कलाई से उसकी किक रोकी और बड़ी फुर्ती से उसका पंच रोकने के लिए सीधा हाथ भी उठा लिया। उसने जैसे ही पांव उठाया काला बच्चा समझ गया था कि उसका असली दांव किक नहीं पंच ही होगा, जिसे उसने बड़ी कामयाबी से रोका।

थंगचो दोतरफे हमले कर रहा था और काला बच्चा ज्यादातर डिफेंस ही खेल रहा था, किसी कगार पर आप हमला भी कर देता जिसे थंगचो कामयाबी से रोक लेता। उनका यह मुकाबला पांच राउण्ड का था। पहले दो राउण्ड में वह तीन प्वाईट ले गया। तीसरे राउण्ड में उस पर थकान के आसार जाहिर होने लगे थे और काला बच्चा ने डिफेंस की पालिसी तर्क करके जारहाना अन्दाज इख्तियार कर लिया।

थंगचो ने एक हमला किया तो काला बच्चा ने उसका पंच

माया

कलाई पर रोका और उसके साथ ही उल्टी कलाबाजी खा गया। ऐसा करते हुए उसकी किक थंगचो की ठोड़ी के निचले हिस्से पर लगी और वह पीछे उलट गया और फिर तो काला बच्चा ने उसे संभलने का मौका ही नहीं दिया। वह उस पर हमले करता रहा। इस राउण्ड में काला बच्चा को दो प्वाईट मिले।

यह रिंग कोई बाकायदा रिंग नहीं था। इसके इर्द-गिर्द रस्से भी तने हुए नहीं थे। अखाड़े की तरह था, जिसके चारों तरफ सब लोग बैठे हुए थे और काला बच्चा ने महसूस किया था कि ज्यादा हमदर्दियां थंगचो के साथ थीं। काला बच्चा के हक में भी चंद आवाजें उठ रही थीं और सबसे नुमायां आवाज थाईवांग की थी।

चौथे राउण्ड में काला बच्चा को दो और प्वाईट मिले। पांचवें राउण्ड में यह मुकाबला फ्री-स्टायल में तब्दील हो गया था। थंगचो ने तमाम कायदे-कानून को नजरअन्दाज कर दिया था। काला बच्चा के अब तक मुकाबले में डटे रहने को शायद वह तोहीन समझ रहा था और हर कीमत पर काला बच्चा को नॉकआउट करना चाहता था।

वह वाकई स्ट्रीट फाइट थी, जिसमें कोई कायदा कानून नहीं होता, बस प्रतिद्वंद्वी को ज्यादा से ज्यादा नुकसान पहुंचाने की कोशिश की जाती है। थंगचो ने दायें हाथ का धोखा देकर बायें पंच का वार किया। काला बच्चा ने अपने आपको बचाने की कोशिश की, मगर उसका पंच काला बच्चा के कंधे पर लगा। हाथ पर लिपटी हुई खुरदुरी रस्सियों और गिरहों की वजह से उसके कंधे की खाल छिल गयी लेकिन उसने अपने हवास बहाल रखें और मुकाबला जारी रखा। थंगचो उसपर दबाव डालने की कोशिश कर रहा था। उसे पंच मारने के लिए हाथ उठाया तो काला बच्चा ताकतवर स्प्रिंग की तरह अपनी जगह से उछला। उसके दायें-पैर का अपर थंगचो की बगल के नीचे लगा। वह पीछे हटा तो काला बच्चा की लिफ्ट किक उसके दायें पहलू में लगी और फिर तो काला बच्चा ने उसे संभलने का मौका नहीं दिया। पंच किक- पंच किक। वह बुरी तरह लड़खड़ा रहा था और जब उसने संभलने की कोशिश की तो काला बच्चा एक बार फिर हवा में उछला और पूरी कुव्वत से फ्लाइंग किक उसके सीने पर मारी, वह लड़खड़ाकर गिरा लेकिन उसने उठने में भी देर नहीं लगाई थी। काला बच्चा बिजली की-सी तेजी से आगे झुका। काला बच्चा का एक हाथ उसकी गर्दन पर था और दूसरा जांघ पर। उसने पूरी ताकत इस्तेमाल करते हुए उसे अपने सिर से ऊपर उठा लिया और किक लगाकर एक तरफ उछाल दिया। वह तमाशाइयों में गिरा।

ही थे। वे भी उसकी हौसला अफजाई के लिए चीख रहे थे। काला बच्चा उसके करीब खड़ा उसके उठने का इन्तजार करने लगा। रैफरी ने गिनती शुरू कर दी थी। थंगचो ने दो मर्तबा उठने की कोशिश की मगर कामयाब नहीं हो सका। रैफरी ने चीखकर दस कहा और फिर काला बच्चा का हाथ पकड़कर ऊपर उठा दिया।

काला बच्चा यह मुकाबला जीत गया था। महाराज एक झटके से उठकर खड़ा हो गया था। थाईवांग चीखती हुई अखाड़े में आ गयी और काला बच्चा से लिपट गयी। काला बच्चा के हिमायतियों ने शोर मचाते हुए उसे कंधों पर उठा लिया और फिर महाराज के सामने ले जाकर जमीन पर उतार दिया। काला बच्चा ने महाराज, मास्टर होचिन और हांगसो को बो किया। महाराज ने उसके सिर पर हाथ रख दिया।

"हांगसो।" वह काला बच्चा के उस्ताद की तरफ देखते हुए बोले—"हम तुमसे बहुत खुश हुए। एक साल की ट्रेनिंग तीन महीनों में मुझे तुम पर फख्र है।"

"महाराज।" हांगसो ने बो करते हुए कहा—"यह सब इसकी मेहनत का नतीजा है। मेरा ख्याल था इतने कम समय में यह कुछ भी नहीं सीख पायेगा लेकिन इसने किसी मौके पर भी मुझे मायूस नहीं किया। बड़ी मेहनत की है इस नौजवान ने।" वह चंद लम्हों को खामोश हुआ फिर बात जारी रखते हुए बोला—"थंगचो मेरे कैम्प का सबसे सीनियर और सबसे खतरनाक आदमी है। यह स्ट्रीट फायटिंग में भी हिस्सा ले चुका है। आपको याद होगा छः महीने पहले तो आप ही ने कुछ विशेष निर्देश देकर इसे यहां भेजा था। इन छः महीनों के दौरान इसने यहां भी बहुत कुछ सीखा है लेकिन इस किशोर ने जिस तरह थंगचो को नॉक आउट किया है, वह भी आपने देख लिया। अब यह किसी से मार नहीं खायेगा।" उसने काला बच्चा के कंधे पर हाथ रखकर उसे अपनी तरफ खींच लिया।

अपनी मेहनत पर महाराज का तब्सरा सुनकर वह फूले नहीं समाया था। यह उसकी जिन्दगी की पहली फाइट थी, जिसमें उसने अपने से कहीं ज्यादा तजुर्बाकार और ताकतवर प्रतिद्वंद्वी को नॉकआउट कर दिया था।

उसकी ट्रेनिंग सम्पूर्ण हो गयी थी, इसलिए वहां रहने का कोई फायदा नहीं था। वह उस रात महाराज के साथ बैंकाक वापस आ गया और जाहिर है थाईवांग भी उनके साथ थी और काला बच्चा को थाईवांग पर हैरत थी। इन तीनों महीनों के दौरान वह सिर्फ एक

बार उसके हाथ से पिटी थी और फिर यह रहस्योद्घाटन उसके लिए बहुत ही खुशगवार साबित हुआ था कि उससे थाईवांग की हालत जानने के बाद हांगसो उससे एक विशेष एक्सरसाइज कराता रहा था और उनकी वापसी से पहले हांगसो ने थाईवांग को हिदायत कर दी थी कि वह कुछ अरसे तक यह एक्सरसाइज जारी रखे।

वह रात के नौ बजे के करीब शहर में दाखिल हुए थे और फिर विभिन्न सड़कों पर घूमते हुए वाट ट्रीन्ट पहुंच गये। यह वही खानकाह थी जहां प्रताप सिंह को कत्ल किया गया था। कातिल यहां तक पीछा करते आये थे फिर महाराज वांगदंग ने काला बच्चा को अपनी पनाह में ले लिया था। वह अकबी रास्ते से खानकाह में दाखिल हुए थे लेकिन खानकाह में मौजूद तमाम भिक्षुओं को पता चल गया कि महाराज वापस आ गये हैं। काला बच्चा और थाईवांग को पातोंग के कमरे में पहुंचा दिया गया। पातोंग काला बच्चा को देखकर बहुत खुश हुई थी। उसके चेहरे पर खुशी के साथ हैरत के भी भाव थे।

"मुझे यकीन नहीं आ रहा कि तुम वही हो, जिसे चंद महीने या साल भर पहले निहायत खस्ता हालत में मेरे यहां लाया गया था। कैसा कद निकाला है तुमने।" पातोंग ने आगे बढ़कर उसे दोनों बाहों में भर लिया और फिर वह चौंक गयी। काला बच्चा के बाजू के मसल्स टटोलते हुए उसकी आंखों में अजीब-सी चमक उभर आई—"तुम पर महाराज की मेहनत जाया नहीं गयी और मुझे लगता है महाराज बहुत जल्द तुम्हें कोई अहम जिम्मेदारी सौंप देंगे।"

"तुम्हें कैसे अन्दाजा हुआ कि महाराज मुझे कोई जिम्मेदारी सौंप देंगे।" मैंने उसकी तरफ देखते हुए कहा।

"दो दिन पहले वह मास्टर होचिन से बातें कर रहे थे और मैंने उससे कुछ अन्दाजा लगा लिया था।" पातोंग ने जवाब दिया।

"तुम्हें यहां के हालात का कुछ इल्म है। शहर में क्या हो रहा है?" उसने पूछा।

"बहुत कुछ।" पातोंग ने जवाब दिया—"वह हिन्दू लड़की थी ना कौशल्या, जिसके फ्लैट में तुम चंद रोज रहे भी थे।"

"हां...मुझे याद है। कौशल्या को मैं कैसे भूल सकता हूं? क्या उसे टाइगर की कैद से छुड़ा लिया गया है?" काला बच्चा ने कहा।

"वह तो गद्दार निकली।" पातोंग ने जवाब दिया—"उसके फ्लैट पर हमला उसकी गद्दारी की वजह से हुआ था। उसने किसी तरह टाइगर तक यह पैगाम पहुंचा दिया था कि तुम उसके फ्लैट में हो और यह भी जता दिया था कि तुम्हारी हिफाजत के लिए क्या

इन्तजामात किए गये हैं। टाइगर के आदमियों ने मौका मिलते ही उसके फ्लैट पर हमला कर दिया था। तुम्हारी किस्मत अच्छी थी कि तुम वहां से भाग निकलने में कामयाब हो गये थे और वह टाइगर के आदमियों के साथ भाग गयी थी, बाद में यही अफवाह उड़ाई गयी कि टाइगर के आदमी उसे उठाकर ले गये हैं और उसकी रिहाई के बदले तुम्हें उनके हवाले करने की डिमांड की गयी थी। यह तो बाद में पता चला कि सब कुछ उसकी साजिश से हुआ था।"

"वह अब कहां है—मेरा मतलब कौशल्या कहां है?" काला बच्चा ने पूछा। कौशल्या के बारे में सोचते हुए उसका दिमाग घूम रहा था। वह रात उसे अच्छी तरह याद थी जब कौशल्या ने उससे अपनी हवस की आग बुझाने की कोशिश की थी। कौशल्या जवान और हसीन औरत थी—अगर वह किसी मर्द को इशारा भी कर दे तो वह उसके कदमों में लौटने लगता।

काला बच्चा के बारे में भी शायद उसने यही सोच लिया था और बेलिबास होकर उसके बिस्तर में आ गयी थी। उसका ख्याल था कि उसे नग्न देखकर काला बच्चा अपने होशो-हवास खो बैठेगा और अपनी मनमर्जी के अनुसार अपनी प्यास बुझायेगी लेकिन काला बच्चा ने उसे दुत्कार दिया था और उससे इन्तकाम लेने के लिए उसने टाइगर के आदमियों से मिलकर उसे मरवाने की साजिश की थी लेकिन खुशकिस्मती से वह बच गया था—लेकिन उसका राज भी अंततः फाश हो गया था।

"उसका ट्रेनिंग सेन्टर बन्द हो चुका है।" पातोंग कह रही थी—"आजकल वह एक थर्ड क्लास अंडर क्लब में फाइट के प्रोग्राम कर रही है। मास्टर होचिन तो उसे उठवाना चाहता था लेकिन महाराज ने मना कर दिया। वह एक गद्दार औरत के लिए अपने किसी आदमी की जिन्दगी दांव पर लगाना नहीं चाहता। महाराज का ख्याल है कि कौशल्या एक रोज खुद ही उसके कदमों में आकर गिर जायेगी।"

"हूं।"

"एक बात और...।" पातोंग ने कहा—"टाइगर के आदमी तुम दोनों को बड़ी सरगर्मी से तलाश कर रहे हैं। उसके दो आदमी तुम दोनों के हाथों मारे जा चुके हैं। उसने महाराज से भी मांग की थी कि तुम दोनों को उनके हवाले कर दिया जाए। तुम्हें शायद एक-दो दिन से ज्यादा इस टैम्पल में न रखा जाए, इसलिए जहां भी जाओ सावधान रहना।"

"और कुछ...।" काला बच्चा ने मुस्करा कर उसकी तरफ देखा।

"और यह कि अब तुम नहा लो, अजीब हुलिया हो रहा है तुम्हारा।" पातोंग ने कहा—"तुम्हें बाथरूम दिखाऊं।" उसके होठों पर शरीर-सी मुस्कराहट आ गयी थी।

"नहीं, मैं खुद ही चला जाऊंगा।" काला बच्चा ने कहा और कमरे से बाहर निकल गया।

पातोंग का ख्याल दुरुस्त निकला था। दूसरे दिन शाम के बाद उसे और थाईवांग को कलांग रोड के करीब एक बहुत बड़े वाट (खानकाह) में भेज दिया गया। इस खानकाह से अटैच एक बहुत बड़ा मैदान था और उसके करीब ही वाचटोफोटन किक बाक्सिंग स्टेडियम था। यह शहर का दूसरा सबसे बड़ा स्टेडियम था। इस खानकाह में भिक्षुओं के लिए अलग रिहाइशी क्वार्टर्स थे और वहां किसी असम्बन्धित आदमी का प्रवेश वर्जित था। रिहाइशी क्वार्टर्स का एक रास्ता तो खानकाह के अन्दर से था और दूसरा पिछली तरफ एक तंग-सी गली में। यह दरवाजा आमतौर पर बन्द ही रहता था। यहां उन्हें अलग-अलग दो कमरे दिए गये थे। मास्टर होचिन उनके साथ आया था, यहां भी ट्रेनिंग दी जाती थी। काला बच्चा से पहले जो ट्रेनर था, उसे उस रोज किसी और जगह भेज दिया गया था और सब भिक्षुओं को बता दिया गया था कि आज से उन्हें ट्रेनिंग काला बच्चा देगा लेकिन मास्टर होचिन ने काला बच्चा का नाम मास्टर हाहा रखा था।

काला बच्चा ने सोचा उसका परिचय देते वक्त शायद मास्टर होचिन को कोई नाम नहीं सूझा था इसलिए हाहा ही कह दिया था और यह नाम काला बच्चा को भी पसंद आया था। उसे यहां भेजने की एक वजह उसकी समझ में भी आ गयी।

इन खानकाह में महात्मा बुद्ध का सोने का एक बहुत बड़ा मुजस्समा था। जिसके गिर्द लोहे का मजबूत जंगला लगा हुआ था। दिन में दो मर्तबा इस जंगले का दरवाजा खोला जाता था और सब मुजस्समे को छूकर सुकून हासिल करते और अपनी अकीदत के मुताबिक दुआयें मांगते। इस मुजस्समे की हिफजात के ख्याल से यहां के भिक्षुओं को मोयेथाई की ट्रेनिंग दी जाती थी। यों तो काला बच्चा समझ गया था कि यहां का भिक्षु बेहतरीन फाइटर था लेकिन महाराज के ख्याल में उन्हें एक्टिव रखने के लिए काला बच्चा जैसे शख्स की जरूरत थी।

जंगल वाले कैम्प से आने के बाद काला बच्चा ने आइने में अपना हुलिया देखा था, तो चौंक गया था। वहां तीन महीने में सिर्फ

एक मर्तबा कैंची से उसके बाल काटे गये थे, जो अब बढ़कर गर्दन तक पहुंच गये थे। पहले उसने सोचा कि कैंची से ही अपने बाल खुद काट ले लेकिन फिर कुछ सोचकर उन्हें छोड़ दिया था। उन बेतहाशा बढ़े हुए बालों की वजह से उसका हुलिया बड़ी हद त बदल गया था और बदला हुआ हुलिया उसके लिए जरूरी था।

एक-दो दिन तक तो वह खानकाह तक सीमित रहा फिर एक रोज किसी को बताए बगैर बाहर निकल गया। हिफाजत के लिए उसने अपने लिबास में एक खंजर छुपा लिया था। वह उस रोज बहुत देर तक शहर के विभिन्न इलाकों में घूमता रहा। वह पहली मर्तबा इस शहर में अकेला बाहर निकला था। रास्तों का इल्म नहीं था—बस मुंह उठाये घूमता रहा। उसका एक फायदा यह हुआ कि कुछ रास्तों से वाकफियत हो गयी और फिर एक बाजार में चलते-चलते वह एक दुकान के सामने रुक गया। दुकान के शोकेस में ऐसी चीजें लग हुई थीं, जो आमतौर पर भिक्षुओं में इस्तेमाल होती थीं। नकली बाल की विगें, नकली मोछें और मास्क वगैरह।

काला बच्चा दुकान में दाखिल हो गया। उसने अपने लिए एक फ्रेंचकट दाढ़ी पसंद की, जिसे दुकानदान ने बड़ी नफासत से उसके चेहरे पर चिपका दिया। इस दाढ़ी को किसी चिपकाने वाली चीज के बिना आसानी से ठोड़ी पर चिपकाया और उतारा जा सकता था। दुकानदार ने स्याह शीशों वाला ऐनक भी उसकी आंखों पर लगा दी और जब उसने अपने आपको आइने में देखा तो उछल पड़ा। वह खुद ही अपने आपको नहीं पहचान सकता था। उसने कीमत अदा की और यह दोनों चीजें जेब में डालकर दुकान से बाहर आ गया।

उसने रोज नाइट क्लब के करीब उस रेस्टोरेन्ट में बैठकर चाय भी पी, जिसके करीब से वह थाईवांग की गाड़ी में बैठा था। वहां उस वक्त बहुत से ग्राहक थे और हो सकता था वहां टाइगर का कोई आदमी भी मौजूद हो लेकिन किसी ने उसे नहीं पहचाना था।

रेस्टोरेन्ट से निकलकर वह एक टिकटिक में बैठा और गोल्डन हार्स होटल के सामने उतर गया। उसका ख्याल था कि वहां से वह पैदल ही चला जायेगा। उसे इस तरह आजादी से घूमना-फिरना बहुत अच्छा लग रहा था। उस वक्त उसके दिल में कोई खौफ भी नहीं था। लेकिन कुछ ही देर बाद उसने महसूस किया कि उसका पीछा किया जा रहा है। थोड़ी देर पहले एक गुण्डे को भी उसने एक टिकटिक से उतरते देखा था। बड़ी सड़क पार करके वह एक तंग-सी गली में घुस गया और बड़ी फुर्ती से एक दीवार की आड़ में हो गया।

वह दिन का वक्त था, लेकिन इत्तेफाक से उस वक्त यह गली सुनसान थी। वह आदमी जैसे ही गली में मुड़ा, काला बच्चा ने विद्युत गति का प्रदर्शन करते हुए उस पर छलांग लगा दी और उसके मुंह पर घूंसा मारना ही चाहा था कि उसकी शक्ल देखकर उसका हाथ रुक गया और उसके मुंह से बेइख्त्यार गहरा सांस निकल गया।

वह मास्टर होचिन का आदमी था।

यह रहस्योद्घाटन उसके लिए खासा दिलचस्प साबित हुआ कि महाराज के कहने पर मास्टर होचिन ने उसकी निगरानी शुरू कर रखी थी। उन्हें शायद पहले से ही यकीन होगा कि वह वाट से बाहर निकलने की कोशिश करेगा, इसलिए उसकी निगरानी शुरू हो गयी थी। कोई न कोई आदमी हर वक्त वाट के आसपास मौजूद रहता था और उस शख्स ने वाट से निकलते ही काला बच्चा का पीछा शुरू कर दिया था लेकिन उसकी नजरों में उस वक्त आया जब वह घूम-फिर कर वापस आ रहा था और काला बच्चा ने मौका मिलते ही उसे छाप लिया था।

एक जगह बन्द होकर बैठे रहना काला बच्चा के लिए मुश्किल हो गया था। वह कुछ न कुछ करना चाहता था। वैसे वह अक्सर रात की तन्हाई में सोचा करता था कि उसकी जिन्दगी का मकसद क्या है। उसके मां-बाप को सिंगापुर में उसकी नजरों के सामने कत्ल कर दिया गया था—फिर वह उसकी भी जान के दुश्मन हो गये। चाचा प्रताप सिंह उसे बदमाशों से बचाने के लिए बैंकाक ले आया और उसकी जान बचाने की कोशिश में खुद मारा गया। उसकी मौत के बाद वह महाराज वांगदंग के हाथ लग गया। वह उसे बहुत बड़ा मार्शल आर्टिस्ट बनाना चाहता था ताकि वह अपने दुश्मनों का मुकाबला कर सके। उसके दुश्मन भी अब तक उसके पीछे लगे हुए थे जबकि उसके ख्याल में इन दुश्मनों को तो बहुत पहले उसका पीछा छोड़ देना चाहिए था। उन्हें तो यह सोचना चाहिए था कि वह खुद अपनी जान के खौफ से भागा फिर रहा है, उन्हें क्या नुकसान पहुंचायेगा लेकिन शायद सूरतेहाल ऐसी नहीं थी जैसा वह सोच रहा था। वाकूयात का एक ऐसा सिलसिला बना रहा, जिससे दुश्मन अपने लिए खतरा महसूस करते रहे। पहले सिंगापुर की पुलिस काला बच्चा की हिफाजत के साथ-साथ उन्हें तलाश करती रही फिर जब काला बच्चा बैंकांक में महाराज के संरक्षण में आ गया, तो उन्हें ज्यादा खतरा महसूस हुआ और इस नयी परिस्थिति से निबटने के लिए उन्होंने टाईगर जैसे आदमी की सेवायें प्राप्त कर लीं जिसका बैंकाक

अण्डरवर्ल्ड पर होल्ड था।

और फिर उनके हाथों महाराज का बेहतरीन आदमी मास्टर फू मारा गया, इस तरह दोनों पार्टियों में गैंगवार छिड़ गयी। थाईवांग एक असम्बन्धित औरत थी। उसका कसूर सिर्फ यह था कि उसने काला बच्चा को बदमाशों से बचकर भागते हुए पनाह दी थी और काला बच्चा की वजह से उसका सब कुछ तबाह हो गया था। उसकी अपनी जिन्दगी भी दांव पर लगी हुई थी। वह अगर चाहती तो काला बच्चा को छोड़कर किसी और शहर जा सकती थी लेकिन उसने काला बच्चा को नहीं छोड़ा। काला बच्चा जब भी थाईवांग के बारे में सोचता उसे बड़ा अफसोस होता।

उसे अभी यह नहीं मालूम हो सका था कि दारा और किम वगैरह वापस जा चुके थे या अभी तक बैंकाक ही में मौजूद थे। उसके असली दुश्मन तो वही थे और उसे उनसे इन्तकाम लेना था। उसके मां-बाप को उसकी आंखों के सामने कत्ल किया गया था और वह मेज वह कभी नहीं भूल सकता था, उसे हर सूरत में दारा और किम वगैरह से इन्तकाम लेना था, इसके लिए चाहे मुझे दुनिया के आखरी सिरे तक ही क्यों न जाना पड़े। अब तो वह उनसे बचने के लिए भागा फिर रहा था लेकिन उसे यकीन था कि एक वक्त वह भी आयेगा जब वह लोग उससे छिपते फिरेंगे और उन्हें कहीं पनाह नहीं मिलेगी, इससे पहले उसे अपने आपको पूरी तरह तैयार करना था। हांगसो के प्रशिक्षण ने यथार्थ उसे मास्टर बना दिया था लेकिन वह समझता था कि यह प्रशिक्षण ही काफी नहीं था। उसे तजुर्बे की जरूरत थी। अभी और कठिन दौर से गुजरना था।

काला बच्चा अपने आपको टाइगर के मुआमलात में उलझाना नहीं चाहता था लेकिन उससे कतराया भी नहीं जा सकता था। उसके दो आदमी उनके हाथों मारे गये थे और वह काला बच्चा की तलाश में था और कभी तो वह सोचता कि अच्छा है इस तरह तजुर्बा भी हासिल होगा।

उस रोज उसने फिर बाहर जाने का फैसला कर लिया। वह रात आठ बजे के लगभग अपने कमरे में तैयारी कर रहा था। उसके बाल इतने लम्बे थे कि उसने उन्हें पीछे समेटकर चुटिया बना ली और ठोड़ी पर फ्रेंचकट दाढ़ी चिपकाकर आइने में अपना जायजा लेने लगा। स्याह शीशों का चश्मा लगाने की जरूरत नहीं थी। दाढ़ी लगाने से ही उसका चेहरा बहुत बदल गया था। यों भी रात के वक्त स्याह शीशों वाला चश्मा संदिग्ध बना सकता था। उसका कद पांच फुट

के करीब था। मार्शल आर्ट्स की कठिन ट्रेनिंग ने उसकी शारीरिक बनावट पर भी बड़ा असर डाला था। वह अपनी उम्र से कहीं ज्यादा बड़ा लगने लगा था और फ्रैंचकट दाढ़ी तो उसके चेहरे पर बहुत अच्छी लग रही थी। वह आइने में अपना जायजा ले रहा था कि दरवाजा खुलने की आवाज सुनकर पीछे मुड़ा। वह थाईवांग थी। वह उसकी शक्ल देखते ही उछल पड़ी।

"क...कौन हो तुम...और...।"

काला बच्चा के कंठ से बेइख्तियार कहकहा निकल गया। इस दाढ़ी से थाईवांग भी उसे नहीं पहचान सकी थी। उसकी आवाज सुनकर वह एक बार फिर उछल पड़ी।

"ओह...।" उसके मुंह से हैरतजदा-सी आवाज निकली—"य...यह...क्या...मेरा मतलब है दाढ़ी...शाम को तो नहीं थी।"

काला बच्चा ने मुस्कराते हुए दाढ़ी उतार दी और फिर आइने की तरफ रुख करके उसे दोबारा चिपका दिया।

"मैं बाहर जा रहा हूं—ताकि परिस्थिति का जायजा ले सकूं।" यहां बैठे-बैठे तो मेरा दम घुटने लगा है।" काला बच्चा ने कहा।

"तुम्हें मालूम है टाइगर के आदमी तुम्हें तलाश करते फिर रहे हैं, अगर उनमे से किसी ने तुम्हें देख लिया तो...?"

"तुम मुझे नहीं पहचान सकी तो कोई और कैसे पहचानेगा?" काला बच्चा ने मुस्कराते हुए उसकी बात काट दी।

"तो फिर, मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।" उसने कहा।

"ताकि तुम्हारे साथ होने से मुझे पहचान लिया जाए।" काला बच्चा ने कहा—"परेशान मत हो। मैंने अपनी हिफाजत करना सीख लिया है। मुझे कुछ नहीं होगा।"

काला बच्चा बड़ी मुश्किल से उसे समझा सका था। उस रात उसने वाट से बाहर जाने के लिए वाट का अकंबी छोटा-सा दरवाजा इस्तेमाल किया था। थाईवांग उस दरवाजे तक उसके साथ आई थी और काला बच्चा ने वापसी का रास्ता भी तलाश कर लिया था।

गालेयां ही गलियां घूमता हुआ वह वाट से बहुत दूर गोल्डन हार्स होटल के करीब सड़क पर निकल आया और स्टैण्ड पर खड़े हुए एक टिकटिक पर बैठ गया और ड्राइवर को रोज क्लब चलने को कहकर सीट की पुश्त से टेक लगाई और इधर-उधर देखने लगा।

रोज नाइट क्लब में बड़ी रौनक थी। पहली मर्तबा जब वह यहां आया था तो उस वक्त उसकी अपनी जान पर बनी हुई थी।

वह तो छुपने की जगह तलाश कर रहा था और इस क्लब के बारे में ठीक से कोई अन्दाजा नहीं लगा सका था। अब पहली मर्तबा इस क्लब को अच्छी तरह देखने का मौका मिला था। यह वाकई थर्ड क्लास किस्म का क्लब था। यहां ज्यादातर वह लोग आते थे, जिनका सम्बन्ध निचले तब्के से था, दिन भर मेहनत-मजदूरी करने के बाद रात को थोड़ा-सा वक्त सस्ती अय्याशी में गुजार लेते थे और इस सस्ती अय्याशी में ही उनकी जेबें खाली हो जाती थीं।

उस रोज भी काला बच्चा ने देखा था और अब तो उसे ठीक तरह से अन्दाजा हो गया था कि यह क्लब मादक पदार्थों का बहुत बड़ा अड्डा था। सेन्ट्रलहॉल तो उन ग्राहकों के लिए सुरक्षित था जो कॉफी, चाय, कोल्ड ड्रिंक्स और शराब वगैरह पीने के साथ-साथ स्टेज के प्रोग्राम से भी लुत्फ उठाते थे। स्टेज पर कभी डांस का प्रोग्राम होता और कभी औरतों की किक बॉक्सिंग का। दूसरा हॉल उन लोगों के लिए था, जो मादक पदार्थ इस्तेमाल करते थे।

काला बच्चा ने क्लब में दाखिल होकर इधर-उधर देखा। बहुत-सी मेजें भरी हुई थीं। अर्द्धनग्न लिबास में जिस्म-फरोशी का धंधा करने वाली औरतें भी बड़ी तादाद में मौजूद थीं। जो किसी न किसी तरह ग्राहकों की जेबों का बोझ हल्का करने में व्यस्त थीं।

स्टेज पर इस वक्त एक नर्तकी थिरक रही थी। काला बच्चा मेजों के दरमियान चलता हुआ एक कोने वाली खाली मेज पर बैठ गया। अर्धनग्न लिबास में वेट्रेस फौरन ही उसके सामने आ खड़ी हुई। काला बच्चा ने उसे कॉफी के लिए कह दिया और हॉल में बैठे हुए लोगों का जायजा लेने लगा।

पहली मर्तबा जब वह यहां आया था तो चीफांग को इस क्लब में देखा था और उसे यकीन था कि उसका और चीफांग का आमना-सामना इस क्लब में होगा। वेट्रेस काफी लेकर आई तो उसने काला बच्चा से बिल भी वसूल कर लिया। इस क्लब का नियम शायद यही था। चीज सर्व करने के साथ ही बिल वसूल कर लिया जाता था।

वह कॉफी की चुस्कियां ले रहा था कि एक औरत बड़ी बेतकल्लुफी से उसके सामने वाली कुर्सी पर आकर बैठ गयी। उसकी उम्र पैंतीस के लगभग रही होगी। उसने अगर खास अन्दाज में मेकअप न कर रखा होता तो चेहरा पुरकशिश हो गया था। उसका लिबास और हरकतों से अन्दाजा लगाया जा सकता था कि उसका सम्बन्ध किस तबके से हो सकता है। वह जब मेज पर जरा-सा आगे को

झुकी तो काला बच्चा के दिल की धड़कन कुछ तेज हो गयी।

"इस क्लब में शायद पहली बार आये हो?" वह काला बच्चा की तरफ देखकर मुस्कुराते हुए बोली।

"मैं इस क्लब में ही नहीं बैंकाक में भी पहली मर्तबा आया हूं।" उसने जवाब दिया।

"ओह! इसका मतलब है कि अकेले हो और तुम्हें एक दोस्त की भी जरूरत होगी। वक्त गुजारने के लिए किसी क्लब में आदमी अकेला हो तो बड़ी बोरियत होती है। मैं तुम्हारी बोरियत दूर कर सकती हूं।" वह बोली।

"वह किस तरह?" काला बच्चा ने सवालिया निगाहों से उसकी तरफ देखा।

"जिस तरह तुम चाहोगे।" अपने अर्थपूर्ण लहजे में जवाब दिया—"लेकिन पहले मेरे लिए कुछ पीने को तो मंगवाओ। हलक खुश्क हो रहा है।" और फिर उसके जवाब का इन्तजार किए बगैर उसने वेट्रेस को बुलाकर अपने लिए शराब मंगवा ली, और उसका बिल काला बच्चा को ही देना पड़ा था।

उसका नाम शाईवान था। उसकी बातों से काला बच्चा को जल्दी ही अन्दाजा हो गया कि वह अन्दर की कुछ बातें भी जानती थी और उससे बहुत कुछ मालूम किया जा सकता था। बातें करते हुए एक आदमी को अपनी तरफ आते देखकर वह चौंक गया। उसका रुख काला बच्चा की मेज की तरफ ही था। वह जैसे-जैसे करीब आ रहा था काला बच्चा के दिल की धड़कन तेज होती जा रही थी। वह टाइगर का आदमी था। काला बच्चा ने अपने आपको आने वाली परिस्थिति से निबटने के लिए तैयार कर लिया।

वह उनकी मेज के करीब आकर रुक गया। पहले घूरती हुई नजरों से काला बच्चा को देखा फिर शाईवान की तरफ झुककर उसके कान में कुछ कहा और वापस चला गया। उसके चंद ही मिनट बाद शाईवान भी उठकर चली गयी, उनकी वापसी लगभग पांच मिनट बाद हुई थी। उसका चेहरा गुस्से से सुर्ख हो रहा था।

"हरामी! अपने आपको पता नहीं क्या समझते हैं?" वह कुर्सी पर बैठते हुए बड़बड़ाई।

"कौन...किसकी बात कर रही हो?" काला बच्चा ने सवालिया निगाहों से उसकी तरफ देखा।

"टाइगर।" उसने कहा—"अपने आपको इस शहर का मालिक समझ बैठा है। यह एक दिन कुत्ते की मौत मरेगा।"

"टाइगर तो सुना है यहां का बहुत बड़ा बदमाश है।" काला बच्चा ने कहा—"लेकिन तुम्हारा उससे क्या सम्बन्ध?"

"वह क्लब में आने वाली मुझ जैसी हर औरत से टैक्स लेता है।" शाईवान ने जवाब दिया—"तुमसे मिले न मिले लेकिन उसके गुर्गों ने मुझसे सौ भात हथिया लिए हैं।"

"मैं तुम्हें सौ भात दे दूंगा। वैसे तुम इस क्लब में कब से आ रही हो?" काला बच्चा ने पूछा।

"कई साल हो गये।" शाईवान ने जवाब दिया—"टाइगर पहले ऐसा नहीं था—उसने हमें कभी नहीं छेड़ा था लेकिन जब से वह हरामी दो चीनी यहां आये हैं और महाराज का सीनियर मास्टर फूं उनके हाथों मारा गया है, उस वक्त से वह ज्यादा ही फैल गया है। हेरोइन और औरतों की कमाई से उसका दिमाग कुछ ज्यादा ही खराब हो गया है लेकिन मेरा ख्याल है उसके दिन अब गिने जा चुके हैं। महाराज के आदमी उसकी ताक में हैं। वह किसी न किसी दिन कुत्ते की मौत मारा जायेगा।"

शाईवान की बातें उसे चौंका देने के लिए काफी थीं। विशेष रूप से दो चीनियों के जिक्र से तो उसके दिल की धड़कनें कुछ तेज हो गयी थीं। उसे समझने में देर नहीं लगी कि वह किम और चीफांग की बात कर रही थी, इसका मतलब था वह अन्दर की बहुत-सी बातें जानती थी। वह इस वक्त टाइगर के खिलाफ गुस्से में थी और उससे बहुत कुछ मालूम किया जा सकता था लेकिन काला बच्चा ने सोचा यहां उससे बात करना उचित नहीं होगा।

"अभी तुमने कहा था कि तुम मेरी बोरियत दूर कर सकती हो।"

"हां—लेकिन यहां नहीं।" वह बोली—"अगर यहां रहे तो यह लोग तुम्हें भी परेशान करेंगे। आओ चलें।"

काला बच्चा उसके साथ क्लब से बाहर आ गया। वह इधर-उधर देखती हुई एक टैक्सी की तरफ बढ़ गयी।

पिछली सीट पर वह काला बच्चा पर झुकी हुई बैठी थी और उसे अपने जिस्म में यूं च्यूंटियां-सी रेंगती हुई महसूस हो रही थीं। टैक्सी रामानाइन रोड से होती हुई रावल सिटी एवन्यू की तरफ मुड़ गयी और तकरीबन पांच मिनट तक विभिन्न सड़कों पर घूमने के बाद एक चौड़ी गली में कॉटेज के सामने रुक गयी। इस गली में दोनों तरफ खूबसूरत कॉटेज बने हुए थे। काला बच्चा ने टैक्सी का किराया अदा किया और शाईवान के साथ नीचे उतर आया। कॉटेज

का दरवाजा शाईवान ने अपनी चाबी से खोला था।

तीन कमरों का एक कॉटिज था। एक दरवाजा पिछली गली में खुलता था, वह काला बच्चा को सिटिंग रूम में ले आई। फर्नीचर आला दर्जे का था। वह इधर-उधर देखता हुआ एक सोफे पर बैठ गया। वह भी उसके साथ इस तरह बैठ गयी कि उसका बोझ काला बच्चा के ऊपर था। काला बच्चा उससे बचने की कोशिश कर रहा था और वह उसके ऊपर झुकी जा रही थी। काला बच्चा को पसीने छूटने लगे।

"तुम टाइगर और दो चीनियों के बारे में कुछ बता रही थी।" काला बच्चा ने सोफे से उठकर कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

"उन हरामियों की बात छोड़ो, इस वक्त अपनी बात करो।" वह भी सोफे से उठ गयी। उसे कुर्सी की तरफ आता देख काला बच्चा सोफे पर बैठ गया।

"तुम तो मुझसे इस तरह डर रहे हो जैसे मैं तुम्हें खा जाऊंगी।" वह काला बच्चा की तरफ देखकर मुस्कराते हुए बोली।

"वह...दरअसल बात यह है कि मैं तुम्हारे साथ इसलिए आया हूं कि तुमसे कुछ बातें करनी चाहता हूं।" काला बच्चा ने हकलाते हुए कहा।

"सिर्फ बात करने के लिए।" उसने काला बच्चा को घूरा—"क्या सिर्फ बातें करने के लिए यह रकम खर्च कर रहे हो। बातें तो वहां भी हो सकती थीं।"

"रकम की तुम फिक्र मत करो। तुम्हें पूरा मुआवजा मिलेगा लेकिन जो बातें मैं करना चाहता हूं वह वहां नहीं हो सकती थीं। मैं नहीं चाहता था कि हमारी बातें दूसरे भी सुन लेते।"

"अच्छा ठीक है—क्या बातें करना चाहते हो।" उसने काला बच्चा को घूरा।

"टाइगर के साथ दो चीनी कौन हैं?" काला बच्चा ने कहा और फिर उन दोनों का हुलिया भी बता दिया—"क्या उनमें से एक का नाम चीफांग और दूसरे का किम है।"

"हां, शायद यही नाम हैं—मगर तुम उन्हें कैसे जानते हो?" शाईवान ने कहा।

"वह दोनों सिंगापुर से भागे हुए हैं।" काला बच्चा ने जवाब दिया—"वहां उन दोनों के हाथों कई बेगुनाह हलाक हो चुके हैं। पुलिस उनकी तलाश में थी। वह दोनों भागकर यहां आ गये।"

"लेकिन मैंने तो सुना है कि वह दो आदमियों का पीछा करते

हुए यहां आये थे। उनमें एक मारा गया और दूसरा लापता है। इन चीनियों ने इस सिलसिले में टाइगर से सम्पर्क किया था, क्योंकि इन्हें पता चल गया था कि जिस नौजवान की उन्हें तलाश है वह महाराज की पनाह में है और मजे की बात यह है कि उस नौजवान की वजह से महाराज का खास आदमी मास्टर फू भी मारा गया था और फिर वह नौजवान टाइगर के दो आदमियों को मारकर गायब हो गया। टाइगर गुस्से में पागल हो रहा है। उसे उस नौजवान की तलाश है मगर...। तुम यह सब कुछ क्यों पूछ रहे हो?"

"थाईलैण्ड उन तीन मुल्कों में से एक है जो गोल्डन ट्राइ ऐंगिल बनाते हैं।" काला बच्चा ने उसकी तरफ देखते हुए कहा—"तुम जानती हो दुनिया में सबसे ज्यादा हेरोइन इस खत्ते में पैदा होती है और इसी हवाले से थाईलैण्ड हेरोइन और अन्य मादक पदार्थों के स्मगलरों की जन्नत है। सुना है यहां बहुत से इंटरनेशनल सिन्डीकेट्स काम कर रहे हैं और हम भी इसी बहती गंगा में हाथ धोने का प्रोग्राम बना रहे हैं। तुम मुझे मेरे सिन्डीकेट का नुमाइन्दा कह सकती हो। मैं यहां सिर्फ यह जायजा लेने आया हूं कि हमें यहां कदम जमाने का मौका मिल सकता है या नहीं। यद्यपि मैं आज ही यहां आया हूं और सबसे पहले मुझे टाइगर ही के बारे में मालूम हुआ है। सुना है अण्डरवर्ल्ड पर उसका कंट्रोल है और मेरे ख्याल में तुम उसके बारे में बहुत कुछ जानती हो। मैंने तुम पर भरोसा करके यह सारी बातें कही हैं, अगर तुम उसके बारे में कुछ जानकारी उपलब्ध कराओ तो मैं तुम्हें उचित माली फायदा पहुंचा सकता हूं।" काला बच्चा खामोश होकर उसकी तरफ देखने लगा। मादक पदार्थों की तस्करी और गोल्डन ट्राई ऐंगिल के बारे में उसे कैम्प के भिक्षुओं से बहुत-सी बातें मालूम हुई थीं। यह भिक्षु लोग थाईलैण्ड बरमा, लाउस, वियतनाम, चीन और हिन्दोस्तान में आजादी से घूमते रहते थे। सरहदें इनके लिए कोई मानी नहीं रखती थीं। यह लोग बहुत कुछ देखते थे। बहुत कुछ सुनते थे लेकिन अपनी जुबानें और आंखें बन्द रखते थे, इन मामलों से बिल्कुल सम्बन्धित नहीं थे। यह सिर्फ बौद्ध शिक्षा का प्रचार करते थे और कदाचित् यही वजह थी कि इन इलाकों में सफर करते हुए उनसे कोई पूछताछ नहीं की जाती थी और इन्हें कोई रोकटोक पेश नहीं आती थी। काला बच्चा की बात सुनकर शाईवान की आंखों में चमक-सी उभर आई थी।

"यहां बहुत सारे सिण्डीकेट्स काम कर रहे हैं।" वह काला बच्चा की तरफ देखते हुए बोली—"लेकिन तुम्हें दूसरे मामलात से

कोई दिलचस्पी नहीं है। सिर्फ टाइगर एक ऐसा आदमी है, जिसने चारों तरफ टांगें फैला रखी हैं। वह हेरोइन स्मगलिंग नहीं करता, उसने हेरोइन और दूसरे मादक पदार्थों की सप्लाई के लिए शहर में कई अड्डे कायम कर रखे हैं, इसके अलावा भी वह दूसरे बहुत से नाजायज धंधे करता है। कुछ अर्से पहले तक तो शहर भर के गुण्डे उसके कंट्रोल में थे लेकिन जब से महाराज से अनबन शुरू हुई है कुछ लोग उसका साथ छोड़ चुके हैं। वह महाराज से डरते हैं। उसका साथ छोड़ने वाले यद्यपि महाराज के साथ भी नहीं मिले, वह लड़ाई-झगड़ों में दोनों से अलग रहना चाहते हैं। महाराज से अनबन की वजह से टाइगर के कारोबार पर भी बड़ा असर पड़ा है लेकिन वह जिद्दी आदमी है। महाराज के सामने झुकेगा नहीं।''

''इन दो चीनियों के साथ एक तीसरा आदमी भी आया था।'' काला बच्चा ने उसे दारा का हुलिया बताया—''क्या वह भी टाइगर के साथ है?''

''वह सिंगापुर चला गया है लेकिन सुना है टाइगर के साथ मिलकर एक अलग रैकेट बनाना चाहता है। वह इसी सिलसिले में सिंगापुर वापस चला गया है। चंद रोज में आ जायेगा, यह भी सुनने में आया है कि उसने टाइगर को उस नौजवान की तलाश के लिए एक बड़ी रकम दी है। उसका कहना है कि जब तक नौजवान जिन्दा है या उसकी गिरफ्त में नहीं आ जाता, उस वक्त तक वह सुकून से काम नहीं कर सकता।''

''किम और चीफ़ांग! मेरा मतलब है वह दोनों चीनी कहां होते हैं?'' काला बच्चा ने पूछा।

''किम का तो पता नहीं लेकिन चीफांग को तो अक्सर टाइगर के साथ देखा गया था। पहले उसने रोज क्लब को अपना अड्डा बना रखा था लेकिन आजकल उसका ज्यादा वक़्त नाइट हैवन क्लब में गुजरता है।'' शाईवान ने जवाब दिया।

''सुना है महाराज की एक बहुत करीबी शागिर्द भी टाइगर से मिल गयी थी।''

''वह...तुम शायद कौशल्या की बात कर रहे हो।'' शाईवान ने कहा—''वह लड़की आजकल अपने आपको जिन्दा रखने के लिए हाथ-पैर मार रही है। महाराज से गद्दारी करके उसने अपने आपको तबाह कर लिया है। उसका ख्याल है कि टाइगर उसे बहुत बड़ा इनाम देगा लेकिन अब वह उसे मुंह नहीं लगाता अलबत्ता टाइगर ने उसे अपने एक क्लब में किक बॉक्सिंग के मुकाबलों की इजाजत दे दी

है—इसमें भी उसने कौशल्या से हमदर्दी नहीं अपने फायदे को मद्देनजर रखा था। कौशल्या एक अच्छी किक बॉक्सर है। जवान और हसीन है। लोग उसे देखने के लिए नाइट क्लब जाते हैं।"

वह कुछ कहना ही चाहता था कि दूसरे कमरे में फोन की घण्टी बजी। शाईवांग उठकर दूसरे कमरे में चली गयी और काला बच्चा उसकी बातों पर गौर करता रहा। उसने टाइगर और दारा वगैरह के बारे में कुछ ऐसी बातें बताई थीं, जो रिंग से बाहर का आदमी नहीं जान सकता था। एक लम्हे को उसे यह भी संदेह हुआ कि उसके साथ धोखा तो नहीं हो रहा है, शाईवान ने ऐसी बातें किस कदर आसानी से उसे बता दी थीं लेकिन फिर उसने इस ख्याल को जहन से झटक दिया। ऐसी शिकारी औरतों को सिर्फ पैसे का लालच होता है। वह काला बच्चा को मोटी आसामी समझकर उसके करीब आई थी। उसका मकसद काला बच्चा की जेब से ज्यादा से ज्यादा रकम ऐंठना था और इसी रकम के लालच में शायद उसने सारी बातें उगल दी थीं।

दूसरे कमरे का दरवाजा जरा साइड पर था। काला बच्चा ने मुड़कर देखा। शाईवान उसे नजर नहीं आई अलबत्ता उसकी बहुत मद्धिम-सी आवाज सुनाई दे रही थी लेकिन अल्फाज समझ में नहीं आ रहे थे। वह सीधा होकर बैठ गया।

लगभग पांच मिनट बाद काला बच्चा अपने कंधों पर हाथों का दबाव महसूस करके चौंक गया। उसने मुड़कर देखा और उसके साथ ही उसका दिल उछलकर हलक में आ गया। वह शाईवान थी, जो सोफे के पीछे से उसके ऊपर झुकी हुई थी—उसके जिस्म पर अब लिबास नाम की मामूली-सी चिन्दियां थी। काला बच्चा ने अपनी जगह से हरकत करनी चाही लेकिन वह कुछ और झुक गयी और उसके दोनों हाथ काला बच्चा के सीने पर आ गये। काला बच्चा ने उसके दोनों हाथों को पकड़कर हटाने के लिए झटका दिया तो वह सोफे के ऊपर से होती हुई उसके ऊपर आन गिरी।

शाईवान की इस हरकत से काला बच्चा बुरी तरह बदहवास हो गया था और इसमें उसका कोई कसूर नहीं था। वह उसे लाई ही इस मकसद के लिए थी। इसका उसे मुआवजा लेना था लेकिन उसके साथ आने का काला बच्चा का यह मकसद नहीं था। काला बच्चा को उससे बहुत-सी बातें मालूम हो गयी थीं और उसका उद्देश्य पूरा हो गया था।

काला बच्चा का जिस्म पसीने में सराबोर हो रहा था। व‍ह

आया

शाईवान से दूर रहने की कोशिश कर रहा था और वह कहकहे लगाती हुई उससे लिपटने की कोशिश कर रही थी।

"अच्छा! मैं चलता हूं।" काला बच्चा ने जेब से कुछ नोट निकालकर मेज पर रख दिए—"फिर मिलूंगा तुमसे।"

"अभी तुम कैसे जा सकते हो?" शाईवान उससे लिपट गयी—"मैं जिस काम का मुआवजा लेती हूं, वह पूरा करती हूं। मैं उन औरतों में से नहीं हूं जो ग्राहक की जेब से रकम निकलवा लेती हैं लेकिन उसे अपने करीब नहीं फटकने देतीं। मैं...मैं तुम्हें मायूस नहीं करूंगी...आओ ना...।"

"नहीं।" काला बच्चा ने उसके दोनों बाजू झटककर अपने आप से अलग कर दिया—"अब मुझे चलना चाहिए फिर मुलाकात होगी तो...।"

धम्म की आवाज सुनकर मेरा जुमला अधूरा रह गया। यह आवाज बाहर से आई थी और साफ लगा था कि कोई दीवार से कूदा था। उसने दरवाजे की तरफ देखा। बरामदे वाला दरवाजा मिड़ा हुआ था। उसने दरवाजे में मामूली-सी झिर्री पैदा करके बाहर झांका तो उसका दिल उछलकर हलक में आ गया।

दो आदमी बाहर की दीवार कूदकर अन्दर आये थे और उनमें से एक चीफांग था। काला बच्चा ने दरवाजा बन्द करके बोल्ट चढ़ा दिया और शाईवान की तरफ देखने लगा। उसके होठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट थी।

अब उसे सूरतेहाल का अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई। उसे बड़ी खूबसूरती से बेवकूफ बनाया गया था। नाइटक्लब में दाखिल होने के बाद कदाचित् उस पर किसी किस्म का शुब्हा हो गया था और शाईवान एक प्लानिंग के तहत उसकी मेज पर आई थी और जब वह आदमी उसे बुलाकर ले गया था तो शायद उसे कुछ निर्देश दिए गये थे। वापस आकर शाईवान टाइगर को गालियां बकने लगी थी और काला बच्चा अहमकों की तरह उसके सामने खुलता चला गया और फिर तयशुदा मंसूबे के तहत शाईवान उसे यहां ले आई थी। काला बच्चा ने यद्यपि साफतौर पर अपने बारे में कुछ नहीं बताया था लेकिन वह जिस तरह टाइगर, किम, चीफांग और कौशल्या वगैरह के बारे में कुरेद-कुरेद कर पूछ रहा था, उससे शाईवान को यकीन हो गया था कि वह वही है, जिसकी तलाश उन लोगों को है और जब फोन की घण्टी बजी थी तो वह फोन सुनने के लिए अन्दर चली गयी थी। टाइगर या चीफांग ने काला बच्चा

के बारे में पूछा था और इसकी पुष्टि कर ली गयी थी कि वह वही है और अब चीफांग अपने एक आदमी के साथ यहां पहुंच गया था।

काला बच्चा जानता था चीफांग एक बहुत जबरदस्त मार्शल आर्ट का स्ट्रीट फाइटर है। वह बहुत सफ्फाक आदमी था। काला बच्चा ने उसके हाथों अपनी मां को कत्ल होते देखा था और फिर उसने जिस तरह मास्टर फू को मौत के घाट उतारा था, वह भयानक मंजर भी काला बच्चा को याद था।

काला बच्चा ने शाईवान की तरफ देखा। वह उससे चंद फुट के फासले पर बड़े निश्चिंत अन्दाज में खड़ी थी। उसके होठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट थी। काला बच्चा चंद लम्हे उसकी तरफ देखता रहा फिर झुककर पैंट के पांयचे के अन्दर पिंडली पर चमड़े के फीते से बंधा हुआ खंजर निकाल लिया। काला बच्चा के हाथों में खंजर देखकर उसकी आंखों में दहशत-सी उभर आई और वह खौफजदा होकर पीछे हटने लगी।

"मुझे ऐसे लोगों से सख्त नफरत है, जो झूठ बोलते हैं और दूसरों को फरेब देते हैं।" काला बच्चा ने आगे बढ़ते हुए कहा–"यह लोग मेरा तो कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे लेकिन तुम इनसे इनाम की रकम वसूल करने के लिए जिन्दा नहीं रहोगी।"

"म...मेरा कोई कसूर नहीं।" वह निरन्तर पीछे हटते हुए भयभीत स्वर में बोली–"त...तुम जब क्लब में दाखिल हुए थे, तो उन्हें तुम पर शक हो गया था। उन्होंने तुम्हारी असलियत मालूम करने के लिए मुझे तुम्हारे पीछे लगाया था।"

"और तुमने उन्हें मेरी असलियत बता दी... ।" काला बच्चा ने उसे घूरा। वह मेज के कोने से टकराकर लड़खड़ाई और संभलने की कोशिश करते हुए सोफे पर गिर गयी।

काला बच्चा खंजर लिए उसके सामने खड़ा था। उसका ख्याल था कि चीफांग और उसका साथी दरवाजा तोड़ने की कोशिश करेंगे तो वह शाईवान को गिरफ्त में ले लेगा और उसे ढाल बनाकर यहां से निकलने की कोशिश करेगा–लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ अलबत्ता कदमों की आवाजें सुनाई देती रहीं। काला बच्चा की समझ में नहीं आ रहा था कि वह लोग क्या कर रहे थे और फिर अचानक वह कांप उठा।

पेट्रोल की तेज गंध उसके नथुनों से टकरा रही थी।

शाईवान ने भी सूरतेहाल का अन्दाजा लगा लिया था। उसका चेहरा धुआं-धुआं हो गया। वह एक झटके से उठ गयी और बन्द

दरवाजे की तरफ लपकी। काला बच्चा ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। उसने बोल्ट गिराकर दरवाजे को अपनी तरफ खींचा लेकिन दरवाजा नहीं खुला, उन्होंने बाहर से दरवाजे का कुण्डा लगा दिया था।

शाईवान मुड़कर उसकी तरफ देखने लगी। खौफ से उसकी आंखें फटी पड़ रही थीं। काला बच्चा ने आगे बढ़कर बोल्ट दोबारा लगा दिया और शाईवान की तरफ देखने लगा।

"यह तुम्हारा इनाम है।" काला बच्चा ने उसके चेहरे पर नजरें जमाते हुए कहा—"अभी वह छिड़के हुए पेट्रोल को माचिस की तीली दिखायेंगे और तुम्हारा यह मकान आग के शोलों में घिर जायेगा और कुछ ही देर बाद तुम्हारी लाश राख का ढेर बन जायेगी लेकिन इससे पहले के चंद मिनट कितने कष्टदायक होंगे, इसका शायद तुम्हें अन्दाजा नहीं। आग के शोले तुम्हें अपनी लपेट में ले लेंगे। तुम्हारा गोश्त जलने और गलने लगेगा। जान निकलने से पहले वह लम्हात कितने तकलीफदेह होंगे तुम चीखोगी, चिल्लाओगी अपने आपको जलते हुए देखोगी लेकिन कोई तुम्हारी मदद को नहीं आयेगा और आग बुझने के बाद जब लोगों को तुम्हारी लाश मिलेगी तो वह लाश नहीं होगी, राख का ढेर होगा।"

"नहीं-नहीं ऐसा मत कहो।" वह चीखी—"मैं मरना नहीं चाहती—इन्होंने मेरे साथ धोखा किया है—कुछ करो—काला बच्चा प्लीज।"

"ओ हो...तुम्हें तो मेरा नाम भी मालूम है। हालांकि मैंने तुम्हें अपना नाम नहीं बताया था।" काला बच्चा ने कहा।

"नाम मुझे उन्होंने बताया था।" शाईवान ने जवाब दिया—"लेकिन मुझे तुमसे नाम मालूम करने की जरूरत पेश नहीं आई। तुम्हारी बातों से पता चल गया था कि तुम काला बच्चा हो, जिसे वह मौत के घाट उतारना चाहते हैं।"

"मैं तो मरूंगा लेकिन तुम भी मेरे साथ मरोगी और यह दर्दनाक मौत तुम्हारा इनाम होगी।" काला बच्चा ने कहा।

और फिर वह हुआ जिसकी आशा काला बच्चा बहुत देर से कर रहा था। बाहर एकदम शोले भड़क उठे थे। उन्होंने सामने वाले पूरे हिस्से पर, बरामदे में दीवारों पर हर जगह पेट्रोल छिड़का था।

शाईवान चीखती हुई दौड़कर उससे लिपट गयी और काला बच्चा खिड़की के बाहर शोले उठते हुए देखता रहा, जो बड़ी तेजी से फैल रहे थे।

आग के शोले फैल रहे थे और अब बाहर शोर की आवा
भी सुनाई दे रही थी और फिर दो-तीन फायर की आवाजें भी सुन
दीं। चीफांग और उसका साथी बाहर मौजूद थे। उन्होंने लोगों
भयभीत करने के लिए हवाई फायरिंग की होगी ताकि कोई आ
बुझाने की कोशिश न करे।

अब तक काला बच्चा पर बीसियों हमले हो चुके थे और उ
लिए भिन्न-भिन्न तरीके इस्तेमाल किए गये थे और वह हर म
बच निकला था। इस मर्तबा उसे मौत के घाट उतारने के लिए
नया तरीका इख्तियार किया गया था। उन्होंने सोचा होगा कि
वह इस मर्तबा भी बच निकलेगा, इसलिए उन्होंने चांस नहीं
था और पेट्रोल छिड़ककर कॉटेज को आग लगा दी थी।

"प्लीज! कुछ करो वरना हम दोनों जलकर मर जायेंगे
शाईवान उसे दोनों बाहों से पकड़कर झिंझोड़ते हुए चीखी।

"यह कॉटेज तुम्हारा है। तुम्हें मालूम होगा कि यहां से निक
का कोई दूसरा रास्ता है या नहीं।" काला बच्चा ने कहा। आग
तपिश से बरामदे वाली खिड़की के शीशे टूट गये थे और न
धुआं कमरे में भर रहा था बल्कि शोले भी अन्दर की तरफ
रहे थे।

"यह कॉटेज मेरा नहीं है। उन्होंने मुझे चाबी देकर तुम्हें
के लिए कहा था।" शाईवान ने जवाब दिया।

"पिछली गली की तरफ कोई दरवाजा तो होगा। आओ
साथ आओ।" यह कहते हुए काला बच्चा तेजी से उस कमरे
गया, जहां टेलीफोन था।

लेकिन उस कमरे में पिछली तरफ दरवाजा नहीं था।
साथ वाले कमरे में भी कोई दरवाजा नहीं था। वह दोबारा ड्रा
में पहुंचा तो चौंक गया।

टूटी हुई खिड़की से अन्दर आने वाले शोलों से पर्दों ने
पकड़ ली थी। जलता हुआ पर्दा नीचे गिरा तो उसके साथ ही
ने भी फौरन ही आग पकड़ ली और उस तरफ रखी हुई
भी शोलों की लपेट में आ रही थीं।

अब कॉटेज में न सिर्फ धुआं पूरी तरह भर गया था
शोले भी बड़ी तेजी से फैल रहे थे। जलती हुई लकड़ियों के च
की आवाजें दिलों में और भी दहशत फैला रही थीं। बाहर
शोर की आवाजें निरन्तर सुनाई दे रही थीं।

शाईवान खौफ से थर-थर कांप रही थी। वह काला ब

ने
कि

करीब रहने की कोशिश कर रही थी। आग की तपिश उसके जिस्म को झुलसाने लगी थी। भयभीत तो काला बच्चा भी था कि अगर बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिल सका तो वह भी जलकर राख हो जायेगा।

ड्राइंगरूम के दायीं तरफ एक तंग-सी राहदारी थी, काला बच्चा बड़ी तेजी से राहदारी में दाखिल हो गया। उसके अंतिम छोर पर एक छोटा-सा किचन था और फिर इधर-उधर देखते हुए उसके होठों पर हल्की-सी मुस्कराहट आ गयी। किचन में ही पिछली गली का दरवाजा भी था। उसने जल्दी से आगे बढ़कर बोल्ट गिरा दिया। दरवाजा खोलने के लिए उसे बाहर की तरफ धक्का दिया लेकिन दरवाजा आधे इंच से ज्यादा नहीं खुला। उसके लिए यह बात बड़ी सनसनीखेज थी कि दरवाजे के बाहर की तरफ एक आठ इंच चौड़ा और लगभग एक इंच मोटा तख्ता लगाकर कीलें ठोंक दी गयी थीं और वह कार्यवाही कदाचित् उस वक्त की गयी थी जब क्लब में शाईवान ने उसे बातों में लगा रखा था।

किचन की एक खिड़की सेहन की तरफ खुलती थी और उस खिड़की में भी शोले लपक रहे थे किचन में धुंवा भरा हुआ था, शाईवान घुटनों के बल जमीन पर बैठ गयी। खांसते खांसते उसका दम घुटने लगा था। धुंवा काला बच्चा के फेफड़ों में भी दाखिल हो रहा था। आंखों और नाक से पानी बहने के अलावा धुवें से उसका सांस भी घुटने लगा था।

उसने सोचने में वक्त जाया नहीं किया और कंधे से दरवाजे पर टक्करे मारने लगा। छः सात टक्करें मारने के बाद उसे एहसास हुआ कि कीलें अपनी जगह छोड़ रही हैं।

राहदारी में बिछे हुए कालीन ने भी आग पकड़ ली थी और इस तरफ से भी शोले किचन में पहुंच रहे थे। शाईवान एक दीवार के साथ लगी बैठी थी। आग की तपिश और खांसी से वह बदहाल हो रही थी। काला बच्चा ने दरवाजे पर टक्करें मारने का काम जारी रखा और अंततः एक तरफ से तख्ते ने जगह छोड़ दी। दरवाजा खुल गया। काला बच्चा ने मुड़कर देखा। शाईवान अपनी जगह पड़े-पड़े जमीन पर औंधा गयी थी। अब वह खांस भी नहीं रही थी। काला बच्चा को समझने में देर नहीं लगी कि वह बेहोश हो चुकी है। उसने काला बच्चा को मौत के जाल में फंसाया था। पहले काला बच्चा ने सोचा कि उसे यहीं पड़ा रहने दे। उसकी सजा यही होनी चाहिए कि उसे जलकर राख होने दिया जाए लेकिन उसके जमीर ने गंवारा

नहीं किया। उसने पहले झुककर उसे हिला-डुला कर देखा और फिर कंधे पर उठा लिया। पैर की ठोकर से उसने दरवाजा पूरी तरह खोल दिया और फिर बाहर छलांग लगा दी।

लोगों का हुजूम मकान के सामने वाले रुख पर था। शोर की ज्यादा आवाजें उसी तरफ से आ रही थीं। अकबी गली में भी चंद लोग जमा होने लगे थे। वह दरवाजे से निकलकर चंद कदम ही भागा था कि फिजां फायर की आवाज से गूंज उठी और उसके साथ ही उसने कंधे पर लदी हुई शाईवान के जिस्म में हल्का-सा झटका महसूस किया था, उसके जिस्म के किसी हिस्से में गोली लगी थी। वह रुके बगैर दौड़ता रहा और एक के बाद एक दो फायर और हुए लेकिन यह फायर सामने की तरफ से हुए थे और उनका निशाना काला बच्चा नहीं था। यह गोलियां उस शख्स पर चलाई गयी थीं, जिसने काला बच्चा पर फायर किया था। फायरों की आवाज से गली मौजूद लोग इधर-उधर भाग खड़े हुए। एक आदमी तेजी से दौड़ता हुआ उसके करीब पहुंच गया। उसके हाथ में पिस्तौल था।

"इस तरफ उस गली में भागो।" वह एक तरफ इशारा करते हुए चीखा।

काला बच्चा को समझने में देर नहीं लगी कि वह उसका हमदर्द था। वह तेजी से दौड़ता हुआ उस तंग-सी गली में घुस गया। उसने एक हाथ से शाईवान को संभाल रखा था और दूसरे हाथ में खंज था।

पिछली गली से एक बार फिर फायर की आवाज सुनाई दी और उसके साथ ही एक खौफनाक चीख भी गूंजी थी और उसके चंद ही सेकिण्ड बाद काला बच्चा का वह हमदर्द दौड़ता हुआ उस गली में आ गया। गली के अगले मोड़ पर एक टिकटिक खड़ा था।

"जल्दी बैठो।" उसका हमदर्द चीखता हुआ ड्राइविंग सीट प बैठ गया।

उसने पहले बेहोश शाईवान को टिकटिक में डाला और फि खुद भी सवार हो गया। इस दौरान टिकटिक स्टार्ट होकर हरक में आ चुका था।

अभी बारह भी नहीं बजे थे। सड़कों पर ट्रेफिक था। का बच्चा का वह हमदर्द बड़ी महारत और तेज-रफ्तारी से टिकटिक च रहा था। लगभग आधे घण्टे बाद वह क्रिस्टल होटल के करीब होते हुए प्रासासांग खरो रोड पर पहुंच गये। टिकटिक एक बहुत ब बंगले के सामने रुका। चंद सेकिण्ड बाद गेट खुला और टिकटि

अंदर दाखिल हो गया। काला बच्चा का वह हमदर्द बड़ी फुर्ती से नीचे उतरा और कुछ चीखता हुआ बरामदे की तरफ भाग खड़ा हुआ।

काला बच्चा ने नीचे उतरकर शाईवान को उठाना चाहा तो एक आदमी दौड़ता हुआ वहां आ गया और उसने शाईवान को कंधे पर उठा लिया। पिस्तौल या रिवॉल्वर से चलाई हुई गोली उसके कंधे के करीब बाजू पर लगी थी, अगर उसका बाजू जद में न आता तो गोली काला बच्चा की गर्दन पर लगती।

जो शख्स उसे वहां से निकालकर लाया था। वह कांग था। उसे भी मास्टर होचिन ने काला बच्चा की निगरानी पर लगा रखा था। उसके वाट से निकलते ही वह उठा और उसने काला बच्चा का पीछा शुरू कर दिया था। उसने टिकटिक का इन्तजाम पहले से ही कर रखा था। उसे अन्दाजा था कि कहीं आने-जाने के लिये वह किसी टिकटिक या टैक्सी में ही सफर करेगा और फिर रोज क्लब से जब वह टैक्सी पर शाईवान के साथ रवाना हुआ तो कांग को शक हो गया था। उसने टिकटिक में काला बच्चा का पीछा किया और जब वे लोग गली में कॉटेज के सामने उतर गये तो कांग ने अपना टिकटिक गली के दूसरी तरफ रोक लिया था। उसने चीफांग और दूसरे आदमी को कॉटेज में दाखिल होते भी देख लिया था।

फिर कॉटेज में आग लगते देख वह समझ गया कि चीफांग काला बच्चा को जिन्दा जलाना चाहता है। वह कॉटेज के सामने वाले रुख से काला बच्चा की कोई मदद नहीं कर सकता था, क्योंकि उस तरफ चीफांग और उसका साथी मौजूद थे। वह अपना टिकटिक लेकर पिछली गली में आ गया। उस तरफ भी चीफांग के दो आदमी मौजूद थे, जिनमें से एक को तो वह घसीटता हुआ अंधेरी गली में ले गया था और उसका गला घोंटकर लाश गली में फेंक दी थी और जब दोबारा उस गली में पहुंचा तो उस वक्त काला बच्चा बेहोश शाईवान को कंधे पर लादे पिछले दरवाजे से निकल रहा था। चीफांग के दूसरे आदमी ने काला बच्चा पर गोली चलाई थी, उस मौके पर कांग ने जवाबी फायरिंग करके उसका अगला हमला काला बच्चा की तरफ बढ़ते रोक लिया था। चीफांग के आदमी को गोली लग गयी थी। कांग को अन्दाजा नहीं था कि वह जिन्दा बच गया या मर गया था। वह बहरहाल काला बच्चा को वहां से निकाल लाया था।

काला बच्चा को मालूम नहीं था कि वह बंगला किसका था। शाईवान को एक मेज पर लिटा दिया गया था। वह अभी तक बेहोश

Vinku Y'Savay
New Market, M. M. U

थी। उसके बाजू के जख्म से खून बह रहा था और एक आदमी उसे होश में लाने की कोशिश कर रहा था। वह शख्स जिस तरह से शाईवान को मेडीकल हैल्प दे रहा था, उससे साफ पता चलता था कि वह डॉक्टर था।

कांग दूसरे कमरे में फोन पर किसी से बातें कर रहा था फिर उसने फोन बन्द कर दिया और काला बच्चा को लेकर बाहर आ गया। पोर्च में एक कार भी खड़ी थी। उसने काला बच्चा को कार में बैठने का इशारा किया और खुद ड्राइविंग सीट संभाल ली। चंद सेकिण्ड बाद ही कार बंगले से निकलकर तेज रफ्तारी से विभिन्न सड़कों पर दौड़ने लगी। उनके इस सफर का अंत उसी वाट में हुआ था। जहां काला बच्चा ठहरा हुआ था। वह काला बच्चा को वाट के सामने उतारकर कुछ कहे बगैर चला गया।

वाट के रिहाइशी हिस्से में सन्नाटा था। कुछ कमरों में रोशनी हो रही थी, मगर दरवाजे बन्द थे। कुछ भिक्षु रात को देर तक अपनी धार्मिक पुस्तक के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। काला बच्चा का कमरा ऊपर वाली मंजिल पर था। वह सीढ़ियां चढ़कर दबे कदमों गैलरी में चलता हुआ अपने कमरे के सामने पहुंचा तो दरवाजा बन्द था। मगर अन्दर रोशनी हो रही थी। काला बच्चा ने आइस्तगी से दरवाजा खोला और अन्दर दाखिल हो गया।

थाईवांग उसके बिस्तर पर सो रही थी। उस वक्त रात को डेढ़ बजा था। काला बच्चा ने उसे जगाना मुनासिब नहीं समझा और कुर्सी पर बैठकर जूते उतारने लगा और फिर हल्की-सी आहट सुनकर थाईवांग की आंख खुल गयी। वह कोहनियां टेकते हुए उठकर बैठ गयी। उसका अन्दाज ऐसा था जैसे बहुत थकी हुई हो। चेहरा सुता हुआ था। काला बच्चा ने अधिक ध्यान नहीं दिया। शायद नींद की वजह से वह सुस्त हो रही थी।

"यह...यह तुम्हारा हुलिया क्या हो रहा है।" वह जैसे चौंक गयी—"कोई गड़बड़...?"

काला बच्चा जवाब देने की बजाए उठकर आइने में देखने लगा। उसकी फ्रैंचकट दाढ़ी गायब थी और बाल बिखरे हुए थे। लिबास और चेहरे पर धुवें के कुछ प्रभाव भी नजर आ रहे थे। चेहरे पर एक-दो जगह धब्बे थे। दोनों हाथों पर भी धब्बे थे।

"ओह?" उसने कहा—"हां-गड़बड़ हो गयी थी। चीफांग ने एक कॉटेज में मुझे जिन्दा जलाने की कोशिश की थी।" चंद लम्हों की खामोशी के बाद काला बच्चा ने उसे सब बता दिया।

"वह लड़की कहां है?" थाईवांग ने उसके खामोश होने पर पूछा।

"उस बंगले में जहां कांग मुझे ले गया था।" उसने जवाब दिया—"मुझे पता नहीं वह जिन्दा है या मर चुकी है लेकिन मेरे ख्याल में अगर वह जिन्दा है तो उससे चीफांग और टाइगर वगैरह के बारे में कुछ मालूम किया जा सकता है।"

"मेरा ख्याल है इस लड़की के बारे में महाराज को सूचना दे दी गयी होगी।" थाईवांग ने कहा—"अगर वह जिन्दा बच गयी तो महाराज के लिए कारामद साबित होगी।"

वह अभी बातें कर ही रहे थे कि बाहर किस्म-किस्म की आवाजें सुनाई देने लगीं। उसने कमरे से निकलकर देखा तो तीन-चार आदमी सीढ़ियों पर आ रहे थे। उनमें सबसे आगे मास्टर होचिन था जिसे देखकर काला बच्चा चौंके बगैर न रह सका था। उस वक्त उसका आगमन निरुद्देश्य नहीं हो सकता था।

मास्टर होचिन जैसे ही करीब पहुंचा काला बच्चा ने उसे बो किया और कमरे में दाखिल होने के लिए रास्ता छोड़ दिया। मास्टर होचिन कमरे में आ गया था जबकि बाकी आदमी बाहर ही रुक गये थे। मास्टर होचिन काला बच्चा के सामने खड़ा उसे घूर रहा था। फिर वह उसके दोनों बाजू पकड़कर मसल्स टटोलने लगा।

"बहुत खूब...।" वह मुस्कराते हुए बोला। काला बच्चा ने उसकी आवाज में हल्का-सा जोश महसूस कर लिया था—"मुझे खुशी है कि तुममें इतनी हिम्मत और इतना हौसला तो पैदा हुआ कि किसी को ललकार सको। तुमने कुछ दावं-पेंच भी सीख लिए हैं और तुम्हारे बाजुओं में इतनी ताकत भी है कि एकसाथ दो-तीन प्रतिद्वंद्वियों का मुकाबला कर सको। लेकिन तुम्हारा यह ऊपर का चैम्बर बिल्कुल खाली है।" उसका इशारा काला बच्चा के सिर की तरफ था—"ताकत के साथ खोपड़ी भी इस्तेमाल करनी पड़ती है, लेकिन मालूम होता है कि तुम अक्ल से बिल्कुल खाली हो। शहर में घूमने-फिरने की हद तक तो मामला ठीक था लेकिन शेरों की कछार में घुसकर तुमने बहुत बड़ी मूर्खता का सबूत दिया है—मैंने शेरों की कछार शब्द इसलिए इस्तेमाल किये हैं कि अपने घर में बिल्ली भी शेर बन जाती है। रोज क्लब टाइगर का सबसे मजबूत गढ़ है और तुम अकेले वहां घुस गये थे।" वह चंद लम्हों को खामोश हुआ फिर काला बच्चा के कंधे पर हाथ रखता हुआ बोला—"मैं तुम्हारे जज्बात से बहुत अच्छी तरह वाकिफ हूं दोस्त! लेकिन इस तरह की मूर्खता नुकसान पहुंचा सकती

है। अपने दुश्मन को कभी कमजोर मत समझो, टाइगर और चीफांग जैसे दुश्मन पर वार करने से पहले प्लानिंग की जरूरत होती है। क्या हमने तुमसे वादा नहीं किया था कि तुम्हारा इन्तकाम जरूर लेंगे। क्या महाराज ने तुमसे यह वादा नहीं किया था कि तुम्हें इस काबिल बना देंगे कि तुम खुद अपने दुश्मनों का मुकाबला कर सको। इसमें शक नहीं कि तुम्हें इस काबिल बना दिया गया है कि तुम प्रतिद्वंद्वी का मुकाबला कर सको। लेकिन इसमें तजुर्बे की जरूरत है, जो अभी तुम्हारे पास नहीं है। इस तरह उनका सामना करके तुम अपनी जान खतरे में डाल रहे हो। तुम्हें शायद अन्दाजा नहीं कि महाराज तुम्हारे बारे में किस कदर फिक्रमंद रहते हैं। अगर हमसे ऐसी गलती हुई होती तो महाराज हमारी खाल खिंचवा देते, लेकिन तुम्हारा मामला भिन्न है। महाराज तुम्हें बहुत चाहते हैं। वह तुम्हें कुछ बनाना चाहते हैं इसलिए तुम्हारा फायदा इसी में है कि अपने आपको समेटकर रखो जब मुनासिब वक्त आयेगा तो हम खुद ही तुम्हें आगे कर देंगे—यह महाराज का हुक्म है कि अब तुम हमारी इजाजत के बगैर इस वाट से बाहर नहीं निकलोगे?"

काला बच्चा खामोशी से खड़ा होचिन की बातें सुनता रहा। उसने कुछ भी गलत नहीं कहा था। अगर उसने इस मौके पर अपनी मनमानी शुरू कर दी तो नुकसान उसका ही होगा। उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा। फिर इस बात की भी सम्भावना थी कि उसकी इन हरकतों की वजह से महाराज अपना हाथ खींच ले और वह अकेला रह जाए। उसने मास्टर होचिन से वादा कर लिया कि वह आइन्दा इजाजत के बगैर वाट से बाहर नहीं जायेगा।

मास्टर होचिन ने दरवाजे की तरफ रुख करके किसी को आवाज दी। एक आदमी फौरन ही अन्दर आ गया। मास्टर ने तेज लहजे में कुछ कहा। वह आदमी उसे बाजू से पकड़कर कमरे से बाहर ले गया और गैलरी में फर्श पर बिठाकर कैंची से उसके बाल काटने लगा। काला बच्चा एक गहरी सांस लेकर रह गया। वह काला बच्चा के सिर पर इस तरह कैंची चलाता रहा जैसे दुम्बे के बाल उतारे जाते हैं।

मास्टर होचिन उसे और हिदायतें देने के बाद चला गया। वह जब कमरे में दाखिल हुआ तो थाईवांग उसे देखकर बेइख्तियार कहकहे लगाने लगी। काला बच्चा ने जब आइना देखा तो उसका दिल चाहा कि फूट-फूट कर रोना शुरू कर दे। उसका सिर ऐसा हो रहा था जैसे बंजर जमीन पर हल चला दिया गया हो।

उस दिन के बाद वह कई रोज तक वाट से बाहर नहीं निकला। रूटीन के मुताबिक दिन गुजरते रहे लेकिन इस दौरान में काला बच्चा ने एक बात खासतौर से नोट की थी कि थाईवांग रोज ब रोज काहिल और सुस्त होती जा रही थी। कभी तो वह बेजान-सी पड़ी रहती। उसकी आंखों के नीचे स्याह धब्बे भी नजर आने लगे थे। जब वह कैम्प से रवाना हुए थे तो मास्टर हांगसो ने थाईवांग को हिदायत की थी कि वह अपनी एक्सरसाइज जारी रखे। यहां आकर वह चंद रोज तक तो यह एक्सरसाइज करती रही थी फिर उसके नागे होते चले गये और अब तो कई रोज से उसने एक्सरसाइज नहीं की थी और काला बच्चा का ख्याल था कि यह सुस्ती और काहिली एक्सरसाइज़ न करने का नतीजा था। वह जब तक एक्सरसाइज करती रही थी। उसने एक बार भी प्रताड़ना पहुंचाने की बात नहीं की थी लेकिन अब काला बच्चा सोच रहा था कि वह किसी भी वक्त उससे ऐसी फरमाइश कर सकती थी।

काला बच्चा ने एक बात खासतौर से यह भी नोट की थी कि वह रोजाना शाम के वक्त खानकाह के उस हिस्से में चली जाती थी, जहां प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले आया करते थे। काला बच्चा उस वक्त भिक्षुओं को ट्रेनिंग देने में व्यस्त रहता था। इसलिए कभी यह नहीं जान सका कि वह उस तरफ क्यों जाती है? कभी तो वह वापस आने के बाद पहले की तरह चाक-चौबन्द नजर आने लगती और कभी उसके चेहरे पर बेपनाह मायूसी दिखाई देती।

और फिर एक रोज वह आधीरात को काला बच्चा को अपने कमरे में ले गयी। उसने दरवाजा बन्द कर दिया और बिस्तर के नीचे छुपाई हुई एक लचकदार छड़ी उसकी तरफ फेंक दी और कमीज उतारकर बिस्तर पर औंधी लेट गयी। काला बच्चा के पास उसकी पिटाई के सिवा कोई चारा नहीं था। वह पिटती रही और सिसकारियां भरती रही और फिर काला बच्चा उसे छोड़कर अपने कमरे में आ गया।

चंद रोज और गुजर गये। आमतौर पर पिटने के बाद थाईवांग चंद रोज तक छशास बशास और चाको-चौबन्द रहती थी लेकिन इस मर्तबा ऐसा नहीं हुआ था। वह ज्यादातर बुझी-बुझी सी रहने लगी थी। आंखों के गिर्द स्याह धब्बे और गहरे हो गये थे और गाल पिचके हुए से महसूस होने लगे। काला बच्चा उसके लिए फिक्रमंद होने लगा। वह बड़ी हसीन औरत थी लेकिन उसका हुस्न गारत होने लगा था। काला बच्चा यही समझ रहा था कि उसे अपना गुजरा हुआ वक्त

धार आ रहा है। वह शाहाना ठाट-बाट के साथ जिन्दगी गुजार रही थी लेकिन काला बच्चा की वजह से उसका सबकुछ खत्म हो गया और अब वह एक वक्त के खाने के लिए भी दूसरों की मोहताज थी। उसकी आजादी खत्म होकर रह गयी थी। टाइगर के गुर्गे मौत के फरिश्तों की तरह उसकी ताक में थे। वह इन पनाहगाह से बाहर निकलते ही मारी जायेगी और शायद यही गम उसे अन्दर ही अन्दर खाये जा रहा था। एक रोज काला बच्चा ने कुछ पूछने की कोशिश की तो वह टाल गयी। उससे अगले रोज काला बच्चा ने उसे अजीब-सी कैफियत में देखा। उससे बातें करते हुए वह बार-बार अपनी उंगलियां मुंह में डालकर हौले-हौले दांतों में चबा रही थी। कभी वह अपने जिस्म पर चुटकियां काटने लगती।

"क्या बात है—तुम्हारी तबियत तो ठीक है ना?" काला बच्चा ने पूछा।

"हां...मैं ठीक हूं...सर्दी लग रही है...तुम जाओ। मैं चादर ओढ़कर सो जाऊंगी तो ठीक हो जाऊंगी।" उसने जवाब दिया।

वह अपने कमरे में आ गया लेकिन थाईवांग का ख्याल अपने जेहन से नहीं निकाल सका। उसकी हालत देखकर उसे अफसोस हो रहा था। उसने सोचा कि इस बुध को मास्टर होचिन आयेगा तो उससे बात करेगा। उस रोज शाम को जब वह रिंग में अपने शागिर्दों को प्रैक्टिस करा रहा था तो उसने थाईवांग को वाट की तरफ जाते देखा। वह लगभग आधे घण्टे बाद वापस आई थी और सीधी अपने कमरे में चली गयी थी। उसके तकरीबन एक घण्टे बाद काला बच्चा ने उसे दोबारा देखा तो वह पूरी तरह चाक-चौबन्द नजर आई थी। थाईवांग की इस तब्दीली पर उसे बड़ी हैरत हुई थी। उस रात काला बच्चा देर तक उसके कमरे में रहा। वह बहुत चहक-चहक कर बातें करती रही थी।

सुबह जब काला बच्चा उसके कमरे में गया तो वह मौजूद नहीं थी। शायद वह बाथरूम गयी हुई थी। बाथरूम्स गैलरी के आखिर में बने हुए थे।

वह उसके बेड पर अधलेटा हो गया और तकिया उठाकर सिर के नीचे रख लिया, इसके साथ ही वह चौंक गया। तकिए के नीचे प्लास्टिक की दो पुड़ियां रखी हुई थीं, जिनमें सफेद रंग का कोई पाउडर था। एक पुड़िया खुली हुई थी और दूसरी बन्द थी। उसमें पाउडर की मात्रा दो ग्राम से ज्यादा नहीं होगी। काला बच्चा ने खुली पुड़िया वहीं रहने दी और पैक पुड़िया उठाकर जेब में डाल ली। तकिए को

उसकी जगह पर रखा और बेड से उठकर कुर्सी पर बैठ गया।

काला बच्चा का ख्याल था कि वह कोई दवा थी, जो थाईवांग इस्तेमाल कर रही थी लेकिन उसने इसका जिक्र तक नहीं किया था कि वह कोई दवा इस्तेमाल कर रही है। अचानक उसके जहन में एक और ख्याल उभरा।

उसने हेरोइन कभी देखी नहीं थी। सिर्फ नाम सुना था। जंगल वाले कैम्प में भिक्षुओं से यह भी सुना था कि हेरोइन का नशा बड़ा खतरनाक होता है। यह अच्छे भले सेहतमंद आदमी को चंद रोज के अन्दर-अन्दर निचोड़ कर रख देता है। नशाबाज को हेरोइन न मिले तो वह मुर्दों की तरह पड़ा रहता है। भूख नहीं लगती। जिस्म टूटने लगता है और वह अपने आपको नोंचने लगता है।

मेरा दिमाग चकराने लगा। कई रोज से वह थाईवांग को इस कैफियत में देख रहा था। खाने में उसे कोई दिलचस्पी नहीं रही थी। उसे अक्सर मुर्दों की तरह पड़े देखा था। उसके गाल पिचक गये थे। आंखें अन्दर को धंसी जा रही थीं। एक रोज पहले काला बच्चा ने उसे अपनी उंगलियां चबाते और अपने आपको नोंचते हुए देखा था और फिर शाम के बाद जब वह बाहर का चक्कर लगा आई थी तो उसके एक घण्टे बाद वह बड़ी हद तक नॉर्मल नजर आई थी।

काला बच्चा के दिमाग में आंधियां-सी चल रही थीं। क्या थाईवांग हेरोइन इस्तेमाल करने लगी थी। उसे यह हेरोइन कौन लाकर देता था। कोई बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। चंद सेकिन्ड बाद ही वह उठकर अपने कमरे में आ गया।

थाईवांग से उसकी मुलाकात लगभग एक घण्टे बाद हुई थी काला बच्चा ने जाहिर नहीं किया था कि वह उसके कमरे में गया था और फिर उस रोज काला बच्चा ने एक बूढ़े भिक्षु को अलग ले जाकर वह पुड़िया दिखाई तो यह तस्दीक हो गयी कि वह हेरोइन ही थी।

यह तस्दीक हो जाने के बाद काला बच्चा अपने जिस्म प च्यूटियों-सी रेंगती महसूस करने लगा। थाईवांग को यह लत कैसे लग गयी थी और वह यह हेरोइन कहां से लेती थी, फिर उसके जहन में अचानक ही एक ख्याल उभरा। वह रोजाना शाम को खानका की तरफ जाती थी। शायद उसी तरफ वह किसी से हेरोइन लेती थी। शाम के बाद वह थाईवांग के कमरे में आ गया तो अजीब सूरतेहाल नजर आई। कमरे की हर चीज बिखरी हुई नजर आई बिस्तरा उल्टा हुआ था—तकिए का गिलाफ भी अलग पड़ा हुआ था।

"क्या हुआ—यह क्या कर रही हो—।" कुछ खो गया

क्या—"काला बच्चा ने इधर-उधर देखते हुए पूछा।"

"ओह...न...नहीं क...कुछ नहीं...।" वह गड़बड़ा गयी।

"तो फिर यह सब क्या है।" काला बच्चा ने बिखरी हुई चीजों की तरफ इशारा किया।

"ओ...क...कुछ नहीं...ऐसे ही पता नहीं मुझे क्या हो गया है।" वह चीजें उठाकर इधर-उधर फेंकने लगी।

काला बच्चा उसे पकड़कर बाहर ले आया। उसका ख्याल था ताजा हवा में उसकी कैफियत कुछ संभल जायेगी लेकिन उसकी बेचैनी बढ़ती गयी।

दूसरे रोज शाम को वह खानकाह की तरफ गयी तो काला बच्चा ने उसी बूढ़े भिक्षु को इशारा किया। वह भी उठकर थाईवांग के पीछे चल पड़ा। थाईवांग आधे घण्टे बाद वापस आई और इधर-उधर देखे बगैर अपने कमरे में चली गयी। उसके थोड़े ही देर बाद वह बूढ़ा भिक्षु भी वापस आ गया।

"थंगचो।" उसने काला बच्चा के कान में सरगोशी की—"वह गेट के जंगले के साथ खड़ा है। उसके पास कुछ और लोग भी आ रहे हैं। थाईवांग ने उससे कोई चीज ली थी, जिसे वह अपने लिबास में छुपाकर वापस आ गयी।

काला बच्चा उछल पड़ा। थंगचो वही भिक्षु था जिसे उसने जंगल वाले कैम्प में मुकाबले में नॉक आउट कर दिया था। वह तो उसी रात महाराज के साथ कैम्प में वापस आ गया था और बाद में पता चला था कि दूसरे रोज थंगचो ने भी तबियत खराब होने का बहाना करके कैम्प छोड़ दिया था। उसके दो-तीन रोज बाद काला बच्चा ने उसे एक बार इस खानकाह में भी देखा था।

"वह बड़ा कमीना आदमी है।" बूढ़ा भिक्षु कह रहा था—"मुझे याद है उसे कम से कम दो बार महाराज से सजा भी मिल चुकी है। सुना है तुमने कैम्प में उसे बड़ी जोरदार शिकस्त दी थी। थाईवांग भी तो वहां थी—हो सकता है यह आदत उसे वहीं से पड़ी हो।"

"नहीं।" काला बच्चा ने इन्कार में सिर हिलाया—"मैं समझ गया मुआमला क्या है। अब तुम एक और काम करो। तुम अभी और इसी वक्त मास्टर होचिन के पास चले जाओ और उससे कहो कि मैं तुरन्त ही मिलना चाहता हूं और एक बात जहन में रखना किसी को इस बात का पता न चले।

भिक्षु चंद लम्हे उसकी तरफ देखता रहा फिर खामोशी से बाहर चला गया।

काला बच्चा का दिमाग घूम रहा था। डांगची वाकई बहुत कमीना इंसान साबित हुआ था। वह अपनी शिकस्त को नहीं भूला था। काला बच्चा तो उस मुकाबले को खेल ही समझा था लेकिन उसने मुकाबले के दौरान भी कुछ इस तरह से हमले किए थे जैसे सचमुच की लड़ाई लड़ रहा हो और काला बच्चा को हर कीमत पर शिकस्त देना चाहता हो और जब काला बच्चा के हाथों नॉकआउट हुआ तो इसे उसने अपनी तोहीन समझा। उसने दूसरे ही रोज कैम्प छोड़ दिया। वह शायद काला बच्चा से बदला लेने के लिए मौके की ताक में था। उस पर वार करने का मौका नहीं मिल सका अलबत्ता थाईवांग उसके हत्थे चढ़ गयी। उसने थाईवांग को हेरोइन का आदी बना दिया। इस तरह वह अपनी शिकस्त का बदला लेना चाहता था।

काला बच्चा मानसिक तौर पर इस कदर अपसेट हो चुका था कि उसने क्लास डिसमिस कर दी और अपने कमरे की तरफ आ गया। थाईवांग के कमरे के सामने से गुजरते हुए वह रुक गया। दरवाजा बन्द था और अन्दर बत्ती जल रही थी। यह दो पट का दरवाजा था। तख्तों में बहुत मामूली-सी झिर्री थी। काला बच्चा ने झांककर देखा तो कांप उठा। थाईवांग बेड पर मुर्दों की तरह पड़ी हुई थी। उसके दोनों बाजू आसपास फैले हुए थे। सांस तेज होने की वजह से उसके सीने पर उतार-चढ़ाव दूर से नजर आ रहा था। बेड के करीब छोटी मेज पर चांदी जैसे कागज का एक टुकड़ा, प्लास्टिक की एक नल्की, माचिस और सफेद प्लास्टिक की एक पुड़िया पड़ी हुई थी।

काला बच्चा ने दरवाजे को धक्का दिया। अन्दर से कुण्डा लगा हुआ था। उसने दस्तक देने के साथ ही झिर्री से आंख लगा दी। थाईवांग बमुश्किल बेड से उठी—"उसने प्लास्टिक वाली पुड़िया उठाकर तकिए के नीचे छुपा दी। दूसरी चीजें बेड के नीचे फेंक दीं और दरवाजा खोलकर दोबारा बेड पर जा गिरी।"

"तुम्हारी तबियत तो ठीक है—क्या हुआ तुम्हें?" काला बच्चा ने पूछा।

"मेरी तबियत ठीक नहीं है—सोने दो—जाओ, तुम भी सो जाओ।" थाई ने जवाब दिया। उसकी आवाज गहरे कुवें की तह से आती हुई महसूस हो रही थी।

"थाईवांग... ।" काला बच्चा कुर्सी खींचकर उसके करीब बैठ गया—"अब मुझसे कुछ छुपाने की जरूरत नहीं। मुझे पता चल गयी

" जा रहा है, लेकिन मैं तुम्हें इस तरह मरने नहीं दूंगा।"

"त...त...तुम झूठ बोलते हो...म...मैंने कोई जहर नहीं लिया।" उसने रुक-रुक कर जवाब दिया। हैरोइन का नशा अपना असर दिखा रहा था।

"यह...सब क्या है।" काला बच्चा ने तकिए के नीचे से पुड़िया निकाल ली—"क्या तुम नहीं जानती कि यह एक ऐसा जहर है, जो एक दिन तुम्हें मौत की नींद सुला देगा, जिस रोज थंगचो ने तुम्हें पुड़िया दी थी। तुमने मुझे क्यों नहीं बताया था, क्या तुम्हारे जहन में यह बात नहीं आई थी कि वह अपनी शिकस्त का बदला लेने के लिए तुम्हें हेरोइन का आदी बनाकर मौत के मुंह में धकेलना चाहता है। तुमने मुझे क्यों नहीं बताया था—बोलो जवाब दो।"

"त...तुम कौन होते हो मुझसे पूछने वाले...आं...।"

काला बच्चा ने उसे पकड़कर एक झटके से उठाया और उसके मुंह पर जोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया। उसके मुंह से चीख निकली और वह दोबारा बिस्तर पर गिर गयी। काला बच्चा को उसे थप्पड़ मारने का अफसोस भी हुआ। वह अपने हवास में नहीं थी और काला बच्चा जानता था कि जब वह होश में आयेगी तो अपने किए पर पश्चाताप करेगी।

"मुझे सोने दो...जाओ, तुम जाओ।" वह रुक-रुक कर बोली।

काला बच्चा ने उसका तकिया उठाकर देखा। खुली हुई पुड़िया के अलावा एक और पैकशुदा पुड़िया भी थी। उसने दोनों पुड़ियां जेब में डाल लीं। बेड के नीचे से माचिस प्लास्टिक का पाइप और वह कागज भी निकाल लिया—वह पेपर दोनों तरफ से काला हो रहा था। वह यह चीजें लेकर कमरे से बाहर आ गया और दरवाजा भेड़कर बाल्कनी में ही खड़ा हो गया। यह ब्लाक कुछ इस तरह बना हुआ था कि अन्दर आने के लिए दोनों तरफ जीने थे और कमरों के सामने तकरीबन चार फुट चौड़ी-लम्बी बाल्कनी थी। इस तरह किसी कमरे तक पहुंचने के लिए किसी भी जीने से आया जा सकता था।

तकरीबन चालीस मिनट बाद मास्टर होचिन आ गया। उसके साथ वह बूढ़ा भिक्षु भी था, जिसे उसने भेजा था। काला बच्चा वहीं खड़े-खड़े उसे परिस्थिति से आगाह किया और सारी चीजें उसके हवाले कर दीं।

अन्दर आकर मास्टर होचिन ने थाईवांग को देखा। वह उस वक्त बिल्कुल बेसुध पड़ी थी।

"परेशान होने की जरूरत नहीं।" मास्टर होचिन ने उसकी तरफ देखते हुए कहा—"यह ठीक हो जायेगी लेकिन हमें कल ही थंगचो का बन्दोबस्त करना होगा। मैं थाईवांग को ले जा रहा हूं। कल दिन में किसी वक्त तुमसे मिलूंगा।" उसने बूढ़े भिक्षु को इशारा किया।

भिक्षु आगे बढ़ा तो काला बच्चा ने इशारे से उसे रोक दिया और खुद आगे बढ़कर थाईवांग को कंधे पर उठा लिया। चंद रोज पहले तक वह बड़ी सेहतमंद औरत थी लेकिन हेरोइन के इस्तेमाल ने उसे खोखला कर दिया था। उसका वजन आधा भी नहीं रह गया था। काला बच्चा उसे लेकर सीढ़ियों से उतरा तो कुछ और भिक्षु भी उस तरफ आ गये थे और हैरत से यह सब कुछ देख रहे थे।

बूढ़े भिक्षु ने अकबी दरवाजा खोल दिया। बाहर गली में मास्टर होचिन की वैन खड़ी थी। उसने थाईवांग को वैन में डाल दिया। मास्टर के इशारे पर वह बूढ़ा भिक्षु भी वैन में बैठ गया। मास्टर होचिन ने ड्राइविंग सीट संभाल ली थी।

वैन हरकत में आकर दूर होती चली गयी और काला बच्चा वहीं खड़ा उसकी अकबी सुर्ख बत्तियों को देखता रहा। उसकी आंखें नम हो गयी थीं।

□□□
□□□

वह शाम का वक्त था। वाट में इस वक्त प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों का हज्जुम था। इस वक्त उस जंगले का दरवाजा भी खुला हुआ था, जिसमें महात्मा बुद्ध का सोने का बुत था। खालिस सोने की यह ठोस मूर्ति लगभग आठ फुट बुलन्द थी और उसका घेरा इतना था कि काला बच्चा उसे अपनी बाहों की लपेट में नहीं ले सकता था। इस मूर्ति में कई मन सोना लगा हुआ था।

काला बच्चा और मास्टर होचिन गेट से जरा हटकर एक ऐसी जगह पर बैठे हुए थे, जहां से वह तो गेट के आसपास तमाम लोगों को देख सकते थे लेकिन उन्हें कोई नहीं देख सकता था। मास्टर होचिन ने अपने कुछ आदमी गेट के अन्दर और बाहर फैला रखे थे। बत्तियां जले हुए लगभग आधा घण्टा हो चुका था और वहां रोशनी इतनी थी कि अगर सुई भी गिरती तो उसे आसानी से तलाश किया जा सकता था और फिर वह नजर आ गया थंगचो। उसने भिक्षुओं

वाला गेरूवे रंग का लिबास पहन रखा था। गले में कपड़े का एक थैला लटका हुआ था। वह गेट से कुछ फासले पर दीवार के करीब खड़ा हो गया। इक्का-दुक्का लोग उसके करीब आकर रुकते। हाथ मिलाते और फिर अलग हो जाते।

मास्टर होचिन ने अपने करीब खड़े हुए एक आदमी को इशारा किया। वह तेजी से एक तरफ चला गया और फिर चंद मिनट बाद ही दो आदमी थंगचो के करीब पहुंच गये। थंगचो ने शायद उनमें से किसी को पहचान लिया था। उसने बड़ी फुर्ती से अपने लिबास में छुपा हुआ पिस्तौल निकालकर हवाई फ़ायर कर दिया और एक तरफ भागने की कोशिश की तो वह दोनों आदमी उससे लिपट गये और चंद सेकिंड के अन्दर ही वहां पांच-छः आदमी पहुंच गये। थंगचो के हाथ से पिस्तौल छिन चुका था। उसे घेरने वाले उस पर लात-घूंसों की बारिश कर रहे थे।

फ़ायर की आवाज से वहां भगदड़ मच गयी थी—भिक्षु खौफजदा होकर इधर-उधर भागने लगे लेकिन जब पता चला कि फ़ायर करने वाला पकड़ा गया है तो लोग पुरसकून हो गये। इसी दौरान में एक बन्द वैन वहां आकर रुकी। थंगचो को उठाकर वैन में डाल दिया गया और वैन तेजी से वहां से रवाना हो गयी।

"मेरे साथ आओ।" मास्टर होचिन ने यह कहते हुए काला बच्चा को इशारा किया।

वह दोनों वाट के अन्दर आ गये और विभिन्न रास्तों से होते हुए एक कमरे में पहुंच गये। यहां एक बूढ़ा भिक्षु आलथी-पालथी मारे बैठा हुआ था। वह उसके सामने घुटनों के बल बैठ गये। वह बूढ़ा इस कदर दुबला-पतला और कमजोर था कि उसकी हड्डियां साफतौर पर गिनी जा सकती थीं। मास्टर होचिन ने अदब से किसी भाषा में कुछ कहा। बूढ़े ने नजरें उठाकर काला बच्चा की तरफ देखा और सीधा हाथ आशीर्वाद देने वाले अन्दाज में ऊपर उठा दिया।

बूढ़े की आंखों में अजीब चुम्बकीय कशिश की। कोशिश के बावजूद काला बच्चा उससे नजरें न चुरा सका था। बूढ़ा सीधे उसकी आंखों में झांक रहा था। काला बच्चा के दिमाग में सनसनाहट-सी हो रही थी और गर्दन पर च्यूंटिया-सी रेंगने लगी थीं और फिर अचानक उसे यों लगा जैसे सब कुछ उसकी नजरों से ओझल हो गया हो। सिर्फ वह दो आंखें थीं, जो उसे अपने सामने नजर आ रही थीं।

फिर अचानक उसे एक झटका-सा लगा। वह झुरझुरी-सी लेकर रह गया। बूढ़े ने उसके चेहरे से नजरें हटा ली थीं। वह शायद एक

लम्हे को कहीं गुम हो गया था। उसने सिर झटकते हुए बूढ़े की तरफ देखा। वह अब काला बच्चा की तरफ नहीं देख रहा था। वह मास्टर होचिन से कुछ कह रहा था। काला बच्चा यद्यपि थाईभाषा अब अच्छी तरह बोल और समझ लेता था लेकिन वह बूढ़ा न जाने किस भाषा में बात कर रहा था। एक भी शब्द काला बच्चा की समझ में नहीं आ रहा था। मास्टर होचिन ने उसे इशारा किया और वह उठ गया। उसके दिमाग में अब भी धमाके हो रहे थे। उस कमरे से निकलकर राहदारियों में चलते हुए भी वह महसूस कर रहा था कि वह दो आंखें उसका पीछा कर रही हैं।

मास्टर होचिन दोबारा उसके कमरे में आ गया और देर तक बैठा बातें करता रहा। उसने काला बच्चा को यह नहीं बताया कि वह उसे उस बूढ़े के पास क्यों ले गया था। वह बूढ़ा भी बड़ा रहस्यमय साबित हुआ था। उसकी आंखों में कोई ऐसी बात थी जिसने उसे झिंझोड़कर रख दिया था। उसके जिस्म पर अभी तक च्यूंटियां-सी रेंग रही थीं और दिमाग में धमाके हो रहे थे।

काला बच्चा ने महाराज वांगदंग को भी देखा था जो पत्थर पर सोता था और अब यह रहस्यमय बूढ़ा जो जमीन पर आलथी-पालथी मारे बैठा था। इनके पास दौलत की कमी नहीं थी। अपने लिए दुनिया का हर ऐश्वर्य जुटा सकते थे लेकिन यह पूजा करते और खुरदुरी जमीन पर सोते थे।

वह मास्टर होचिन से इस बूढ़े के बारे में पूछना चाहता था लेकिन दिल की बात जुबान पर न ला सका और न ही मास्टर होचिन ने खुद कुछ बताया। वह और बातें करता रहा। उसने बताया कि शाईवान बच गयी थी। वह यद्यपि उसे मरवाने की साजिश में शरीक थी मगर उसे छोड़ दिया गया था और यह इजाजत दे दी गयी थी कि वह जहां चाहे जा सकती है, लेकिन उसने जाने से इन्कार कर दिया था। शाईवान का कहना था कि चूंकि टाइगर ने उसे भी जिन्दा जलाने की कोशिश की थी इसलिए वह उसके पास वापस नहीं जायेगी बल्कि उसे डर था कि अगर वह वापस गयी तो टाइगर उसे मरवा देगा। वह उसी बंगले में रह रही थी और उसने टाइगर और चीफांग के बारे में काफी सनसनीखेज बातें बताई थीं मगर महाराज ने अभी तक उसके खिलाफ किसी कार्यवाही का हुक्म नहीं दिया था।

काला बच्चा थाईवांग के बारे में अधिक चिन्तित था। मास्टर होचिन ने उसे तसल्ली दी कि वह ठीक हो जायेगी, ताउम्र उसका इलाज और मुकम्मल तौर पर स्वस्थ होने में कई दिन लगेंगे।

मास्टर होचिन के जाने के बाद वह अपने कमरे में बैठा रहा। उस रात उसने खाना भी नहीं खाया। वह थाईवांग के बारे में सोचता रहा। थाईवांग उसकी सबसे ज्यादा अजीज थी। थाईवांग ने उसे उस वक्त पनाह दी थी जब मौत के हरकारे उसका पीछा कर रहे थे। वह अगर चाहती तो उसे उन लोगों के हवाले करके न सिर्फ अपने आपको बचा सकती थी बल्कि इनाम भी हासिल कर सकती थी लेकिन उसने अपने आपको लुटा दिया। वह खुद बर्बाद हो गयी लेकिन काला बच्चा को बचाकर ले आई। ठाट की जिन्दगी बसर करने वाली वह औरत उसके साथ खौफ के साये में दर-दर की ठोकरें खा रही थी।

यह तो वह समझ गया था कि उससे अपनी शिकस्त का बदला लेने के लिए थंगचो ने किसी तरह थाईवांग को हेरोइन का आदी बना दिया था लेकिन उसके ख्याल यहीं तक सीमित नहीं थे, उसे यकीन था कि उसके खिलाफ कोई बड़ी साजिश तैयार की गयी थी जिसमें थंगचो शामिल था। थंगचो अब मास्टर होचिन के कब्जे में आ गया था वह मालूम कर लेगा कि असली किस्सा क्या है?

थाईवांग ने आज तक उसके लिए जो कुछ किया था वह उसे जिन्दगी के आखरी लम्हों तक नहीं भूल सकता था। उसके और थाईवांग के बीच एक ऐसा रिश्ता बन चुका था, जिसे वह कोई नाम नहीं दे सकता था और शायद यह वही अनजाना रिश्ता था जिसने उसे इस कदर जज्बाती कर दिया था और उसने उसके मुंह पर थप्पड़ भी मार दिया था। मास्टर होचिन ने यद्यपि उसे तसल्ली दी थी कि वह ठीक हो जायेगी लेकिन काला बच्चा ने तय कर लिया था कि अगर थाईवांग को कुछ हो गया तो वह उन लोगों को जिन्दा नहीं छोड़ेगा, जो इसके जिम्मेदार थे।

थाईवांग के बारे में सोचते हुए उसकी मानसिक रग बहक गयी थी और वह सिर झटककर उस रहस्यमय बूढ़े के बारे में सोचने लगा। वह कौन था और मास्टर होचिन उसे उसके पास क्यों लेकर गया था और उन दोनों ने आपस में क्या बातें की थीं।

उस रात वह तकरीबन जागता ही रहा। कभी कुर्सी पर बैठ जाता और कभी बाहर आ जाता। सुबह चार बजे के करीब वह बिस्तर पर लेटा था और नींद उसे उस वक्त आई थी जब सुबह का उजाला फैलने लगा था।

वह सुबह और शाम को ट्रेनिंग क्लास लिया करता था लेकिन उस रोज पड़ा सोता रहा और किसी ने उसे जगाया भी नहीं। उसकी आंख ग्यारह बजे के करीब खुली थीं और फिर उसका सारा दिन

बोरियत और बेजारी में गुजरा था।

तकरीबन एक हफ्ता गुजर गया। मास्टर होचिन की तरफ से थाईवांग के बारे में कोई सूचना नहीं मिली थी और न ही थंगचो के बारे में कुछ पता चला था। वह थाईवांग के बारे में परेशान था पता नहीं वह किस हाल में होगी।

और फिर उस रात आठ बजे के करीब मास्टर होचिन का आदमी कांग आ गया। वह उसे अपने साथ ले जाना चाहता था। वह दोनों वाट के उस हिस्से से बाहर निकले जहां ट्रेनिंग पाने वालों का आवागमन होता था। सेंट्रल गेट के बायीं तरफ लगभग पचास गज के फासले पर टिकटिक खड़ा था। काला बच्चा पिछली सीट पर बैठ गया। कांग ने ड्राइविंग सीट पर बैठकर इंजिन स्टार्ट किया और फिर टिकटिक तेज़ रफ्तारी से विभिन्न सड़कों पर दौड़ने लगा।

कांग उसे रामा सिक्स रोड पर स्थित रामा की बाडी हस्पताल ले आया। रास्ते में कांग ने बताया कि यह टिकटिक उसका है। यही उसकी रोजी का जरिया है। वह दो साल पहले शौकिया तौर पर मोयेथाई सीखने के लिए महाराज के जिमनाजियम में आया था और अपनी मेहनत के आधार पर बहुत जल्द मास्टर फू के साथ जुड़ गया। मास्टर फू के बाद अब वह मास्टर होचिन का खास आदमी समझा-जाता था।

हस्पताल की दूसरी मंजिल पर एक राहदारी के आखरी कमरे के सामने रुककर कांग ने दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक दी फिर हैण्डिल घुमाकर दरवाजा खोल दिया और काला बच्चा के लिए रास्ता छोड़कर एक तरफ खड़ा हो गया। काला बच्चा अन्दर दाखिल हुआ, तो वह भी उसके पीछे ही अन्दर दाखिल हो गया और दरवाजा बन्द कर दिया।

काला बच्चा दो कदम आगे बढ़कर रुक गया था। सामने ही बेड पर थाईवांग बेड की पुश्त से टेक लगाये अधलेटी पोजीशन में बैठी हुई थी। उसके जिस्म पर हल्के नीले रंग की एक चादर पड़ी हुई थी। बेड के करीब कुर्सी पर नर्स बैठी हुई थी।

थाईवांग ने काला बच्चा की तरफ देखा। उसकी आंखों में नमी आ गयी और फिर आंसू उसके रुख्सारों पर लुढ़कने लगे। उसने नजरें झुका लीं। काला बच्चा उसके चेहरे को देख रहा था। वह मुकम्मल तौर पर ठीक नहीं हुई थी। यह कहा जा सकता था कि उस लानत पर काबू पा लिया गया था, जो उसे निरंतर मौत की तरफ ले जा रही थी। मौत का यह सफर अभी शुरुआती दौर में था और उसके

रास्ते में बन्द बांध दिया गया था। उसकी आंखों के नीचे स्याह धब्बे गायब हो रहे थे। पिचके हुए गाल भी अब कुछ भरे-भरे लग रहे थे और उनमें कुछ सुर्खी नजर आने लगी थी।

"थाईवांग।" काला बच्चा ने हौले से उसे पुकारा।

थाईवांग ने झुका हुआ चेहरा ऊपर उठाया। अश्क-बार आंखों से उसकी तरफ देखा और फिर दोनों बाहें फैला दीं। काला बच्चा नर्स और कांग की परवाह किए बिना दौड़कर उससे लिपट गया। थाईवांग बेताबी से उसके गालों और पेशानी पर बोसे दे रही थी और वह कुछ अजीब-सा सुकून महसूस कर रहा था।

"सॉरी काला बच्चा...।" वह काला बच्चा का चेहरा दोनों हाथों में लेती हुई बोली–"दरअसल मैं...।"

"कुछ कहने की जरूरत नहीं।" काला बच्चा ने उसकी बात काट दी और उसके दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिए–"तुम्हें एहसास हो गया है, यही काफी है।"

वह लगभग एक घण्टे तक वहां बैठा रहा। इस दौरान में डॉक्टर भी एक मर्तबा कमरे में आ चुका था। उसने बताया कि थाई को कम से कम दो हफ्ते और हस्पताल में रहना पड़ेगा। थाई से विभिन्न विषयों पर बातें होती रहीं।

हस्पताल के बाहर आते हुए काला बच्चा ने महसूस किया कि मास्टर होचिन के कुछ आदमी विभिन्न हुलियों में इधर-उधर मौजूद थे और यकीनन हस्पताल के अन्दर भी कोई मौजूद होगा। काला बच्चा को यह जानकर खुशी हुई कि थाईवांग को लावारिस नहीं छोड़ा गया था।

कांग का टिकटिक सड़क के दूसरी तरफ पार्किंग लाट पर खड़ा था। वह सड़क पार कर रहे थे कि कांग इस तरह रुक गया जैसे कुछ याद आ गया हो।

"तुम चलकर टिकटिक में बैठो–मैं आता हूं।" कांग ने कहा और मुड़कर तेज-तेज कदम उठाता दोबारा हस्पताल में दाखिल हो गया। पार्किंग में दाखिल होकर काला बच्चा ने पीछे मुड़कर देखा। वह रिसेप्शन काउण्टर पर खड़ा किसी अधेड़ उम्र की औरत से बातें कर रहा था। वह औरत हस्पताल की यूनिफार्म पहने हुए थी और जाहिर है हस्पताल की कर्मचारी थी। काला बच्चा टिकटिक के करीब जाकर खड़ा हो गया। अभी उसे वहां खड़े हुए चंद ही सेकिण्ड गुजरे थे कि एक आदमी को अपनी तरफ आते देख ठिठक गया। वह पार्किंग में खड़ी कारों में से कहीं से निकलकर आया था और उसका रुख

काला बच्चा की तरफ ही था और फिर दूसरी तरफ से भी एक आदमी प्रकट हुआ। अब काला बच्चा को अनुमान लगाने में दुश्वारी नहीं हुई कि वह कौन थे।

वह दोनों तरफ से इस तरह करीब आ रहे थे कि काला बच्चा का इधर-उधर निकलने का रास्ता बन्द हो गया था। उनमें से एक ने काली पैन्ट और काली टी-शर्ट पहन रखी थी जबकि दूसरे के जिस्म पर नीली जीन्स की पैन्ट और सफेद शर्ट थी, जिसके बटन खुले हुए थे। गले में पड़ी हुई सोने की चेन नजर आ रही थी।

वह काला बच्चा से चंद कदम फ़ासले पर रुक गये। यहां तक आते-आते उन दोनों ने चाकू निकाल लिए थे।

"क्या ख्याल है मिस्टर... ।" सफेद शर्ट वाले ने कहा—"पार्किंग के साथ सड़क पर हमारी गाड़ी खड़ी है—सफेद रंग की। हमारे साथ चलते हुए शराफत से उसमें बैठोगे या तुम्हारी आंतें निकालकर इस जगह फैला दी जायें।"

"न तो मैं तुम्हारे साथ गाड़ी में बैठूंगा और न ही मेरी आंते निकालने की तुम्हारी हसरत पूरी होगी।" काला बच्चा ने पुरसुकून लहजे में जवाब दिया—"मैं इतना तर निवाला नहीं हूं। जिसे आसानी से हलक में उतारा जा सके।"

"हमें मालूम है तुम बार-बार बचते रहे हो।" कालीशर्ट वाला बोला—"लेकिन इस मर्तबा किस्मत तुम्हारा साथ नहीं देगी। हमें मालूम है कि तुम्हारी दोस्त इस हस्पताल में एडमिट है। हम एक हफ्ते से इस हस्पताल की निगरानी कर रहे हैं। हमें यकीन था कि तुम यहां जरूर आओगे और आखिरकार आ ही गये। अब तुम यहां से जिन्दा नहीं जा सकोगे। तुम्हारी लाश का पोस्टमार्टम इसी हस्पताल में होगा। उसने खामोश होकर अपने साथी की तरफ देखा और फिर वह दोनों नपे-तुले कदम उठाते हुए काला बच्चा की तरफ बढ़े।

काला बच्चा बिल्कुल खौफजदा नहीं था। अगर साल भर पहले इस तरह वह घेरे में आ जाता तो उसकी पतलून यकीनन गीली हो चुकी होती लेकिन अब वह बुजदिल नहीं रहा था। उसके अंदर हौसला, कुव्वत और आत्मविश्वास था और वह इस किस्म की परिस्थिति से मुकाबला कर सकता था।

वह दोनों चीखते हुए उस पर हमलावर हुए। काला बच्चा उनसे ज्यादा बुलन्द आवाज में चीखा और अपनी जगह खड़े-खड़े पूरी कुव्वत से उछला। वह जमीन से लगभग छः फुट ऊपर उछला था और फिर उसके पैर सामने वाली कार की छत पर टिक गये। वह दोनों अपनी

झोंक में टिकरिक से टकराये गये थे। वह संभलकर तेजी से मुड़े। इस दौरान में काला बच्चा ने यत्न करते हुए कार से छलांग लगा दी। नीचे आते हुए उसका एक पैर सफेद शर्ट वाले के सीने पर और दूसरा काली शर्ट वाले के कंधे पर लगा था। वह दोनों चीखते हुए ढेर हो गये। उनमें से एक फौरन ही उठ गया। काला बच्चा उससे पहले ही संभल चुका था, उसने हाथ ऊपर उठाकर चाकू से वार किया। काला बच्चा ने बड़ी फुर्ती से बायीं कलाई इस तरह आगे कर दी कि उसकी कलाई काला बच्चा की कलाई से टकराई। इसके साथ ही काला बच्चा बड़ी फुर्ती से एक पैर पर घूम गया। स्पिन किक उसके जबड़े पर लगी और वह बिलबिलाता हुआ पीछे की तरफ उलट गया। इस दौरान में काली शर्ट वाला उठ गया था। वह चाकू लहराता हुआ काला बच्चा की तरफ बढ़ा। उसने हमला किया तो काला बच्चा ने बायीं टांग से उसका वार रोका और साथ ही उसके जबड़े पर घूंसा रसीद कर दिया। चाकू उसके हाथ से निकल गया था। जबड़े पर घूंसा पड़ने से वह लड़खड़ा गया था। संभलने का मौका दिए बगैर काला बच्चा ने उसे एक और स्पिन किक रसीद कर दी। वह पुश्त के बल गिरा, काला बच्चा ने भी उस पर छलांग लगा दी लेकिन काला बच्चा ने छलांग इस तरह लगाई थी कि उसका सिर काली शर्ट वाले के सीने पर लगा और वह उल्टी कलाबाजी खाता हुआ दूसरी तरफ पहुंच गया। वह बुरी तरह चीख उठा था लेकिन उसने उठने में देर नहीं लगाई थी। इस वक्त उसकी पुश्त काला बच्चा की तरफ थी। काला बच्चा तेजी से आगे बढ़कर उसके बाजू कंधों के करीब से गिरफ्त में लेकर पीछे की तरफ मरोड़ने लगा। उसकी पुश्त काला बच्चा के सीने से मिली हुई थी और वह उसके बाजुओं पर दबाव बढ़ा रहा था। इस तरह उसके कंधों के जोड़ उखड़ सकते थे।

अचानक अपने पीछे दहाड़ने की आवाज सुनकर काला बच्चा अपने प्रतिद्वंद्वी को उसी तरह गिरफ्त में लेकर तेजी से घूम गया। सफेद शर्ट वाला चीखते हुए चाकू से हमलावर हो रहा था। उसने हमला तो काला बच्चा की पुश्त पर ही किया था लेकिन काला बच्चा ने घूमकर अपने प्रतिद्वंद्वी को सामने कर दिया था। सफेद शर्ट वाले का चाकू दस्ते तक काली शर्ट वाले के सीने में पैवस्त हो गया। उसके मुंह से निकलने वाली चीख बड़ी खौफनाक थी।

काला बच्चा ने अब भी उसे गिरफ्त में ले रखा था और वह बुरी तरह तड़प रहा था। बिल्कुल इसी तरह उन लोगों ने मास्टर फूंके सीने पर खंजरों से वार किए थे, फर्क सिर्फ इतना था कि उनका

अपना एक आदमी मास्टर फू के हाथों मारा गया था।

हमलावर बुरी तरह बदहवास हो गया था। उसे क्या मालूम था कि वह दुनिया के एक बेहतरीन स्ट्रीट फाइटर से टकरा गया है, जो एक साथ दो नहीं चार-चार का मुकाबला करके शिकस्त दे सकता है। सफेद शर्ट वाला चंद लम्हें फटी-फटी आंखों से देखता रहा और फिर चाकू अपने साथी के सीने में छोड़कर भाग खड़ा हुआ। उसका रुख पार्किंग के बाहर सड़क के किनारे खड़ी हुई सफेद कार की तरफ था, जिसमें वह काला बच्चा का अपहरण करके ले जाना चाहते थे।

काली शर्ट वाला अभी तक काला बच्चा की गिरफ्त में तड़प रहा था। काला बच्चा ने फिर उसे नीचे फेंक दिया और सफेद शर्ट वाले के पीछे दौड़ा। ठीक उसी लम्हे कांग भी चीखता हुआ उस कार की तरफ दौड़ रहा था।

सफेद शर्ट वाला कार में बैठ चुका था। इन्जिन स्टार्ट करने में भी एक सेकिण्ड से ज्यादा वक्त नहीं लगा था। काला बच्चा अभी चंद गज दूर था लेकिन कार हरकत में आ चुकी थी। कांग करीब पहुंच चुका था। उसने छलांग लगाई लेकिन कार से टकराकर गिर गया। कार बड़ी तेजी से आगे निकल गयी। काला बच्चा दौड़कर करीब पहुंच गया और कांग को सहारा देकर उठाया। उसे ज्यादा चोट नहीं लगी थी।

"भाग गया...।" कांग अपनी सीधी टांग झटकते हुए बोला—"हाथ में आ जाता तो उसकी गर्दन मरोड़ देता।"

"एक भाग गया मगर दूसरा उधर पड़ा हुआ है।" काला बच्चा ने पार्किंग की तरफ इशारा किया और फिर कांग उसकी लाश देखकर उछल पड़ा था। वह काला बच्चा की तरफ देखने लगा।

"नहीं...।" काला बच्चा ने उसकी निगाहों का मतलब समझते हुए कहा—"हो सकता है इन दोनों में से कोई एक मेरे हाथों मारा जाता मगर संयोग से यह अपने ही साथी के हाथों मारा गया। चाकू का वार तो मुझ पर ही किया गया था, मगर यह मेरी ढाल बन गया और मेरी मौत को इसने अपने सीने से लगा लिया।"

"मेरे साथ आओ जल्दी...।" कांग ने कहा।

वह दोनों हस्पताल में आ गये। रिसैप्शन काउण्टर वाले लाउन्ज में मौजूद दो-तीन आदमियों ने दरवाजों के शीशों से उनकी लड़ाई का मंजर देखा होगा लेकिन शायद उन्हें यह पता नहीं चल सका था कि एक लाश गिर चुकी है, इसलिए उन लोगों की तरफ से कोई खास प्रतिक्रिया जाहिर नहीं हुई थी। कांग ने रिसैप्शन काउण्टर पर

रखा हुआ टेलीफोन एक तरफ सरकाया और रिसीवर उठाकर नम्बर डॉयल करने लगा। लाइन फौरन ही मिल गयी थी। वह कुछ देर तेज-तेज लहजे में बातें करता रहा और फिर काउण्टर के पीछे खड़ी हुई अधेड़ उम्र औरत की तरफ देखते हुए कुछ कहने लगा।

उस औरत ने काला बच्चा के कपड़ों पर खून के छींटे भी देख लिए थे। वह कुछ बदहवास-सी हो गयी। वह दीवार पर लगे हुए इन्टरकॉम का रिसीवर उठाकर तेज लहजे में किसी से बात करने लगी फिर उसने रिसीवर रख दिया और काला बच्चा की तरफ देखने लगी।

कांग काला बच्चा को इशारा करता हुआ लिफ्ट की तरफ दौड़ा। यहां तीन लिफ्टें थीं और इस वक्त तीनों ऊपर थीं। वह लिफ्ट का इन्तजार करने की बजाए जीने की तरफ दौड़े।

"थाईवांग बेड पर अधलेटी थी। उसकी आंखें बन्द थीं और नर्स कुर्सी पर बैठी हुई कोई मैगजीन देख रही थी। धड़ से दरवाजा खुला तो नर्स गड़बड़ा गयी और थाईवांग ने भी आंखें खोल दीं। वह काला बच्चा के लिबास पर खून देखकर बदहवास-सी हो गयी।

"तुम थोड़ा-सा पैदल चल सकती हो।" कांग ने उसे कुछ कहने का मौका दिए बगैर कहा।

"हां—मैं पैदल चल सकती हूं।" थाईवांग उठते हुए बोली। उसने कदाचित परिस्थिति का अनुमान लगा लिया था—"य...यह क्या...तुम ठीक तो हो?" उसने काला बच्चा के कपड़ों पर खून के धब्बों की ओर इशारा करते हुए कहा।

"मैं ठीक हूं...।" काला बच्चा ने जवाब दिया—"यह जगह अब तुम्हारे लिए सेफ नहीं रही, इसलिए तुम्हें यहां से ले जा रहे हैं।"

दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए थाईवांग के कदम लड़खड़ा रहे थे। काला बच्चा ने लपककर उसे कंधे पर लाद लिया और दरवाजे की तरफ बढ़ा। नर्स फटी-फटी आंखों से यह सब देखती रह गयी। उन्होंने नीचे जाने के लिए लिफ्ट का भी इन्तजार नहीं किया। कांग जीने पर काला बच्चा से आगे था।

लॉबी में बैठे हुए लोग उन्हें देखकर गड़बड़ा से गये। वह समझे शायद दो गुण्डे किसी मरीज को अगुवा करके ले जा रहे हैं। कांग के हाथ में के खंजर ने उन्हें कुछ और भी डरा दिया था।

कांग ने काला बच्चा को दरवाजे के अन्दर ही रुकने का इशारा किया और खुद दौड़ता हुआ बाहर निकल गया। डेढ़ मिनट बाद उसका टिकटिक गेट पर पहुंच गया। काला बच्चा गेट से निकलकर दौड़ता

हुआ सड़क पर आ गया। पहले थाईवांग को सीट पर डाला और फिर खुद भी उचककर सवार हो गया। इस दौरान में टिकटिक हरकत में आ चुका था। उन्हें दोबारा उसी वाट में पहुंचा दिया गया। वहां मास्टर होचिन पहले से मौजूद था। वह उस कमरे में जमा थे, जहां थाईवांग को लिटाया गया था। कांग मास्टर होचिन को इस वाक्ये का विवरण दे रहा था।

"वैरी गुड...।" मास्टर होचिन काला बच्चा की तरफ देखकर मुस्कराया—"यह लाश तुम्हारी तरफ से टाइगर के लिए दूसरा तोहफा होगी और इस लाश से उसे यह पैगाम भी मिल जायगा कि तुम पर हाथ डालना अब इतना आसान नहीं। उसे रिपोर्ट मिल चुकी होगी और इस वक्त वह पागलों की तरह अपने बाल नोंच रहा होगा।"

"थैंक्यू मास्टर!" काला बच्चा ने उसकी तारीफ पर बो करते हुए कहा—"लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आ सकी। जब मैं हस्पताल के गेट से बाहर निकला था तो मैंने आसपास दो-तीन ऐसे आदमी भी देखे थे जिनके बारे में मेरा ख्याल था कि वह हमारे आदमी हैं लेकिन हैरत की बात यह है कि उनमें से कोई भी मेरी मदद को नहीं आया।"

"ठीक कहते हो!" मास्टर होचिन मुस्कराया—"हमारे आदमी वहां मौजूद थे, लेकिन उन्होंने देख लिया था कि तुम बहुत खूबसूरती से अपने प्रतिद्वंद्वियों का मुकाबला कर रहे हो, इसलिए वह तुमसे दूर ही रहे। अगर तुम्हें कोई खतरा होता तो वह लोग तुम तक पहुंचने में एक पल का भी विलम्ब नहीं करते। कांग से पहले मुझे उन आदमियों की तरफ से रिपोर्ट मिल चुकी थी। यह तुम्हारी पहली बाकायदा फाइट थी। तुम्हारी कामयाबी पर मुझे खुशी हुई और महाराज को जब सूचना मिलेगी तो वह भी बहुत खुश होंगे।"

लगभग एक घण्टे बाद वह लोग चले गये और काला बच्चा देर तक थाईवांग से बातें करता रहा। सुबह एक जवान और खूबसूरत औरत थाईवांग के लिए दवाईयां लेकर पहुंच गयी। वह नर्स थी और उसे उस वक्त तक यहां रहना था जब तक थाईवांग ठीक नहीं हो जाती।

तीन दिन बाद रात नौ बजे के करीब एक भिक्षु ने आकर बताया कि एक औरत उससे मिलना चाहती है। काला बच्चा को हैरत हुई, वह औरत कौन हो सकती है। वह उस भिक्षु के साथ वाट के उस हिस्से में आ गया, जहां ट्रेनिंग पाने वालों का आवागमन रहता था। लेकिन इस वक्त वहां इक्का-दुक्का लोग ही थे। सेन्ट्रल गेट के बाहर

दोनों तरफ गुंजान पौधे और कद्दावर दरख्त थे। भिक्षु ने दायीं तरफ संकेत किया। चंद गज दूर एक वृक्ष के नीचे अंधकार में एक औरत चादर लपेटे खड़ी थी।

काला बच्चा ने सोचा उसके साथ कोई धोखा हो सकता था। वह सतर्क अन्दाज में आगे बढ़ने लगा। उस औरत ने अपना चेहरा भी चादर में छुपा रखा था, लेकिन काला बच्चा जैसे ही करीब पहुंचा उसने चेहरे से चादर हटा दी। काला बच्चा उसका चेहरा देखकर उछल पड़ा।

वह कौशल्या थी।

"मैं अपने आपको खतरे में डालकर यहां आई हूं। तुमसे एक जरूरी बात करनी है।" उसने सरगोशी में कहा।

"कहो—क्या बात है?" काला बच्चा ने खुश्क लहजे में पूछा और इधर-उधर देखने लगा।

"अब मुझे अपनी गलती का एहसास हो रहा है।" वह बोली—"महाराज से गद्दारी करके मैंने वाकई मूर्खता की थी। मैं तुमसे मुआफी मांगने आई हूं, अगर महाराज भी मुझे मुआफ कर दें तो मैं उन्हें एक बहुत बड़ी साजिश से आगाह कर सकती हूं।" कौशल्या ने कहा।

"कोई नयी साजिश...।" काला बच्चा ने उसे घूरा।

"मुझे अपने किए पर पश्चाताप है काला बच्चा। मेरी बात का यकीन करो।" उसने कहा—"मैं अब किसी साजिश में शरीक नहीं हूं। बल्कि महाराज को एक खतरनाक साजिश से आगाह करके अपने गुनाहों का प्रायश्चित करना चाहती हूं। मैं मास्टर होचिन या किसी और के पास भी जा सकती थी लेकिन मैं जानती हूं कि महाराज तुम्हारी बात नहीं टालेंगे।"

"वह साजिश क्या है?" काला बच्चा ने पूछा।

"वह साजिश इस टैम्पिल के सम्बन्ध में है, अगर पूरा विवरण जानना चाहते हो तो ग्यारह बजे फ्लाई स्काई रेस्टोरेन्ट में मिलो लेकिन उस वक्त तुम्हें यह गारंटी देनी होगी कि महाराज ने मुझे माफ कर दिया है।" कौशल्या ने कहा।

"इस बात की क्या गारंटी है कि तुम मेरे खिलाफ कोई नयी साजिश नहीं कर रही।"

"मैं तुम्हें किस तरह यकीन दिलाऊं।" कौशल्या बोली—"मैं अपनी गलती पर अब तक पछता रही हूं। टाइगर ने मुझसे वादा किया था कि वह मुझे रोज क्लब का पार्टनर बना देगा, लेकिन उसने

मेरे साथ धोखा किया। दो वक्त की रोटी कमाने के लिए क्लबों में किक बॉक्सिंग के मुकाबलों में मुझे अपने आपको नंगा करना पड़ता है। मैं अब तक बहुत जिल्लत उठा चुकी हूं। इत्तफाक से मुझे इस साजिश का पता चल गया था। मैं अकेली कुछ नहीं कर सकती लेकिन तुम...वह चंद लम्हों को खामोश हुई फिर काला बच्चा के सामने हाथ जोड़ते हुए बोली–"प्लीज! मेरा साथ दो। मुझे तबाह होने से बचा लो।"

काला बच्चा को उसके लहजे में सच्चाई की कुछ झलक नजर आ रही थी।

"ठीक है।" उसने कहा–"मैं महाराज से बात करता हूं। अगर उन्होंने ग्यारह बजे तुमसे मुलाकात की इजाजत दे दी तो समझो तुम्हारे लिए माफी का कोई रास्ता निकल सकता है, लेकिन अगर मैं ग्यारह बजे वहां नहीं पहुंचा तो समझ लेना कि...।"

"ऐसी सूरत में सुबह शहर की किसी सड़क पर मेरी लाश मिलेगी।" कौशल्या ने काला बच्चा की बात काट दी–"मैं चलती हूं। अब मेरी जिन्दगी और मौत तुम्हारे हाथों में है।"

उसने अपना चेहरा चादर में लपेट लिया और तेज-तेज कदम उठाते हुए विपरीत दिशा में चली गयी। वह चंद लम्हें उसकी तरफ देखता रहा और फिर वह भी मुड़कर तेज-तेज कदम उठाता हुआ वाट के गेट में दाखिल हो गया।

काला बच्चा उस कमरे में पहुंचा जहां टेलीफोन मौजूद था। यह मस्त बूढ़े भिक्षु का कमरा था। यह वही बूढ़ा था जिसे काला बच्चा पहले कई बार मास्टर होचिन के पास भेज चुका था। वह उस वक्त कमरे में मौजूद नहीं था। काला बच्चा ने फोन का रिसीवर उठाकर मास्टर होचिन का नम्बर मिलाया और सम्पर्क स्थापित होने पर उसे कौशल्या के बारे में बताने लगा।

"होल्ड रखो।" मैं दूसरे फोन पर महाराज से बात करता हूं। मास्टर होचिन ने काला बच्चा की बात सुनने के बाद कहा।

वह रिसीवर कान से लगाये खड़ा रहा। उसे मास्टर होचिन की मद्धिम-सी आवाज सुनाई देती रही। वह महाराज से बात कर रहा था। लगभग पांच मिनट बाद वह काला बच्चा को सम्बोधित करते हुए बोला–

"ठीक है काला बच्चा। कुछ देर में कांग तुम्हारे पास पहुंच जायेगा। तुम उसके साथ फ्लाई स्काई रेस्टोरेन्ट चले जाओ। मेरे कुछ आदमी तुमसे पहले ही वहां पहुंच जायेंगे। अगर यह भी टाइगर की

कोई साजिश हुई तो कोई जिन्दा बचकर नहीं जायेगा।"

"ओ.के. मैं ठीक ग्यारह बजे वहां पहुंच जाऊंगा।" काला बच्चा ने यह कहते हुए रिसीवर रख दिया।

कमरे में आकर उसने थाईवांग को बता दिया कि किस मिशन पर जा रहा है।सुबह दस बजे के करीब कांग भी पहुंच गया और उसके कुछ ही देर बाद हम वहां से रवाना हो गये। कांग उस वक्त अपना टिकटिक नहीं स्याह रंग की कार लेकर आया था।

काला बच्चा को उसे कुछ बताने की जरूरत नहीं पड़ी। मास्टर होचिन ने उसे बता दिया था कि कहां जाना है। कार विभिन्न सड़कों पर घूमती हुई सोखम पट रोड पर आ गयी। कांग ड्राइविंग करते हुए भी बहुत सतर्क नजर आ रहा था, उसकी नजरें चारों तरफ घूम रही थीं। उसने कार सोयेफोर की तरफ मोड़ ली। उसके साथ ही मोरा नाना नाई स्ट्रीट थी। इस सड़क पर यूनान का दूतावास भी था। कार दूतावास के पीछे एक और गली में मुड़ गयी और कुछ ही फासला तय करने के बाद एक जगह रुक गयी। सामने फ्लाई स्काई रेस्टोरेन्ट था।

कांग कार ही में बैठा रहा। वह नीचे उतरकर रेस्टोरेन्ट की तरफ बढ़ा ही था कि एक आदमी ने उसके साथ चलते-चलते सरगोशी की।

"रेस्टोरेन्ट के दायें तरफ वाली सीढ़ियों पर चले जाओ।"

काला बच्चा ने चलते-चलते अपना रुख बदल लिया और दरवाजे में दाखिल होकर सीढ़ियां चढ़ने लगा। उसने कांग को भी कार से उतरते देख लिया था। वह शायद कुछ उलझन का शिकार हो गया था, क्योंकि प्रोग्राम के अनुसार काला बच्चा को रेस्टोरेन्ट में जाना था।

रेस्टोरेन्ट के ऊपर एक मैरिज ब्यूरो का दफ्तर था, जहां कौशल्या के अलावा एक अधेड़ उम्र थाई औरत बैठी हुई थी। कौशल्या के चेहरे पर डर के भाव नुमायातौर पर नजर आ रहे थे। वह थाई औरत गहरी नजरों से काला बच्चा की तरफ देख रही थी। काला बच्चा ने सतर्क नजरों से इधर-उधर देखा और कौशल्या के करीब सोफे पर बैठ गया। अगर यहां उसकी मौत का प्रबन्ध किया गया था तो कांग और उसके साथी भी उसे नहीं बचा सकते थे। उनके आने से पहले ही उसका खात्मा हो चुका होता।

कौशल्या ने इशारा किया। वह औरत उठकर दूसरे कमरे में चली गयी।

"हां कहो, क्या बात है?" काला बच्चा ने सवालिया निगाहों से कौशल्या की तरफ देखा—"उस वाट के खिलाफ क्या साजिश हो रही है?"

"पहले मैं महाराज की बात सुनना चाहती हूं—क्या कहा उन्होंने?"

"अगर तुम्हारी बात दुरुस्त निकली तो महाराज न सिर्फ तुम्हें माफ करेंगे बल्कि तुम्हारी पहली पोजीशन भी बहाल कर दी जायेगी।"

कौशल्या चंद लम्हे खामोश रही और फिर सरगोशी में उस साजिश के बारे में बताने लगी। उसकी बातें सुनकर काला बच्चा का दिमाग घूम रहा था।

"यह कब होगा?" काला बच्चा ने उसके खामोश होने के बाद पूछा।

"एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर।" कौशल्या ने जवाब दिया—"लेकिन मुझे डर है कि अगर उन्हें शक हो गया तो वह मुझे मार डालेंगे।"

"तुम चंद रोज के लिए कहीं रूपोश हो जाओ।" काला बच्चा ने कहा—"मास्टर होचिन का फोन नम्बर तुम्हारे पास है। एक हफ्ते बाद उनसे सम्पर्क कर लेना। तुम्हें परिस्थिति से आगाह कर दिया जायेगा।"

उसके थोड़ी देर बाद जब काला बच्चा बाहर निकला तो कांग सीढ़ियों पर खड़ा एक आदमी से बातें कर रहा था। काला बच्चा उसके समीप से गुजरता हुआ सीढ़ियां उतरकर बाहर आ गया और कांग की कार में बैठ गया। चंद सेकिण्ड बाद कांग भी आ गया।

"मास्टर होचिन के पास चलो।" काला बच्चा ने कहा।

चायना टाउन में स्थित जिमनाजियम में पहुंचकर काला बच्चा ने मास्टर होचिन को सब कुछ बता दिया। वह काला बच्चा को लेकर फौरन ही वार ट्रीम्ट में महाराज वांगदंग के पास पहुंच गया। काला बच्चा की बात सुनने के बाद महाराज काफी देर खामोश रहे और फिर कुछ हिदायत देने के बाद उन्हें रुख्सत कर दिया।

दूसरे दिन वाट में चंद भिक्षुओं का इजाफा हो गया। काला बच्चा को समझने में देर नहीं लगी कि वह महाराज के आदमी थे, जिन्हें विशेष रूप से यहां भेजा गया था।

अब काला बच्चा अधिकतर खानकाह में घूमता रहता था। मास्टर होचिन पहली मर्तबा उसे एक पुरइसरार बूढ़े के पास लेकर गया था लेकिन अब वह अपने तौर पर घूमता रहता। तहखाने और

रहस्यमय रास्ते उसे हैरान किए दे रहे थे। अगले रोज उसने एक ऐसा रास्ता भी दरयाफ्त कर लिया जो वाट के नीचे एक नाले से जा मिलता था। वह नाला काफी चौड़ा था। दरमियान में चार-पांच फुट चौड़ी जगह पर गंदा पानी बह रहा था। आसपास पत्थरों का पुख्ता फर्श था। कहीं फर्श खुश्क था और कहीं कीचड़ थी। वाट के इस रहस्यमय रास्ते की सीढ़ियां नाले के अन्दर तक चली गयी थीं। उन्हें बाकायदा सीढ़ियां नहीं कहा जा सकता था। लोहे के मोटे-मोटे सरिए नाले की दीवार के साथ लगे हुए थे। इन लोहे की सीढ़ियों से उतरकर वह नाले में आ गया। उसे यों लगा जैसे किसी बहुत बड़ी सुरंग में आ गया हो। यह सुरंग इतनी बड़ी थी कि इसमें एक बड़ा ट्रक आसानी से चल सकता था। दीवारों के साथ ऊपर टेलीफोन और बिजली के केबिल्ज लगे हुए थे। आसपास के इलाकों को बिजली और टेलीफोन के कनेक्शन नाले में लगे हुए इन्हीं कनेक्शन से दिए जाते थे। वाट में भी बिजली और टेलीफोन के कनेक्शन यहीं से थे।

वह इधर-उधर देख रहा था फिर अचानक चौंक गया। उसे यह अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई कि यह सुरंग नुमा नाला वाट के कम्पाउण्ड के नीचे से गुजर रहा था और इस कम्पाउण्ड में महात्मा बुद्ध की सोने की मूर्ति खड़ी थी। जिसके गिर्द लोहे का जंगला लगा हुआ था।

वह लगभग आधा घण्टा उस नाले का जायजा लेता रहा फिर वापस आ गया और वह रास्ता उसी तरह बन्द कर दिया।

वह कौशल्या से मुलाकात के बाद पांचवां दिन था। उस वक्त शाम के सात बजे थे। वाट में प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों का रश था। अचानक ही शोर सुनकर काला बच्चा चौंक गया।

"लोगो देखो...।" एक आदमी चीखते हुए कह रहा था—"लार्ड बुद्धा में जिन्दगी की हरारत पैदा हो रही है। आओ देखो...चलो देखो...।"

काला बच्चा तेजी से आगे बढ़ा। लोग लोहे के जंगले में दाखिल होकर मूर्ति को छू-छू कर देख रहे थे। उनके चेहरों पर अजीब से भाव उभर आये थे। भक्ति के भाव...।

काला बच्चा लोगों को इधर-उधर हटाता हुआ जंगले में दाखिल हो गया और मूर्ति को छूकर देखा। उसमें सचमुच हरारत पैदा हो रही थी। वह जंगले से बाहर आ गया। महाराज के भेजे हुए रक्षक भिक्षु जंगले के चारों तरफ फैल गये थे।

अचानक काला बच्चा के जहन में एक और ख्याल उभरा।

आया

उसने मम्मी डैडी के साथ एक फिल्म देखी थी, जिसमें चोर एक बैंक से सोने का जखीरा लूटने के लिए बैंक के नीचे नाले में घुसकर बहुत ही अजीबोगरीब तरीका इख्तियार करते हैं।

वह ख्याल आते ही उसने एक भिक्षु को अपने साथ लिया और वाट के अंदर विभिन्न राहदारियों में दौड़ता हुआ उस खुफिया रास्ते के सामने पहुंच गया, जो नाले की तरफ खुलता था और फिर जैसे ही उसने वह रास्ता खोला उसका दिल उछलकर हलक में आ गया।

वह चार आदमी थे, जो एक जगह पर खड़े थे, उनमें से एक ड्रिल मशीन जैसी किसी मशीन से नाले की छत में सुराख कर रहा था और ऊपर से सोने के टुकड़े टूट-टूट कर जमीन पर बिछी हुई एक चादर पर गिर रहे थे। उस आदमी का चेहरा तो काला बच्चा नहीं देख सका लेकिन बाकी तीन आदमियों को देखकर काला बच्चा के दिल की धड़कनें तेज हो गयीं।

उनमें से एक टाइगर था। दूसरा चीफांग और तीसरा दारा।

चीफांग के हाथ में ऑटोमेटिक रायफल थी और उन दोनों के हाथों में रिवॉल्वर। अब काला बच्चा को चौथे आदमी के बारे में भी अनुमान लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई। लिबास और कद से काला बच्चा ने उसे भी पहचान लिया। वह किम था।

किम लकड़ी के एक स्टूल पर खड़ा दोनों हाथों से किसी ड्रिल मशीन जैसी वह मशीन चला रहा था। मशीन की आवाज बहुत हल्की थी और फिर आवाज बन्द हो गयी। किम ने स्विच आफ कर दिया था और फिर वह स्टूल से उतर आया। ऐसा करते हुए वह कुछ घूम गया था। अब उसका रुख काला बच्चा की तरफ था और फिर एकाएक वह यों बेहरकत हो गया जैसे सांप सूंघ गया हो।

और फिर काला बच्चा को अपनी गर्दन पर च्यूंटियां-सी रेंगती हुई महसूस होने लगीं। किम सीधा उसकी आंखों में झांक रहा था।

वह चंद लम्हें सदियों पर भारी साबित हुए।

किम सीधा काला बच्चा की आंखों में आंखें डाले हुए था। उसकी आंखों में न जाने ऐसी क्या बात थी कि काला बच्चा कोशिश के बावजूद अपनी नजरों का कोण नहीं बदल सका था। उसने एक ऐसे बेहद जहरीले सांप के बारे में सुन रखा था, जो अपने शिकार को डसने से पहले फुंकार कर उसे अपनी तरफ आकर्षित करता है। शिकार जब उसकी तरफ देखता है तो गोया अपनी मौत के परवाने पर खुद ही मोहर लगा देता है। सांप की आंखों की कशिश कुछ सोचने का मौका ही नहीं देती। वह पलक झपकना भूल जाता है

और दिमाग सुन्न हो जाता है। उसमें इतनी शक्ति नहीं रहती कि जिस्म के किसी हिस्से को हरकत दे सके और वह नाग इसी परिस्थिति का लाभ उठाकर शिकार को इस तरह डसता है कि उसके मुंह से आवाज तक नहीं निकलती, जहर तेजी के साथ फैलता है और अगला सांस लेने की मौहलत नहीं मिलती।

किम भी ऐसा ही जहरीला नाग था, जिसने कई बेगुनाह लोगों को डसा था। वह काला बच्चा को भी डसना चाहता था और एक अरसे से काला बच्चा के पीछे लगा हुआ था और आज उनका आमना-सामना हो गया था।

काला बच्चा का दिमाग सुन्न हो रहा था और जिस्म जैसे पत्थर की मूर्ति में ढल गया था। उसने अपनी जगह से हरकत करनी चाही लेकिन पैर इस कदर भारी हो रहे थे कि कोशिश के बावजूद उन्हें हरकत नहीं दे सका।

किम पतलून और चमड़े की बगैर आस्तीन की जैकेट पहने हुए था, जिसके सामने के सारे बटन खुले हुए थे। उसके हाथ में ड्रिल मशीन थी। वह चंद लम्हे काला बच्चा की तरफ देखता रहा फिर उसने ड्रिल मशीन छोड़ दी, जो धब्ब की आवाज के साथ पैर के करीब गिरी और यह धब्ब की आवाज ही काला बच्चा को होश में ले आई थी। किम ने चीखते हुए बैल्ट में उड़से हुए पिस्तौल की तरफ हाथ बढ़ाया।

फायर की आवाज सुरंग में गूंज-सी पैदा करती चली गयी। गोली काला बच्चा के सिर से चंद इंच के फासले से गुजरकर दीवार में जा लगी। काला बच्चा ने बड़ी फुर्ती से एक तरफ छलांग लगा दी। टाइगर और दारा वगैरह ने भी उसे देख लिया था और फिर यों लगा जैसे वहां भूचाल-सा आ गया हो। चीफांग की ऑटोमेटिक रायफल से निकलने वाली गोलियों ने सामने वाली दीवार को छलनी कर दिया था।

काला बच्चा उस दीवार की आड़ में था, जिस पर उस खुफिया रास्ते को खोलने और बन्द करने के लिए बटन लगा हुआ था। वह बटन उससे लगभग पांच फुट के फासले पर था और दरमियान में वह खुला हुआ रास्ता था, जिससे गुजरकर नाले वाली दीवार में सीढ़ियों के तौर पर लगे हुए सरियों पर उतरा जा सकता था। बटन दबाने के लिए उसे उस खुले हुए रास्ते के सामने से गुजरकर दूसरी रफ जाना पड़ता, जो सम्भव नहीं था। उसे गोलियों से भून दिया जाता लेकिन रास्ते को खुला भी नहीं छोड़ा जा सकता था। काला बच्चा

इस खौफनाक हकीकत से पूरी तरह वाकिफ था कि अगर उन वहशी दरिन्दों को अन्दर आने का मौका मिल गया तो वह कयामत मचा देंगे। वाट में इस वक्त बीसियों प्रशिक्षार्थी थे। उनकी जानों को नुकसान हो सकता था। कई बेगुनाह मारे जाते।

वह दीवार के साथ दुबका खड़ा रहा और फिर उसे यों महसूस हुआ जैसे कोई नाले की सीढ़ियों पर चढ़ रहा है। वह बाहर झांकने का खतरा मोल नहीं ले सकता था अलबत्ता उसने पूरा ध्यान उस आहट पर केन्द्रित रखा, जो सीढ़ियों पर पैर रखने से पैदा हो रही थी। वह आहट बहुत हल्की थी लेकिन उसे अन्दाजा हो रहा था कि कोई शख्स बहुत सावधानी से ऊपर आ रहा है।

काला बच्चा खाली हाथ था और हर सूरत से परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार था। उसे पहले एक हाथ नजर आया फिर रायफल की नाल दिखाई दी और अचानक उस रायफल ने शोले उगलने शुरू कर दिए। काला बच्चा ने अपने आपको बिल्कुल तैयार कर लिया और फिर फायरिंग बन्द होते ही वह एकदम सामने आ गया।

वह चीफांग था, जिसका चेहरा बिल्कुल सामने था। उसने एक हाथ से सीढ़ी का सरिया पकड़ रखा था और दूसरे हाथ में रायफल थी। उसने भी काला बच्चा को देख लिया लेकिन काला बच्चा ने उसे सोचने का अवसर दिये बगैर उसके थोबड़े पर जोरदार किक लगाई और इसके साथ ही उछलकर नाले के दूसरी तरफ उस जगह पहुंच गया जहां दीवार पर वह बटन लगा हुआ था।

चीफांग के मुंह से चीख निकल गयी। वह आठ-दस फुट की बुलन्दी से नीचे गिरा, गिरते हुए उसकी उंगली ने ट्रिगर दबा दिया था। रायफल की नाल से निकलने वाली गोलियां नाले की छत पर जा लगीं। टाइगर और किम वगैरह ने यह परिस्थिति भांपते ही फायरिंग शुरू कर दी थी। कुछ गोलियां अन्दर सामने वाली दीवार पर लगीं। उनमें से कोई सीढ़ियों की तरफ दौड़ा भी था लेकिन काला बच्चा वह बटन दबा चुका था। चंद सेकिण्ड में वह खुफिया रास्ता बन्द हो गया।

काला बच्चा उस दीवार से टेक लगाकर खड़ा हो गया और गहरे-गहरे सांस लेने लगा। उसका जिस्म पसीने में सराबोर हो रहा था। वह संयोगवश मौत के भयानक जबड़ों के दहाने पर पहुंच गया था और किस्मत ने इस बार भी उसका साथ दिया था।

उसका और चीफांग का पहली मर्तबा आमना-सामना हुआ

था वह उसकी मां का कातिल था। काला बच्चा को वह मंजर याद आ गया जब चीफांग उसकी मां पर खंजर से वार कर रहा था। उसने पहली बार अपने दुश्मन पर प्रहार किया था, उसे इस बात की खुशी थी सम्भव है उसे ज्यादा नुकसान पहुंचा हो, अगर वह खाली हाथ होता या काला बच्चा के पास भी हथियार होता, तो दृश्य ही कुछ और हो सकता था।

वह दीवार के साथ टेक लगाये हांफ रहा था और उसे साफ महसूस हो रहा था कि नाले की तरफ से दीवार पर गोलियां बरसाई जा रही हैं, दीवार खासी मोटी थी लेकिन गोलियां लगने से हल्की-सी धमक वह महसूस कर रहा था।

यह सब कुछ दो मिनट से भी कम वक्त में हुआ था लेकिन लगता था जैसे सदियां बीत गयी हों और फिर दौड़ते हुए कदमों की आवाज सुनकर वह चौंक गया उसके भेजे हुए भिक्षु के साथ दो और भिक्षु दौड़ते हुए आ रहे थे। उन दोनों के हाथों में ऑटोमेटिक रायफल थीं और यह उन भिक्षुओं में से थे, जिन्हें काला बच्चा की रिपोर्ट मिलने के बाद महाराज ने विशेष रूप से इस वाट में भेजा था।

"वह लोग नाले के अन्दर हैं।" काला बच्चा ने चीखकर कहा—"किसी को दूसरी तरफ से नाले के अन्दर भेजो ताकि उन्हें भागने का मौका न मिल सके।"

"चार आदमी तनाव रोड की तरफ से नाले में जा चुके हैं।" उनमें से एक ने जवाब दिया उन्हें उस तरफ से भी घेरने की कोशिश की जायेगी, लेकिन इस तरफ से भी कवर करना जरूरी है ताकि उन्हें भागने का मौका न मिल सके।"

दीवार के दूसरी तरफ चंद लम्हे खामोशी रही और फिर फायरिंग की आवाजें दोबारा सुनाई देने लगीं—लेकिन इस बार गोलियां इस दीवार पर नहीं बरसाई जा रही थीं। साफ लग रहा था कि दो पार्टियों में फायरिंग का तबादला हो रहा है।

क्रोंग नामक एक शस्त्रधारी भिक्षु ने काला बच्चा और उसके साथी निहत्थे भिक्षु को वहां से हटने का इशारा किया।

"यह रास्ता कैसे खुलेगा?" क्रोंग ने पूछा।

"वह बटन दबा दोगे तो दीवार का यह हिस्सा स्लाइडिंग डोर की तरह अपनी जगह से हट जायेगा।" काला बच्चा ने इशारे से बताया।

क्रोंग ने एक बार फिर इशारा किया। काला बच्चा व निहत्था भिक्षु दीवार की आड़ में हो गये। क्रोंग ने बटन दबा दिया। वह और

उसका साथी दोनों तरफ पोजीशन संभालकर खड़े हो गये थे। दीवार का एक हिस्सा धीरे-धीरे अपनी जगह से हटने लगा।

नाले में फायरिंग की आवाजें अब स्पष्ट हो गयीं। क्रोंग और उसके साथी ने भी फायर खोल दिया और फिर थोड़ी देर बाद लगा जैसे किम और उसके साथी डिफेंस कर रहे थे। तनाव रोड की तरफ से नाले में दाखिल भिक्षु फायरिंग करते हुए करीब आ गये थे। क्रोंग ने अपने साथी को उसी जगह रुकने को कहा और स्वयं नाले में उतर गया।

काला बच्चा ने आगे बढ़कर नीचे झांका। क्रोंग और एक और रक्षक रायफलें ताने उस जगह खड़े थे, जहां किम वगैरह अपनी कुछ चीजें छोड़ गये थे लेकिन वह चादर वहां पर नहीं थी, जिस पर काला बच्चा ने सोने के टुकड़े गिरते देखे थे। दूसरे रक्षक नाले की बायीं तरफ फायरिंग करते हुए काफी आगे निकल गये थे। फायरिंग की आवाजें भी अब नाले में बहुत दूर से आती हुई महसूस हो रही थीं।

काला बच्चा सीढ़ियां उतरने की बजाए छलांग लगाकर नाले में उतर गया। दस बारह फुट ऊंची जगह थी। नीचे हल्की-सी कीचड़ थी। उसका पैर फिसला लेकिन वह फौरन ही संभल गया। क्रोंग और दूसरा रक्षक उसकी तरफ देख रहे थे।

कीचड़ में उसका पैर एक बार फिर फिसला। इस बार संभलते हुए वह चौंके बगैर न रह सका था। जिस जगह वह खड़ा था, वहां आसपास खून के छींटे नजर आ रहे थे। या तो वीफांग को गिरने से ऐसी चोट लगी थी, जिससे खून बह निकला था और या फिर कोई फायरिंग में जख्मी हुआ था। काला बच्चा आगे बढ़ने लगा। क्रोंग या दूसरे रक्षक ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। वह यकीनन काला बच्चा की हैसियत से वाकिफ थे। उस जगह लकड़ी के एक स्टूल के अलावा एक ड्रिल मशीन। हथौड़ी, गोल रेती, और एक छैनी पड़ी हुई थी। उनसे कुछ फासले पर मोटर की एक बैटरी थी, जिसके साथ एक स्विच बोर्ड भी लगा हुआ था। कुछ तब्दीलियां करके उस बैटरी को इस काबिल बनाया गया था कि उससे ड्रिल मशीन चलाई जा सके। दीवार के साथ लगा हुआ एक ताकतवर बल्ब भी इस बैटरी से रोशन था।

काला बच्चा झुककर उस ड्रिल मशीन को देखने लगा। उसके आगे नोंकदार बट नहीं थी बल्कि छैनी की तरह एक इंच चौड़ी बट लगी हुई थी। उसका आगे वाला हिस्सा खासा तेज था। उससे वह मूर्ति के अन्दर का हिस्सा काट रहे थे। जमीन पर कंकरीट वगैरह

के टुकड़े भी बिखरे हुए थे, जिनमें सोने के कुछ छोटे-छोटे टुकड़े और जवाहिरात भी चमक रहे थे। उनका मंसूबा वाकई खौफनाक था। पहले उन्होंने नाले की छः सात इंच मोटी छत काटी होगी और फिर ऊपर रखी मूर्ति के बेस तक पहुंचे होंगे। उनका मंसूबा कदाचित यही था कि अन्दर से सोना निकालकर मूर्ति को खोखला कर दिया जाए लेकिन ड्रिल मशीन चलने से मूर्ति गरम हो गयी थी। हो सकता है मूर्ति के गरम हो जाने से लोग लार्ड बुद्धा का करिश्मा ही समझते। वह मारे अकीदत के मूर्ति के सामने सिज्दा होते रहते और टाइगर वगैरह मूर्ति के अन्दर का सारा सोना निकालकर रफू-चक्कर हो जाते लेकिन काला बच्चा की जहानत ने उनका मंसूबा नाकाम बना दिया। वह थोड़ा-सा सोना ले जा सके थे। वह चंद किलो से ज्यादा नहीं रहा होगा। अगर वह रात को ऐसे वक्त जब वाट बन्द हो जाता था, अपने मंसूबे पर अम्ल करते तो यकीनन अपने मकसद में कामयाब हो सकते थे।

टाइगर वगैरह के पीछे जाने वाले रक्षक वापस आ गये थे। पूरे शहर के नीचे इस किस्म के सुरंगनुमा नालों का जाल बिछा हुआ था और वह लोग किसी तरह गायब हो गये थे, काला बच्चा के हुक्म पर वापस आने वाले रक्षकों ने सुरंग के दोनों तरफ पोजीशन संभाल ली ताकि अगर कोई सुरंग में दाखिल होने की कोशिश करे तो उससे निबटा जा सके। रक्षकों ने बिना चूं-चपड़ उसकी आज्ञा का पालन किया, जिससे काला बच्चा को अनुमान लगने में दुश्वारी पेश नहीं आई कि उसके बारे में उन्हें जो हिदायत दी गयी थी, वह बहुत उचित थी।

यह खबर अधिक देर तक छुपी नहीं रह सकी। खानकाह में परिक्षार्थियों का हज्जुम था। यह खबर फैलते ही खलबली मच गयी। एक घण्टे के अन्दर-अन्दर महाराज भी पहुंच गये और पुलिस की भारी नफरी भी। पुलिस ने फौरन ही खानकाह को परिक्षार्थियों से खाली करवा लिया और चारों तरफ पोजीशन संभाल ली। कुछ पुलिस वालों ने नाले वाली सुरंग में पोजीशन संभाल ली थी और अनगिनत पुलिस वाले शहर के नीचे सुरंगों के इस जाल में फैल गये थे पर अब यह बेकार की मोर्चाबन्दी थी। चीफांग और टाइगर जैसे लोगों से यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वह अब तक किसी नाले में छुपे होंगे।

पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी वहां पहुंचने में देर नहीं लगाई, बैंकाक में स्थित अनेक खानकाहों के भिक्षु भी पहुंच चुके

थे और अपने-अपने अन्दाज में गम व गुस्से का इजहार कर रहे थे।

पत्रकारों और प्रेस फोटोग्राफर्स की बड़ी संख्या भी वहां मौजूद थी, सुरंग के अन्दर फोटोग्राफर्स छत के उस हिस्से की तस्वीरें खींच रहे थे, जिसे काटा गया था। उन तमाम चीजों की तस्वीरें भी खींची गयीं जिनसे छत काटने में मदद ली गयी थी। काला बच्चा की भी अनगिनत तस्वीरें खींची गयीं। भिन्न-भिन्न पोजों में महाराज के साथ और तमाम बड़ी खानकाहों के पुजारियों के साथ बड़े-बड़े पुजारी काला बच्चा के साथ तस्वीरें खिंचवाने में फख्र महसूस कर रहे थे क्योंकि काला बच्चा ही वह शख्स था, जिसकी जहानत से उनका लार्ड बुद्धा लुटने और खोखला होने से बच गया था।

महाराज वांगदंग फख्र से काला बच्चा के बारे में पत्रकारों को बता रहा था। पत्रकार उससे भी तरह-तरह के प्रश्न कर रहे थे कि उसे शक कैसे हुआ। काला बच्चा उनके प्रश्नों के जवाब भी देता और तस्वीरें भी खिंचवाता रहा। उसने उन्हें उन चारों के बारे में बता दिया।

इस सारे हंगामे में रात आधी हो गयी। नाले वाली सुरंग में पुलिस का भारी पहरा बिठा दिया गया। उनके साथ महाराज के भी कुछ रक्षक थे।

महाराज काला बच्चा से बहुत खुश था। खुशी काला बच्चा को भी थी, वह उनके किसी काम तो आया। नमक का हक तो अदा किया। उसे ज्यादा खुशी इस बात की थी कि उसने बुद्ध के पैरोंकारों को गुमराह होने से बचा लिया था। अगर काला बच्चा की जहानत काम न करती तो वह लोग मूर्ति गरम होने को महात्मा बुद्ध का करिश्मा ही समझते और इससे नयी-नयी कहानियां जन्म लेतीं और शायद इस बात का कभी पता न चलता कि मूर्ति खोखली हो गयी है।

आधी रात के बाद महाराज ने काला बच्चा को जाने की इजाजत दे दी। वह खानकाह वाले हिस्से से निकलकर रिहाइशी हिस्से में दाखिल हुआ तो अलग से अंधेरे में दो ह्योले देखकर चौंक गया और फिर उसने उन्हें पहचान लिया। एक थाईनांग थी और उसके साथ ही उसकी नर्स।

थाईवांग उसे देखते ही दौड़कर उससे लिपट गयी—"तुमने हम पर बहुत बड़ा अहसान किया है काला बच्चा।" वह काला बच्चा की परेशानी पर बोसा देते हुए बोली—"तुम शायद इसे कोई मामूली बात समझते होंगे लेकिन यह तुम्हारा बहुत बड़ा कारनामा है, जिसे

हमारी कौम कभी नहीं भूलेगी। काश! मैं वह मंजर देख सकती जब महाराज और बैंकाक के बड़े-बड़े भिक्षु तुम्हारी पेशानी पर बोसे दे रहे थे।''

''तो तुम वहां आ जाती।'' काला बच्चा ने कहा।

''मुझे आने नहीं दिया गया।'' थाईवांग ने मायूसाना लहजे में जवाब दिया—''मैं तो कब से यहां खड़ी थी कि तुम आओ तो तुम्हें इस कारनामें की मुबारकबाद दूं।''

''मुबारकबाद मैंने वसूल कर ली। अब कमरे में चलो, अगर थकन चढ़ गयी तो तबियत खराब हो जायेगी।''

वह थाईवांग का हाथ पकड़कर रिहाइशी हिस्से की तरफ चल पड़ा। नर्स भी उनके साथ थी। जब वह रोशनी में पहुंचे तो बहुत से भिक्षुओं ने उन्हें घेर लिया। वह शायद काला बच्चा के इन्तजार में वहां खड़े थे और सब बड़े आदर भाव से उसकी तरफ देख रहे थे। दो-तीन भिक्षुओं ने आगे बढ़कर उनकी पेशानी पर दो तीन बोसे भी दिए थे।

वह थाईवांग वाले कमरे में आ गया था। वह न जाने कब से उसके इन्तजार में वहां खड़ी थी। उसके चेहरे पर थकन के आसार साफतौर पर नजर आ रहे थे।

''अब तुम लेट जाओ।'' काला बच्चा ने कहा—''अगर तुम्हारी तबियत खराब हो गयी तो बड़ी समस्या खड़ी हो जायेगी।''

''मैं तुमसे सब कुछ विवरण सहित सुनना चाहती हूं। तुम भी मेरे करीब बैठ जाओ।'' थाईवांग ने बेड पर लेटते हुए कहा।

वह बेड के करीब एक कुर्सी पर बैठ गया। नर्स भी एक तरफ खड़ी उसकी बातें सुन रही थी। काला बच्चा उन्हें बता रहा था कि जब बुद्ध की मूर्ति के गरम होने का शोर मचा तो उसे अचानक ही उस फिल्म का ख्याल आ गया था जो उसने बहुत अरसे पहले मम्मी-डैडी के साथ सिंगापुर में देखी थी। चंद लम्हे खामोश होने के बाद वह उन्हें बाद की घटनायें बताने लगा।

''जानते हो तुमने इस कौम पर क्या अहसान किया है?'' थाईवांग ने काला बच्चा के खामोश होने पर कहा—''इससे एक नयी उलझन पैदा हो जाती। बुद्धा के बारे में तरह-तरह के शोशे छोड़े जाते और लोग लार्ड बुद्धा की असली शिक्षा को भूल बातें कर एक नयी राह पर चल निकलते, जिससे अफवाहों को हवा मिलती।''

''यही ख्याल मेरे जहन में भी आया था।'' काला बच्चा ने जवाब दिया—''लेकिन सोने की चोरी के रहस्योद्घाटन से तय हो

गया कि वह कोई करिश्मा नहीं था।"

"मुझे एक और ख्याल आ रहा है।" थाईवांग ने कहा--"इत्तेफाक से आज वह चारों एक वक्त तुम्हारे सामने आ गये। सूरतहाल निहायत संगीन होने के बावजूद तुमने बड़ी हौसलामंदी का सबूत दिया। वह चीफांग पर तुम्हारा पहला हमला था, जिसे वह हमेशा याद रखेगा लेकिन इसके साथ ही अब तुम्हें ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है।"

"हां अब मुझे वाकई सावधान रहने की जरूरत होगी।"

"किम दारा और चीफांग के बारे में तो कुछ नहीं कह सकती। उन्हें कोई नहीं जानता लेकिन टाइगर को बैकांक का बच्चा-बच्चा जानता और पहचानता है। जहां तक गुण्डागिरी और बदमाशी का मामला है, लोग उससे जरूर दबते हैं। हर शरीफ आदमी गुण्डों और बदमाशों से बिदकता है—लेकिन यह मामला भिन्न है—बात मजहब की है कोई शराबी कबाबी और बदकार आदमी भी लार्ड बुद्ध की तोहीन बर्दाश्त नहीं करेगा। वह टाइगर को भी माफ नहीं करेंगे। उसके जिस्म का रेशा-रेशा कर डालेंगे।"

"क्या तुम समझती हो कि टाइगर किसी के हाथ आ सकेगा।" काला बच्चा ने कहा—"उसे भी इस बात का एहसास होगा कि उसे शनाख्त कर लिया गया है। वह रूपोश हो जायेगा और जब मामला ठण्डा पड़ जायेगा तो निकल आयेगा, अपने छिपे स्थान से।" काला बच्चा चंद लम्हों को खामोश हुआ फिर उसकी तरफ देखते हुए बोला—"थाईवांग! बात दरअसल यह है कि इस दुनिया के लोग चाहे उनका ताल्लुक किसी भी मजहब या फिरके से हो, फितरत में बड़े अजीब होते हैं। कभी-कभार तो किसी साधारण बात पर इस तरह भड़क उठेंगे कि कत्लो-गारत से भी बाज नहीं आयेंगे और कभी-कभी बड़ी से बड़ी बात भी इनके सिर से गुजर जाती है और इनके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। लोग किसी बात पर तैश में आकर इस तरह भड़क उठते हैं जैसे पूरी दुनिया जलाकर राख कर डालेंगे लेकिन जैसे-जैसे वक्त गुजरता जाता है उनका जोश और जज्बा मन्द पड़ जाता है और अंततः वह इस बात को भूल जाते हैं। मजहब एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी आड़ लेकर लोगों को कत्लो-गारत पर उकसाया जा सकता है। मेरे ख्याल में यह चोरी की वारदात थी। उनका मकसद सोना हासिल करना था। लार्ड बुद्धा की तोहीन की तो उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। इसमें शक नहीं कि लोग उसे लार्ड बुद्धा की तोहीन समझेंगे और कुछ गड़बड़ फैलाने की कोशिश करेंगे।

सियासत-दां ऐसे ही मौकों का फायदा उठाते हैं और उठायेंगे, लेकिन मेरा ख्याल है कि महाराज और बैंकाक की दूसरी खानकाहों के बड़े-बड़े मठाधीश इस आग को ज्यादा नहीं भड़कने देंगे। मैंने उनकी बातें सुनी हैं। परिस्थिति का जायजा लेने के बाद वह भी इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि यह एक महज चोरी की वारदात थी और इससे कानूनी तरीके से ही निपटा जायेगा।"

"वह लोगों के भड़के हुए जज्बात के आगे कैसे बन्द बांध सकेंगे?" थाई ने कहा।

"वह समझदार लोग हैं—रुहानी पेशवा हैं। लार्ड बुद्धा की शिक्षा का प्रचार करते हैं। लोग उनकी बहुत-सी बातें मानते हैं। शायद यह बात भी मान लें।" काला बच्चा ने कहा।

"तो गोया तुम्हारे ख्याल में इस मामले को मजहबी इशू नहीं बनाना चाहिए।" थाईवांग ने काला बच्चा के चेहरे पर नजरें जमाते हुए कहा।

"बिल्कुल नहीं।" काला बच्चा ने जवाब दिया—"यह चारों ऐसे आदमी हैं, जिनका शायद कोई मजहब नहीं है, दौलत ही उनका धर्म है। यह दौलत की पूजा करने वाले लोग हैं। तुम शायद भूल गयी हो कि इन्होंने मेरे मां-बाप को क्यों कत्ल किया था। मेरे बाप ने बरसों पहले इन्हें भारी नुकसान पहुंचाया था और करोड़ों का सोना गायब कर दिया था, डुबो दिया था फिर दारा हेरोइन की स्मगलिंग का रैकेट कायम करने के लिए सिंगापुर आया था, वहां इसने मेरे बाप को देख लिया। जबकि बरसों पहले हिन्दोस्तान में इसी दारा ने हमारे घर को आग लगाकर हम सबको मारने की कोशिश की थी—तब मैं एक महीने का था और इन्हीं लोगों के डर से मेरा बाप सिंगापुर आकर रहने लगा था। सिंगापुर में देख लिए जाने के बाद दारा के दिमाग में लाजिमी तौर पर वह बात आई थी कि मेरा बाप उनके रास्ते की रुकावट बनेगा, इसलिए किराए के कातिलों के जरिए मेरे बाप को रास्ते से हटा दिया गया और फिर मैं उनकी नजरों में आ गया। मैं उस धरती का हूं जहां उधम सिंह पैदा हुआ था। उधमसिंह ने अपने मां-बाप के कातिल को आखिरकार लंदन में मारा था। मैं भी उनके जुर्म का चश्मदीद गवाह था—मैं उनके लिए न सिर्फ कानूनी खतरा था बल्कि उधमसिंह भी था। वह समझ गये कि मेरी जिन्दगी उनके लिए खतरा है। वह मुझे रास्ते से हटाने की कोशिश करने लगे और मैं उनसे बचने की कोशिश करता हुआ यहां तक आ गया। उसूली तौर पर वह मेरे दुश्मन हैं। उन्होंने यह जो भी किया है मेरी

दुश्मनी में ही किया है लेकिन उनका मंसूबा कामयाब नहीं हो सका। उनका मंसूबा सिर्फ सोना चुराना नहीं था।"

"तो फिर...?" थाईवांग ने उलझी हुई नजरों से उसकी तरफ देखा।

"वह इस केस में मुझे फंसाना चाहते थे।" काला बच्चा ने कहा।

"क्या मतलब? तुम्हें किस तरह फंसाना चाहते थे?"

"वह समझ गये थे कि जब तक मैं महाराज की पनाह में हूं, वह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मुझे महाराज की नजरों से गिराने के लिए उन्होंने यह साजिश तैयार की थी। यह साजिश दरअसल दारा के जहन की पैदावार थी। उनका ख्याल था कि अगर कामयाब हो गये तो एक तरफ उन्हें लाखों डालर्स का सोना मिल जायेगा और दूसरी तरफ महाराज मुझे धक्के देकर निकाल देगा या हो सकता है मुझे कोई ऐसी कष्टप्रद सजा भी दे दे, जिसे मैं बर्दाश्त न कर सकूं लेकिन मुझे इस साजिश का सही वक्त पर पता चल गया था और मैंने महाराज को इससे आगाह कर दिया था।"

"कैसी साजिश?"

"शीनियो।" काला बच्चा ने नर्स की तरफ देखते हुए कहा—"मैंने आज रात खाना नहीं खाया था। किचन में इस वक्त शायद खाने को तो कुछ न मिले अलबत्ता चाय का सारा सामान वहां मौजूद होगा। अगर तुम मेरे लिए एक कप चाय बनाने की जहमत करो तो मैं तुम्हारा बहुत शुक्रगुजार हूंगा।"

"चाय मैं भी पियूंगी। खाना तो मैंने भी नहीं खाया था।" थाईवांग ने कहा। वह समझ गयी थी कि काला बच्चा चाय के बहाने नर्स को वहां से हटाना चाहता था। नर्स के जाने के बाद वह काला बच्चा की तरफ देखते हुए बोली—"हां अब बताओ—क्या साजिश थी?"

"तुम्हें याद है, एक रोज शाम के बाद कौशल्या खानकाह से बाहर मुझसे मिलने आई थी और फिर रात ग्यारह बजे मैं उससे मिलने गया था।"

"हां...तुमने वापस आकर बताया था कि वह महाराज से माफी मांगना चाहती है और उसके लिए तुम्हें माध्यम बना रही थी, क्योंकि महाराज तुम्हारी बात मान लेते हैं।"

"हां...मैंने तुम्हें यही बताया था और यह बात दुरुस्त भी थी। महाराज ने मुझे सख्ती से मनाकर किया था कि असली बात तुम्हें

भी न बताऊं।"

"और वह असली बात क्या थी?"

"कौशल्या इन दिनों टाइगर के रहमो-करम पर थी और उसकी इजाजत से किसी नाइट क्लब में किक बॉक्सिंग के शो कर के दो वक्त की रोटी कमा रही थी। पन्द्रह रोज पहले दारा ने कौशल्या को देख लिया, वह हिन्दोस्तानी लड़की बड़े तीखे नयन-नक्श की मालिक है। मर्दों के लिए उसमें बड़ी चाशनी है।"

"मगर तुम उसे ठुकरा कर भागे थे।" थाईवांग मुस्कराई।

"हां, मैं इसे लानत समझता हूं—बहरहाल...दारा ने टाइगर को अपनी ख्वाइश का इजहार किया। टाइगर उस रात कौशल्या को लेकर उस बंगले में पहुंच गया जहां दारा ठहरा हुआ था। वहां किम और चीफांग भी मौजूद थे। कौशल्या उनके लिए खिलौना बन गयी। वह उन्हें अपने हाथों से शराब पिलाती रही और फिर उसी दौरान में दारा ने मंसूबा उन तीनों के सामने पेश कर दिया। उस मंसूबे के मुताबिक वह एक मकान किराये पर लेते, जो मेरे नाम से होता और सोना चोरी करके उसका कुछ हिस्सा उस मकान में पहुंचा देते फिर किसी जरिए से मुझे उस मकान में लाया जाता—इस मकसद के लिए कदाचित किसी लड़की का इस्तेमाल किया जाता, फिर महाराज को सूचना दे दी जाती कि मैंने कुछ लोगों के साथ मिलकर महात्मा बुद्ध का सोना चुराया है। महाराज मुझे उस मकान में लड़की और सोने के साथ पकड़ लेते। वहां एक दो आदमी भी उनके काबू में आ जाते, जो यह गवाही देते कि यह साजिश मैंने ही की थी, क्योंकि मैं थाईलैण्ड से भागना चाहता था। उसके बाद दारा वगैरह को मुझे रास्ते से हटाने के लिए कुछ न करना पड़ता। महाराज ही मेरा किस्सा तमाम कर देते।" काला बच्चा खामोश होकर गहरी सांस लेने लगा। यह विवरण बताते हुए उसे अपने आप में सनसनी की कैफियत महसूस हो रही थी।

"जब वह यह मंसूबा बना रहे थे तो कौशल्या उन्हें जाम भरकर पिला रही थी। महाराज से गद्दारी करके वह पछता रही थी, क्योंकि टाइगर से उसे जिल्लत और रूसवाई के सिवा कुछ नहीं मिला था। वह खामोशी से यह बातें सुनती रही। उसने जाहिर नहीं होने दिया कि वह उनकी बातों में दिलचस्पी ले रही है। वैसे उसके जहन में यह ख्याल जरूर आया था कि अगर वह महाराज को इस साजिश से आगाह कर दे तो उसे माफी मिल सकती है। अगले रोज शाम के बाद वह इस वाट के बाहर चोरी-छिपे मुझसे मिली और कहा कि

अगर महाराज उसे माफ कर दें तो वह उन्हें इस बाट के खिलाफ एक खौफनाक साजिश से आगाह कर सकती है। कौशल्या से रात के ग्यारह बजे मुलाकात के बाद मैं महाराज के पास पहुंच गया और उन्हें सारी साजिश बता दी। कौशल्या यह नहीं बता सकी कि महात्मा बुद्ध का सोना चुराने का तरीका क्या होगा। बाद में मूर्ति की सुरक्षा का बन्दोबस्त कर दिया गया था, लेकिन उस सुरंग की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया। वह तो इत्तेफाक से मेरे जहन में यह बात आ गयी। सोना चुराने की भी और मुझे फंसाने की भी, महाराज और दूसरे लोगों का ख्याल है कि वह लोग ज्यादा से ज्यादा चार-पांच किलो सोना निकालने में कामयाब हो गये थे, जिसे वह अपने साथ ले गये।''

''तो यह बात है।'' थाईवांग ने गहरा सांस लिया—''कौशल्या कहां है?''

''मुझे नहीं मालूम।'' काला बच्चा ने जवाब दिया—''मैंने उसे रूपोश होने का मशवरा दिया था, क्योंकि उसे खतरा था कि अगर टाइगर को शक भी हो गया तो उसे कत्ल कर दिया जायेगा। मैंने उससे यह भी कहा था कि वह एक हफ्ते बाद मास्टर होचिन से फोन पर सम्पर्क कर ले। मैं नहीं कह सकता कि वह इस वक्त कहां होगी।''

थाईवांग कुछ कहना चाहती थी कि नर्स शीनियो चाय लेकर अन्दर दाखिल हुई, उसने एक छोटी ट्रे में दो मग रखे हुए थे। एक मग काला बच्चा को दे दिया और ट्रे थाईवांग के सामने बेड पर रख दी।

''अगर मेरी जरूरत न हो तो मैं जाऊं... मुझे नींद आ रही है।'' वह पहले थाईवांग और फिर काला बच्चा की तरफ देखते हुए बोली। उसकी आंखों में सुर्खी तैर रही थी।

''हां ठीक है, तुम जाओ, आराम करो।'' थाई ने कहा।

नर्स शीनियो के जाने के बाद वह चाय की चुस्कियां लेते हुये देर तक बातें करते रहे। थाईवांग जमुहाइयां लेने लगी और काला बच्चा का दिमाग भी नींद से बोझिल होने लगा, वह उठकर अपने कमरे में आ गया और बिस्तर पर लेटते ही नींद आ गयी।

सुबह थाईवांग ने उसे झिंझोड़कर जगा दिया। उस वक्त आठ बजे थे। वह चार बजे के लगभग सोया था। चार घण्टों में नींद पूरी नहीं हो सकी थी। इस तरह जगाये जाने पर दिमाग में सनसनाहट-सी हो रही थी।

''क्या हुआ—क्या बात है?'' काला बच्चा लगभग चीख उठा।

''यह देखो—यह क्या है।'' थाईवांग बोली। उसके लहजे में

थरथराहट थी।

काला बच्चा चन्द लम्हें आंखें मलता रहा। नजरों के सामने कुछ धुंध-सी थी। थाई के हाथ में दो अखबार थे। उन अखबारों में हैड लाइन्स पढ़कर वह उछल पड़ा। उसके दिमाग में धमाके होने लगे।

महात्मा बुद्ध की मूर्ति से सोने की चोरी की खबर रात ही को जंगल की आग की तरह पूरे शहर में फैल गयी थी। लोगों को यह भी पता चल गया था कि यह वारदात टाइगर ने अपने कुछ नामालूम साथियों के साथ मिलकर की थी। लोगों ने रात ही को हंगामें शुरू कर दिए थे। ऐसे तीन नाइट क्लब जला दिए गये थे, जिनके बारे में शक था कि वह टाइगर की मिल्कियत हैं। पुलिस और दंगाइयों में रात भर झड़पें होती रहीं, जिसमें तीन आदमी मारे गये थे और कई घायल हो गये थे।

हंगामों के अलावा बुद्ध की मूर्ति से सोने की चोरी की खबरें भी नुमायातौर पर छापी गयी थीं। काला बच्चा की तस्वीरें भी छपी थीं। अपनी तस्वीरों को देर तक देखता रहा। अखबारों ने उसके बारे में बहुत कुछ लिखा था। उसे हीरो करार दिया गया था। अखबारों की सूचना के मुताबिक टाइगर और उसके साथी लगभग दस किलो सोना निकाल ले गये थे।

"देखा...देखा तुमने...।" थाईवांग काला बच्चा की तरफ देखते हुए बोली—"तुम इसे चोरी की मामूली वारदात समझते थे। रात को हंगामों में तीन आदमी मारे गये हैं। यह हंगामे और बढ़ेंगे और लोग मारे जायेंगे। लोग उस वक्त तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक टाइगर और उसके साथियों को मौत के घाट नहीं उतार देते।"

"असल लोग सामने नहीं आयेंगे और बेगुनाह मारे जायेंगे।" काला बच्चा ने यह कहते हुए अखबार एक तरफ रख दिया और बिस्तर से उठ गया।

उसके लगभग एक घण्टे बाद वह थाई के साथ नाश्ता कर रहा था। नाश्ते के दौरान भी उनकी बात-चीत का विषय वही था। इसी बीच में उसे सूचना मिली कि शहर में इस वक्त भी हंगामे हो रहे हैं। महाराज और दूसरे बड़े-बड़े मठाधीश लोगों को हंगामों से रोकने के लिए पूरे शहर में फैल गये थे।

एक तरफ शहर में हंगामे हो रहे थे और दूसरी तरफ एक और दिलचस्प सूरतेहाल देखने को मिली। काला बच्चा उस वक्त थाईवांग के कमरे में बैठा हुआ था कि वाट के सेन्ट्रल गेट की ओर से शोर

की आवाजें सुनाई दीं। उसके कुछ देर बाद ही क्रोंग दौड़ता हुआ उनके कमरे में आ गया। उसके हाथ में ऑटोमेटिक रायफल थी और चेहरे पर अजीब से भाव थे।

"क्या बात है, यह शोर कैसा है?" काला बच्चा ने क्रोंग से पूछा।

"वाट के सामने सैकड़ों लोग जमा हो रहे हैं। वह अपने उस मुहसिन को देखना चाहते हैं, जिसने लार्ड बुद्धा की मूर्ति को चोरी होने से बचाया था।" क्रोंग ने कहा—"मेरे साथ चलो, तुम्हें शोफांग ने बुलाया है।"

शोफांग इस वाट का इन्चार्ज था। काला बच्चा ने थाईवांग को देखा और उठकर खड़ा हो गया। थाईवांग भी उसके साथ जाने को तैयार हो गयी। वह अन्दरुनी दरवाजे से होते हुए शोफांग के कमरे में पहुंच गये। शोफांग कमरे में टहल रहा था। उसके अन्दाज में बेचैनी थी। उसने पहले काला बच्चा और फिर थाईवांग की तरफ देखा। उसकी नजरों और चेहरे के भावों से अन्दाजा लगाया जा सकता था कि उसे यह सूरतेहाल पसंद नहीं आई थी।

"बाहर कुछ लोग तुमसे मिलना चाहते हैं।" उसने काला बच्चा की तरफ देखते हुए कहा—"वह तुम्हारा शुक्रिया अदा करना चाहते हैं। उनके सामने देवता बनने की जरूरत नहीं, मैं नहीं चाहता कि यहां कुछ और खुराफात शुरू हो जायें। तुम सिर्फ दो मिनट उनके सामने रुकोगे और वापस चले आओगे और उनके सामने कोई भाषण देने की भी जरूरत नहीं। उम्मीद है तुम मेरी बातों का ख्याल रखोगे।"

शोफांग की यह बातें काला बच्चा के लिए आशा के विपरीत नहीं थीं। जब उसे इस खानकाह में भेजा गया था, तो उसके अगले रोज ही उसने शोफांग का रवैया महसूस कर लिया था। यहां काला बच्चा की बढ़ती शौहरत को वह पसंद नहीं करता था लेकिन काला बच्चा ने इन बातों को कभी नोटिस में नहीं लिया था। इतना अरसा खानकाह और भिक्षुओं के साथ रहते हुए यह बात काला बच्चा की समझ में आ गयी थी कि यहां भी हर कोई एक-दूसरे को गिराने के चक्कर में रहता था लेकिन काला बच्चा का इस मामलात से कोई सम्बन्ध नहीं था। न तो वह भिक्षु था और न ही इस हैसियत से कोई धार्मिक पद पाने का इच्छुक था मगर शोफांग शायद यह समझता था कि काला बच्चा उसकी जगह लेना चाहता है, लेकिन काला बच्चा के दिल में ऐसी कोई तमन्ना नहीं थी। उसे तो बस अचानक ही यह सहारा मिल गया था। वह तो सिर्फ अपने दुश्मनों से मुकाबला करने

के लिए अपने आपको तैयार करना चाहता था, इसके सिवा उसका कोई उद्देश्य नहीं था।

काला बच्चा ने थाईवांग को इशारा किया और क्रौंग के साथ उस कमरे से निकल गया। विभिन्न राहदारियों से घूमते हुए वह सेन्ट्रल हॉल से निकलकर कम्पाउण्ड में आये, सामने का दृश्य देखकर काला बच्चा के होठों पर हल्की-सी मुस्कराहट आ गयी। कम्पाउण्ड के गेट के सामने हजारों लोग जमा थे। उनमें औरतें भी थीं, मर्द भी थे, बच्चे भी थे, बूढ़े भी थे। फलों के गुलदस्ते लगभग हर एक के हाथ में नजर आ रहे थे। गेट के अन्दर और बाहर भी शास्त्रधारी पुलिस के जवान मौजूद थे, जो लोगों को गेट से दूर रखने की कोशिश कर रहे थे। क्रौंग के कहने पर काला बच्चा गेट से बाहर निकलकर पत्थर के एक चबूतरे पर खड़ा हो गया। उसे देखकर लोगों का जोशो-खरोश बढ़ गया। उनके नारों से फिजा गूंज रही थी।

काला बच्चा के साथ थाईवांग भी थीं और पुलिस वालों ने उन्हें घेरे में ले रखा था, लेकिन लोग आगे बढ़े चले आ रहे थे। वह करीब से काला बच्चा को देखना चाहते थे। उनकी नजरों में श्रद्धाभाव था। अपने लिए लोगों की यह श्रद्धा और जोशो-खरोश देखकर काला बच्चा के दिमाग में सनसनी महसूस हो रही थी। उसे तो उसके मां-बाप ने मनहूस ही समझा था। उसके मां-बाप गोरे-चिट्टे थे और वह काला था। जब वह पैदा हुआ तो घर जला, जब वह तेरह वर्ष का हुआ तो मां-बाप मारे गये। मां-बाप उसके मनहूस साये को दूर रखना चाहते थे। आज वही मनहूस हजारों लोगों के सामने देवता बना खड़ा था। वह जिसे चोरी की मामूली वारदात समझता था, वह दरअसल कोई मामूली वारदात नहीं थी। वह मामूली-सी वारदात दरअसल लार्ड बुद्धा पर हमला था। जिसे नाकाम बनाकर उसने एक बहुत बड़ा कारनामा अंजाम दिया था। उस वक्त उसके जहन में ऐसी कोई बात नहीं थी कि वह कोई बहुत बड़ा कारनामा अंजाम दे रहा है, लेकिन अब अपने सामने श्रद्धालुओं की भीड़ देखकर उसे एहसास होने लगा था कि उसने सचमुच बहुत बड़ा कारनामा अंजाम दिया था, मगर उसके ख्याल में उसने किसी पर कोई अहसान नहीं किया था। अपना छोटा-सा फर्ज अदा किया था और यह भी जानता था कि यह जो कुछ भी हुआ था, उसका जिम्मेदार वह खुद था। न वह इस खानकाह में मौजूद होता और न दारा वगैरह सोना चुराने का मंसूबा बनाते।

उसके सामने चबूतरे पर और इर्द-गिर्द गुलदस्तों का ढेर बुलन्द होता जा रहा था। लोग उसपर श्रद्धावश फूल न्योछावर कर रहे थे।

सिर्फ फूल ही नहीं, कीमती चीजें भी उसके कदमों में ढेर कर रहे थे। औरतों ने जेवर उतारकर उसके कदमों में डाल दिए, मर्द अपनी कलाइयों पर बंधी हुई घड़ियां और अंगूठियां नजराने के तौर पर उसे पेश कर रहे थे।

यह सूरतेहाल उसके लिए दिलचस्प भी थी और सनसनी खेज भी। उसने तो कभी सोचा भी नहीं था कि एक मामूली-सा कारनामा अंजाम देकर लाखों दिलों का महबूब बन जायेगा।

खानकाह के इंचार्ज ने उसे सिर्फ दो मिनट का वक्त दिया था लेकिन उसे इस चबूतरे पर खड़े हुए एक घण्टा हो चुका था। लोगों का हज्जुम बढ़ता जा रहा था। तीन-चार भिक्षु चबूतरे के आसपास ढ़ेर होने वाली कीमती चीजे समेट रहे थे।

उसने एक बार मुड़कर देखा तो शोफांग दो और भिक्षुओं के साथ बुद्ध की मूर्ति वाले जंगले के करीब खड़ा उसकी तरफ ही देख रहा था। उसके चेहरे के हाव-भावों से काला बच्चा उसके दिल का हाल पढ़ सकता था। उसकी उससे खालिश कोई खालिश नहीं थी। वह उसे कोई दुख नहीं पहुंचाना चाहता था इसलिए अब उसने वहां से हटने का फैसला कर लिया और थाईवांग की तरफ देखते हुए सरगोशी की—

"शोफांग ने मुझे सिर्फ दो मिनट दिये थे—अब एक घण्टे से ज्यादा वक्त हो चुका है, मेरा ख्याल है अब हमें वापस चलना चाहिए।"

"मैं भी देख रही हूं।" थाईवांग मुस्कराई—"अगर वह अपना खून जला रहा है तो इसमें हमारा क्या कसूर—खड़े रहने दो उसे।"

"मेरा ख्याल है यह अच्छी बात नहीं है।" काला बच्चा ने कहा—"मैं शोफांग को नाराज करना उचित नहीं समझता। मैं अकारण अपने दुश्मनों की संख्या में बढ़ोतरी नहीं करना चाहता।"

"इसमें दुश्मनी की क्या बात है?" थाईवांग बोली।

"तुमने उसकी बातों से अन्दाजा नहीं लगाया।" काला बच्चा ने जवाब दिया—"वह इस वाट का इन्चार्ज है। वह नहीं चाहता कि यहां उसके मुकाबले में किसी और को अहमियत दी जाए, उसे यह भी अन्देशा है कि शायद मैं उसके अधिकार छीनना चाहता हूं, जबकि मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है। मुझे तो यहां सिर्फ भिक्षुओं को मार्शल आर्ट्स की ट्रेनिंग देने के लिए भेजा गया था मगर महाराज ने मेरी जिम्मेदारियां बढ़ा दीं। यही बात शायद शोफांग को नागवार गुजरी है, लेकिन मैं बात को आगे नहीं बढ़ाना चाहता और वाकई मुझे हीरो बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिएं।"

"ठीक है।" थाईवांग ने गहरा सांस लेते हुए कहा—"अगर तुम इस तरह पीछे हटना चाहते हो तो मैं क्या कर सकती हूं?"

वह चबूतरे से उतरना ही चाहता था कि एक जवान और खूबसूरत लड़की लोगों के हुजूम को चीरती हुई आगे बढ़ी। उसने दोनों हाथों में एक फूलों का गुलदस्ता उठा रखा था। लोग गुलदस्ते चबूतरे और उसके आसपास रखते हुए चले जा रहे थे लेकिन वह लड़की गुलदस्ता काला बच्चा के हाथों में देना चाहती थी। काला बच्चा ने एक नजर उसकी तरफ देखा। उसने नीले रंग की मिनी स्कर्ट और ब्लाउज पहन रखा था। उम्र अट्ठारह साल से ज्यादा नहीं थी। काला बच्चा थाईवांग के साथ चबूतरे की सीढ़ी की तरफ बढ़ गया।

"होल्ड ऑन।" लड़की चीखी—"एक्सक्यूज मी।"

काला बच्चा रुक गया। वह लड़की लोगों को इधर-उधर हटाती हुई आगे आ गयी और गुलदस्ता काला बच्चा की तरफ बढ़ा दिया।

"थैंक यू...शुक्रिया!" उसने मुस्कुराते हुए गुलदस्ता लड़की के हाथ से ले लिया। लड़की के चेहरे पर इस तरह संतोष के भाव प्रकट हुए जैसे सिर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो, उसके होंठों पर हल्की-सी मुस्कुराहट थी। वह चंद लम्हें वहां खड़ी काला बच्चा की तरफ देखती रही और फिर लोगों के हुजूम में रास्ता बनाती वापस चली गयी।

काला बच्चा थाईवांग के साथ चबूतरे से उतर आया। तीन-चार भिक्षु अब भी वह चीजें समेटने में व्यस्त थे, जो लोगों ने काला बच्चा की खिदमत में नजराने के तौर पर पेश की थीं और इधर-उधर बिखरी हुई थीं।

गेट के इनरडोर के दायें-बायें दो हथियारबंद पुलिस वाले खड़े थे। करीब से गुजरते हुए काला बच्चा ने वह गुलदस्ता एक पुलिस वाले के हाथ में दे दिया, जिसे उसने लोहे के जंगले की सलाखों में फंसाकर टिका दिया। गेट के सामने अब भी सैकड़ों लोग जमा थे।

काला बच्चा सोने की मूर्ति वाले जंगले के करीब से गुजरा तो वहां खड़ा हुआ ओफोंगा बड़ी नागवार-सी नजरों से उसकी तरफ देख रहा था। थाईवांग तो उसकी तरफ देखकर मुस्करा दी थी, मगर काला बच्चा ने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया था।

वह दोनों खानकाह वाले हिस्से से निकलकर रिहाइशी हिस्से की तरफ आ गये और फिर उसी वक्त वह कान फाड़ देने वाला धमाका सुनाई दिया। काला बच्चा के कदम लड़खड़ा गये। अपने

आपको संभालने की कोशिश भी नहीं कर सका और नीचे गिरा। थाईयांग भी गिर चुकी थी। धमाके के फौरन ही बाद चीखों का शोर सुनाई देने लगा। काला बच्चा के हवास जड़ से हो गये थे। कानों में सांय-सांय की आवाजें गूंज रही थीं जैसे तेज आंधी चल रही हो, चंद लम्हों तक वह समझ न सका कि हुआ क्या है? अचानक ही जैसे वह होश में आ गया। चीखों की आवाजें उसके कानों से टकरा रही थीं। वह एक झटके से उठ खड़ा हुआ। थाईयांग जमीन पर पड़ी हुई थी। खौफ व दहशत से उसकी आंखें फटी पड़ रही थीं।

"तुम अपने कमरे में जाओ। मेरे पीछे मत आना।" काला बच्चा यह कहता हुआ खानकाह की तरफ दौड़ा।"

एक अजीब कयामतखेज मंजर उसके सामने था। कम्पाउण्ड में तीन चार भिक्षु फर्श पर पड़े तड़प रहे थे। गेट के पास पुलिस वालों की लाशें पड़ी हुई थीं और इनरडोर के करीब, जो दो पुलिस वाले खड़े थे उनके जिस्मों के चीथड़े उड़ गये थे। शारीरिक अंग इधर-उधर बिखरे हुए थे। गेट के बाहर भी कुछ लाशें पड़ी थीं। उनमें दो भिक्षु और ग्यारह साल की बच्ची की भी लाश थी।

कुछ देर पहले यहां बड़ा पुरकशिश मंजर था। बुद्ध के श्रद्धालु अपने मुहसिन को मान-सम्मान देने के लिए उमड़े पड़ रहे थे, उनमें एक उत्साह था, एक उमंग थी। वह सब धार्मिक गीत गा रहे थे मगर अब चीख-दहाड़ मची हुई थी। सुर बदल गये थे आहें थीं—पुकारें थीं और थी अफरा-तफरी। सैकड़ों भागने की कोशिश में एक-दूसरे के ऊपर गिर पड़े थे।

हर तरफ खून ही खून बिखरा हुआ था। गोश्त के लोथड़े दीवारों से चिपके हुए थे, जिनसे खून टपक रहा था। गेट पूरी तौर पर तबाह हो गया था। सोने की मूर्ति वाले जंगले को भी नुकसान हुआ था। शोफांग जंगले के करीब फर्श पर पड़ा हुआ था। उसकी एक बांह से खून बह रहा था।

यह खौफनाक मंजर देखकर काला बच्चा कांप उठा, जो रक्षक और पुलिस वाले जख्मी होने से बच गये थे उन्हें इस कयामत खेज मंजर ने स्तब्ध कर दिया था—जैसे उन्हें लकवा मार गया हो। काला बच्चा की तरह उनकी भी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब कुछ कैसे हुआ था और फिर अचानक एक रक्षक चीख उठा, वह कांग था।

"लोगों को यहां से हटाओ—घायलों को उठाओ... वह मर रहे हैं।"

फोंग भी जख्मी था लेकिन उसने अपने हवास बहाल रखे हुए थे। दूसरे रक्षक और पुलिस वाले भी हरकत में आ गये। काला बच्चा भी साथ हो लिया और वह सब मिलकर घायलों को उठाने लगे। कुछ ही देर बाद चारों तरफ सायरनों की आवाजें सुनाई देने लगीं। लगता था जैसे पूरे शहर की पुलिस कारों और एम्बूलेंसों ने इस तरफ का रुख कर दिया हो और फिर देखते ही देखते वाट के इर्द-गिर्द के इलाकों को पुलिस ने घेरे में ले लिया। हमदादी पार्टियों ने काम शुरू कर दिया। लाशों और जख्मियों को उठा-उठा कर एम्बूलेंसों में डाला जाने लगा।

एक बार फिर शहर की तमाम खानकाहों के मठाधीश और पुलिस के आला ऑफिसर वहां पहुंच गये। परिस्थिति का जायजा लेने के बाद यह जानने में देर नहीं लगी कि काला बच्चा को बम से उड़ाने की कोशिश की गयी थी। विशेषज्ञों ने यह भी पता लगा लिया कि यह बम किस जगह फटा था?

काला बच्चा की नजरों के सामने नीले लिबास वाली उस खूबसूरत लड़की का चेहरा घूम गया, जिसने सबसे अंत में उसे गुलदस्ता दिया था। वह गुलदस्ता काला बच्चा ने इनरडोर के करीब खड़े हुए एक कांस्टेबिल को थमा दिया था, जिसे उसने जंगले की सलाखों में फंसा दिया था। बम उसी गुलदस्ते में था। सबसे अधिक वही जगह प्रभावित हुई थी और इस इनरडोर के करीब खड़े हुए दोनों पुलिस वालों के जिस्मों के परखच्चे उड़ गये थे।

एक-एक पल काला बच्चा की नजरों के सामने घूम गया। नीले लिबास वाली खूबसूरत लड़की किस तरह हज्जुम को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी। उसने काला बच्चा को आवाजें देकर रोका था और गुलदस्ता काला बच्चा के हाथ में देख लेने के बाद उसके चेहरे पर संतोष के भाव उजागर हुए थे। वह गुलदस्ता प्लास्टिक के एक खूबसूरत गुलदान में था। काला बच्चा को वह गुलदस्ता दूसरे गुलदस्ता की अपेक्षा भारी महसूस हुआ था लेकिन उस वक्त उसने ख्याल नहीं किया था और अब बात समझ में आ गयी थी कि उस लड़की ने यह गुलदस्ता विशेष तौर पर उसके हाथ में ही क्यों दिया था। उस गुलदस्त में फूलों में छिपा छोटा मगर निहायत ताकतवर बम मौजूद था।

अगर वह गुलदस्ता चंद मिनट और उसके हाथों में रहता तो उसके जिस्म के परखच्चे उड़ जाते, लेकिन किस्मत ने एक बार फिर उसका साथ दिया। वह तो खैर बच गया था, मगर कई बेगुनाह मारे गये थे।

महाराज भी परिस्थिति को भांप गये थे। इस वक्त वहां बड़े-बड़े मठाधीशों में यह बहस छिड़ गयी थी कि यह मजहबी जंग है। पहले लार्ड बुद्धा की मूर्ति से सोना चुराया गया और फिर बाट में यह खूंरेंजी लेकिन महाराज वांगदंग बड़ी मुश्किल से उन मठाधीशों को कायल करने में कामयाब हो गये कि यह कोई मजहबी जंग नहीं एक जरायम पेशा गिरोह की मुजरिमाना सरगर्मियां हैं, जो सिर्फ और सिर्फ काला बच्चा को मौत के घाट उतारना चाहते हैं। वह गुलदस्ता उसी के हाथ में दिया गया था ताकि उसकी जिन्दगी का खात्मा हो जाए।

इस बाट को दूर-दूर तक पुलिस की भारी नफरी ने घेरे में ले रखा था। बाट के नीचे नाले में भी पुलिस की भारी नफरी मौजूद थी। शाम तक वहां से मलबा हटा दिया गया और खून से लथपथ दीवारें और फर्श भी धो दिया गया।

शाम को काला बच्चा थोड़ी देर के लिए थाईवांग के पास आ गया। वह बिस्तर पर लेटी हुई थी और बड़ी निढ़ाल-सी लग रही थी। उसे अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई थी कि वह सब कुछ अपनी आंखों से देख आई, जिससे उसकी तबियत और खराब हो गयी थी। शीनियो नाम की वह नर्स अपने काम के सिलसिले में बड़ी कर्तव्यनिष्ट साबित हुई थी, उसने बड़ी महारत से थाईवांग को संभाल रखा था।

सुबह नाश्ते के बाद काला बच्चा ने अब तक कुछ नहीं खाया था। इस परिस्थिति में खाने-पीने का होश ही किसे रहा था। थाईवांग और शीनियो भी भूखी बैठी रही थीं, उस वक्त शीनियो ने अक्लमंदी यह की कि किचन से चाय बनाने के अलावा खाने-पीने की कुछ चीजें भी ले आई थी।

लगभग एक घण्टे बाद वह दोबारा बाट में आ गया, जहां महाराज के अलावा चंद और मठाधीश भी मौजूद थे। बम धमाके से खानकाह की बिजली और टेलीफोन की लाइनें ही प्रभावित हुई थीं, जिन्हें दुरुस्त कर दिया गया था और इस वक्त कुछ ऐसे विशेषज्ञ भी मौजूद थे, जो इस बात का जायजा ले रहे थे कि महात्मा बुद्ध की सोने की प्रतिमा को खुली जगह से हटाकर सेन्ट्रल हॉल में किसी जगह रखा जाए।

रात दस बजे के करीब काला बच्चा कमरे में आया तो महाराज भी उसके साथ था। थाईवांग महाराज को देखकर बैठ गयी। महाराज के खाने का प्रबन्ध भी वहीं कर दिया गया था। उन दोनों बल्कि चारों ने वहीं बैठकर खाना खाया। नर्स शीनियो भी उनके साथ थी।

खाने के बाद शीनियो को वहां से हटा दिया गया और महाराज उससे वह बातें करने लगा, जो दूसरों के सामने नहीं की जा सकती थीं।

"सारी परिस्थिति तुम्हारे सामने है।" महाराज कह रहा था—"तुमने उनका सोने की चोरी वाला मंसूबा नाकाम बना दिया था। यह उसकी प्रतिक्रिया है कि आज तुम्हें बम से उड़ा देने की कोशिश की गयी लेकिन हमेशा की तरह तुम इस बार भी बच गये। इसका एक मतलब यह भी है कि तुम सच्चाई पर हो और सच्चाई को कभी शिकस्त नहीं दी जा सकती लेकिन इसके साथ ही तुम्हारे लिए खतरात बढ़ गये हैं। तुम पर पहले से ज्यादा तेजी से हमले होंगे और कल रात से अब तक जो परिस्थिति सामने आई है, उससे मैंने यह भी अन्दाजा लगाया है कि अन्दरुनी तौर पर भी तुम्हारे खिलाफ कुछ साजिश हो रही है। मैं नहीं चाहता कि यहां तुम्हें कोई नुकसान पहुंचे, इसलिए मैंने फौरीतौर पर तुम्हें यहां से हटाने का फैसला किया है।"

"मुझे अपने खिलाफ इस अन्दरुनी साजिश का कुछ अन्दाजा हो रहा है।" काला बच्चा ने महाराज के खामोश होने पर मुस्कराते हुए कहा—"शोफांग को मुझसे जो नफरत पैदा हो गयी है, उसकी एक झलक आज सुबह मैंने उसकी आंखों में देख ली थी और आज शाम को तो उसने साफतौर पर कह दिया था कि इस वाट में जो कुछ हो रहा है उसका जिम्मेदार मैं हूं। वह खुलकर तो नहीं कह सका लेकिन उसकी ख्वाइश है कि मैं जल्द से जल्द यहां से चला जाऊं।"

"शोफांग स्वार्थी किस्म का आदमी है।" महाराज ने कहा—"लार्ड बुद्धा की शिक्षा हमें एक-दूसरे से प्रेम और सद्भाव सिखाती है—लेकिन तुम शायद अभी इन बातों को न समझ सको। सियासत की तरह मजहब में भी धोखा, मक्कारी, फरेब और स्वार्थ पैदा हो चुका है। किसी एक ही मठ के के मजहबी पेशवा एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए मौके की ताक में रहते हैं। यही सब कुछ हमारे यहां भी हो रहा है। कुछ अन्दरुनी साजिशें हमारे इस मजहब को कमजोर कर रही हैं। अगर तुम अध्ययन करोगे तो तुम्हें पता चलेगा कि लार्ड बुद्धा का सम्बन्ध एक हिन्दू राजवंश से था—वह राजकुमार थे—फिर तमाम राजपाठ और हिन्दू मत को गर्क करके छुआछूत का भेदभाव मिटाते हुए उन्होंने इस मजहब की बुनियाद डाली थी, जिसका मकसद सच्चाई और मानव प्रेम का प्रचार है। लार्ड बुद्धा की शिक्षा कत्ल, चोरी, झूठ, नशा, हवस, ऐशो-इशरत और मानव अधिकार के हनन से रोकती है। लेकिन आज यह सब कुछ हो रहा

है। त्याग और उपवास और मानवता इस धर्म की बुनियाद है लेकिन आज कितने अनुयाई हैं, जो इस पर अमल करते हैं। इन सिद्धांतों का प्रचार करने वाले मठाधीश खुद गुनाहों के दलदल में धंसे हुए हैं। शोफांग का शुमार भी ऐसे ही लोगों में होता है। वह आखिर तो भिक्षु है। लेकिन रईसों जैसी जिन्दगी बसर करता है। उसने अपने कमरे को ऐशगाह बना रखा है। वह शातिरी ज़ेहन का मालिक है। मैं यह भी ज़ानता हूं कि वह खुद तुम्हारे खिलाफ कुछ नहीं कर सकता लेकिन लालच में आकर किसी का तरफदार बन सकता है, इसलिए मैंने तुम्हें यहां से हटाने का फैसला कर लिया है। मैं नहीं चाहता कि यहां रहते हुए तुम्हें कोई नुकसान पहुंचे। वैसे भी तुम्हारे प्रशिक्षण का कुछ हिस्सा बाकी है और मैं चाहता हूं इस दौरान में तुम अपना वह प्रशिक्षण भी पूरा कर लो।"

"अब मुझे कहां जाना होगा?" काला बच्चा ने पूछा।

"मेरे आदमी तुम्हें लेने के लिए आज रात किसी वक्त पहुंच जायेंगे।" महाराज यह कहते हुए उठ गये।

और जब काला बच्चा ने उनके लिए कमरे का दरवाजा खोला तो बाहर गैलरी में दरवाजे के करीब ही एक भिक्षु को देखकर चौंक गया। न जाने उसे यह एहसास क्यों हो रहा था कि वह छुपकर उनकी बातें सुन रहा था, लेकिन फिर यह ख्याल ज़हन से निकाल दिया। किसी को छुपकर उनकी बातें सुनने की क्या जरूरत थी और फिर यह भिक्षु तो उसी का शागिर्द था—वह ऐसी कोई हरकत नहीं कर सकता था। उस भिक्षु ने उन दोनों को देखकर बो किया और सिर झुकाकर एक तरफ खड़ा हो गया।

महाराज के जाने के बाद काला बच्चा दोबारा थाईवांग के कमरे में आ गया। नर्स शीनियो अपने कमरे में जा चुकी थी। थाईवांग ने अपने कपड़े और दवाइयां वगैरह एक बैग में पैक कर ली थीं। काला बच्चा भी अपना बैग पैक करके उस कमरे में ले आया था। थोड़ी ही देर बाद नर्स शीनियो भी अपना बैग लेकर उस कमरे में आ गयी। थाईवांग यद्यपि अब पहले से बहुत बेहतर थी। वह दवायें स्वयं भी इस्तेमाल कर सकती थी। अब यद्यपि उसे नर्स की भी जरूरत नहीं थी लेकिन चूंकि महाराज ने इस सिलसिले में कोई खास हिदायत नहीं दी थी इसलिए अगर शीनियो उसके साथ जा रही थी तो उन्हें क्या ऐतराज हो सकता था।

रात के दो बजे महाराज के आदमी उन्हें लेने पहुंच गये। उनमें से एक कांग था और दूसरा च्यांग। कांग को देखकर काला बच्चा

को इत्मीनान हुआ कि जान-पहचान का आदमी तो था।

पिछली गली वाले दरवाजे के सामने स्याह रंग की एक वैन खड़ी थी। उन तीनों को वैन के पिछले हिस्से में बिठा दिया गया। च्यांग ने ड्राइविंग सीट संभाल ली और कांग उसके साथ पैसेंजर सीट पर बैठ गया।

शहर की सड़कें सुनसान थीं। किसी सड़क पर कोई इक्का-दुक्का गाड़ी नजर आ जाती च्यांग वैन को विभिन्न सड़कों पर दौड़ाता रहा। काला बच्चा का ख्याल था कि वह इस बात का अन्दाजा लगाने की कोशिश कर रहा था कि पीछा तो नहीं हो रहा है फिर निश्चित होकर गाड़ी उसने एक चौड़ी सड़क पर मोड़ दी। यही सड़क आगे जाकर हाईवे-थ्री से जा मिलती थी। चंद मील हाईवे पर पूरब की तरफ सफर करने के बाद वैन उत्तर की तरफ एक और हाईवे पर मुड़ गयी।

सड़क के दोनों तरफ छोटी-छोटी पहाड़ियां थीं, जिन पर हरियाली और वृक्षों की अधिकता थी। लगभग दो घण्टे इस हाईवे पर सफर करने के बाद वैन पहाड़ियों में एक और तंग-सी सड़क पर मुड़ गयी। यह कोई बकायदा सड़क नहीं थी। एक तंग-सा पथरीला रास्ता था, जो छोटी-छोटी पहाड़ियों में बलखाता हुआ चला गया था। वैन की रफ्तार बहुत हल्की थी और फिर लगभग चालीस मिनट बाद वैन एक जगह रुक गयी। कांग इशारा करता हुआ नीचे उतर गया। शीनियो और थाईवांग ऊंघ रही थीं। काला बच्चा ने झिंझोड़कर दोनों को जगा दिया और वह नीचे उतर आये। काला बच्चा वैन के करीब खड़ा इधर-उधर देखने लगा। ऊपर किसी जगह मद्धिम-सी रोशनी नजर आ रही थी।

वह पहाड़ी ज्यादा ऊंची नहीं थी। ऊपर चढ़ने के लिए एक तंग-सा रास्ता था, जो चट्टान को काटकर बनाया गया था। च्यांग आगे था। उसके पीछे शीनियो, थाईवांग और काला बच्चा अंत में कांग था, जिसने कंधे पर आटोमैटिक रायफल लटका रखी थी। इस तंग से रास्ते का अंत लगभग दो सौ फुट ऊपर एक समतल जगह पर हुआ। यह एक खासा लम्बा-चौड़ा मैदान था, जिसके एक तरफ कोई कॉटेज या मकान बना हुआ था। एक-दो खिड़कियों में रोशनी हो रही थी। वह रोशनी जो नीचे से नजर आई थी, इस तंग से रास्ते के अंत में एक बल्ब भी था, जो कदाचित इस रास्ते की निशानदेही के लिए जलाया गया था।

कांग बरामदे में पहुंचकर दरवाजे को जोर-जोर से भड़भड़ाने

लगा। दरवाजा खुलने में ज्यादा देर नहीं लगी थी। वह एक दुबली-पतली जवान-सी लड़की थी। बाल बिखरे हुए थे और आंखों में नींद का खुमार था। वह कदाचित सो रही थी और दरवाजा भड़भड़ाने की आवाज से जाग गयी थी।

"दरवाजा आराम से नहीं खटखटा सकते थे। तुम्हें कॉलबैल का यह बटन नजर नहीं आया था।" लड़की के लहजे में नागवारी थी। वह कांग को घूर रही थी।

"सॉरी मिस बटर फ्लाई।" कांग ने क्षमा मांगने वाले लहजे में कहा—"रात का आखरी पहर है। मैं समझा था तुम गहरी नींद सो रही होंगी।"

"ठीक है।" मिस बटर फ्लाई ने उसकी बात काट दी—"अब अन्दर आओगे या बाहर ही खड़े बातें करते रहोगे।"

वह अन्दर आ गये। रात के अंधकार में बाहर से इस मकान के बारे में कोई अन्दाजा नही हो सका था लेकिन अन्दर से यह खासा बड़ा था। कदाचित पांच छः कमरे थे, एक लम्बा-चौड़ा हॉल इनके अतिरिक्त था। मिस बटर फ्लाई ने अन्दर आकर सारी बत्तियां जला दी थीं। काला बच्चा ने हॉल की एक दीवार पर लगी हुई घड़ी की तरफ देखा। सुबह के पांच बजने वाले थे।

"जो कमरा पसंद आये कब्जा कर लो।" कांग ने काला बच्चा की तरफ देखते हुए कहा, काला बच्चा ने एक कमरे का दरवाजा खोला। अन्दर बेड पर एक अधेड़ायु की औरत सो रही थी। काला बच्चा ने वह दरवाजा बन्द कर दिया और दूसरे कमरे में आ गया। अपना बैग एक कुर्सी पर फेंका। थाईवांग और शीनियो ने भी एक-एक कमरे पर कब्जा कर लिया था।

सुबह काला बच्चा की आंख देर से खुली। तब पता चला कि कांग और च्यांग उन्हें यहां छोड़ने के थोड़ी ही देर बाद वापस चले गये थे। अलबत्ता दो दूसरे आदमी दिखाई दिए थे। उनमें से किसी की भी उम्र तीस साल से ज्यादा नहीं थी। एक क्लीन शेव था दूसरे की मोछे चूहे की दुम की तरह होठों के किनारे से लटकी हुई थीं। दोनों के बाल बेतहाशा बढ़े हुए थे। एक ने बकायदा चुटिया बना रखी थी और दूसरे के बाल गर्दन पर बिखरे हुए थे। पेशानी पर बालों को रोकने के लिए हेयर बैण्ड लगाया हुआ था। दोनों ने धारीदार टी-शर्ट और जीन्स पहन रखी थी। अपने हुलियों से वह लड़कछाप गुण्डे ही लगते थे। काला बच्चा जब से महाराज की पनाह में आया था, ऐसे ही लोगों से वास्ता पड़ता रहा था और काला बच्चा जानता

था कि इस किस्म के लोग बड़े खतरनाक होते हैं।

मिस बटर फ्लाई के साथ दूसरी अधेड़ उम्र औरत में भी बड़ी कशिश थी। उनके लिए नाश्ता उसी ने बनाया था। उसे यह अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई कि उन्हें उनके बारे में पहले से ही बता दिया गया था। बाहर बैठे हुए उन दोनों आदमियों के बारे में तो वह समझ गया कि वे लोग उनकी हिफाजत के लिए भेजे गये हैं लेकिन मिस बटर फ्लाई और मिस दताना ने अपने बारे में बताने से गुरेज किया था।

वह समतल मैदान फुटबाल ग्राउण्ड के बराबर था। वह मकान भी खासा बड़ा था। उससे जरा हटकर दो या तीन कमरों का एक और कॉटेज था। इस मैदान के चारों तरफ गुंजार दरख्त थे, जो गोया चारदीवारी का काम दे रहे थे। एक रास्ता वह था, जिस तरफ से वह आये थे और दूसरा रास्ता उस चट्टान के दूसरी तरफ था। वह रास्ता खासा चौड़ा था और उससे गाड़ी भी आ सकती थी। ऊपर लोहे के पाइपों का गेट लगा हुआ था। इस किस्म का गेट चट्टान के दामन में भी था ताकि कोई असम्बन्धित गाड़ी इस रास्ते पर न आ सके। चट्टान के दूसरी तरफ ढ़लान में लगभग दो मील के फासले पर दूर तक चानपुरी शहर फैला हुआ था। उसके साथ-साथ समुन्दर का साहिल था, जो खम खाता हुआ उस चट्टान के दूसरी तरफ तकरीबन दो सौ गज के फासले से उत्तर की तरफ चला गया था।

बड़ी खूबसूरत जगह थी और सुरक्षित भी। महाराज ने इसीलिए यहां सिर्फ दो आदमियों को भेजा था। बिजली के अलावा यहां टेलीफोन की लाइन भी मौजूद थी। उस रोज नाश्ता करने के बाद वह इधर-उधर घूमते रहे। दोनों रक्षक अपनी-अपनी जगहों पर बैठे रहे थे। उनमें से किसी ने उनके पीछे आने की कोशिश नहीं की थी अलबत्ता उनकी नजरें जरूर पीछा करती रही थीं।

दोपहर से कुछ देर बाद एक बूढ़ा आदमी भी वहां पहुंच गया, उसकी उम्र साठ साल के लगभग थी। दुबला-पतला सा। ठोढ़ी पर चंद बाल, जिन्हें दाढ़ी कहा जा सकता था, चंद बाल होठों के किनारों पर भी थे, जिनसे मोछों का आभास होता था और खंडहर बताते थे कि इमारत कभी बुलन्द थी। उसका नाम पिकोला था और यह अजीब-सा नाम था। जबकि हुलिए के हिसाब से उसका नाम नियोला होना चाहिए था। वह उस तंग से रास्ते से आया था। जिस रास्ते से रात को वे लोग आये थे। चट्टान पर चढ़ते हुए उनका तो सांस फूल गया था लेकिन वह बिल्कुल ताजादम लग रहा था जैसे इस

चढ़ाई का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा हो।

पिकोला को महाराज ने वहां भेजा था ताकि काला बच्चा के प्रशिक्षण का अगला पड़ाव पार किया जाए और वह पड़ाव था ची की प्रैक्टिस। अगले रोज उसकी प्रैक्टिस शुरू हो गयी। उसे सुबह सवेरे ही जगा दिया गया और पिकोला उसे ची के बारे में लेक्चर देने लगा।

"ची हर जानदार प्राणी के अन्दर छिपी शक्ति है, जिसे अगर दरयाफ्त कर लिया जाए तो अदृश्य शक्तियों का ऐसा खजाना हासिल किया जा सकता है, जिसकी ख्वाइश सब ही लोग करते हैं एक कमजोर तरीन आदमी अपने से कई गुना ताकतवर आदमी की हड्डियों का सूरमा बना सकता है। आंखों में वह रहस्यमय शक्ति पैदा हो जाती है कि नजरों के इशारे पर बड़ी-से-बड़ी और वजनी चीज को उसकी जगह से हिलाया जा सकता है। दिमागी कुव्वत ऐसे-ऐसे कारनामे अंजाम देती है कि अक्ल दंग रह जाती है लेकिन आज तक दुनिया में बहुत कम लोग अपने अन्दर ची की यह रहस्यमय शक्ति पैदा कर सके हैं, क्योंकि इसके लिए बड़ी साधना की जरूरत पड़ती है।

ची की शक्ति का अन्दाजा सांप से लगाया जा सकता है। सांप जमीन पर रेंगने वाला मामूली-सा कीड़ा जिसका जिस्म इस कदर कमजोर होता है कि उसे आसानी से मसला जा सकता है लेकिन उसके अन्दर ची की यह रहस्यमय शक्ति सूक्ष्म रूप से मौजूद है और वह इससे काम लेता है। सांप अगर भारी-भरकम और ताकतवर पहलवान की टांग में लिपट जाए तो टांग की हड्डी तोड़ देता है।

इंसान में भी ची की यह रहस्यमय शक्ति छुपी है लेकिन निन्यानवें प्रतिशत लोग इससे वाकिफ ही नहीं हैं और जो वाकिफ हैं, वह इसे जगाने की कोशिश नहीं करते और जो कोशिश करते हैं, उनमें से लाखों में एक ऐसा होगा जिसे सफलता नसीब होती हो।"

पिकोला उसे बता रहा था कि ची की इस रहस्यमय शक्ति को किस तरह अन्दर से उभारा जाता है। उसने काला बच्चा को योगा के एक स्टायल में बिठा दिया। आलथी-पालथी मारकर दोनों हाथ सामने घुटनों पर और कमर बिल्कुल सीधी। गर्दन अकड़ी हुई वह स्वयं भी योगा के इसी आसन में बैठा था और काला बच्चा को विशेष अंदाज में सांस लेने को बता रहा था।

मार्शल आर्ट्स के प्रशिक्षण के दौरान में काला बच्चा बहुत-सी कठिन एक्सरसाइज कर चुका था लेकिन इस पोजीशन में तो आधा घण्टे से ज्यादा नहीं बैठ सका। उसकी तख्ते की तरह अकड़ी हुई

New Market, M. M. E.

कमर खुद-ब-खुद झुकने लगी।

एक सप्ताह गुजर गया। अभी उसका यही प्रशिक्षण चल रहा था कि उसका आसन एकदम परफेक्ट हो जाए। इसी से काला बच्चा ने अन्दाजा लगा लिया था कि आगे चलकर यह प्रशिक्षण किस कदर कठिन साबित होगा।

एक रोज शाम को ट्रेनिंग खत्म होने के बाद काला बच्चा ने एक सवाल किया तो पिकोला ने जवाब देते हुए कहा।

"आज के दौर में तो मैं किसी के बारे में नहीं जानता, लेकिन अट्ठारह बीस-साल पहले अमेरिका के चैम्बर लेन नामक कस्बे में केरी नाम की एक ऐसी लड़की मौजूद थी, जो इस किस्म की रहस्यमय शक्तियों की मालिक थी।" वह चंद लम्हे खामोश हुआ फिर केरी के बारे में बताने लगा।

केरी का ताल्लुक एक गरीब घराने से था। बाप जरायम पेशा, शराबी और जुआरी था। मां कट्टर किस्म की धार्मिक औरत थी। केरी के बाप का स्वर्गवास हुआ तो वह उस वक्त सिर्फ तीन साल की थी। बदसूरत होने के साथ-साथ उसे दूसरी महरूमियों का भी एहसास था, जिसने उसे छोटी-सी उम्र में ही चिड़चिड़ा बना दिया था। मां उससे ज्यादा बदमिजाज और चिड़चिड़ी थी। वह मामूली-मामूली बातों पर केरी को पीट कर रख देती।

ची की यह रहस्यमय शक्ति हर इंसान के अंदर मौजूद होती है। उसे हासिल करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है लेकिन केरी को इसके लिए मेहनत नहीं करनी पड़ी—उसे यह शक्ति खुद-ब-खुद हासिल हो गयी थी और इसका रहस्योद्घाटन मात्र एक संयोग से ही हुआ था।

उस रोज वह अपनी मां के साथ बैठी चाय पी रही थी। उससे थोड़ी देर पहले वह अपनी मां के हाथों बुरी तरह पिट चुकी थी। चाय पीते हुए केरी के दिल में ख्वाइश उभरी कि काश उसकी मां के हाथ से चाय का कप छूट जाए और उसके नये कपड़ों का बेड़ा गर्क हो जाए। उसने कप की तरफ देखा और दूसरे ही पल चाय का कप मां के हाथ से छूट गया और उसके नये कपड़ों का सत्यानाश हो गया।

केरी चौंक गयी। उसकी ख्वाइश पूरी हो गयी थी। उसे एहसास हो गया कि उसकी आंखों में कोई ऐसी शक्ति मौजूद है, जिससे वह अपनी मर्जी के मुताबिक काम ले सकती है। वह इस शक्ति को उभारने के लिए प्रैक्टिस करने लगी। उसकी आंखों में इतनी शक्ति

पैदा हो चुकी थी कि वह अपनी नजरों से भारी से भारी चीज को उसकी जगह से हरकत दे सकती थी, वह खाने की मेज को उसकी जगह से कई फुट ऊपर उठा देती। भारी मसहरी को हाथ लगाए बगैर एक जगह से दूसरी जगह पहुंचा देती।

और फिर केरी को अपने अन्दर मौजूद एक और रहस्यमय शक्ति का एहसास हुआ। यह शक्ति उसके दिमाग में थी। वह अपनी सोच से ऐसे काम ले सकती थी जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। एक रोज मां की डांट पड़ी तो उसने सोच से काम लेकर अपने मकान की छत पर पत्थरों की बारिश करवा दी। हैरत की बात यह थी कि पड़ोस के किसी मकान पर एक भी पत्थर नहीं गिरा था।

केरी की यह शक्ति लोगों से छुपी न रह सकी। केरी के बारे में अजीबो-गरीब अफवाहें फैलने लगीं। दिमाग और मनोविज्ञान के विशेषज्ञ चेम्बर लेन नामक इस कस्बे में पहुंचने लगे। केरी के परीक्षण होते रहे लेकिन विशेषज्ञ किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सके।

केरी जैसे-जैसे बड़ी होती गयी, उसकी इस रहस्यमय शक्ति में भी इजाफा होता गया। बदसूरत होने की वजह से उसके दोस्त उसका मजाक उड़ाते। स्कूल में भी वह मजाक का निशाना बनती रहती, जिससे उसके दिल में दूसरों के लिए नफरत बढ़ती रही।

1979 में स्कूल का सालाना फंक्शन था। एक बहुत बड़े हॉल में सैकड़ों लोग जमा थे। केरी स्टेज पर थी। उसे स्कूल की तरफ से बहुत बड़ा इनाम और सम्मान मिलने वाला था। दोस्त उसका मजाक उड़ा रहे थे और जब एक लड़के ने उस पर रंग की बाल्टी उड़ेल दी तो उसकी सहन शक्ति जवाब देने लगी। केरी ने अपने अन्दर की इस रहस्यमय शक्ति को भरपूर अन्दाज में इस्तेमाल करने का फैसला कर लिया। उसके ख्याल में अब वक्त आ गया था कि कस्बे के लोगों से अपनी तोहीन का बदला लिया जाए।

हाल में असंख्य कुमकुमे जल रहे थे। केरी ने नजरें उठाकर ऊपर देखा। बिजली के तार टूट-टूट कर गिरने लगे। एक कोने में आग लगी तो खलबली मच गयी—लोग बदहवास होकर दरवाजों की तरफ दौड़े लेकिन तमाम दरवाजे बन्द हो गये। आग फैल रही थी। चीखते-चिल्लाते हुए लोग बदहवासी में एक-दूसरे पर गिरने लगे।

केरी एक दरवाजे के सामने पहुंची तो दरवाजा खुद-ब-खुद खुल गया। उसके साथ कुछ और लोग भी बाहर आ गये लेकिन फिर फौरन ही दरवाजा बन्द हो गया। हॉल में आग फैलती जा रही थी। आग ने इमारत को पूरी तरह लपेट में ले लिया। लोग दरवाजे और

खिड़कियों को तोड़कर बाहर निकल रहे थे। फायर ब्रिगेड की गाड़ियां सायरन बजाती हुई उसकी तरफ दौड़ रही थीं। केरी की नफरत उफान पर थी। उसकी नजरें और दिमागी शक्ति पूरी तरह काम कर रही थी। स्कूल की इमारत के आसपास तमाम पानी के पाइप टूट गये थे। पानी सड़कों पर फैल रहा था फायर ब्रिगेड की गाड़ियों को आग बुझाने के लिए पानी नहीं मिल सका। आग दूसरी इमारतों तक फैल गयी थी।

पूरे कस्बे में बिजली के तार टूटकर गिर रहे थे। पानी की पाइप लाइन फट गयी थी आग और पानी...कस्बे की सड़कों पर पानी था और आग इमारतों को लपेटे में ले रही थी, कयामतखेज मंजर था। चीखते-चिल्लाते हुए लोग पनाह की तलाश में इधर-उधर दौड़ रहे थे, आसपास के कस्बों से फायर ब्रिगेड की गाड़ियां तलब करली गयी थीं, मगर आग फैलती गयी।

चेम्बर लेन कस्बा आग का ढेर बन गया। साठ लोग मौत का शिकार हुए थे और सैकड़ों जख्मी हुए थे। कस्बे से कुछ दूर एक टीले पर केरी की लाश भी मिली थी। उसकी मौत दिमाग की नस फट जाने से हुई थी।

"ची की शक्ति बड़ी खौफनाक है।" पिक्कोला कह रहा था—"केरी में यह शक्ति स्वतः ही उभर आई थी लेकिन उसने उसे तबाही के लिए इस्तेमाल किया, जिसने एक कस्बे को राख का ढेर बना दिया लेकिन अगर इस शक्ति को भलाई के लिए इस्तेमाल किया जाए तो इससे बड़े-बड़े काम किए जा सकते हैं।"

काला बच्चा के प्रशिक्षण का सिलसिला जारी रहा। जब वह सांस रोककर बैठता तो कमी-कमार यों लगता जैसे फेफड़े फट जायेंगे। अब वह पैंतीस चालीस मिनट तक बिल्कुल सीधा बैठ सकता था। इस दौरान में उसे यह सूचना मिली कि शोफांग को वाट से निकाल दिया गया था। वह उस वाट का इंचार्ज था, जहां लाखों डालर के नजराने जमा होते थे और उन सबका हिसाब रखना उसकी जिम्मेदारी थी, वाट में होने वाले उन वाकयात के बाद वाट का हिसाब भी चैक किया गया तो काफी गड़बड़ियां पाई गयीं, जिनके आधार पर उसे वाट से निकाल दिया गया था।

एक सप्ताह और गुजर गया। थाईवांग अब पूरी तरह स्वस्थ हो चुकी थी, उसकी आंखों में पहले जैसी चमक और रुख्सारों पर सुर्खी आ गयी थी।

उस रोज शाम के समय वह बरामदे के सामने बैठे हुए थे कि

घाटी वाले रास्ते से दो आदमी ऊपर आ गये। उनके हुलिए ... दो आदमियों से भिन्न नहीं थे, जो पहले से वहां मौजूद थे। उनमें से एक को काला बच्चा ने पहचान लिया। वह रंगोटी था। उसे काला बच्चा ने अरसा पहले महाराज के जिमनाजियम में देखा था।

"महाराज ने हमें हुक्म दिया है कि तुम लोगों को फौरीतौर पर यहां से हटाकर दोबारा बैंकाक पहुंचा दिया जाए।" रंगोटी ने काला बच्चा को बो करते हुए कहा।

"आज सुबह फोन पर महाराज से बात हुई थी। उन्होंने तो ऐसा कोई प्रोग्राम नहीं बताया था।" काला बच्चा ने उलझी हुई निगाहों से उसकी तरफ देखा।

"यह प्रोग्राम अचानक ही बना है।" रंगोटी ने जवाब दिया—"दरअसल टाइगर को तुम्हारे इस ठिकाने का पता चल गया है। वह आज रात किसी वक्त यहां हमला कर सकते हैं, इसलिए तुम लोगों को यहां से हटाना बहुत जरूरी है। अगर तुम्हें मुझ पर कोई शक हो तो फोन पर महाराज से पुष्टि कर सकते हो।"

काला बच्चा चंद लम्हें उसे उलझी हुई नजरों से देखता रहा फिर उस कमरे में आ गया, जहां फोन रखा हुआ था। उसने रिसीवर उठाकर नम्बर मिलाना चाहा, तो पता चला कि फौन डेड है। उसने दो-तीन बार ट्राई किया लेकिन लाइन में जान पैदा नहीं हुई, वह रिसीवर रखकर बाहर आ गया और फिर लगभग आधे घण्टे बाद वह रंगोटी के साथ उस तंग से चट्टानी रास्ते पर उतर रहे थे।

वह नीले रंग की बन्द वैन थी, जिसके शीशों पर काली फिल्में लगी हुई थीं। वैन के अन्दर से वह तो बाहर देख सकते थे लेकिन बाहर से अन्दर नहीं देखा जा सकता था। ड्राईविंग सीट पर एक और आदमी बैठा हुआ था। रंगोटी का साथी अगली सीट पर बैठ गया और रंगोटी पीछे उनके साथ।

वैन शहर से होते हुए हाईवे पर आ गयी और फिर हाइवे-थ्री पर मुड़कर तेज रफ्तारी से बैंकाक की तरफ दौड़ने लगी। लगभग दो घण्टे बाद वह बैंकाक शहर में दाखिल हो चुके थे। वैन विक्ट्री मोफोमेन्ट के करीब से होती हुई रोखन रोड की तरफ मुड़ गयी और फिर कुछ ही देर बाद सोरा ऐरीवन पर घूमकर एक कॉटेज के सामने रुक गयी। हॉर्न बजाने पर गेट खुल गया और वैन अंदर आकर पोर्च में रुक गयी।

वैन से उतरते हुए काला बच्चा को कुछ अजीब-सा एहसास हो रहा था। रंगोटी के दोनों साथी बाहर ही रुक गये थे जबकि रंगोटी

उन्हें लेकर एक कमरे में आ गया। वह लम्बा-चौड़ा कमरा कीमती फर्नीचर से सजा हुआ था। फर्श पर कालीन बिछा हुआ था। एक दीवार पर बड़े से फ्रेम में अर्धनग्न औरत की तस्वीर लगी थी। इस तस्वीर को देखकर काला बच्चा के दिमाग में झटका-सा लगा और जिस्म पर च्यूंटियां सी रेंगती महसूस होने लगीं। महाराज का सम्बन्ध किसी ऐसी जगह से नहीं हो सकता था, जहां इस तरह का कीमती फर्नीचर और किसी औरत की ऐसी तस्वीर लगी हुई हो, जिसे देखते ही पसीना आने लगे।

"तुम लोग आराम से बैठो।" रंगोटी ने बारी-बारी उन तीनों की तरफ देखते हुए कहा—"मास्टर होचिन यहां मौजूद हैं। मैं उसे बुलाकर लाता हूं।"

रंगोटी कमरे से निकल गया। काला बच्चा नर्स शीनियो और थाईवांग की तरफ देखने लगा। शीनियो को तो शायद कुछ अन्दाजा नहीं था लेकिन थाईवांग की आंखों में उलझन के भाव नुमायां थे। शायद वह भी वही कुछ सोच रही थी, जो काला बच्चा के जहन में था।

लगभग दस मिनट बाद राहदारी में कदमों की आवाजें सुनाई दीं। दरवाजा खुला और तीन आदमी अन्दर दाखिल हुए। एक रंगोटी था, दूसरा उसका वही साथी था जो उनके साथ आया था और तीसरे को देखकर काला बच्चा उछलकर खड़ा हो गया।

वह खानकाह का भूतपूर्व इन्चार्ज शोफांग था।

□□□
□□□

काला बच्चा की शंका दुरुस्त साबित हुई थी। उनके साथ धोखा हुआ था बल्कि वह धोखा खा गया था। रंगोटी को अरसे पहले उसने महाराज के जिमनाजियम में देखा था और पहाड़ी वाले मकान पर उसे देखकर यही समझा था कि वह अब भी महाराज के कैम्प में है लेकिन यह भूल गया था कि यहां वफादारियां बदलने देर नहीं लगतीं। पैसे के लिए लोग अपने आपको बेच देते हैं।

शोफांग ने बड़ी होशियारी का सबूत दिया था। उसने एक ऐसे आदमी को भेजा था, जिस पर शक न किया जा सके और उससे पहले टेलीफोन की लाइन कहीं से काट दी गयी थी। रंगोटी ने बड़े आत्मविश्वास से कहा था कि टेलीफोन पर महाराज से पूछा जा सकता है क्योंकि वह जानता था टेलीफोन से सम्पर्क नहीं हो सकेगा।

काला बच्चा अपने आपमें उस वक्त से कुछ बेचैनी-सी महसूस

आया

करने लगा था। जब वह उनके साथ पहाड़ी वाले मकान से रवाना हुए थे और थाईवांग भी कदाचित किसी ऐसी ही कैफियत में उलझी रही थी और अब शोफांग उनके सामने खड़ा था।

उसके जिस्म पर लिबास तो वही भिक्षुओं वाला था। पीले कपड़े के तीन टुकड़े। एक जिस्म का निचला हिस्सा ढांपने के लिए। दूसरा दरमियानी हिस्से के लिए तीसरा जिस्म के ऊपर वाले हिस्से को छुपाने के लिए, जो वक्त जरूरत पर सिर को भी ढांप सके। भिक्षु आमतौर पर बहुत सस्ते किस्म का कपड़ा इस्तेमाल करते हैं लेकिन शोफांग और कुछ दूसरे भिक्षुओं के जिस्म पर काला बच्चा ने हमेशा कीमती कपड़ा देखा था। जूता या चप्पल वगैरह इस्तेमाल करना भी भिक्षुओं के लिए मना था लेकिन शोफांग के पैरों में इस वक्त स्याह मखमल के खूबसूरत स्लीपर्स नजर आ रहे थे।

उसके होठों पर बड़ी खुरदुरी-सी मुस्कराहट और चेहरे पर क्रूरता थी। काला बच्चा उसे देखते ही एक झटके से उठ खड़ा हुआ। शीनियो और थाईवांग ने भी काला बच्चा का अनुसरण किया। उन दोनों के चेहरों पर खौफ के भाव नुमाया थे। शीनियो को भी अब परिस्थिति की संगीनी का एहसास हो गया था। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

"महाराज के चेहते।" शोफांग काला बच्चा की तरफ देखते हुए बोला। उसके लहजे में जहर भरा हुआ था—"तुम अपने आपको बहुत होशियार समझते थे और वह महाराज! वह तो अपने आपको सचमुच महाराजा समझ बैठा है। चंद गुण्डों को अपने इर्द गिर्द जमा करके वह अपने आपको बहुत ताकतवर समझने लगा है। शायद वह भूल गया है कि नहले पर दहला भी होता है, लेकिन आज के बाद उसका राजपाट खत्म हो जायेगा। मैं उसे अपने सामने घुटने टेकने पर मजबूर कर दूंगा और तुम, तुम्हें तो ऐसी सजा मिलेगी कि न मर सकोगे और न जी सकोगे।"

"तुम्हें गलतफहमी हुई है शोफांग।" काला बच्चा ने कहा—"तुम यह समझते थे कि मैं तुम्हारी जगह लेना चाहता हूं लेकिन मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। मैं भिक्षु नहीं हूं। मेरा तो तुम्हारे धर्म से भी कोई सम्बन्ध नहीं हैं ऐसी सूरत में मैं तुम्हारी जगह कैसे ले सकता था, मुझे तो यहां सिर्फ भिक्षुओं की मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग के लिए भेजा गया था—मेरा वाट के मामलों से क्या सम्बन्ध हो सकता है?"

"यही तो अफसोस की बात है कि एक ऐसे शख्स को हम

पर हावी करने की कोशिश की जा रही है, जिसका हमारे धर्म से भी कोई सम्बन्ध नहीं।" शोफांग ने कहा—"मैं जानता हूं महाराज को भी इस धर्म से कोई लगाव नहीं है। वह हमारी धार्मिक कौंसिल पर हावी हो रहा है ताकि बैंकाक की तमाम खानकाहों पर कब्जा कर सके। यह खानकाहें पूजागृह नहीं सोने की खाने हैं। यहां रोजाना करोड़ों के नजराने चढ़ाये जाते हैं और महाराज इन सोने की खानों पर कब्जा करना चाहता है। मैंने अगर उसमें से थोड़ा-सा हिस्सा ले लिया तो उसे नागवार गुजरा और कौंसिल के जरिए मुझ पर चार्ज लगवाकर हटवा दिया, यह सब कुछ तुम्हारी वजह से हुआ, अगर तुम न होते तो मेरा यह सिलसिला चलता रहता और वह मंसूबा भी नाकाम न होता, जिस पर मैंने बड़ी मेहनत की थी मगर तुम्हारे कारनामें से सारी मेहनत पर पानी फिर गया।"

"कौन-सा मंसूबा?" काला बच्चा चौंके बगैर न रह सका।

"लार्ड बुद्धा की मूर्ति से सोना चुराने का मंसूबा।" शोफांग ने कहा—"वह मंसूबा दरअसल मेरा ही था। मैंने ही टाइगर को उस वाट के नक्शे वगैरह दिए थे ताकि उन्हें नाले में ठीक जगह पहुंचने में कोई दुश्वारी पेश न आये। हममें फिफ्टी-फिफ्टी मामला तय हुआ था। अगर उस मूर्ति के अन्दर का सारा सोना निकालकर ले जाते तो उसमें से आधा मुझे मिलता लेकिन कुछ उसके आदमियों की मूर्खता और कुछ तुम्हारी चालाकी की वजह से वह मंसूबा नाकाम हो गया और फिर दूसरे रोज मैंने ही टाइगर को सूचना भिजवाई थी कि तुम वाट के गेट के सामने खड़े श्रद्धालुओं को दर्शन दे रहे हो। वह गुलदस्ता उसने तुम्हारे लिए भिजवाया था, जिसमें ताकतवर टाइम बम फिक्स था, जो मुकर्रर वक्त पर तुम्हारे हाथ में दिया जाना था। ख्याल ही नहीं यकीन था कि बम फटेगा तो तुम्हारे जिस्म के चीथड़े उड़ जायेंगे, मगर तुम हमेशा की तरह इस बार भी बच गये और उसके दो-तीन दिन बाद वाट के हिसाब में गड़बड़ी की वजह से मुझे हटा दिया गया। मैं महाराज से इन्तकाम लेने के लिए मौके की तलाश में था। उसने पहले भी मेरे साथ बड़ी ज्यादतियां की हैं। महाराज को शायद यह शक हो गया था कि वाट में रहते हुए तुम्हारे साथ कोई ज्यादती की जायेगी, इसलिए तुम्हें वहां से हटा दिया गया लेकिन पूरे बारह दिन की कोशिश से मैंने पता चला लिया कि तुम कहां हो और अब देख लो...तुम मेरे सामने खड़े हो।"

काला बच्चा के दिमाग में सनसनाहट-सी हो रही थी। महाराज ने उस रोज ठीक ही कहा था कि शोफांग बहुत स्वार्थी और साजिशी

आदमी था। यह रहस्योद्‌घाटन काला बच्चा के लिए सचमुच बड़ा सनसनीखेज था कि बुद्धा की मूर्ति से सोने की चोरी का मंसूबा उसी ने बनाया था। थाईवांग के साथ रहते हुए वह बुद्धमत और विशेष रूप से भिक्षुओं के बारे में थोड़ा बहुत जान चुका था। बुद्धा का पैरोकार कोई भी शख्स भिक्षु बन सकता था। इसके लिए जात-पात रंग भेद की कोई बन्दिश नहीं अलबत्ता चंद शर्तों पर उसका पूरा उतरना जरूरी है, बाप का कातिल न हो और छुआछात की किसी बीमारी का शिकार न हो। भिक्षु बन जाने के बाद भी उसके लिए चंद बातों पर पाबन्द रहना जरूरी होता है। सबसे पहली बात तो यह कि वह मेहनत-मजदूरी या कोई और काम धन्धा न करे। दूसरों की कमाई पर निर्वाह करे—यानि खाना मांगकर खाये। किसी को कत्ल न करे, चोरी न करे, झूठ न बोले, अय्याशी न करे बल्कि औरत का ख्याल भी दिल में न लाये। नाच-गाने से दूर रहे, कोई नशीली चीज इस्तेमाल न करे और दोपहर के बाद खाना न खाये। ऊंची और आरामदेह जगह पर न बैठें और किसी से भीख में भी सोचा-चांदी कबूल न करे।

काला बच्चा लम्बे अरसे से भिक्षुओं के साथ रह रहा था। बहुत कम ऐसे भिक्षु देखे थे, जो सचमुच उन उसूलों के पाबन्द हों जबकि अक्सर देखने में आया था कि अधिकांश भिक्षु बड़े धड़ल्ले से इन पाबन्दियों के विपरीत काम करते थे। वह ट्रेनिंग के दौरान रात का खाना भी खाते थे और झूठ भी बड़े धड़ल्ले से बोलते थे।

और शोफांग उसने तो तमाम पाबन्दियों ही तोड़ दी थीं।

"मुझे हैरत है।" काला बच्चा ने शोफांग की तरफ देखते हुए कहा—"तुम लार्ड बुद्धा के पैरोकार हो, मठाधीश हो, तुम्हें तो बौद्ध शिक्षा का पाबन्द होना चाहिए—इन सब चीजों से तुम्हारा क्या सरोकार और फिर बुद्ध की मूर्ति से सोने की चोरी क्या यह पाप नहीं?"

"पाप!" शोफांग ने हल्का-सा कहकहा लगाया—"यह कहां का इंसाफ है कि दूसरे लोग तो ऐश करें—उनके पास दुनिया की हर सुख-सुविधा मौजूद हो। वह खूबसूरत औरतों से दिल बहलायें और हम फाके करें। हम औरत की तरफ आंख उठाकर भी देखें तो उसे पाप समझा जाए और फिर यह कहां की अक्लमंदी है कि मनों के हिसाब से सोना इस तरह जाया कर दिया जाए। लार्ड बुद्धा को सोने की जरूरत नहीं। उसकी आत्मा यह देखने के लिए नहीं आयेगी कि उसकी प्रतिमा सोने में ढाली गयी है या किसी पत्थर से तराशी गयी है। सोने की जरूरत तो हम जैसे लोगों को है ताकि उससे जिन्दगी के ऐश्वर्य प्राप्त किए जा सकें। मैंने यह सोना प्राप्त करने

की कोशिश की थी। कामयाब नहीं हो सका—कोई बात नहीं लेकिन अब मुझे ऐसा एक और मौका मिल गया है कि उससे एक भारी रकम हासिल की जा सके।"

"कोई और शैनानी मंसूबा।" काला बच्चा ने चुभती हुई नजरों से उसकी तरफ देखा।

"इसे मेरी बुद्धिमानी कहो।" शोफांग के होठों पर मक्कारी भरी मुस्कान आ गयी—"तुम्हारी वजह से भी टाइगर को बहुत-सा नुकसान उठाना पड़ा है और फिर उसके दोस्तों को भी तुम्हारी जरूरत है। मेरा ख्याल है उनके पास दौलत की कमी नहीं है। वह दुनिया के एक सिरे से तुम्हारा पीछा करते हुए आये हैं। इसका यह मतलब भी है कि तुम उनके लिए बहुत ज्यादा अहमियत रखते हो। वह तुम्हारे सिर की मुंहमांगी कीमत दे सकते हैं। मैं आज रात टाइगर को संदेशा भिजवा दूंगा कि तुम मेरे कब्जे में हो। मुझे तुम्हारे ऐवज में मुंहमांगी रकम मिल जायेगी। मैंने इतनी दौलत जमा कर रखी है कि मेरी आने वाली चार पांच नस्लें भी कोई काम किए बगैर ऐश कर सकती हैं। तुम्हारी कीमत वसूल करते ही मैं हिन्दोस्तान चला जाऊंगा। वहां के मन्दिरों में भी बड़े-बड़े गजाधारी पंडित पड़े हुए हैं। दो-चार से तो मेरा सम्पर्क भी है। मैंने यहां से निकलने के सारे प्रबन्ध कर लिए हैं।"

"लेकिन शायद तुम ऐसा न कर सको।" काला बच्चा ने कहा—"महाराज को अब तक पता चल गया होगा कि हमारा अपहरण कर लिया गया है। वह तुम्हें पाताल से भी ढूंढ निकालेंगे और फिर तुम टाइगर और उसके साथियों को नहीं जानते। यह जानने के बाद कि मैं तुम्हारे कब्जे में हूं, वह तुम्हारी जिन्दगी का चिराग गुल कर देंगे।"

"मैं ऐसा बेवकूफ भी नहीं हूं कि उसे दावत देकर यहां बुला लूं।" शोफांग ने कहा—"उससे बातचीत दूसरे जरिए से होगी और तुम्हें उसके हवाले उस वक्त किया जायेगा जब वह मेरी मांगी हुई रकम मेरी बताई जगह पर पहुंचा देगा।" वह चंद लम्हें खामोश रहने के बाद कहने लगा—"मुझे तुम्हारी वजह से वक्त से पहले यहां से भागने का प्रोग्राम बनाना पड़ा। मुझे वाट की मूर्ति का सोना न हासिल कर पाने का अफसोस रहेगा। इस वक्त मेरा दिल तो यह चाह रहा है कि तुम्हारे टुकड़े करके कुत्तों के आगे डाल दूं लेकिन मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा क्योंकि इस तरह तुम्हारी कीमत कम हो जायेगी अलबत्ता तुम्हारी यह दोस्त...।" उसने थाईवांग की तरफ

देखा—"इस दौरान में मेरा दिल बहला सकती है। इसको देखकर न जाने क्यों मेरे दिल में गुदगुदी-सी होने लगती है। सिर्फ मैं ही नहीं इस वाट के चंद और भिक्षुओं की नीयत भी डांवा डोल हो रही थी। अगर यह सारी गड़बड़ न होती तो हम लोग किसी रात वाट के तहखाने में ही इसकी दावत उड़ाते लेकिन आज यह सिर्फ मेरा दिल बहलायेगी।"

थाईवांग का चेहरा धुंवा हो गया। वह काला बच्चा से तीन-चार कदम के फासले पर खड़ी थी। उनके दरमियान शीशे के टॉप वाली एक कॉफी टेबिल मौजूद थी, शोफांग नपे-तुले कदम उठाता हुआ थाईवांग के सामने पहुंच गया। रंगोटी और उसके साथी ने रायफल तान ली।

शोफांग की नजरें थाईवांग के चेहरे पर केन्द्रित थीं और फिर उसने अचानक ही हाथ बढ़ाकर थाईवांग के गिरेबान को जोरदार झटका दिया। उसकी कमीज के सारे बटन टूट गये और वह सामने से नग्न हो गयी।

"त...त...तुम शैतान...अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकोगे।" थाईवांग चीखी, इसके साथ ही उसने शोफांग के मुंह पर थूक दिया था।

शोफांग ने अचानक ही उसके मुंह पर थप्पड़ मार दिया। थप्पड़ इस कदर जोरदार था कि थाईवांग चकराकर पुश्त के बल सोफे पर गिर गयी। शोफांग की आंखें सुर्ख हो गयीं। चेहरे पर दरिन्दगी-सी छा गयी। वह कपड़े के पल्लू से अपने चेहरे पर से थूक साफ करने लगा।

"मेरी जिन्दगी में बहुत सी लड़कियां आई हैं—अपने आपको सुपुर्द कर देने वाली भी और तुम जैसी बिगड़ैल हिरनी भी लेकिन किसी में इतनी जुर्रत पैदा नहीं हुई कि मेरे मुंह पर थूक सके। मैं तुम्हारा वह हश्र करूंगा कि तुम मेरे पैरों के तलवे चाटने पर मजबूर हो जाओगी लेकिन मैं तुम्हें माफ नहीं करूंगा...कोमो।" उसने अन्तिम शब्द रंगोटी के साथी की तरफ देखते हुए कहा—"राधो को बुलाओ और इसे तहखाने वाले कमरे में पहुंचा दो।"

कोमो जिस आदमी का नाम था उसने आवाज देकर राधो नामक उस आदमी को बुला लिया, जिसने गेट खोला था। वैन उन्हें यहां छोड़ने के बाद वापस चली गयी थी। काला बच्चा को इस बात का अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई थी कि शोफांग के अलावा इस कोठी में सिर्फ तीन आदमी और थे। रंगोटी, कोमो और राधो।

शीनियो एक तरफ खड़ी हौले-हौले कांप रही थी। मौजूद परिस्थिति से उसे यह नतीजा लगाने में कठिनाई नहीं हुई थी कि उसके साथ भी यही कुछ होगा जो थाईवांग के साथ होने जा रहा था। वह आने वाले लम्हात की कल्पना से ही कांप रही थी।

कोमो और राधो ने थाईवांग को बाहों से पकड़ लिया और उसे दरवाजे की तरफ खींचने लगे। थाईवांग पूरा प्रतिरोध कर रही थी, मगर उन मुस्टन्डों के सामने उसकी एक न चल सकी और वह उसे घसीटते हुए कमरे से बाहर ले गये।

"इसका क्या करना है?" रंगोटी ने शीनियो की तरफ इशारा करते हुए पूछा।

"यह आज रात भर के लिए तुम तीनों की है।" शोफांग ने अर्थपूर्ण अन्दाज में मुस्कराते हुए कहा—"लेकिन पहले इसे भी तहखाने में पहुंचाना होगा।" उसने काला बच्चा की तरफ संकेत किया—"उस लड़की के साथ मैं जो कुछ भी करूंगा, इसकी मौजूदगी में करूंगा।"

काला बच्चा ने शीनियो की तरफ देखा। खौफ की तीव्रता से उसका चेहरा इस तरह सफेद पड़ गया था जैसे जिस्म का सारा खून निचुड़ गया हो। काला बच्चा ने सतर्क नजरों से इधर-उधर देखा। उसके और शीफोंग के बीच एक टेबिल पड़ी थी। रंगोटी बायीं तरफ पांच छः कदम के फासले पर रायफल ताने खड़ा था। अगर वह दोनों एक-दूसरे के करीब होते तो शायद काला बच्चा को कोई कार्यवाही करने का अवसर मिल जाता लेकिन इस वक्त जो परिस्थिति थी, उसके अनुसार काला बच्चा के लिए कोई अवसर नहीं था कि वह हमलावर हो सके।

कोमो और राधो थाईवांग को छोड़कर आ गये। शोफांग के इशारे पर इन दोनों ने शीनियो को भी गिरफ्त में ले लिया और रंगोटी ने काला बच्चा को रायफल की जद पर लेकर वहां से चलने का इशारा किया।

वह इस कमरे से निकलकर एक शानदार बेडरूम में आ गये। एक अलमारी अपनी जगह से हटी हुई थी और उस जगह दीवार में रिक्त स्थान था। अन्दर रोशनी थी और सीढ़ियां नजर आ रही थीं।

तहखाने का वह लम्बा-चौड़ा कमरा भी बहुत शानदार था मखमली कालीन बिछा हुआ था। एक सोफासेट था, एक तरफ शानदार डबल बेड बिछा हुआ था। दो-तीन सीधी पुश्त वाली कुर्सियां

थीं। एक ड्रेसिंग टेबिल थी और दीवारों पर नग्न तस्वीरें लगी हुई थीं। यह तस्वीरें भी ऐसी थीं कि शैतान भी देखकर शरमा जाए, इस कमरे में हर वह चीज मौजूद थी, जो किसी अय्याश आदमी के कमरे में होनी चाहिए। थाईवांग सीधी पुश्त वाली एक कुर्सी से बंधी हुई थी। शोफांग ने रंगोटी से रायफल लेकर काला बच्चा को जद में ले लिया और रंगोटी को इशारा किया। उसने काला बच्चा को दूसरी कुर्सी पर बिठाकर बांध दिया।

"ठीक है तुम जाओ।" उसने रंगोटी की तरफ देखते हुए कहा—"जरूरत हुई तो तुम्हें तलब कर लूंगा। मेरी इजाजत के बगैर अन्दर आने की कोशिश मत करना।"

रंगोटी ऊपर चला गया। तहखाने का रास्ता खुद-ब-खुद बन्द हो गया था।

"यह कोठी मैंने अपनी मर्जी से बनवाई है।" शोफांग बोला—"चंद वफादार कुत्तों के सिवा किसी को इसके बारे में इल्म नहीं है। इस कोठी में ऐसे-ऐसे करिश्मे छिपे हैं कि तुम्हें देखकर हैरत होगी, लेकिन मैं तुम्हें कोठी दिखाने नहीं लाया हूं, इस वक्त तो मैं एक ऐसी चीज दिखाऊंगा कि तुम दोनों की तबियत खुश हो जायेगी।"

उसने ड्रेसिंग टेबिल की ऊपर वाली दराज खोली। उसमें रखा हुआ पिस्तौल काला बच्चा के अलावा थाईवांग ने भी देख लिया था—लेकिन उसने पिस्तौल नहीं निकाला। रिमोट कंट्रोल जैसी कोई चीज निकालकर उसने दराज बन्द कर दी। रिमोट कंट्रोल का रुख एक दीवार की तरफ करके उसने बटन दबा दिया। दीवार का चार वर्ग फुट का एक हिस्सा शटर की तरह ऊपर उठ गया। उस जगह एक खूबसूरत टी.वी. ट्रॉली रखी हुई थी। टी.वी. के साथ ही एक टेलीफोन सेट भी था। उसने ट्रॉली बाहर खींच ली और टेलीफोन उठाकर करीब ही सोफे पर बैठ गया और रिसीवर उठाकर नम्बर मिलाने लगा। लाइन मिलने में ज्यादा देर नहीं लगी थी।

"शोफांग बोल रहा हूं मिस्टर टाइगर।" वह माउथपीस में बोला—"मुझे अफसोस है कि हमारा वह मंसूबा कामयाब नहीं हो सका था लेकिन हमारे दरमियान एक और डील हो सकती है। सुन रहे हो ना।" वह चंद लम्हे खामोश रहकर दूसरी तरफ की बात सुनता रहा फिर बोला—"गुड! तुम समझदार हो। मैं उसी की बात कर रहा हूं। वह इस वक्त मेरे कब्जे में है, ठीक है सौदा हो सकता है। कल सुबह ग्यारह बजे मेरा आदमी तुम्हारे पास पहुंच जायेगा। उससे मामला

तय हो जायेगा। वह जो फैसला भी करेगा फाइनल होगा—गुड तो फिर कल सुबह ग्यारह बजे मेरे आदमी का इन्तजार करना... ।" उसने रिसीवर रख दिया और होठों पर मक्काराना मुस्कराहट फैलाते हुए काला बच्चा की तरफ देखने लगा—"तुम आज की रात मेरे मेहमान हो।" वह बोला—"मुझे उम्मीद है कि कल यह सौदा हो जायेगा और तुम्हें कल शाम तक तुम्हारे उन दोस्तों के हवाले कर दिया जायेगा जो अरसे से तुम्हें तलाश करते फिर रहे हैं।"

"इसमें शक नहीं कि मैं इस वक्त तुम्हारे कब्जे में हूं, लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि तुम्हारा यह मंसूबा भी कामयाब नहीं हो सकेगा।" काला बच्चा ने कहा। वह बिल्कुल खौफजदा नहीं था और न जाने उसे यह यकीन क्यों था कि वह अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकेगा।

उसके हाथ कुर्सी की पुश्त से बंधे हुए थे और वह अपनी कलाइयों को निरंतर हरकत दे रहा था। उसे यकीन था कि हाथों को इस तरह हरकत देने से नाइलॉन की रस्सी ढीली हो जायेगी और उसे कुछ करने का मौका मिल जायेगा।

इसमें शक नहीं था कि शोफांग शैतान से भी दो हाथ आगे था उसने ट्रॉली के निचले हिस्से में रखे हुए वी. सी. आर. पर एक वीडियो कैसेट लगाकर टी.वी. ऑन कर दिया। स्क्रीन पर चंद लम्हे जर्रात से झिलमिलाते रहे और फिर फिल्म शुरू हो गयी।

यह जज्बात को भड़काने वाली निहायत शर्मनाक फिल्म थी—मर्द और औरत शैतानी खेल खेल रहे थे। काला बच्चा ने आंखें बन्द कर लीं। वह थाईवांग की कुर्सी की पुश्त पर पहुंचकर रुक गया और पुश्त पर बंधे हुए उसके हाथ खोलने लगा।

वह थाईवांग को बाहों के शिकंजे में जकड़कर आगे ले आया और धक्का देकर बेड पर गिरा दिया। थाईवांग ने प्रतिरोध करने की कोशिश की तो शोफांग ने उसे गिरफ्त में ले लिया। शोफांग उससे कहीं अधिक ताकतवर था, मगर थाईवांग प्रतिरोध करती रही। इस प्रतिरोध में उसकी कमीज फटकर जिस्म से अलग हो गयी। वह ऊपर से बिल्कुल नग्न हो गयी थी।

काला बच्चा अपने हाथों को निरन्तर हरकत दे रहा था लेकिन रस्सी की गिरहें किसी तरह ढ़ीली होने का नाम नहीं ले रही थीं। रस्सी की रगड़ से उसकी कलाइयों में पीड़ा होने लगी थी लेकिन उसने अपनी कोशिश जारी रखी। उसका जिस्म पसीने में तर हो रहा था थाईवांग शोफांग के बोझ तले दबी हुई थी। उसने अचानक ही शोफांग

की टांगों के बीच में प्रहार कर दिया। शोफांग बिलबिलाता हुआ बेड पर उलट गया। थाईवांग उसे धकेलते हुए उठने की कोशिश करने लगी। वह जैसे ही बेड से उतरी शोफांग ने लपककर उसे पकड़ लिया।

उसके हाथ यद्यपि कुर्सी की पुश्त पर बंधे हुए थे मगर पैर आजाद थे और यह रंगोटी की बहुत बड़ी गलती थी कि उसने काला बच्चा के पैर कुर्सी के पायों के साथ नहीं बांधे थे और अब काला बच्चा ने उसकी इस गलती का फायदा उठाने का फैसला कर लिया। वह इस तरह उठकर खड़ा हो गया कि कमर दोहरी थी। वह शोफांग के क़रीब पहुंचा तो शोफांग उस पर झपट पड़ा। काला बच्चा बड़ी तेजी से घूम गया। कुर्सी का पाया उसके घुटने की हड्डी पर लगा। वह बिलबिला उठा। काला बच्चा ने उसे संभलने का अवसर दिए बगैर एक और वार किया। इस मर्तबा कुर्सी का पाया उसके दायें बाजू की कोहनी पर लगा। इंसानी जिस्म के यह दो ऐसे नाजुक प्वाईंट थे कि इन पर लगने वाली मामूली-सी चोट भी तड़पा देती है, इस पर तुर्रा यह कि थाईवांग ने घुटने की एक और छाप उसकी ठोडी पर लगा दी थी। उसके साथ ही वह ड्रेसिंग टेबिल की तरफ लपकी थी।

शोफांग को परिस्थिति की संगीनी का अन्दाजा हो गया था। वह अपनी तकलीफ भूलकर थाईवांग की तरफ लपका लेकिन काला बच्चा उसके रास्ते में आ गया। उसके हाथ कुर्सी की पुश्त से बंधे हुए थे और कुर्सी उसकी पुश्त पर थी, जिससे उसकी कमर दोहरी हो रही थी लेकिन उसकी ट्रेनिंग काम आ रही थी। कमर दोहरी होने के बावजूद उसे किसी प्रकार का कष्ट महसूस नहीं हो रहा था। वह एक बार फिर पूरी शक्ति से घूम गया। इस बार कुर्सी का पाया इतने जोर से उसके कूल्हे पर लगा कि पाया भी टूट गया। शोफांग बिलबिलाता हुआ मुंह के बल गिरा। वह उठने की कोशिश कर रहा था। कि थाईवांग को इस बार ड्रेसिंग टेबिल तक पहुंचने का अवसर मिल गया। उसने दराज खोलकर पिस्तौल निकाल लिया, उसके साथ ही उसने दराज में रखा हुआ एक खंजर भी उठा लिया था।

शोफांग उठने की कोशिश कर रहा था। थाईवांग ने उसके मुंह पर जोरदार ठोकर मारी वह पीछे उलट गया। थाईवांग उछलकर काला बच्चा की पुश्त पर पहुंच गयी और उसकी बन्दिशें काटने लगी। दो धारी खंजर खासा धारदार था। एक ही झटके से रस्सियां कट गयीं। काला बच्चा ने रस्सियों और कुर्सी को अपने जिस्म से अलग किया और कलाइयां मसलने लगा। थाईवांग ने पिस्तौल काला बच्चा

के हाथ में थमा दिया।

शोफांग उठने की कोशिश कर रहा था– मगर खंजर ताने थाईवांग को अपनी तरफ बढ़ते देखकर उसकी आंखों में दहशत सी उभर आई और वह कालीन पर घिसटता हुआ आहिस्ता-आहिस्ता पीछे हटने लगा।

"बस...शौक पूरा हो गया।" थाईवांग उसके सामने रुक गयी–"अभी तो खेल शुरू भी नहीं हुआ था–देखो–कितना खूबसूरत है मेरा जिस्म, मुझे देखकर तुम्हारे दिल में गुदगुदी होने लगती है ना...अब पीछे क्यों हट रहे हो–आओ, खेलो न मेरे जिस्म से, डर क्यों रहे हो, आओ मेरे आशिक...मैं तुम्हारे सामने हूं...पीछे मत हटो...अपनी हसरत पूरी कर लो।"

शोफांग की आंखें खौफ व दहशत से फटी पड़ रही थीं और फिर अचानक ही वह चीख-चीख कर रंगोटी और कोमो वगैरह को पुकारने लगा। थाईवांग ने टी.वी. का फुल वौल्यूम खोल दिया ताकि उसके चीखने की आवाज तहखाने से बाहर न जा सके।

काला बच्चा थाईवांग के चेहरे को देख रहा था, वह जनूनी कैफियत की स्थिति में थी। वह जो कुछ करने जा रही थी। काला बच्चा उसे नहीं रोक सकता था। शोफांग ने जैसे ही उठने की कोशिश की, थाईवांग चील की तरह झपटी। दोधारी खंजर शोफांग के पेट में पैवस्त हो गया। वह जिब्ह होते बकरे की तरह बिलबिला उठा। थाईवांग ने खंजर खींचा तो पेट से खून की धार भी बह निकली।

"मैं तुम्हें जान से नहीं मारूंगी।" वह गुर्राई–"लेकिन तुम्हें इस काबिल भी नहीं छोड़ूंगी कि अपने आपको जिन्दों में शुमार कर सको।"

वह जनूनी अन्दाज में उसके बाजुओं और टांगों पर खंजर से वार करती रही। शोफांग के जिस्म से खून की धारें बहती रहीं और वह चीखता रहा और फिर जब थाईवांग ने उसके जिस्म के निचले हिस्से पर बंधा हुआ कपड़ा खींचकर अलग किया तो काला बच्चा की समझ में नहीं आ सका था कि वह क्या करना चाहती है, लेकिन दूसरे ही लम्हें काला बच्चा कांप उठा। थाईवांग ने खंजर के एक ही वार से उसकी मर्दानगी जड़ से साफ कर दी थी।

"इन जख्मों से तुम मरोगे नहीं–डॉक्टर तुम्हें बचा लेंगे।" वह उसके मुंह पर थूकते हुए बोली–"तुम जिन्दा रहोगे और जिन्दगी के आखिरी लम्हे तक यह याद रखोगे कि तुम्हारा यह हाल उस कमजोर और बेबस औरत ने किया था, जिसे तुम पागल करना चाहते थे–मैं

चाहूं तो एक ही वार से तुम्हारी शहरग काटकर तुम्हें मौत के घाट उतार सकती हूं लेकिन मेरे ख्याल में मौत सजा नहीं निजात है जिन्दगी से। सजा तो वह है जिसे जिन्दगी की आखरी सांस तक याद रखा जाए—तुम जब तक जिन्दा रहोगे, इस सजा को याद रखोगे।"

शोफांग जानदार आदमी था। इतने जख्म खाने के बाद बेहोश नहीं हुआ था। थाईवांग ने एक बार फिर उसके मुंह पर थूका और मुड़कर काला को इशारा किया। वह दोनों सतर्कता बरतते हुए तहखाने से बाहर आ गये। थाईवांग जिस्म के ऊपरी हिस्से से नग्न थी लेकिन उसे शायद अपनी नग्नता का एहसास नहीं था। उस पर अब भी जनून सवार था।

वह सतर्कता से दबे कदमों आगे बढ़ते रहे। एक कमरे में दबी-दबी चीखों की आवाजें सुनाई दे रही थीं। दरवाजा भिड़ा हुआ था लेकिन दोनों पटों के बीच लगभग आधे इंच की झिर्री थी। काला बच्चा ने झांककर देखा। वह दोनों उस कमरे में थे। काला बच्चा ने पैर की जोरदार ठोकर से दरवाजा खोल दिया और उछलकर अंदर आ गया। थाईवांग भी उसके साथ थी।

"बस अब खेल खत्म हो गया—छोड़ दो इसे...काला बच्चा ने चीखकर कहा, पिस्तौल उस वक्त उसके हाथ में था।

वह तीनों शीनियो को छोड़कर उछल पड़े। उनकी रायफलें एक तरफ पड़ी हुई थीं। रंगोटी ने उस तरफ छलांग लगाई लेकिन काला बच्चा उससे पहले ही हरकत में आ गया। वह खड़े-खड़े ताकतवर स्प्रिंग की तरह हवा में उछला। हवा ही में लट्टू की तरह घूमा और उसकी जोरदार स्पिन किक रंगोटी के मुंह पर लगी। वह बिलबिलाता हुआ उलटकर पीछे गिरा। उसकी नाक से खून बह निकला था।

"अब किसी ने अपनी जगह से हरकत की तो हाथ-पैरों को कष्ट नहीं दूंगा—सिर्फ एक उंगली को हरकत दूंगा।" काला बच्चा ने पिस्तौल से संकेत किया।

थाईवांग ने जल्दी से आगे बढ़कर एक रायफल उठा ली और उन तीनों को जद में ले लिया। खंजर उसने वहीं फेंक दिया था। शीनियो दौड़कर उनकी तरफ आ गयी। वह लोग उसे अभी तक कोई नुकसान नहीं पहुंचा सके थे। उसके जिस्म का ऊपरी हिस्सा थाईवांग की तरह नग्न था और नोंच-खसोट के निशान नजर आ रहे थे।

उनमें सिर्फ कोमो के जिस्म पर लिबास था। रंगोटी और राधो के लिबास जमीन पर पड़े थे। काला बच्चा ने थाई और शीनियो को इशारा किया। उन्होंने राधो और रंगोटी की शर्ट उठाकर पहन ली।

"सजा तो तुम तीनों को भी ऐसी ही मिलनी चाहिए, जो शोफांग को दी गयी है लेकिन हम तुम लोगों के गंदे खून से अपने हाथ नहीं रंगना चाहते।" काला बच्चा ने बारी-बारी उन तीनों की तरफ देखते हुए कहा—"तुम लोगों को इसलिए जिन्दा छोड़ा जा रहा है कि पुलिस को अपने और शोफांग के काले करतूतों का विवरण बता सको। रंगोटी!" काला बच्चा ने उसकी तरफ देखा—"वह उस आलमारी के ऊपर कुछ रस्सियां नजर आ रही हैं। पहले अपने इन दोनों साथियों को बांधो फिर तुम्हारी बारी आयेगी।"

रंगोटी ने बिना चूं-चपड़ किए आलमारी पर रखी हुई रस्सियां उतारीं और राधो और कोमो को बांधने लगा। रंगोटी को उसने खुद बांधा और फिर वह उस कमरे में आ गये, जहां उन्हें सबरे पहले लाया गया था। वहां टेलीफोन भी रखा हुआ था।

"मेरा ख्याल है महाराज को सूचना दी जाए।" काला बच्चा ने थाईवांग की तरफ देखते हुए कहा।

"नहीं एक और जगह मेरे जहन में है और मेरा ख्याल है वहां हम ज्यादा सुरक्षित रह सकते हैं।" थाईवांग ने कहा और फोन का रिसीवर उठाकर नम्बर मिलाने लगी। उस वक्त रात का एक बज चुका था। दूसरी तरफ से कॉल रिसिव करने में लगभग दो मिनट लगे थे। थाईवांग लगभग तीन मिनट तक बात करती रही। उसने फोन पर जो नाम लिया उसे सुनकर काला बच्चा बुरी तरह उछल पड़ा था।

फोन का क्रेडिल टेक करके उसने पुलिस का नम्बर मिलाया।

"मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है।" वह लाइन मिलने पर संक्षेप में विवरण देकर बोली—"इस कोठी का नम्बर भी नहीं बता सकती अलबत्ता यह कोठी खोए ऐटीवन पर स्थित है। जब आप लोग यहां पहुंचेंगे तो इसका गेट खुला हुआ और तमाम बत्तियां जलती हुई मिलेंगी।"

उसने फोन बन्द कर दिया। उन्होंने पिस्तौल और रायफल वहीं फेंक दी और बाहर आ गये। पोर्च में सफेद रंग की एक कार खड़ी थी।

"तुम गेट खोलो—मैं कार बाहर निकालती हूं।" थाईवांग यह कहते हुए कार का दरवाजा खोलने लगी।

उधर उसने इन्जिन स्टार्ट किया इधर काला ने गेट खोल दिया। वह कार को रिवर्स गेयर में बाहर ले आई। काला ने गेट खुला छोड़ दिया और शीनियो के साथ पिछली सीट पर बैठ गया। शीनियो अभी

तक कंपकंपा रही थी। वह काला बच्चा के साथ सटकर बैठी हुई थी और अपना सारा बोझ काला बच्चा पर डाल रखा था। काला ने एक बाजू उसकी कमर के गिर्द जमा लिया और उसका बाजू हौले-हौले थपथपाने लगा।

कार तेज रफ्तारी से विभिन्न सड़कों पर दौड़ती रही और फिर वह कार उन्होंने रामाबन रोड पर श्याम स्क्वायर के करीब छोड़ दी। उससे जरा आगे रात भर खुले रहने वाले एक रेस्टोरेन्ट के सामने एक टिकटिक मिल गया।

यह टिकटिक भी उन्होंने ही फोन रोड पर बर्मा के दूतावास से कुछ फासले पर छोड़ दिया और वहां से पैदल चलते हुए पैन रोड पर मुड़ गये। शीनियो अब बड़ी हद तक अपने आप पर काबू पा चुकी थी। वह जिन्दगी के खौफनाक तजुर्बे से दो-चार हुई थी। उसके जहन में यकीनन यह बात रही होगी कि बेआबरू करने के बाद उसे मौत के घाट उतार दिया जायेगा और जाहिर है इस खौफ का थोड़ा बहुत असर तो अब भी बाकी था और इसीलिए वह थाईवांग के साथ चिपकी हुई चल रही थी।

मेन रोड पर चलते हुए वह एक और गली में मुड़ गये और फिर हिन्दुओं के मन्दिर के सामने से गुजरकर वह दूसरी गली में घूम गये। इस तरफ मुड़ते हुए वह उस जगह को देख रहा था, जहां टाइगर का एक आदमी उसके हाथों मारा गया था।

वह तीनों साथ-साथ चल रहे थे और फिर कुछ ही देर बाद थाईवांग जानकी देवी के मकान के दरवाजे पर दस्तक दे रही थी।

दरवाजा खुलने में ज्यादा देर नहीं लगी थी। थाईवांग ने शोफांग की कोठी से फोन करके जानकी देवी को बता दिया था और वह उनके इन्तजार में जाग रही थी, इसलिए पहली मर्तबा हल्की-सी दस्तक देने पर ही दरवाजा खुल गया था।

दोबारा इस घर में कदम रखते हुए वह एक अजीब-सी कैफियत महसूस कर रहा था। यह वही जगह थी, जहां मौत उनके सिरों पर पहुंच गयी थी और वह मौत के पंजों से बच निकलने में कामयाब हो गये थे। अगर उस रोज उन्हें चंद मिनट की भी देर हो जाती तो आज वह दोबारा इस चौखट पर कदम रखने के लिए जिन्दा न होते। यही वह जगह थी जहां काला और अपनी जान बचाने के लिए थाईवांग ने जानकी देवी की नौकरानी बिन्दू का गला घोंटकर मार डाला था और इस वक्त थाईवांग भी अन्दर दाखिल होते हुए यही सब कुछ सोच रही थी।

जानकी देवी और थाईवांग इस तरह पुरजोश अन्दाज में गले मिली थीं जैसे बिछड़ी हुई स्त्री बहनें एक लम्बे अरसे बाद मिली हों फिर जानकी देवी शीनियो को देखकर भी चौंके बगैर न रह सकी।

''ओ...शीनियो! तुम...तुम इनके साथ कैसे?'' यह कहते हुए वह शीनियो से लिपट गयी। जानकी देवी डॉक्टर थी और शीनियो नर्स उन दोनों का सम्बन्ध एक ही पेशे से था। इस तरह एक दूसरे को पहचान लेना कोई हैरत की बात नहीं थी।

''इसकी किस्मत भी फूट गयी है।'' थाईवांग ने मुस्कराते हुए कहा–''हमारे साथ यह भी मौत से आंख-मिचौली खेल रही है।''

''आओ, अन्दर कमरे में आ जाओ।'' जानकी देवी ने कहा–''लगता है तुम किसी बहुत ही संगीन किस्म की परिस्थिति से निकलकर आ रहे हो। तुम लोग कमरे में बैठो, मैं चाय बनाकर लाती हूं और तुम कैसे हो मिस्टर काला?'' आखिरी शब्द उसने काला बच्चा की तरफ देखकर कहे थे।

काला ने सिर हिलाने पर ही बात खत्म कर दी। जानकी देवी किचन की तरफ चली गयी और वह तीनों उस कमरे में आ गये, जो ड्राइंगरूम के तौर पर इस्तेमाल होता था। उसे अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई थी कि जानकी देवी घर में अकेली ही थी लेकिन न जाने क्यों काला बच्चा अपने आपमें अजीब-सी बेचैनी महसूस कर रहा था। पन्द्रह-बीस मिनट बाद जानकी देवी चाय बना कर ले आई।

''उस रोज जो कुछ हुआ मुझे उसका अफसोस है।'' जानकी देवी ने थाईवांग की तरफ देखते हुए कहा–''राजा के बारे में तो मैं जानती थी कि वह आवारा-बदमाश है। उसका ऐसे लोगों के साथ उठना-बैठना था। जिनका पेशा ही राहजनी और लूटमार था। एक मर्तबा तो मैंने भी राजा को जमानत पर रिहा करवा दिया था लेकिन मुझे अन्दाजा नहीं था कि वह कत्लोगारत जैसी वारदातों में भी लिप्त होगा। सबसे ज्यादा दुख तो मुझे बिन्दू के बारे में जानकर हुआ था। वह बुढ़िया कब्र में पैर लटकाये बैठी थी लेकिन लालच में आकर उसने मेरी सारी नेकियां भी भुला दीं। ऐसे बे जमीर लोगों का अंजाम तो यही होना चाहिए था।''

''और तुम्हारे साथ क्या हुआ?'' थाईवांग ने प्रश्नसूचक निगाहों से उसकी तरफ देखा–''मेरा मतलब है, हमारे जाने के बाद तुम्हें टाइगर ने तो परेशान किया होगा।''

''टाइगर ने और पुलिस ने भी।'' जानकी देवी ने मुस्कराते

हुए जवाब दिया—"टाइगर का मानना था कि मैंने तुम लोगों को पनाह दी थी क्योंकि उस रात राजा टाइगर के एक नाइट क्लब में गया था और वहां से एक आदमी को लेकर वापस आया था और उसके बाद वह सब कुछ हुआ था, जिसकी उसे आशा नहीं थी। राजा ने वहां एक और आदमी को बताया था कि मेरे घर में दो ऐसे शख्स छुपे हुए हैं, जिनकी टाइगर को तलाश है और टाइगर इस बात को बुनियाद बनाकर मुझसे तुम लोगों के बारे में पूछने की कोशिश करता रहा। उसने मेरे घर की तलाशी भी ली थी लेकिन यहां ऐसी कोई चीज नहीं मिली थी, जिससे तुम लोगों की मौजूदगी साबित होती। तुम दोनों के कपड़े मैंने जलाकर गटर में बहा दिए थे।" वह चंद लम्हें खामोश हुई फिर बात जारी रखते हुए बोली—"पुलिस को भी मैंने यही बयान दिया था कि एक औरत और एक नौजवान लड़का जबरदस्ती मेरे मकान में घुस आये थे। इन्होंने असलेह की जद में हमें बंधक बना लिया था। राजा को किसी तरह बाहर निकलने का मौका मिल गया लेकिन उसके वापस आने से पहले ही उन लोगों ने भागने की कोशिश की। बिन्दु ने उन्हें रोकना चाहा तो अपनी जान से हाथ धो बैठी। बाद में राजा और उसका साथी भी उन्हीं के हाथों मारे गये। तुम लोगों को रोकने की कोशिश में मैं भी जख्मी हुई थी। मेरी टांग में गोली लगी थी।

"क्या...?" काला ने हैरत से उसकी तरफ देखा—"क्या पुलिस और टाइगर ने तुम्हारे इस झूठ पर यकीन कर लिया था।"

"झूठ नहीं—यह सच था।" जानकी देवी ने कहा—"मैंने अपने पिस्तौल से अपनी टांग में गोली मारी थी और जख्म से वह गोली हस्पताल में निकाली गयी थी।" उसने साड़ी और पेटीकोट दायीं टांग से हटा दिया। रान पर जख्म का निशान मौजूद था, जो ज्यादा पुराना नहीं था। त्वचा के जख्म वाले हिस्से पर गुलाबीपन नुमाया था।

उसने नजरें उठाकर थाईवांग की तरफ देखा। उसके चेहरे पर अजीब से भाव थे। काला बच्चा की तरह वह भी खासी प्रभावित नजर आ रही थी।

"अपने आप पर गोली मारकर मैंने तुम लोगों पर कोई अहसान नहीं किया था।" जानकी देवी कह रही थी—"इसका सबसे ज्यादा फायदा मुझे ही हुआ था। मुझे दोनों तरफ से परेशान तो किया गया था लेकिन अंततः मेरी बात पर यकीन करके मेरा पीछा छोड़ दिया गया था। अगर मैंने अपने आपको गोली न मारी होती तो न तो टाइगर और न ही पुलिस मेरा पीछा छोड़ती। टाइगर तो शायद मुझे

जिन्दा न छोड़ता।" वह चंद लम्हों को खामोश हुई फिर थाईवांग की तरफ देखते हुए बोली–"अब इस घर में तुम लोगों के लिए कोई खतरा नहीं है–लेकिन इस बात का ख्याल रखना पड़ेगा कि इस गली में रहने वाला कोई बच्चा भी तुम लोगों को न देख सके और यह जरा मुश्किल काम होगा।"

"बस एक-दो दिन की बात है।" थाईवांग ने कहा–"पुलिस उस कोठी में पहुंच चुकी होगी। हो सकता है आज ही रात टाइगर की तलाश में भी छापे मारे जायें और हमारे बारे में जानकारी हासिल करने के लिए पुलिस महाराज से भी सम्पर्क करे। एक-दो दिन बाद मामला ठण्डा होगा तो हम महाराज से सम्पर्क करेंगे–वह यकीनन हमारे लिए कोई उचित बन्दोबस्त कर देंगे।"

"लेकिन इस मर्तबा मैं महाराज के पास नहीं जाना चाहता।" काला बच्चा ने कहा–"महाराज फिर मुझे किसी वाट तक सीमित कर देंगे और मैं अपने आपको फिर बेबस महसूस करने लगूंगा। मेरा ख्याल है कि इस दौरान में हम कोई ऐसा बन्दोबस्त कर लेंगे कि सुरक्षित भी रहें और आजादी से काम भी कर सकें।

"ऐसी सूरत में मेरे पास एक तजवीज है।" जानकी देवी ने कहा–"दरिया के उस पार वांगदंग याए रोड पर मेरा एक मकान है। तुम्हें याद है मैंने वह मकान लगभग छः साल पहले खरीदा था। पहले तो मेरा ख्याल था कि मैं खुद वहां शिफ्ट हो जाऊंगी लेकिन फिर वह किराए पर दे दिया था। तकरीबन एक महीना पहले वह मकान खाली हुआ है। कुछ मेहमान और रंगरोगन की वजह से मकान खाली पड़ा है। इस मर्तबा मेरा इरादा यही है कि वहां अपनी एक और दोस्त के साथ मिलकर ब्यूटी पार्लर खोलूंगी–लेकिन अगर तुम लोग चाहो तो उस मकान में रह सकते हो। यह मकान सुरक्षित भी होगा और तुम लोगों को कोई तकलीफ भी नहीं होगी।"

"यह तो और भी अच्छी बात है।" थाईवांग बोली–"ऐसी सूरत में क्या यह बेहतर न होगा कि हम कल ही वहां पहुंच जाएं।"

"कल शाम के बाद।" जानकी देवी ने कहा–"कल दिन में जरूरत की चीजें वहां पहुंचा दूंगी और फिर शाम का अंधेरा फैलने के बाद तुम लोगों को ले चलूंगी। लेकिन अभी तुमने किसी कोठी पर पुलिस रेड की बात की थी। वह किस्सा क्या है?"

"यही असल बात है, जो मैं तुम्हें बताना भूल गयी थी।" थाईवांग ने कहा और फिर उसे पूरी बात बताने लगी। अंत में वह कह रही थी–"फोन मैंने तुम्हें वहीं से किया था लेकिन उस वक्त

आया

कुछ बताने का मौका नहीं था।"

"भगवान जाने इसे किस बात की सजा मिल रही है।" जानकी देवी काला बच्चा की तरफ देखकर बोली–"यह तो ऐसा है कि इसे दिल में छिपाकर रखा जाए और वह कमबख्त इसकी जान के ग्राहक हो रहे हैं।"

"सुन रहे हो काला।" थाईवांग ने शोख निगाहों से काला बच्चा की तरफ देखा–"इसने तो अपने दिल में तुम्हारे लिए इतनी जगह पैदा कर ली–तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"इनकी मोहब्बत का शुक्रिया अदा करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।" काला बच्चा ने जवाब दिया। उनकी बातों से काला बच्चा का चेहरा सुर्ख हो गया था।

"अच्छा अब ऐसा है कि इस वक्त तीन बजने वाले हैं।" जानकी देवी दीवार पर लगी हुई घड़ी देखते हुए बोली–"अब तुम लोग आराम करो। बाकी बातें सुबह होंगी।"

वह लोग उस कमरे से निकल आये। उस मकान के ग्राउण्ड फ्लोर पर भी चार-पांच कमरे थे और हर कमरा बेडरूम के तौर पर सजा था। पिछली बार उन्होंने ऊपर वाले कमरे देखे थे। वह भी तमाम बेडरूम्स थे। जानकी देवी यहां रहती तो अकेली थी–फिर इतने सारे बेडरूम्स लगता था जैसे कोई होटल या गेस्ट हाऊस हो।

एक कमरा काला बच्चा को दे दिया गया। उसके साथ वाला नर्स शीनियो को, थाईवांग जानकी देवी के कमरे में चली गयी थी। काला बच्चा ने दरवाजा बन्द करके नाइट बल्ब जला लिया और बिस्तर पर लेटकर सोने की कोशिश करने लगा लेकिन नींद आंखों से कोसों दूर थी। वह पिछले चंद घण्टों के दरमियान होने वाली घटनाओं के बारे में सोच रहा था। शोफांग ने किस होशियारी से उन्हें जानबोरी के पहाड़ी कॉटेज से अगुवा कराया था। वह एक बार फिर मौत के जाल में फंस गये थे। शोफांग वाकई इंसान नहीं शैतान था। वह अपने धर्म को भी धोखा दे रहा था। अगर उनका बुद्धा की प्रतिमा से सोना चुराने का मंसूबा कामयाब हो जाता तो कोई सोच भी नहीं सकता था कि इसमें किसी भिक्षु का हाथ होगा।

वह लोग एक बार फिर मौत का हिस्सा तोड़कर भाग निकले थे और यह कामयाबी थाईवांग का कारनामा कहा जायेगा। परिस्थिति निहायत संगीन होने के बावजूद उसने बड़ी हिम्मत का सबूत दिया था। इससे एक और बात स्पष्ट हो गयी थी कि औरत को हमेशा कमजोर समझा गया था लेकिन जब उसके अन्दर की औरत जागती

है तो वह बिफरी हुई शेरनी बन जाती है और फिर दुनिया की कोई ताकत उसे इन्तकाम से नहीं रोक सकती। थाईवांग ने शोफांग से अपनी तोहीन का इन्तकाम जिस तरह लिया था, वह बहुत ही भयानक था। अगर शोफांग पुलिस के आने तक जिन्दा रहा होगा तो उसने जरूर बताया होगा कि उसकी यह हालत किसने की थी।

काला बच्चा के जहन में महाराज का ख्याल उभर आया। महाराज को भी उनके अपहरण का पता चल गया होगा। उनके आदमी उन्हें चारबेरी और बैंकाक में तलाश कर रहे होंगे। महाराज ने काला बच्चा की खातिर बहुत से लोगों को अपना दुश्मन बना लिया था। काला बच्चा यह सोचा करता था कि उसके अन्दर आखिर ऐसी क्या बात थी जो महाराज ने उसके लिए सब कुछ दावं पर लगा दिया था। उसकी हिफाजत के लिए महाराज अब तक अपने कई आदमी मरवा चुका था और खानकाह के गेट पर बम-धमाका, उस धमाके में ग्यारह बेगुनाह मारे गये थे और कई जख्मी हुए थे।

बम धमाके का ख्याल आते ही उस लड़की का चेहरा काला बच्चा की नजरों में घूम गया। कैसी चमक थी उसकी आंखों में और कितनी मासूमियत थी उसके चेहरे पर लेकिन उसकी मासूमियत कितने बेगुनाहों की मौत का बायस बनी थी। काला बच्चा को यकीन था कि कहीं न कहीं उस लड़की से सामना जरूर होगा।

उस लड़की के बारे में सोचते हुए उसके जहन में कौशल्या का ख्याल उभर आया। कौशल्या अगर सोने की चोरी के बारे में उसे न बताती तो उनका मंसूबा जरूर कामयाब हो जाता लेकिन अब वह कहां थी। उसने मास्टर होचिन से सम्पर्क किया था या नहीं। सवाल यह भी पैदा होता था कि वह जिन्दा भी थी या उसे भी मौत के घाट उतार दिया गया था।

काला बच्चा यह सब कुछ सोच रहा था कि दरवाजे पर दस्तक की हल्की-सी आवाज सुनकर चौंक गया। किसी ने उंगली से दरवाजा खटखटाया था। उसने उठकर दरवाजा खोल दिया, मगर बाहर कोई नहीं था। इस दौरान में दस्तक की आवाज दोबारा उभरी और यह आवाज काला बच्चा और शीनियो के कमरों के दरमियानी वाले दरवाजे से उभरी थी। काला बच्चा ने बाहर का दरवाजा बन्द कर दिया और बीच वाले दरवाजे का बोल्ट आहिस्तगी से गिरा दिया। दरवाजा फौरन ही खुला और शीनियो उसके कमरे में आ गयी।

"मुझे कमरे में अकेले डर लग रहा है।" वह काला बच्चा की तरफ देखते हुए बोली—"बाहर का दरवाजा खोलकर थाईवांग वाले

कमरे में जाने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने सोचा शायद तुम जाग रहे हों।"

"नींद तो मुझे भी नहीं आ रही थी लेकिन उसकी वजह किसी किस्म का खौफ नहीं बस सोचों ने दिमाग को घेर रखा है। आओ बैठ जाओ।" काला बच्चा ने एक तरफ हटते हुए कहा।

दरमियान का दरवाजा खुला छोड़ दिया गया। शीनियो वाले कमरे में ट्यूब लाइट जल रही थी और उसकी रोशनी इस कमरे में भी आ रही थी। शीनियो कुर्सी पर बैठ गयी और काला बच्चा भी बेड की पुश्त से पीठ टिकाकर अधलेटा हो गया।

"तुम जानकी देवी को कैसे जानती हो?" काला बच्चा ने उसकी तरफ देखते हुए पूछा—"और क्या तुम्हारे ख्याल में उस पर भरोसा किया जा सकता है?"

"हां—जानकी देवी हर लिहाज से भरोसेमंद औरत है।" शीनियो ने जवाब दिया—"मैं उसे बहुत अरसे से जानती हूं। उन दिनों मैंने नर्स का इम्तहान पास किया था और मुझे नौकरी की तलाश थी, दो महीने की जुस्तजू के बाद मुझे जानकी देवी के क्लीनिक में नौकरी मिल गयी। उन दिनों इसका क्लीनिक सामक्षेन रोड पर नेशनल लाइब्रेरी के करीब हुआ करता था। वह एक बड़ी कामयाब डॉक्टर थी, विशेष रूप से उन महिलाओं में उसे बड़ी शौहरत हासिल थी, जो अपने गुनाहों के बोझ से छुटकारा पाना चाहती थीं—ऐसी मरीजों में ज्यादा तादाद नौजवान लड़कियों की हुआ करती थी, जो अपने ब्याय फ्रैन्ड की हवस का शिकार हो जातीं और जब महीने दो महीने बाद उन्हें पता चलता कि उनकी मोहब्बत ने उन्हें किस मुसीबत में फंसा दिया है तो वह जानकी देवी के क्लीनिक का रुख करतीं और जानकी देवी उचित फीस लेकर उन्हें इस मुसीबत से छुटकारा दिला देती। यह यद्यपि गैर कानूनी काम था लेकिन जानकी देवी इसे बुरा नहीं समझती थी। इस सिलसिले में उसका अपना एक नजरिया था।

एक रोज जानकी देवी पकड़ी गयी। एक ऐसी लड़की उसके पास आई थी जो इससे पहले किसी और डॉक्टर के पास जा चुकी थी और केस बिगड़ चुका था। जानकी देवी ने परिस्थिति की संगीनी का एहसास करते हुए पहले तो केस लेने से इन्कार कर दिया लेकिन उस लड़की की मां जानकी के कदमों में गिर गयी। वह भी हिन्दू थी। कुछ अपने धर्म की वजह से और कुछ उस बुढ़िया की नम्रता की वजह से जानकी देवी का दिल पसीज गया और उसने वह केस ले लिया।

केस पहले ही बहुत बिगड़ चुका था। जानकी देवी ने लड़की को उसके पेट में पलने वाले गुनाह से तो निजात दिला दी लेकिन खुद उस लड़की की जान के लाले पड़ गये, उसे हस्पताल ले जाना पड़ा और इस तरह यह बात पुलिस तक पहुंच गयी, हस्पताल में उस लड़की की जान तो बच गयी लेकिन जानकी देवी कानून की जद में आ गयी। लड़की की बूढ़ी मां ने जो पहले जानकी के कदमों में गिरकर गिड़गिड़ाई थी जानकी देवी के खिलाफ बयान दिया। इस तरह जानकी देवी पर पाबन्दी लगा दी गयी कि वह पांच साल तक मेडीकल प्रैक्टिस नहीं करेगी। मैं चूंकि जानकी देवी की नर्स थी इसलिए मुझ पर भी दो साल के लिए पाबन्दी लगा दी गयी।"

"ओह!" काला बच्चा उसके खामोश होने पर बोला–"इसका मतलब है कि जानकी देवी लालची औरत है। वह यह गैर-कानूनी काम पैसे के लिए करती थी और कोई लालची इंसान कुछ भी कर सकता है।"

"नहीं।" शीनियो ने इन्कार में सिर हिलाया–"जानकी लालची औरत नहीं है। मैंने कहा न कि इस सिलसिले में उसका अपना एक नजरिया है। शहर में बीसियों डॉक्टर हैं, जो यह गैर-कानूनी काम करते हैं और वह ऐसी औरतों की मजबूरियों से फायदा उठाते हुए भारी रकम वसूल करते हैं और कुछ डॉक्टर तो अपनी मरीजाओं को ब्लैकमेल भी करते हैं लेकिन जानकी देवी ऐसी नहीं थी। वह बहुत मामूली फीस लेती थी और उसने कभी अपनी मरीजाओं की मजबूरी का लाभ उठाने की कोशिश भी नहीं की।"

"बुराई आखिर बुराई होती है।" काला बच्चा ने कहा।

"मैंने कहा ना जानकी देवी इसे बुराई नहीं भलाई समझती थी। बहरहाल मेडिकल प्रैक्टिस पर पाबन्दी लगने के बाद उसने इस मकान में मसाज पार्लर खोल लिया। मैंने यहां चंद महीनें काम किया था फिर छोड़कर चली गयी।" वह चंद लम्हों को खामोश हुई फिर बात जारी रखते हुए बोली–"मसाज या मालिश थाईलैण्ड की एक पौराणिक खपत है लेकिन अब उसे एक कारोबार बना दिया गया है। लोगों को आकर्षित करने के लिए अखबारों में इश्तहार छापे जाते हैं, इन विज्ञापनों में खूबसूरत लड़कियों और लड़कों की तस्वीरें भी छापी जाती हैं यह बड़ा मुनाफे वाला कारोबार है। इसमें हसीन लड़कियों और खूबसूरत लड़कों को इस्तेमाल किया जाता है। मसाज की आड़ में वह सब कुछ होता है जिससे हवस शान्त होती है। इस कारोबार पर हुकूमत की तरफ से कोई पाबन्दी नहीं है। एक घटिया

तरीन रिहाइशी होटल से लेकर बड़े-बड़े फाइव स्टार और डीलक्स होटलों में भी मसाज पार्लर मौजूद हैं। शहर की घर, सड़क और गली-कूचे में तुम्हें मसाज पार्लर्स के बोर्ड नजर आयेंगे। इन पार्लर्स की आड़ में वेश्यावृति का कारोबार चल रहा है।

जानकी देवी ने भी अपनी एक दोस्त के सहयोग से इस मकान में ऐसा ही एक मसाज पार्लर खोला था। जानकी सिर्फ स्लीपिंग पार्टनर थी जबकि सारा बिजनेस उसकी दोस्त ने संभाला हुआ था। यह कमरे तुमने देखे होंगे। तमाम कमरे इस मकसद के लिए इस्तेमाल होते थे। इन कमरों में लगी हुई अर्धनग्न तस्वीरें उस दौर की याद दिलाती हैं। मसाज पार्लर में ऐसी तस्वीरें इसलिए लगाई जाती हैं कि ग्राहक ज्यादा से ज्यादा सुकून हासिल कर सके। ग्राहक को पहले तस्वीरों के एलबम दिखाए जाते हैं। वह मसाज के लिए अपनी पसंद की लड़की या लड़के का चयन करते हैं। इन मालिश के ग्राहकों में बड़ी संख्या में औरतें भी शमिल हैं। कुछ औरतें तो लड़कियों को ही पसंद करती हैं जबकि अधिकता ऐसी औरतों की है जो मसाज के लिए आकर्षक नौजवान किशोरों का चयन करती हैं जैसे...जैसे तुम...।"

काला बच्चा ने चौंककर उसकी तरफ देखा। उसने बात करते हुए नजरें झुका ली थीं लेकिन अचानक ही काला बच्चा के दिमाग में एक धमाका-सा हुआ। थाईवांग यातना पसंद थी। उसने खुद ही बताया था कि यातना के लिए वह नौ उम्र लड़कों को ज्यादा पसंद करती है। यह खिदमत वह काला बच्चा से भी कई बार ले चुकी थी। काला को अचानक ही एक और ख्याल आया। उसने थाईवांग के बंगले में खूबसूरत लड़कियों की अर्धनग्न तस्वीरें और वह एलबम देखे थे, जिनमें लड़कियों और लड़कों की अनगिनत तस्वीरें लगी हुई थीं।

"थाईवांग के बारे में जानती हो। क्या वह भी कोई मसाज पार्लर चलाती थी?"

"उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानती।" शीनियो ने जवाब दिया—"उससे मेरी पहली मुलाकात हस्पताल में ही हुई थी, जहां उसे हेरोइन के इलाज के लिए दाखिल कराया गया था। हो सकता है उसे भी कभी ऐसा शौक रहा हो—लेकिन तुम्हारे बारे में उसके ख्यालात बहुत भिन्न हैं।"

"मसलन।" मैंने चौंककर उसकी तरफ देखा।

"उसने मुझे बताया था।" शीनियो मुस्कराते हुए बोली—"पहली मर्तबा जब उसने तुम्हें अपनी गाड़ी में देखा था तो उसने यही सोचा

Rinku ... New Market, M.

था कि एक अच्छा जानदार लौंडा हाथ लग गया है, वह यही सोचकर तुम्हें अपने घर ले आई थी लेकिन फिर यह बात वह भी नहीं समझ सकी कि तुम्हारे बारे में उसके ख्यालात क्यों बदल गये थे। पहली मर्तबा जब उसने अपने कपड़े उतारकर हंटर तुम्हारे हाथ में दिया था तो उसका ख्याल था कि तुम भी वही कुछ करोगे जो तुम्हारी उम्र के लड़के करना चाहते हैं। यह उम्र का वह हिस्सा होता है जब जहन आसानी से बहक जाता है, मगर तुम सिल साबित हुए और तुम्हारा यही किरदार उसे पसंद आया। उसके बाद भी कई ऐसे मौके आये कि वह तुम्हारे सामने बेलिबास हुई लेकिन तुमने अपने जज्बात को बेकाबू नहीं होने दिया। इस वजह से वह तुम्हें पसंद करती है और मेरा ख्याल है कि वह तुम्हें दुनिया की हर चीज से ज्यादा अजीज समझती है।"

"यह सब कुछ तुम्हें उसने खुद बताया था?" काला बच्चा ने पूछा। वह अपने आपमें एक अजीब-सी सनसनी महसूस कर रहा था।

"हां... ।" शीनियो के होठों पर मुस्कराहट गहरी हो गयी—"मैं कई रोज से उसके साथ हूं। हम रातों को देर तक जागकर बातें करते रहते थे।"

"अब फिर जरा जानकी के बारे में बातें करते हैं।" काला बच्चा ने विषय बदलते हुए कहा—"मेरा ख्याल है कि जानकी देवी ने अपना मसाज वाला बिजनेस बन्द कर दिया है। यह कारोबार इतना मुनाफे वाला है तो उसने उसे खत्म क्यों कर दिया?"

"चंद महीने पहले उसका मेडिकल लाईसेंस बहाल कर दिया गया था और उस पर से पाबन्दी हटा ली गयी थी।" शीनियो ने जवाब दिया—"यह बिजनेस उसने अपनी एक दोस्त के मशवरे से शुरू तो कर दिया था मगर उसे पसंद नहीं था इसलिए वह कुछ दूर-दूर ही रही थी। अपनी मेडिकल प्रैक्टिस पर से पाबन्दी हटते ही उसने यह बिजनेस खत्म कर दिया और उस इलाके में एक छोटा-सा क्लीनिक खोल लिया। उसने मुझे अपने क्लीनिक पर लाना चाहा था लेकिन मैंने इन्कार कर दिया क्योंकि मैं हस्पताल में नौकरी कर रही थी।"

"अब तुम्हारा क्या इरादा है?" काला बच्चा ने पूछा—"फिर उस हस्पताल में... ।"

"नहीं... ।" शीनियो ने इन्कार में सिर हिला दिया—"अब मैं हस्पताल वापस नहीं जा सकती। टाइगर के आदमियों ने मुझे तुम्हारे साथ देख लिया है। वह मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेंगे। मैं हस्पताल तो क्या

यह शहर ही छोड़ देना चाहती हूं ताकि उनकी नजरों में न आ सकूं।"

"मगर टाइगर के आदमियों को तो हम उस कोठी में रस्सियों से बांधकर आये थे। अब तक तो पुलिस ने उन्हें सलाखों के पीछे पहुंचा दिया होगा। वह तुम्हारा क्या बिगाड़ सकते हैं?"

"टाइगर बहुत ताकतवर है। उसके हाथ बहुत लम्बे हैं।" शीनियो ने कहा—"खानकाह में जो कुछ हुआ उसके बावजूद भी वह अब भी पूरी तरह फॉर्म में है। वह अपने आदमियों को छुड़ा लेगा। अगर न भी छुड़ा सका तो उसके पास और भी बहुत से आदमी हैं। मैं कई रोज से थाईवांग के साथ हूं। उन लोगों को यकीनन मेरे बारे में पता चल गया होगा, वह मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेंगे और मैं जिन्दगी भर तुम लोगों के साथ रह नहीं सकती। अब मुझे डर लगने लगा है।"

"कहां जाओगी?"

"च्यांगराय।" शीनिया ने जवाब दिया—"थाईलैण्ड के उत्तर में बर्मा की सरहद के करीब यह एक पौराणिक शहर है। बैंकाक से लगभग आठ सौ किलोमीटर के फासले पर स्थित च्यांगराय जाने के लिए बस लगभग ग्यारह घण्टे का वक्त लेती है। यों तो हवाई जहाज सवा घण्टे में पहुंचा देता है लेकिन मैं ट्रेन से जाऊंगी। इसमें यद्यपि वक्त ज्यादा लगता है, मगर किराया कम है।"

"किराए की फिक्र मत करो—हम तुम्हें हवाईजहाज का किराया भी दे देंगे लेकिन क्या तुमने वाकई हमें छोड़ने का फैसला कर लिया है?"

"थाईवांग पूरी तरह स्वस्थ हो चुकी है। उसे अब मेरी जरूरत नहीं है—वैसे इस सावधानी की जरूरत है कि उसे दोबारा नशे की लत न लग जाए। हेरोइन का नशा एक लानत है, मरीज स्वस्थ होने के बाद भी दोबारा उसे इस्तेमाल करने की कोशिश करता है। इस बात का ख्याल अब तुम्हें रखना है कि वह दोबारा इस लानत को अपने करीब न आने दे। वह तुम्हारा बहुत ख्याल करती है।"

"ठीक है शीनियो।" काला बच्चा ने गहरी सांस लेते हुए कहा—"वैसे अगर तुम चाहो तो महाराज से कहकर तुम्हारे लिए कोई दूसरा बन्दोबस्त किया जा सकता है, जहां तुम्हें उचित वेतन मिलेगा और सम्मान भी मिलेगा।"

"नहीं, अब मुझे जाना ही होगा।" शीनियो ने कहा—"च्यांगराय में मेरी बूढ़ी मां हर महीने मेरे मनीआर्डर का इन्तजार करती है। मैं नहीं चाहती कि किसी रोज उसे मनीआर्डर के बजाए मेरी मौत की

खबर मिले।"

"ठीक है।" काला बच्चा ने कहा—"हम कहीं सेट हो जायें तो दो-चार दिन में तुम्हारे जाने का बन्दोबस्त करते हैं।" काला बच्चा ने घड़ी की तरफ देखा। सुबह के पांच बजने वाले थे—"अब तुम अपने कमरे में जाकर सो जाओ। कल दिन में बात करेंगे।"

"मुझे अपने कमरे में डर लग रहा है। मैं यहीं तुम्हारे बेड पर एक तरफ सो जाती हूं।" शीनियो ने कहा।

"डर कैसा? अब तो सुबह होने वाली है। बीच का दरवाजा खुला रहने दो।" काला बच्चा ने कहा। दरअसल उसे शीनियो को अपने बेडपर सुलाने में कोई ऐतराज नहीं था लेकिन वह नहीं चाहता था कि सुबह थाईवांग या जानकी देवी शीनियो को उसके बिस्तर पर देखें और उन्हें शीनियो और काला बच्चा के बारे में कोई गलत बात सोचने का मौका मिले।

अंततः वह उटकर अपने कमरे में चली गयी। उसने बीच वाला दरवाजा पूरी तरह खोल दिया था।

काला बच्चा बिस्तर पर लेटा पहले शीनियो फिर थाईवांग और जानकी देवी के बारे में सोचता रहा। जानकी देवी के बारे में शीनियो की बातों से उसे इत्मीनान हो गया था कि वह उसके साथ कोई धोखा नहीं करेगी।

दूसरे दिन शाम का अंधेरा फैलने के बाद वह रवानगी के लिए तैयार हो गये—"जानकी देवी ने जरूरत की तमाम चीजें दूसरे मकान में पहुंचा दी थीं। उसके पास अपनी गाड़ी थी, जिसे वह घर से कुछ दूर किराए के गैराज में खड़ी किया करती थी। दिन में कई चक्कर लगाकर सारी चीजें उसने उस गाड़ी में ढोई थीं।

शाम का अंधेरा फैलने के बाद उसने गाड़ी को दरवाजे के साथ लगाकर खड़ा कर दिया। गाड़ी के अन्दर की लाइट बुझी हुई थी। वह तीनों बड़ी सावधानी से मकान से निकलकर गाड़ी की पिछली सीट पर बैठ गये। वह शीनियो और थाईवांग के दरमियान सैण्डविच बना बैठा था। जानकी ने मकान के दरवाजे को ताला लगाया और ड्राइविंग सीट संभाल ली।

गाड़ी विभिन्न सड़कों से घूमती हुई चाव फरमा रिवर पार करके काइया रोड पर आ गयी और किंग के स्टैच्यू वाले चौराहे से होती हुई वांगदंग याए रोड पर आ गयी। सड़क पर उस नाम का बोर्ड पढ़कर काला बच्चा को महाराज याद आ गये। उनका भी यही नाम था।

जानकी देवी ने इस बात का ख्याल रखा था कि उनका पीछा तो नहीं किया जा रहा है। इस सड़क पर लगभग आधा मील का फासला तय करने के बाद गाड़ी दायीं तरफ एक और सड़क पर मुड़ गयी। यहां आबादी कुछ छितरी थी। खूबसूरत कॉटिज थे जो एक दूसरे से फासले पर थे। अंततः जानकी देवी ने एक कॉटिज के सामने गाड़ी रोक ली। पहले नीचे उतरकर गेट खोला और फिर गाड़ी को अन्दर ले आई। गाड़ी पोर्च में रोककर वह एक बार फिर गेट की तरफ गयी और गेट बन्द करके वापस आ गयी।

कॉटिज खासा बड़ा था। ताजा रंग-रोगन की खुशबू बसी हुई थी। दो कमरे ऐसे थे, जहां बेड बिछे हुए थे। सिटिंग रूम में तीन-चार कुर्सियां और एक बड़ी कॉफी टेबिल पड़ी हुई थी। फर्श पर कालीन बिछा हुआ था। किचिन में एक छोटा-सा फ्रीज और जरूरत की चीजें भरी हुई थीं। बाथरूम में भी जरूरत की चीजें मौजूद थीं। यह तमाम इन्तजामात आज दिन में जानकी देवी ने किए थे और अब कई रोज़ तक कोई परेशानी नहीं हो सकती थी।

जानकी देवी ने आते ही कॉफी बना ली और वह सिटिंग रूम में बैठे कॉफी की चुस्कियां लेते हुए बातें करने लगे।

"वह टेलीफोन मौजूद है।" जानकी देवी ने कमरे के एक कोने में स्टैण्ड पर रखे हुए फोन की तरफ इशारा करते हुए कहा—"यहां मेरा ज्यादा आना-जाना मुनासिब नहीं होगा लेकिन अगर कोई इमरजेन्सी हो या किसी चीज की जरूरत पड़ जाए तो फोन कर देना।"

"एक-दो दिन तक तो शायद किसी चीज की जरूरत न पड़े लेकिन तुम्हें एक और काम करना होगा।" काला बच्चा ने जानकी देवी की तरफ देखते हुए कहा।

"क्या...?" जानकी ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी तरफ देखा।

"शीनियो हमारे हालात से खौफजदा है। यह च्यांगराय अपनी मां के पास जाना चाहती है। इसके लिए एयर टिकट और कुछ रकम का बन्दोबस्त करना होगा। क्या तुम इतनी रकम का बन्दोबस्त कर सकोगी?"

"रकम तो मेरे पास बहुत है।" जानकी देवी ने मुस्कराते हुए कहा—"जब तुम लोग मेरे मकान से भागे थे तो बाद में बिन्दू के सामान की तलाशी लेने पर उसके सूटकेस में करेन्टी नोटों के बण्डल मिले थे। मुझे हैरत थी कि बिन्दू के पास इतनी बड़ी रकम कहां से आ गयी। वह रकम मैंने छुपाकर रखी हुई है। पुलिस को भी उसके

बारे में कुछ नहीं बताया था।"

"वह रकम हमारी है।" थाईवांग जल्दी से बोली—"जब टाइगर के आदमी मेरे घर आये थे तो वहां से भागते हुए मैंने जल्दी में कुछ रकम बैग में रख ली थी और तुम्हारे घर में वह बैग काला बच्चा के कमरे में था। उस रात हम तीनों तुम्हारे कमरे में बैठे बातें कर रहे थे। उससे थोड़ी देर पहले काला बच्चा ने बिन्दू को छुपकर बातें सुनते देख लिया था। उसी से काला बच्चा को किसी गड़बड़ का शक हुआ था फिर यह सनसनीखेज रहस्योद्घाटन हुआ कि मेरे कमरे में तकिए के नीचे रखा हुआ पिस्तौल और काला बच्चा के कमरे में मेरे बैग में से रकम गायब थी। उसके बाद ही हमने तुम्हें बताये बगैर वहां से भागने का फैसला किया था और बिन्दू ने उसी पिस्तौल से हमें छत पर रोकने की कोशिश की थी।"

"ओह!" जानकी के मुंह से गहरा सांस निकल गया—"इसका मतलब है कि बिन्दू शुरू से ही अपने नवासे की साजिश में शरीक थी। बहरहाल—वह रकम मेरे पास ज्यों की त्यों मौजूद है। मैं तुम्हें ला दूंगी।"

"तुम कब जाना चाहती हो?" काला बच्चा ने शीनियो से पूछा।

"जितनी जल्दी सम्भव हो।"

"कल तो नहीं, मैं परसों सुबह तुम्हारे लिए फ्लाइट से सीट बुक करा दूंगी। पहली फ्लाइट सुबह सात बजे रवाना होती है। तुम पांच साढ़े पांच बजे तैयार रहना। मैं तुम्हें लेने के लिए पहुंच जाऊंगी।"

"ठीक है मैं तुम्हें तैयार मिलूंगी।" शीनियो ने जवाब दिया।

जानकी देवी रात ग्यारह बजे के करीब वापस चली गयी।

दूसरा दिन कॉटेज में गुजरा। दिन के वक्त तो वह कमरों से भी बाहर नहीं निकले थे। शाम को काला बच्चा ने मास्टर होचिन को टेलीफोन किया। आवाज सुनकर वह उछल पड़ा।

"महाराज तुम्हारे लिए परेशान हैं। कहां हो तुम लोग?" उसने कहा।

"हम सेफ हैं।" काला बच्चा ने जवाब दिया—"महाराज को बता देना। हम चंदरोज तक अलग ही रहना चाहते हैं।"

"महाराज तुम्हारे उस कारनामे से बहुत खुश हैं और तुम्हारी गुमशुदगी पर परेशान भी।" मास्टर होचिन ने कहा—"आज के तमाम अखबारात इन्हीं खबरों से भरे हुए हैं। शोफांग जिन्दा बच गया है और उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। थाईवांग ने उसे जो सजा दी है वह उसे जिन्दगी के आखरी लम्हों तक याद रखेगा।"

"यह कारनामा दरअसल थाईवांग ने ही अंजाम दिया है।" काला बच्चा ने कहा—"बहरहाल महाराज को बता देना कि हम खैरियत से हैं। मैं दो-चार दिन बाद सम्पर्क करूंगा—और हां टाइगर और उसके साथियों का क्या हाल है?"

"पुलिस उनकी तलाश में भी छापे मार रही है लेकिन वह लोग भी रूपोश हैं।" मास्टर होचिन ने जवाब दिया।

"कौशल्या ने तुमसे सम्पर्क किया या नहीं?" काला बच्चा ने एक और सवाल किया।

"नहीं... ।" मास्टर होचिन ने कहा—"खानकाह में बम धमाके के चंदरोज बाद उसने फोन किया था, लेकिन मैंने उसे कह दिया था कि अभी वह चंद दिनों और अपने निवास स्थान से बाहर न निकले। उसके चंद रोज बाद मैंने खुद उसके दिए हुए नम्बर पर फोन किया था लेकिन वहां से कोई जवाब नहीं मिला और न ही कौशल्या ने दोबारा हमसे सम्पर्क किया।"

काला बच्चा ने मास्टर होचिन से कौशल्या का फोन नम्बर ले लिया और फोन रख दिया और फिर थाईवांग को मास्टर होचिन से होने वाली बातचीत से आगाह करने लगा और फिर उस रात ग्यारह बजे के करीब जानकी देवी का फोन आ गया कि उसने शीनियो के लिए सुबह सात बजे की फ्लाइट पर सीट बुक करवा ली है। वह पांच बजे उसे लेने के लिए आयेगी। सीनियो को बताया तो वह बहुत खुश हुई।

शीनियो को उस रात नींद नहीं आई थी बल्कि काला बच्चा और थाई भी जागते रहे थे। काला बच्चा के कमरे में सिंगल बेड था जबकि दूसरे कमरे में डबल बेड। शीनियो और थाईवांग उस बेड पर सोया करती थी और उस रात वह तीनों वहीं बैठे बातें कर रहे थे।

जानकी देवी सुबह ठीक पांच बजे पहुंच गयी। कार की डिक्की पर एक बड़ा सूटकेस भी था जिसे वह उठकर अन्दर ले आई।

"यह तुम्हारे लिए है शीनियो।" उसने सूटकेस खोलते हुए कहा—"मैंने अन्दाजे से तुम्हारे लिए कुछ कपड़े खरीद लिए हैं और कुछ तोहफे हैं—तुम्हारे लिए और तुम्हारी मां के लिए।"

शीनियो बहुत खुश हो रही थी। वह एक-एक चीज उठाकर देख रही थी। जानकी देवी ने कपड़े का एक थैला थाईवांग की तरफ बढ़ा दिया।

"वह सारी रकम इसमें ज्यों की त्यों मौजूद है।" उसने कहा।

थाईवांग ने थैला खोला और नोटों के चंद बण्डल निकालकर शीनियो के हवाले कर दिये।

"लो यह रख लो।" वह बोली—"यह इतनी रकम है कि तुम कई महीने काम किए बगैर आराम से गुजारा कर सकती हो।"

भावुकता से शीनियो का चेहरा सुर्ख हो रहा था। उसकी आंखों में आंसू आ गये। वह कुछ कहना चाहती थी मगर होंठ थरथरा कर रह गये। वह शायद सोच भी नहीं सकती थी कि उसे यहां से इतनी मोहब्बत मिलेगी। वह थाईवांग से लिपट गयी।

"मैं तुम्हारे लिए नाश्ता बनाती हूं। हम आखरी बार इकट्ठे बैठकर नाश्ता करेंगे।" थाईवांग ने उसका कंधा थपथपाते हुए उसे अपने से अलग किया।

शीनियो अब जानकी देवी से लिपट गयी थी और फिर उसने काला बच्चा को भी गिरफ्त में लेकर उसकी पेशानी पर भी बोसे दिए।

थाईवांग नाश्ता बनाकर ले आई। उन सबने बैठकर नाश्ता किया और फिर शीनियो जानकी देवी के साथ रुख्सत हो गयी।

उनके जाने के बाद काला बच्चा जो सोया तो दिन के ग्यारह बजे टेलीफोन की घण्टी की आवाज से ही उसकी आंख खुली थी। वह अपने कमरे से निकला तो थाईवांग भी अपने कमरे से निकल रही थी। वह दोनों उलझी हुई नजरों से एक-दूसरे की तरफ देखने लगे कि किसका फोन हो सकता था।

"शायद जानकी का फोन हो।" थाईवांग ने आगे बढ़ते हुए कहा—"मैं देखती हूं।" उसने रिसीवर उठा लिया और फिर दूसरी तरफ की आवाज सुनकर उसके होठों पर हल्की-सी मुस्कराहट आ गयी—"शीनियो का फोन है—च्यांगराय से।" उसने काला बच्चा की तरफ देखते हुए कहा और फिर फोन पर बातें करने लगी।

दो-तीन मिनट बाद उसने फोन बन्द कर दिया और शीनियो से होने वाली बातचीत के बारे में बताने लगी।

काला बच्चा भी थाईवांग के साथ उसके कमरे में आ गया। वह देर तक बैठे बातें करते रहे और फिर थाईवांग खाना तैयार करने के लिए किचन में चली गयी।

वह तीन दिन उस कॉटेज में सीमित रहे। इस दौरान में मास्टर होचिन से भी एक मर्तबा फोन पर सम्पर्क हुआ था। इन तीन दिनों के दौरान में जानकी देवी ने भी उधर का रुख नहीं किया था—अलबत्ता फोन पर सम्पर्क रखा था।

उस शाम काला बच्चा को अचानक ही कौशल्या का ख्याल आ गया। काला बच्चा ने मास्टर होचिन से उसका फोन नम्बर लेकर नोट कर रखा था। काला बच्चा ने उस नम्बर पर फोन किया। देर तक घण्टी बजती रही मगर कॉल रिसीव नहीं की गयी। टेलीफोन के करीब ही दो डायरेक्ट्रियां भी रखी हुई थीं और इत्तेफाक से उनमें एक नम्बरीकल डायरेक्ट्री थी। थाईवांग उस डायरेक्ट्री में वह नम्बर तलाश करने लगी।

वह नम्बर तो नाम डिस्ट्रिक्ट में सोंग थ्री स्ट्रीट पर स्थित एक फ्लैट का था और वह टेलीफोन किसी राजावथी के नाम पर था। काला बच्चा के लिए यह अन्दाजा लगाना मुश्किल था कि राजावथी कोई औरत थी या मर्द। बहरहाल थाईवांग ने वह एड्रेस एक कागज पर नोट कर लिया।

"मेरा ख्याल है—अब हमें बाहर निकलकर सूरतेहाल का जायजा लेना चाहिए।" काला बच्चा ने थाईवांग की तरफ देखते हुए कहा—"इस तरह हम कब तक बन्द होकर बैठे रहेंगे। हमें कुछ न कुछ करना होगा।"

"लेकिन इस हालत में हम बाहर नहीं निकल सकते। फौरन पहचान के लिए जायेंगे।" थाईवांग ने कहा—"वैसे एक बात मेरे जहन में आई है। मैं जानकी देवी को फोन करती हूं—वह कुछ चीजें ले आये तो हम अपना हुलिया तब्दील कर सकते हैं।"

और फिर काला बच्चा के जवाब का इन्तजार किए बगैर वह फोन का रिसीवर उठाकर जानकी देवी का नम्बर मिलाने लगी।

उस रात ग्यारह बजे के करीब जानकी देवी आवश्यकता की चीजें लेकर आ गयी। उसमें उनके लिए कपड़े थे और कुछ और चीजें, जिन्हें हुलियां तब्दील करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था।

उसके अगले रोज रात के नौ बजे के करीब वह उस कॉटेज से बाहर निकले। उनके हुलिए ऐसे थे कि उन्हें आसानी से शनाख्त नहीं किया जा सकता था। मेन स्ट्रीट पर आते ही उन्हें एक टैक्सी मिल गयी। पिछली सीट पर बैठते हुए थाईवांग ने ड्राइवर की तरफ देखते हुए होटल इन्द्रारं जीत का नाम ले दिया था।

टैक्सी उन्होंने सोए इन्द्रा के मोड़ पर छोड़ दी और जब वह होटल के गेट में दाखिल होने लगे तो गेट पर खड़ा हुआ दरबान उन्हें देखकर मुस्करा दिया था। उन दोनों के हुलिए हिप्पियों जैसे थे और इस शहर में हिप्पियों की कमी नहीं थी।

कई रोज बाद उन्होंने ढंग का खाना खाया। होटल से निकलकर

कुछ आगे एक सिग्रेट विक्रेता की दुकान थी। थाईवांग उस दुकान में दाखिल हो गयी और सिग्रेट का पैकेट खरीदकर कंधे पर लटके हुए बैग से नोटों का एक बन्डल निकाल लिया।

दुकान में दो बदमाश किस्म के नौजवान खड़े हुए थे। थाईवांग के जिस्म पर लिबास बहुत तंग और संक्षिप्त था। निकर बहुत ऊंची थी, जिससे उसकी टांगें ऊपर तक नग्न हो रही थीं और ब्लाउज भी बहुत तंग था। वह दोनों बदमाश वासना भरी नजरों से थाईवांग की तरफ देख रहे थे और जब थाईवांग ने बैग से नोटों का बंडल निकाला तो उनकी आंखों में अजीब-सी चमक उभर आई थी। उन दोनों ने अर्थपूर्ण निगाहों से एक-दूसरे की तरफ देखा भी था। काला बच्चा को समझने में देर नहीं लगी कि उनकी नीयतों में फितूर आ गया है।

वह दुकान से निकलकर पैदल चलते हुए सोंग थ्री स्ट्रीट में दाखिल हो गये। यह चौड़ी गली थी, जिसके दोनों तरफ बुलन्द इमारतें थीं। उन्हें इच्छित इमारत तलाश करने में ज्यादा दुश्वारी पेश नहीं आई थी।

इमारत के गेट पर कोई दरबान वगैरह नहीं था। वह अन्दर दाखिल होकर दीवार पर लगे हुए उस बोर्ड को देखने लगे, जिस पर प्लोटवाइज फ्लैटों के नम्बर लिखे हुए थे। कुछ नम्बरों के सामने नाम भी लिखे हुए थे। उनका इच्छित फ्लैट तीसरी मंजिल पर था। इस इमारत में लिफ्ट तो मौजूद थी लेकिन वह खराब थी। लोग जीनों से ही आ-जा रहे थे। जीने पर आते-जाते लोग अजीब-सी नजरों से उनकी तरफ देख रहे थे।

वह फ्लैट तीसरी मंजिल की राहदारी के आखरी सिरे पर था। दरवाजे पर दो मर्तबा दस्तक दी मगर कोई जवाब नहीं मिला। इस दौरान में सामने वाले फ्लैट का दरवाजा खुला और एक औरत बाहर निकलकर उनकी तरफ देखने लगी। उसके जिस्म पर साड़ी देखकर काला बच्चा को यह अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई कि वह हिन्दू थी।

"किससे मिलना है। यह फ्लैट कई रोज से खाली है। यहां कोई नहीं रहता।" उस औरत ने बारी-बारी से उनकी तरफ देखते हुए कहा।

"मिस कौशल्या उसने हमें यही पता बताया था—कई रोज पहले।" थाईवांग ने अपना लहजा बिगाड़ते हुए कहा।

"वह किक बॉक्सिंग वाली लड़की जो नाइट क्लबों में प्रोग्राम

करती थी।" उस औरत ने कहा—"वह चंद रोज यहां रही थी फिर कई रोज पहले अपनी बहन के साथ चली गयी।"

बहन के नाम पर चौंके बग़ैर न रह सका। काला बच्चा को मालूम था कि कौशल्या की एक बड़ी बहन भी है, जो सोखम्बर रोड पर स्थित किसी बड़े स्टोर में सेल्ज गर्ल की हैसियत से काम करती थी। उसे उस स्टोर का नाम याद आ गया।

जब वह उस इमारत से बाहर निकले तो सिग्रेट विक्रेता की दुकान से उनके पीछे लगने वाले वह दोनों गुण्डे गली में मौजूद थे। काला बच्चा इतना तो समझ गया कि वह थाईवांग के पास एक बड़ी रकम देखकर उनके पीछे लगे थे। उनसे निबटना ज्यादा मुश्किल नहीं था। मगर काला बच्चा कोई हंगामा नहीं चाहता था।

काला ने थाईवांग से सरगोशी की और वह दोबारा उस इमारत में दाखिल हो गये और कुछ ही देर बाद वह उस इमारत के पिछले दरवाजे से निकल रहे थे। इस तरफ चंद गज का फासला तय करते ही एक खाली टिकटिक मिल गया। उन्होंने टिकटिक पर बैठने में देर नहीं लगाई थी। काला पीछे मुड़-मुड़ कर देखता रहा—मगर वह गुण्डे नजर नहीं आये। शायद वह अब भी इमारत के सामने वाले रुख पर खड़े थे।

सोखम्बर रोड की एक सब-स्ट्रीट सोप फाइबर स्टोर तलाश करने में ज्यादा दुश्वारी पेश नहीं आई। यह शहर का सबसे बारौनक इलाका था। बड़े-बड़े स्टोर्स इस इलाके में थे। यहां होटलों और रेस्टोरेन्टों की भर-मार थी। स्टोर्स तो ग्यारह बजे तक बन्द हो जाते थे मगर होटल और रेस्टोरेन्ट रात भर खुले रहते थे, जिनकी वजह से रात गये तक यहां बड़ी रौनक रहती थी।

वह स्टोर बन्द हो रहा था लेकिन कौशल्या की बहन शान्ति से मुलाकात हो गयी। उसकी हालत बड़ी हद तक कौशल्या से मिलती-जुलती थी लेकिन उम्र में तकरीबन दस साल का फर्क था।

"तुम लोग कौन हो, कौशल्या से क्यों मिलना चाहते हो?" उसने बारी-बारी उन दोनों की तरफ घूरती निगाहों से देखकर पूछा।

"उससे एक बहुत जरूरी काम है। तुम्हें नहीं बता सकते।" काला ने कहा।

"वह अपनी जान बचाने के खौफ से छिपती फिर रही है। मैं खुद उसके लिए परेशान हूं। मुझे नहीं मालूम कि वह कहां होगी? वैसे तुम लोगों का उससे क्या तआल्लुक हो सकता है?" उसने कहा।

"देखो शान्ति... ।" काला ने उसके चेहरे पर नजरें जमाते हुए

कहा—"मुझे मालूम है कि चंद रोज पहले तुम उसे सोंग थ्री स्ट्रीट वाले फ्लैट से ले आयी थी। मुझे यह भी मालूम है कि उसकी जिन्दगी खतरे में है। हम उसकी मदद करना चाहते हैं।"

"कौन हो तुम?" शान्ति चौंक गयी।

"उसका दोस्त।" काला ने जवाब दिया।

"कल भी एक आदमी उसे पूछता हुआ आया था। उसने भी अपने आपको कौशाल्या का दोस्त कहा था, लेकिन मैं उसकी बातों से ही समझ गयी कि वह दोस्त नहीं हो सकता। उसे भी मैंने यही जवाब दिया था कि मैं कौशाल्या के बारे में नहीं जानती।" शान्ति ने कहा।

"मैं वाकई उसका दोस्त हूं। महाराजा का आदमी।" काला ने कहा—"अगर तुम चाहो तो महाराजा के जिमनाजियम में मास्टर होचिन को फोन करके मेरे बारे में तस्दीक कर सकते हो। मेरा नाम काला बच्चा है।"

"ओह....तुम....काला बच्चा हो....।" वह हकलाकर रह गयी—"वह तुम हो जिसकी वजह से कौशाल्या मुसीबत में पड़ी है—तुम्हारी वजह से ही....।"

"और मैं ही उसे इस मुसीबत से निकालना चाहता हूं, जिसमें वह खुद फंसी थी। बहरहाल, यहां खड़े होकर बातें नहीं हो सकतीं। अगर तुम कौशाल्या के बारे में जानती हो तो हमें बता दो।" काला ने कहा।

वह चंद लम्हे गहरी नजरों से काला बच्चा की तरफ देखती रही। फिर बोली—"मगर तुम्हें कैसे पता चला कि वह सोंग थ्री स्ट्रीट वाले फ्लैट में रह रही थी।"

"चंदरोज पहले उसने मास्टर होचिन को अपना फोन नम्बर लिखवाया था। बाद में मास्टर होचिन ने कई मर्तबा फोन किया मगर कॉल रिसीव नहीं की गयी। इस वक्त हम उसी फ्लैट में गये थे। सामने वाली पड़ोसन ने बताया कि कौशाल्या को उसकी बहन ले गयी थी। हम इसलिए तुम्हारे पास आये हैं। यकीन करो हम उसके दोस्त हैं और महाराजा भी उसकी मदद करना चाहते हैं।" काला ने कहा

वह इस वक्त दुकान के बाहर खड़े बातें कर रहे थे, बात करने के साथ ही वह सतर्क दृष्टि से इधर-उधर भी देख रहे थे।

शान्ति चंद लम्हें काला बच्चा की तरफ देखती रही फिर इशारा करते हुए एक तरफ चल पड़ी। कुछ दूर चलने के बाद वह एक टैक्सी में बैठ गये। उनका टैक्सी का सफर सोय ट्वेन्टी टू पर खत्म हो गया।

टैक्सी का किराया थाईवांग ने अदा किया।

वह बिल्डिंग सात मंजिला थी और शान्ति का फ्लैट आखरी मंजिल पर था। वह लिफ्ट से बाहर निकलकर शान्ति के पीछे चलते हुए एक फ्लैट के सामने रुक गये। शान्ति ने दो मर्तबा बैल बजाई मगर दरवाजा नहीं खुला। उसने अपने बैग से चाबी निकालकर ताला खोला और धक्का देकर दरवाजा खोल दिया।

"कौशल्या कहां हो तुम? देखो कौन आया है।" वह आवाज देते हुए आगे बढ़ने लगी।

थाईवांग और काला भी उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। काला को कुछ अजीब-सा एहसास हो रहा था जैसे कोई गड़बड़ हो। शान्ति ने एक कमरे का दरवाजा खोल दिया और जैसे ही रोशनी जलाई उसके मुंह से एक खौफनाक चीख निकल गयी।

काला बच्चा जल्दी से आगे बढ़ा। सामने का मंजर देखकर मुझे सीने में सांस रुकता हुआ महसूस होने लगा।

कौशल्या के जिस्म पर लिबास नाम की कोई चीज नहीं थी जिससे अन्दाजा लगाया जा सकता कि मौत के घाट उतारने से पहले उसके साथ क्या सलूक किया गया होगा। उसकी आंखें फटी पड़ रही थीं और चेहरे पर पीड़ा के भाव जड़ होकर रह गये थे।

यह किसी एक आदमी का काम नहीं था। कौशल्या मोएथाई की फाइटर थी। वह एक या दो आदमियों के काबू में आने वाली नहीं थी। इसका मतलब था कि वह दो से ज्यादा आदमी थे। अफरा-तफरी की कैफियत सिर्फ इस कमरे में थी। यहीं पर कुछ चीजें बिखरी हुई नजर आ रही थीं जैसे धींगामुश्ती हुई हो।

काला बच्चा ने थाईवांग की तरफ देखा। उसका चेहरा खौफ से जर्द हो गया था जबकि शान्ति निरन्तर चीख रही थी। थाईवांग उस को संभालने की कोशिश कर रही थी। काला ने आगे बढ़कर कौशल्या के बाजू को छूकर देखा। बाजू ठण्डा और अकड़ा हुआ था, जिससे अन्दाजा लगाने में देर नहीं लगी कि उसे कई घण्टे पहले कत्ल किया गया था। बिस्तर की चादर पर बिखरा हुआ खून भी जमकर स्याम रंगत इख्तियार कर चुका था।

शान्ति के चीखने की आवाजें सुनकर दरवाजे पर कुछ लोग जमा हो गये थे। एक औरत और दो आदमी अन्दर आ गये और यह मंजर देखकर वह लोग भी कांप उठे।

"आज दिन में यहां कोई आया था।" काला बच्चा ने उस औरत की तरफ देखकर पूछा, वह सामने वाले फ्लैट में रहती थी।

"ग्यारह बजे के करीब तीन आदमी आये थे। मैं उस वक्त अपने बच्चे को लिए दरवाजे पर खड़ी थी।" उस औरत ने जवाब दिया—"उनमें से एक ने बैल बजाई थी। कौशल्या ने दरवाजा खोला तो वह चंद लम्हें कौशल्या से सरगोशियों में बातें करने के बाद अन्दर चले गये थे। मैंने उन तीनों को वापस जाते हुए नहीं देखा, क्योंकि आधे घण्टे बाद मैं भी किसी काम से चली गयी थी।"

दो औरतें और अन्दर आ गयीं और वह सब शान्ति को संभालने की कोशिश करने लगीं, जो बुरी तरह बिखरी जा रही थी। काला बच्चा का ख्याल था कि अब वहां उनका रुकना मुनासिब नहीं था। उसने थाईवांग को इशारा किया और वह दोनों खामोशी से बाहर आ गये। कौशल्या के कत्ल की खबर न सिर्फ पूरी बिल्डिंग में बल्कि उस गली में भी फैल गयी थी। लोग बिल्डिंग के सामने जमा हो रहे थे और कुछ लोग बिल्डिंग के अन्दर दाखिल हो रहे थे। कुछ लोगों ने उनकी तरफ भी देखा, मगर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। काला थाईवांग को इशारा किया और तेज-तेज़ कदम उठाता हुआ एक तरफ चलने लगा। वह जल्द-से-जल्द इस इलाके से निकल जाना चाहता था। ताकि वह किसी नयी मुसीबत में न फंस जाये।

वह सोय ट्वन्टी टू से निकलकर एक और गली में घूमते हुए सिक्सटीन पर निकल आये और वहां से उन्हें एक टिक-टिक मिल गया।

काला बच्चा टिकटिक पर इस तरह बैठा था कि ड्राइवर की दायीं तरफ बाहर की तरफ लगा हुआ अकबी मंजर पेश करने वाला आइना उसके सामने था और वह आइने में देख रहा था। वह कोई मोटरसाइकिल थी, जिसके हैडलैम्प की रोशनी आइने में नजर आ रही थी। पहले तो काला बच्चा ने ख्याल नहीं किया लेकिन प्लाटन रोड पर पुलिस मेन्टल हस्पताल के करीब पहुंचकर वह चौंके बगैर न रह सका था। इस दौरान वह कई सड़कों पर मुड़े थे और इस मोटर साइकिल का पीछे लगे रहना महज संयोग नहीं हो सकता था।

"थाई।" काला ने थाई की तरफ झुककर सरगोशी करते हुए कहा—"एक मोटर साइकिल हमारे पीछे आ रही है और मेरा ख्याल है हमारा पीछा सोय ट्वन्टी टू से ही हो रहा है।"

थाईवांग ने पीछे मुड़कर देखा और फिर सीधी होकर बैठ गयी। रामावन रोड पर रेलवे ब्रिज पार करने के बाद काला ने टिकटिक चाई रोड की तरफ मुड़वा दिया। इस तरफ गुंजान आबादी थी और दो-तीन नाइट क्लबों के अलावा रात भर खुले रहने वाले रेस्टोरेन्ट

थे और फिर उसने एक मोड़ पर टिक-टिक रुकवा लिया। थोड़ी देर बाद ही वह मोटर साइकिल तकरीबन बीस गज आगे निकलकर एक रेस्टोरेन्ट के सामने रुक गयी। मोटर साइकिल पर दो आदमी थे और दोनों ही चेहरे से छटे हुए बदमाश लग रहे थे। थाईवांग ने टिकटिक वाले को किराया अदा किया और वह सड़क पार करके एक रेस्टोरेन्ट में दाखिल हो गये। उस वक्त रात के बारह बज रहे थे लेकिन इस इलाके में रौनक ऐसी थी जैसे अभी शाम उतरी हो। इस इलाके में तंग और अंधेरी गलियां थीं। ऐसे इलाके आमतौर पर जरायमपेशा लोगों की सरगर्मियों का केन्द्र बने रहते हैं। राहजनी और लूटमार की वारदातें रोज का रूटीन थीं।

रेस्टोरेन्ट में दाखिल होते ही एक मेज पर कांग को बैठे देखकर काला के होठों पर हल्की-सी मुस्कराहट आ गयी। उसके साथ दो लड़के और थे और इन दोनों का सम्बन्ध महाराज के जिमनाजियम से था। थाईवांग ने भी उन्हें देख लिया था।

"मैं यहां इसलिए आई थी।" वह एक मेज के सामने कुर्सी पर बैठते हुए बोली—"यह इलाका चायना टाउन से लगा हुआ है बल्कि इसे भी चायना टाउन का एक हिस्सा समझा जाता है। वार ट्रीम्ट और महाराज का जिमनाजियम यहां से ज्यादा दूर नहीं है। मुझे यकीन था कि महाराज के कैम्प का कोई आदमी यहां जरूर नजर आयेगा।"

काला भी उसके सामने दूसरी कुर्सी पर बैठ गया। जब वह रेस्टोरेन्ट में दाखिल हुए थे तो कांग ने सरसरी-सी निगाहों से हमारी तरफ देखा था। उसके बाद ध्यान नहीं दिया था। इसका मतलब था कि वह उनमें से किसी को नहीं पहचान सका था। लेकिन काला बच्चा को हैरत थी कि उन दोनों गुण्डों ने उन्हें कैसे पहचान लिया था, जो सोय ट्वन्टी टू से उनके पीछे लगे हुए थे फिर अचानक ही काला को ख्याल आया कि हो सकता है कि वह पहले से ही उस बिल्डिंग की निगरानी कर रहे हों। वह चूंकि कौशल्या की बहन के साथ थे इसलिए उन्हें संदिग्ध समझकर उनका पीछा शुरू किया गया था और फिर यह बात भी उसकी समझ में आ गयी कि कौशल्या को किस तरह तलाश करके मौत के घाट उतार दिया गया था।

टाइगर को किसी तरह पता चल गया होगा कि उसके मंसूबे की मुखबरी कौशल्या ने की थी। कौशल्या के गायब हो जाने से उसका संदेह यकीन में बदल गया होगा। वह उसे तलाश कर रहे थे और फिर किसी तरह उन्होंने कौशल्या की बहन शान्ति का पता चला

लिया। सिर्फ एक रोज पहले दो आदमी कौशल्या के बारे में पूछने शान्ति के पास गये थे और शान्ति ने नाइल्मी का इजहार किया था और फिर शान्ति की निगरानी करके उसके फ्लैट का पता चला लिया गया था और आज जब शान्ति स्टोर पर थी तो तीन आदमी फ्लैट पर पहुंच गये, हो सकता है उन्होंने स्वयं को कौशल्या का दोस्त और हमदर्द जाहिर किया हो जिसके आधार पर कौशल्या ने उन्हें अंद दाखिल होने की इजाजत दे दी थी और फिर उन्होंने कौशल्या साथ वह सब कुछ किया, जो बदमाशों को एक जवान और हसीन औरत के साथ करना चाहिए था और फिर उन्होंने निहायत बेदर्द से उसे मौत के घाट उतार दिया। किसी ने कौशल्या की चीखने की आवाज नहीं सुनी थी। इस कमरे की हालत बता रही थी कि उस प्रतिरोध किया होगा। उसके चीखने की आवाज शायद इसलिए न सुनी गयी थी कि उसका मुंह बन्द कर दिया गया होगा।

यकीनन सब कुछ ऐसा ही हुआ होगा, काला ने सोचते हुए सिर हिला दिया। थाईवांग ने कॉफी का आर्डर दे दिया था। वेट्रेस ने दो मग उनके सामने रख दिए और वह दोनों अपने अपने मग उठाकर हल्की-हल्की चुस्कियां लेने लगे। इसी दौरान में काला ने उन दोनों को रेस्टोरेन्ट के दरवाजे में दाखिल होते देखा। वह दोनों इधर-उधर देखते हुए उनकी मेज की तरफ बढ़ गये। काला बच्च ने कांग वगैरह की तरफ देखा। कांग की आंखों में उलझन के भा नजर आ रहे थे। शायद उन दोनों का अन्दाज देखकर चौंक गया था।

वह दोनों उनकी मेज पर कुर्सियां घसीटकर बैठ गये। उन से एक के चेहरे पर दाढ़ी थी। दूसरा क्लीन शेव था। दाढ़ी वाले अपनी कुर्सी थाईवांग की तरफ घसीट ली और बड़ी बेतकल्लुफी उसकी रान पर हाथ रख दिया उसके होठों पर बड़ी मक्कारी भ मुस्कराहट थी।

थाईवांग का चेहरा तमतमा उठा। उसे गुस्सा भी था और व खौफ भी शामिल था। उसने दाढ़ी वाले का हाथ झटक दिया।

"अगर यहां बैठना है तो शराफत से बैठो वरना किसी अ मेज पर चले जाओ।" थाई ने हौले से गुर्राते हुए कहा।

"शराफत।" उस शख्स ने हल्का-सा कहकहा लगाया—"अ तक तो हम शराफत का सबूत ही देते आये हैं वरना तुम जैसों व तो पहले ही रोज कुचल देना चाहिए।"

"क्या बकते हो...।" थाई ने खूंखार नजरों से उसकी तरफ

देखा—"क्या समझते हो तुम हमें॥ तुम्हारा हम से क्या सम्बन्ध है॥ क्या यहां गैरमुल्की मेहमानों के साथ ऐसा सलूक किया जाता है॥ अगर बदतमीजी की तो मैं तुम्हें पुलिस के हवाले कर दूंगी॥"

"पुलिस के पास तो शायद तुम खुद भी नहीं जाना चाहोगी॥" उस शख्स ने कहा—"इसलिए कि पुलिस तो पहले ही तुम लोगों की तलाश में है। भिक्षु शोफांग मौत की दहलीज से पलटकर आया है॥"

थाईवांग का चेहरा फक्क हो गया लेकिन उसने फौरन ही अपनी कैफियत पर काबू पा लिया॥

"ऐ मिस्टर!" काला बच्चा ने कहा—"तुम लोग शराफत से यहां से उठोगे या कोई दूसरा तरीका इख्तियार किया जाए॥ हम टूरिस्ट हैं—हमारा किसी भिक्षु से क्या सम्बन्ध हो सकता है?"

"अगर तुम यह साबित कर दो कि वाकई तुम टूरिस्ट हो तो हम खामोशी से यहां से उठकर चले जायेंगे—अन्यथा टाइगर तुम लोगों को पाकर बहुत खुश होगा॥" क्लीन शेव वाले ने काला बच्चा के चेहरे पर नजरें जमाते हुए कहा॥

"हम किसी टाइगर को नहीं जानते॥ तुम लोग शराफत से उठ जाओ यहां से।" काला बच्चा ने अपनी अन्दरूनी कैफियत पर काबू पाने की कोशिश करते हुए कहा॥

"कौशल्या को तो तुम जरूर जानते होगे॥" उसने काला बच्चा को घूरते हुए कहा—"तुम लोग कौशल्या से मिलने उसकी बहन के साथ उसके फ्लैट पर गये थे लेकिन उसकी लाश देखकर वहां से भाग निकले, लेकिन अब तुम बचकर कहीं नहीं जा सकते॥ बेहतर यही है कि तुम लोग खामोशी से उठकर हमारे साथ चल पड़ो। अगर कोई गड़बड़ करने की कोशिश की तो तुम दोनों का हश्र भी कौशल्या से भिन्न नहीं होगा और कौशल्या की लाश तो तुम देख ही चुके हो।"

अब मामला दूसरा हो गया था॥ वह उन्हें पहचान गये थे। क्लीनशेव वाले ने खंजर निकाल लिया था॥ उसने खंजर की नोक इस तरह काला बच्चा के पहलू से लगा दी कि कोई दूसरा न देख सके।

"मुझे मालूम है कि तुम बहुत अच्छे स्ट्रीट फाइटर हो। मैं समझता हूं कि तुम आत्महत्या करना पसंद नहीं करोगे।" क्लीन शेव वाले ने कहा।

काला बच्चा के मुंह से बेइख्तियार गहरा सांस निकल गया। खंजर की नोक उसके पहलू में चुभ रही थी और उसका ख्याल

कि काला कोई गड़बड़ नहीं करेगा लेकिन काला ने ट्रेनिंग की सख्तियां इसलिए नहीं उठाई थीं कि अपने आपको इतनी आसानी से हर किसी के हवाले कर देगा। उसने दोनों पैर फर्श पर जमाये और पूरी शक्ति से अपने आपको पीछे धकेला कुर्सी उलट गयी। उसने भी कुर्सी के साथ उल्टी कलाबाजी खाई थी। क्लीन शेव वाला बड़ी फुर्ती से उठ गया लेकिन काला बच्चा उससे पहले ही संभल गया था। इससे पहले कि वह काला बच्चा पर हमला करता, काला बच्चा ने उछलकर उसके सीने पर फ्लाइंग किक लगा दी। वह उछलकर दूसरी मेज पर गिरा। दाढ़ी वाला काला की तरफ लपका उस वक्त काला भी फर्श पर गिरा हुआ था। दाढ़ी वाला जैसे ही उस पर हमलावर होने के लिए आगे बढ़ा—वह बैठे ही बैठे तेजी से घूम गया। उसका एक पैर दाढ़ी वाले के घुटने के जोड़ के पिछली तरफ लगा। वह उछलकर पुश्त के बल गिरा। इस दौरान में क्लीन शेव वाला उस पर हमलावर हो चुका था। खंजर उसके हाथ में था। काला ने उसका वार रोका और पैर से उसकी बगल में जोरदार चोट मारी। वह काला के ऊपर से उलटकर दूसरी मेज से टकराया। उसका खंजर वाला हाथ अभी तक काला बच्चा की गिरफ्त में था। काला उसका हाथ छोड़े बगैर उठकर खड़ा हो गया और उसके उस बाजू पर कंधे के करीब जोरदार किक लगाई। वह बिलबिला उठा।

दाढ़ी वाला काला की तरफ लपका। अब उसके हाथ में खंजर था। वह काला की पुश्त पर वार करना चाहता था। काला बड़ी फुर्ती से नीचे झुक गया। वह काला बच्चा के ऊपर से गुजरता दूसरी मेज से टकरा गया।

तीन मेजें उलट चुकी थीं। ग्राहकों में मर्द भी थे और उनके साथ शिकारी किस्म की औरतें भी, रेस्टोरेन्ट में भगदड़ मच गयी थी। औरतें बुरी तरह चीख रही थीं। थाईवांग भी एक तरफ खड़ी चीख-चीख कर उसकी हौसला अफजाई कर रही थी।

अब वह दोनों मुकाबले पर खड़े हो गये थे। दाढ़ी वाले ने हमला कर दिया। वह जैसे ही आगे लपका—काला बड़ी फुर्ती से पुश्त के बल फर्श पर गिर गया और दोनों पैर हमलावर के पेट पर जमाकर उसे पूरी कुव्वत से उछाल दिया। वह कलाबाजी खाता हुआ पिछली मेज पर गिरा और मेज सहित दूसरी तरफ उलट गया। काला अभी फर्श पर ही था कि क्लीनशेव वाले ने हमला कर दिया—काला फुर्ती से लौट लगाकर एक तरफ हट गया। वह मुंह के बल नीचे गिरा और फिर काला बच्चा ने उसे हरकत करने का मौका दिए बगैर छाप

लिया। काला बच्चा ने उसकी दोनों टांगें पकड़कर कमर की तरफ दोहरी कर दीं। बोस्टन क्रैप का यह दावं बड़े-बड़े सूरमाओं को चीखने पर मजबूर कर देता है। वह तो एक मामूली-सा फाइटर था। रीढ़ की हड्डी पर जरा-सा दबाव पड़ा तो बिलबिला उठा।

कांग और उसके साथी अभी तक मेज पर बैठे यह सबकुछ देख रहे थे। उनमें से किसी ने भी इस लड़ाई में दखल देने की कोशिश नहीं की थी।

इस दौरान में दाढ़ी वाला संभल चुका था और फिर ठीक उसी वक्त दो और गुण्डे हाथों में खंजर लिए चीखते हुएं अन्दर दाखिल हुए। जाहिर है कि उन्हीं के साथी थे। इन नये आने वालों को देखकर कांग भी अपने साथियों को इशारा करता उठ गया।

"कांग... ।" काला बच्चा चीखा—"यह टाइगर के आदमी हैं। उन लोगों ने कौशल्या को मार डाला है--यह लोग बचकर न जाने पायें।"

कांग अब तक काला बच्चा को पहचान नहीं सका था लेकिन काला की आवाज सुनकर उछल पड़ा और फिर दूसरे ही क्षण वह और उसके साथी नये आने वाले और पहले वाले गुण्डों पर टूट पड़े।

काला अपने प्रतिद्वंद्वी की दोनों टांगे अपनी कमर के गिर्द लपेटकर और उसे जमीन से जरा ऊपर उठाकर अपनी जगह खड़े-खड़े घूमने लगा और फिर काला ने उसकी टांगें छोड़ दीं। वह चीखता हुआ एक मेज से टकराकर फर्श पर गिरा।

कांग और उसके साथियों ने काला के प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। इस रेस्टोरेन्ट में अब वाकायदा जंग छिड गयी थी। रेस्टोरेन्ट में अब कोई ग्राहक नहीं रह गया था।

"अब यहां हमारी जरूरत नहीं रही, निकल चलो।" काला ने थाईवांग की तरफ देखते हुए कहा—"उधर पिछले दरवाजे से।" थाईवांग ने इशारा किया।

काला बच्चा उसका हाथ पकड़कर तेजी से पिछले दरवाजे की तरफ बढ़ा। बाहर निकलने से पहले उसने पीछे मुड़कर देखा। अन्दर घमासान जंग हो रही थी। कांग और उसके साथियों का पलड़ा भारी नजर आ रहा था। काला को वहां से निकलने में कोई शर्मिन्दगी नहीं थी। वह जानता था कि कांग और उसके साथी मार नहीं खायेंगे।

वह उस अंधेरी गली में दौड़ते हुए दूसरी तरफ सड़क पर निकल आये। एक कार गली के मोड़ पर धीमी हुई तो थाईवांग ने जल्दी से आगे बढ़कर उसे रुकने का इशारा किया। कार रुक गयी। उसमें

एक ही आदमी था। थाईवांग ने काला को ईशारा किया और खुद ड्राइविंग साइड पर चली गयी।

"हमें वाइट आर्चड हस्पताल जाना है—इमरजेन्सी है प्लीज।" वह खिड़की पर झुककर निवेदन भरे स्वर में बोली। वाइट आर्चड अस्पताल उसी तरफ थोड़ा आगे था जिस तरफ कार का रुख था।

और इससे पहले कि वह आदमी कुछ जवाब देता थाईवांग ने एक झटके से कार का दरवाजा खोल दिया और उस आदमी को बाजू से पकड़कर बाहर खींच लिया। यह सब कुछ उस आदमी के लिए बिल्कुल आशा के विपरीत था। थाई ने उसे धक्का देकर दूर गिरा दिया और बड़ी फुर्ती से स्टेयरिंग के सामने बैठ गयी। इस दौरान काला बच्चा भी पैसेंजर सीट का दरवाजा खोलकर अन्दर बैठ चुका था। इंजिन स्टार्ट ही था। थाई ने गेयर में डालकर कार को एक जोरदार झटके से आगे बढ़ा दिया।

वह कार उन्होंने चक्रापेट रोड पर ब्रिज के करीब छोड़ दी' वहां से एक टिकटिक पर बैठकर किंग टाक्सन के स्टेच्यू वाले चौराहे तक पहुंचे और वहां से पैदल चलते हुए वांगदंग याए रोड पर होते हुए अपने कॉटेज वाली गली में आ गये।

कमरे में दाखिल होते ही थाईवांग बेड पर ढेर हो गयी। उस वक्त तो शायद जोश और जज्बात में उसने सबकुछ बर्दाश्त कर लिया था लेकिन अब उन संगीत हालात के भाव उजागर होने लगे थे उसके चेहरे पर पीलाहट-सी आ गयी और जिस्म हौले-हौले कांपने लगा, जैसे सर्दी लग रही हो।

"क्या हुआ थाई तुम्हारी तबियत तो ठीक है।" काला ने पूछा।

"कौशल्या की लाश...उन्होंने किस बेरहमी से उसे कत्ल किया था।" उसके होठों पर कंपकंपाहट थी—"और तुम्हें किस तरह उन दोनों ने घेर लिया था, अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो वह खामो होकर चंद लम्हे काला की तरफ देखती रही और फिर उसने भावुक से काला को अपने साथ लिपटा लिया और उसकी पेशानी रुख्सारों पर बोसे देने लगी।

काला उसकी आगोश में सिमट गया, उसकी आगोश की ग से उसे अजीब-सा सुकून मिल रहा था। औरत किसी भी रूप में महबूब हो या बीवी हो, मर्द को उसमें ममता की झलक नजर जाती है और उसकी आगोश में समाकर बड़ा सकून-सा महसूस क है। यही कैफियत उस वक्त काला बच्चा की भी थी। उसका थाईव से कोई रिश्ता नहीं था। न वह उसकी मां थी न बीवी और न महबूबा

वह औरत थी। उसमें ममता थी और काला थाईवांग की आगोश में ममता की गर्माहट को महसूस कर रहा था।

कई मिनट गुजर गये या शायद कई सदियां गुजर गयीं। थाईवांग ने उसे अपने से अलग कर दिया। चंद लम्हें उसके चेहरे को देखती रही फिर उसकी पेशानी पर बोसे देती हुई बोली—"तुम मेरे कौन हो काला...। मेरा तुमसे क्या रिश्ता है—कुछ भी नहीं कोई रिश्ता नहीं लेकिन मैं तुम्हें अपने वजूद का हिस्सा क्यों समझने लगी हूं।"

"इंसानियत का रिश्ता सबसे मुकद्दस और अजीम होता है।" काला ने जवाब दिया—"यही रिश्ता इंसान को इंसान बनाता है। अगर यह रिश्ता टूट जाए तो इंसान-इंसान नहीं रहता हैवान बन जाता है।"

"तुम ठीक कहते हो।" थाईवांग गहरा सांस लेते हुए बोली—"इंसानियत का यह रिश्ता ही हमें एक दूसरे के करीब रखे हुए है।"

काला बच्चा जवाब देने की बजाए उसकी तरफ देखता रहा। उसके चेहरे पर अजीब से भाव और सितारों जैसी चमक उभर आई थी। शायद उसके सर से वह बोझ उतर गया था। जहन से वह धुंध छंट गयी थी, जिसने उसे किसी उलझन और कशमकश में मुब्तला कर रखा था।

मुझे उस रात नर्स शीनियो ने सब कुछ बता दिया था। उसे वह रात याद थी जब वह अपनी जान बचाने के लिए रोज क्लब से भागा था और सड़क पर पहुंचकर उसकी कार में पनाह ली थी। उसने पीछे मुड़कर देखा था और फिर कार वहां से भगाकर ले गयी थी। उसने कितनी सच्चाई से शीनियो को सब कुछ बता दिया था कि वह काला बच्चा को किस नीयत से वहां लेकर आई थी। उसके साथ रहते हुए एक-दो दिन तो काला ने भी महसूस कर लिया था। वह अजीब सी नजरों से काला बच्चा की तरफ देखा करती थी और फिर नग्न हो गयी। उसका ख्याल था कि शायद काला बच्चा कोई हरकत करेगा मगर काला बच्चा उसके जिस्म पर कोड़े बरसाकर उसके कमरे से बाहर आ गया। उसके बाद भी कई मर्तबा ऐसा हुआ था लेकिन वह मौका कभी नहीं आया था, जिसका शायद उसे इन्तजार था।

थाईवांग लम्बे अरसे से शायद इसी मानसिक द्वंद्व में थी कि उसके साथ कौन-सा रिश्ता जोड़े और आज उसके दिमाग में छाई धुंध छट गयी थी। उसका जहन साफ हो गया था।

"थाई...।" काला ने उसकी तरफ देखते हुए कहा—"आज शायद तुम्हें भी सुकून मिल गया है। तुम्हारी बेकरारी में ठहराव आ गया है—तुम्हारे चेहरे की रौनक और आंखों की चमक बता रही है कि...।"

"हां, मुझे वाकई करार आ गया है।" उसने बात काटते हुए काला बच्चा के दोनों हाथ थाम लिए—"मेरे जहन से बहुत बड़ा बोझ उतर गया है। आज मैं अपने आपको हल्का-फुल्का महसूस करने लगी हूं।" वह चंद लम्हे खामोश हुई फिर उठते हुए बोली—"तुम यहीं बैठो मैं चाय बनाकर लाती हूं। हम चाय पियेंगे और देर तक बातें करेंगे बहुत सारी बातें।"

"तुम चाय बनाओ, मैं जरा मास्टर होचिन से फोन करके मालूम करूंगा कि उधर की सूरतेहाल क्या है।" काला बच्चा भी बेड से उठ गया।

थाई किचन में चली गयी और काला बच्चा सिटिंग रूम में आ गया, जहां टेलीफोन रखा हुआ था। उसने कुर्सी पर बैठकर रिसीवर उठा लिया। उस वक्त यद्यपि डेढ़ बजने वाला था, मगर कॉल फौरन ही रिसीव कर ली गयी। वह मास्टर होचिन ही था।

"तुम कहां हो...।" वह काला बच्चा की आवाज सुनते ही चीखा—"कांग ने मुझे सबकुछ बता दिया है। उसने तुम्हें उन दोनों बदमाशों से लड़ते हुए देखा था। काश! मैं भी तुम्हारी वह फाइट देख सकता—लेकिन काला बच्चा—क्या यह तुम्हारी मूर्खता नहीं है। इस तरह तो तुम अपने आपको किसी दिन मुसीबत में फंसा लोगे?"

"मैं जिन्दगी के कुछ अनुभव प्राप्त करना चाहता हूं मास्टर।" काला बच्चा ने जवाब दिया—"वैसे फिलहाल मैं भी किसी ऐसी संगीन परिस्थिति से खुद भी बचना चाहता हूं लेकिन यह महज संयोग था कि इनसे टकराव हो गया। दरअसल में थाईवांग के साथ कौशल्या की तलाश में निकला था। हम उसके ठिकाने तक पहुंच गये थे लेकिन उसे कत्ल किया जा चुका था।" वह चंद लम्हे खामोश हुआ फिर उसे विवरण सहित सब कुछ बताने लगा। आखिर में वह कह रहा था—"इन दोनों ने वहीं से हमारा पीछा किया था। कौशल्या को शायद दिन में किसी वक्त कत्ल किया गया था और मेरा ख्याल है उस वक्त से उस बिल्डिंग की निगरानी की जा रही होगी। कौशल्या ने चूंकि सोने की चोरी के मंसूबे का राज मुझे बताया था, इसलिए उन्होंने सोचा होगा कि इस कत्ल की खबर सुनकर शायद मैं वहां आऊंगा। मेरा वहां पहुंचना महज एक संयोग था। वह मुझे या थाई को पहचान

नहीं सके थे। उन्होंने महज शक के आधार पर हमारा पीछा किया था। थाई मुझे उस रेस्टोरेन्ट में ले गयी थी। उसका ख्याल था कि हम उन्हें वहां धोका देकर निकल सकेंगे। वहां कांग अपने साथियों के साथ मौजूद था। उसकी मौजूदगी भी संयोग थी—लेकिन उन्हें देखकर मेरा हौसला बढ़ा था। हमने इस कदर परफेक्ट हुलिया बदला हुआ था कि कांग भी मुझे नहीं पहचान सका था। वह तो मेरी आवाज सुनकर पहचाना था।

"अगर कांग वगैरह वहां न होते तो जानते हो क्या होता?" मास्टर होचिन ने कहा।

"अगर कांग मुझे नजर न आता तो हम अकबी दरवाजे से निकल जाते और किसी न किसी तरह उनसे पीछा छुड़ाने की कोशिश करते।" काला ने जवाब दिया।

"कुछ देर पहले महाराज को भी हमारे बारे में रिपोर्ट मिल चुकी है। उन्हें यद्यपि तुम्हारी ताकत पर पूरा भरोसा है, लेकिन वह तुम्हारे लिए परेशान हैं कि कहीं धोखे में न मारे जाओ।" मास्टर होचिन ने कहा।

"सिर्फ चंद रोज और मास्टर।" काला बच्चा ने थाईवांग की तरफ देखा। वह ट्रे लिए किचन से निकल रही थी—"मैं एक-दो दिन बाद दोबारा रिंग करूंगा मास्टर... ।"

"विश यू गुडलक ब्वाय।" मास्टर होचिन ने कहा और काला बच्चा ने रिसीवर रख दिया।

काला बच्चा थाई वाले कमरे में आ गया। थाई ने ट्रे बेड पर रख दी और बेड की पुश्त से टेक लगाकर बैठ गयी। ट्रे में रखे हुए मगों से बड़ी खुशगवार खुशबू उठ रही थी। वह चाय की बजाए कॉफी बनाकर लाई थी।

थाई अभी तक वही कपड़े पहने हुए थी। विग उसके सिर पर भी थी और काला बच्चा के सिर पर भी, दरअसल इन्हीं विगों ने उनके हुलिए इस हद तक बदल दिए थे कि कांग भी उन्हें नहीं पहचान सका था। काला बच्चा ने अपनी विग उतारकर कुर्सी पर फेंक दी। थाई को भी विग का ख्याल आ गया। उसने भी विग उतारकर फेंकी और अपने बालों में उंगलियां फेरने लगी।

थाई जिस अन्दाज में काला बच्चा के सामने बैठी थी, वह बड़ा सेक्सी अन्दाज था। काला के दिल में यद्यपि कभी उसके बारे में ऐसा कोई ख्याल नहीं आया था लेकिन नजरों को काबू में रखना उसके लिए मुश्किल हो रहा था। उसने शायद काला बच्चा की बेचैनी को

भांप लिया था। वह उठकर बाथरूम में घुस गयी और चंद मिनट बाद बाहर निकली तो काला बच्चा के मुंह से इत्मीनान की सांस निकल गयी। उसने स्लीपिंग सूट पहन लिया था। वह एक बार फिर काला बच्चा के सामने बैठ गयी और अपना मग उठाकर कॉफी की चुस्कियां लेने लगी।

वह चंद लम्हे एक-दूसरे की तरफ देखते रहे और फिर बातों का सिलसिला शुरू हो गया, थाईवांग अपने बारे में वह बातें बताने लगी जो उसने पहले कभी नहीं बताई थीं।

"मैंने जिन्दा रहने के लिए बड़े पापड़ बेले।" वह कह रही थी—"तुमने मेरे बंगले में अर्धनग्न लड़कियों की तस्वीरें देखी होंगी। दरअसल पांच साल पहले मैंने शहर में एक मसाज पार्लर खोला था। पहले मैं अकेली थी फिर दो लड़कियां और रख लीं। कारोबार बढ़ता गया तो मेरे पास लड़कियों और लड़कों की संख्या भी बढ़ने लगी। उन्हीं दिनों जानकी देवी ने भी अपनी किसी दोस्त के साथ मिलकर अपने मकान में मसाज पार्लर खोल लिया था। मैंने अपना व्यक्तिगत पार्लर बन्द कर दिया और शहर के दूसरे बड़े-बड़े पार्लर को लड़कियां और लड़के सप्लाई करने लगी। मैंने सोखम्बर रोड जैसे मंहगे इलाके में अपना दफ्तर खोल रखा था। बड़ी कमाई है इस बिजनेस में। मैंने भी खूब दौलत कमाई। बैंकाक के वैस्ट्रन यूनियन बैंक में मेरे एकाउण्ट में आज भी काफी रकम मौजूद है लेकिन मौजूदा हालात में, मैं अपने बैंक का रुख नहीं कर सकती।

इस बिजनेस में कमाई है तो परेशानियां भी बहुत हैं। कभी पुलिस परेशान करती है, कभी सिरफिरे ग्राहक और कभी काम करने वाले लड़के और लड़कियां। मैं बहुत अरसे से यह काम छोड़ने का प्रोग्राम बना रही थी लेकिन कोई और काम मेरी समझ में नहीं आ रहा था। चंद महीने पहले जानकी का मेडिकल लाइसेन्स बहाल कर दिया गया तो उसने अपना पार्लर बन्द करके दोबारा क्लीनिक खोल लिया और फिर उसके कहने पर मैंने भी अपना बिजनेस दूसरे को फरोख्त कर दिया। मेरा ख्याल है कि मैं ट्रेवल एजेन्सी खोलूंगी। कुछ अरसे आराम करने के बाद मैंने अपनी एक दोस्त के सहयोग से ट्रेवल एजेन्सी खोल ली। दरअसल उसके पास लाइसेन्स मौजूद था और सरमाया मैंने लगाया था। मुझे इस दफ्तर में जाते हुए चंद ही हफ्ते हुए थे कि तुमसे मुलाकात हो गयी और सब कुछ खत्म हो गया।"

"मुझे अफसोस है।"

"लेकिन मुझे कोई अफसोस नहीं है।" थाईवांग ने मेरे चेहरे

पर नजरें जमाते हुए कहा—"मुझे तुम जैसा इंसान मिल गया है।" यह बात जारी रखते हुए बोली—"यों तो यह शहर इंसानों का जंगल है लेकिन मुझे इंसानियत कहीं नजर नहीं आई। हर शख्स ने अपने आप में फरेब का दिल रखा हुआ है। झूठ-धोखा और शैतानियत लोगों की रगों में रच-बस गयी है—इंसानियत सच और विश्वास मुझे किसी में नजर नहीं आया। मैंने बहुत धोखे खाये हैं। कदम-कदम पर ठोकरें खाने के बावजूद, मैं अपने आपको ऐसे लोगों से दूर नहीं रख सकी। मैंने अपनी दौलत भी लुटाई और इज्जत भी लेकिन मुझे धोखे और फरेब के सिवा कुछ नहीं मिला। जिस मर्द से मैंने जरा बेतकल्लुफी से बात की उसने पहली फुर्सत में मुझे अपने बिस्तर की जीनत बनाने की कोशिश की—यहां तक कि एक अधेड़ उम्र भिखारी जिसे मैंने तरस खाकर खाना खिलाने के लिए अपने घर में बुला लिया था, वह भी खाने को नजर अन्दाज करके मुझ पर झपट पड़ी। वह समझा था कि शायद मैंने अपनी वासना की प्यास बुझाने के लिए उसे घर बुलाया है। हर शख्स की नजरों में हवस है—दौलत की हवस—वासना की हवस।" वह खामोश होकर गहरे-गहरे सांस लेने लगी फिर बात जारी रखते हुए बोली—"फिर तुम मुझे मिले—मैं तुम्हें किसी और नीयत से लाई थी, मगर तुम दूसरों से भिन्न साबित हुए। यकीन करो मैं ऐसे शर्मनाक लिबास कभी नहीं पहनती, लेकिन तुम्हारे सामने न सिर्फ ऐसे अधूरे लिबास पहने बल्कि नंगी तक हो जाती। मगर शायद तुम्हारे अन्दर बर्फ की सिल रखी हुई है, जो जरा भी नहीं पिघलती। ऐसे मौकों पर मैंने हमेशा तुम्हारी आंखों में नफरत की चिंगारियां देखीं और तुम्हारी यह नफरत जिसे मैं ही महसूस कर सकती थी। मुझे लगातार तुम्हारी तरफ खींचती चली गयी—फिर मुझे यकीन हो गया कि तुम ही वह हस्ती हो, जिसकी मुझे तलाश थी। मैं अपना सब कुछ खोकर भी तुम्हें खोना नहीं चाहती थी, लेकिन मेरा जहन शायद उलझन का शिकार था। समझ नहीं पा रही थी कि किस नाते तुम्हें अपने साथ रखूं या किस रिश्ते का सहारा लेकर तुम्हारे साथ रहूं लेकिन आज तुमने मेरी उलझन हल कर दी है, जो गुत्थी मैं महीनों से सुलझा न सकी वह तुमने चंद शब्दों में सुलझा दी—इंसानियत का रिश्ता वाकई बहुत महान है। यह रिश्ता कौमियत मजहब, रंगो-नस्ल कोई भी चीज रुकावट नहीं है, अपने और तुम्हारे बीच का यह रिश्ता मुझे पसंद आया। अब मुझे वाकई किसी चीज का अफसोस नहीं है। कोई दुख नहीं है, अपने घर के राख हो जाने का। अब मैं तुमसे अलग होने की कल्पना भी नहीं कर सकती लेकिन

अगर तुमने कभी अपना रास्ता बदलने की कोशिश की तो वह मेरी जिन्दगी का आखरी दिन होगा।"

"नहीं थाई।" मैंने जवाब दिया—"मैं अहसान फरामोश नहीं हूं। तुमने उस रात मुझे मौत के मुंह से बचाया। मेरी खातिर अपना सब कुछ तबाह व बर्बाद कर डाला और आंखों से एक आंसू भी नहीं बहाया। मेरी खातिर अपनी जिन्दगी भी दावं पर लगा रखी है तुमने। तुम बहुत महान हो। तुम्हारे पास रहकर तो मुझे ऐसा सुकून मिलता है, जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता। मैं तुमसे अलग कैसे रह सकूंगा?"

थाई काला बच्चा की तरफ देखती रही। उसकी आंखों की चमक बढ़ गयी थी और फिर वह बातें करती रही और मैं हंसता रहा। उसने खाली मग और ट्रे उठाकर कुर्सी पर रख दिए थे और वह अधलेटी हो गयी थी। काला बच्चा ने भी एक तकिया अपने सिर के नीचे रख लिया और आड़ा होकर बेड के एक हिस्से में अधलेट होकर उसकी बातें सुनता रहा। रात अन्तिम पहर पर थी। काल बच्चा को नींद आने लगी। थाई की आवाज उसके कानों से टक रही थी। यह आवाज किसी कुवें की गहराई से आती हुई महसूस हो रही थी और फिर वह नींद की आगोश में पहुंच गया।

उसकी आंख खुली तो खिड़की से धूप अन्दर आ रही थी काला बच्चा ने सिर उठाकर देखा, थाईवांग उसके पैरों पर सिर र सो रही थी। उसके चेहरे पर बड़ी मासूमियत थी।

काला बच्चा ने बड़ी आहिस्तगी से पैर हटाकर उसके सिर नीचे तकिया रख दिया और उठकर सिटिंग रूम में आ गया। इ वक्त दोपहर के बारह बज चुके थे। काला एक कुर्सी पर बैठा ऊंघ हुए जहन से सोच रहा था कि क्या मेरी जिन्दगी का यही एक मकर रह गया है। छुप-छुप कर जिन्दा रहना तो कोई जिन्दगी नहीं

वह कुर्सी पर बैठा यही सब सोच रहा था कि पैरों की हल सी चाप सुनकर चौंक गया, उसने गर्दन घुमाकर देखा—वह थाईव थी, उसके बाल बिखरे हुए थे और आंखों में सुर्खी थी, काला ब को उस पर तरस आने लगा। उसकी वजह से वह भी अपना स कुछ खो बैठी थी और आजादी भी छिन गयी थी।

थाई चंद लम्हे वहां खड़ी काला बच्चा को देखती रही उसने बालों को समेटकर जूड़ा बनाया और किचन में चली गय कुछ देर बाद वह चाय बनाकर ले आई।

वह दिन भी इसी तरह गुजरा। कभी ऊंघते हुए, कभी

करते हुए। कभी स्क्रेबल और ड्राफ्ट जैसे गेम खेलते हुए लेकिन अब उसे इन चीज़ों में भी ज्यादा दिलचस्पी नहीं रही थी।

वह उस शाम भी घर से निकलना चाहता था, मगर ऐसा नहीं कर सकता था। विग से उसका हुलिया बदल गया था और अब वह इस हुलिए में भी बाहर नहीं जा सकता था। उसे एक नये मेकअप की जरूरत थी, मगर यहां ऐसी कोई चीज नहीं थी, जिससे वह अपना हुलिया बदल सकता। संयोग से पांच बजे के करीब जानकी देवी का फोन आ गया। उससे पता चला कि आज के समाचार पत्रों में कौशल्या के कत्ल और चाई रोड पर एक रेस्टोरेन्ट में हंगामें की खबर छपी थी। पुलिस को उन दो हिप्पियों की तलाश थी, जो मृतका कौशल्या की बहन शान्ति के साथ उसके फ्लैट पर आये थे और बाद में रेस्टोरेन्ट में होने वाले हंगामें में भी यही दोनों लिप्त थे। झगड़ा इन्हीं की वजह से हुआ था लेकिन बाद में यह दोनों गायब हो गये।

"क्या शान्ति का भी कोई बयान अखबार में छपा है और क्या उसके बयान में मेरा भी नाम शामिल है?" काला बच्चा ने जानकी देवी से पूछा।

"बयान तो छपा है मगर तुम्हारा नाम नहीं है।" जानकी ने जवाब दिया—"उसने सिर्फ यह कहा है कि वह स्टोर से छुट्टी लेकर निकल रही थी कि एक हिप्पी नौजवान और एक औरत उसे मिल गयी। उन्होंने कहा था कि उनके पास पैसे नहीं हैं, उन्हें रात गुजारने के लिए जगह की जरूरत है। उस हिप्पी औरत ने यह भी कहा था अगर वह रात को किसी फुटपाथ या पार्क में सोयेंगे तो पुलिस या गुण्डे-बदमाश उन्हें परेशान करेंगे। शान्ति के बयान के अनुसार वह सिर्फ इंसानी हमदर्दी के आधार पर उन हिप्पियों को अपने फ्लैट पर ले आई थी, मगर कौशल्या की लाश देखकर वह भयभीत हो गये थे और बताए बगैर वहां से चले गये थे। शान्ति के बयान में कहीं भी तुम्हारा जिक्र नहीं है।"

काला बच्चा जानकी देवी से अखबार में छपने वाली खबर के हवाले से कुछ और बातें पूछता रहा और फिर उसे उन चीजों के बारे में बता दिया जिनकी उसे जरूरत थी।

अगले रोज शाम को जब वह तैयार होने लगा तो थाईवांग भी उसके साथ जाने को तैयार होने लगी लेकिन काला बच्चा ने उसे मना कर दिया।

"आज मैं अकेला ही जाऊंगा।" काला बच्चा ने उसकी तरफ देखकर मुस्कराते हुए कहा।

"तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है।" उसने काला बच्चा को घूरा—"अगर किसी मुसीबत में फंस गये तो...?"

"वह मुसीबत तुमसे ज्यादा बड़ी नहीं होगी।" काला बच्चा ने जवाब दिया। उसके होठों पर मुस्कराहट बदस्तूर थी।

"मैं मुसीबत हूं।" वह चीखी और इससे पहले कि काला बच्चा कुछ कह सकता वह चील की तरह उस पर झपटी।

काला बच्चा इस अचानक हमले के लिए तैयार न था। इसलिए डिफेंस न कर सका। थाई ने उसे कुर्सी से घसीटकर कालीन पर गिरा दिया और उसके सीने पर सवार होकर पंजे उसके चेहरे की तरफ बढ़ाते हुए बोली—

"मैं तुम्हारा मुंह नोंच लूंगी। सच बताओ, क्या मैं वाकई तुम्हारे लिए मुसीबत हूं।"

"हां, बहुत बड़ी मुसीबत।" काला बच्चा ने हंसते हुए कहा—"देखो यह मुसीबत किस तरह मेरे सीने पर सवार है।" काला बच्चा ने उसके दोनों हाथ पकड़कर होठों से लगा लिए। वह काला बच्चा के सीने से उतर गयी—"बात यह है थाई।" काला बच्चा ने उठते हुए कहा—"अगर तुम मेरे साथ होगी तो मैं आजादी से खुलकर नहीं खेल सकता और इस तरह हो सकता है हम वाकई किसी मुसीबत में फंस जायें।"

बात शायद थाई की समझ में आ गयी थी।

"मैं तुम्हारे लिए चिन्तित रहूंगी।" वह मेरी तरफ देखते हुए बोली।

"मैं सतर्क रहूंगा।" काला बच्चा ने उठते हुए कहा और तैयारी करने लगा।

इस मर्तबा काला बच्चा ने अपना जो हुलिया बनाया, वह सड़क छाप गुण्डों जैसा था। गर्दन पर बिखरे हुए बाल, जिन्हें पेशानी पर से हटाने के लिए इलास्टिक का हेयर बैन्ड लगा लिया था। इलास्टिक का स्याह रंग का तीन इंच चौड़ा एक बैन्ड काला बच्चा की दायीं कलाई पर भी था। दायें रुख्सार पर जख्म का एक निशान भी बना लिया था और नाक के करीब बायीं तरफ एक तिल भी नजर आ रहा था। जिस्म पर नीले रंग के खुले पांयचों की पतलून और चमड़े की बगैर आस्तीन की जैकट थी, जिसके ऊपर के दो बटन उसने खुले रखे थे ताकि उसके गले में पड़ी हुई सुनहरी चेन साफतौर पर नजर आ सके। दायीं पिंडली पर उसने चमड़े के फीते से खंजर भी बांध लिया था।

यह हुलिया बदलने में थाईवांग ने भी उसकी बड़ी मदद की थी और फिर चंद कदम दूर हटकर वह गहरी नजरों से उसका जायजा लेने लगी।

"अगर तुम इस गेटअप में मेरे सामने आते तो शायद मैं भी तुम्हें न पहचान सकती। वैसे इस वक्त तो तुम छटे हुए बदमाश लग रहे हो।" थाईवांग ने कहा और अपने बैग में से नोटों का एक बण्डल निकालकर मेरे हाथ में थमा दिया—"वैसे तो गुण्डे और बदमाश किस्म के लोग जेब से पैसा खर्च करने की बजाय लोगों से छीन-झपट कर ही खाते हैं लेकिन मैं चाहती हूं तुम अपनी जेब से खर्च करो।"

कॉटेज से निकलकर वह पैदल चलता हुआ मेन रोड पर आ गया और वहां से टिकटिक में बैठकर सबसे पहले उसी रेस्टोरेन्ट में पहुंचा, जहां पिछली रात लड़ाई हुई थी। वहां इस वक्त भी महाराज के कैम्प से तआल्लुक रखने वाले दो-तीन लड़के मौजूद थे, जो काला बच्चा को जानते थे और काला बच्चा ने उन्हीं की मेज पर बैठकर कॉफी पी। वह उसे नहीं पहचान सके। दरअसल यहां आने का उसका मक़सद भी यही था। वह यह अन्दाजा लगाना चाहता था कि उसके गेटअप में कोई खामी तो नहीं रह गयी है।

रेस्टोरेन्ट से निकलकर वह एक टैक्सी में सवार हुआ और ओखम्बर रोड पहुंच गया। यहां बड़े-बड़े होटल और नाइट क्लब थे। वह गुण्डों वाले इस हुलिए में किसी बड़े नाइट क्लब या होटल में दाखिल नहीं हो सकता था। ऐसी कोई कोशिश भी करता तो उसे रोक दिया जाता। उसकी मंजिल तो वह नाइट क्लब था, जहां निचले दर्जे के लोग और काला बच्चा जैसे गुण्डे ही आ सकते थे। मेरी लैण्ड नाइट क्लब टाइगर की मिल्कियत तो नहीं था, लेकिन उसकी निगरानी में चल रहा था। यहां औरतों के किक बॉक्सिंग के मुकाबले भी होते थे। यह मुकाबले शाम आठ बजे ही शुरू हो जाते थे और रात दो बजे तक जारी रहते थे।

सायं फाइव पर फैडरल होटल के कुछ फासले पर स्थित मेरी लैण्ड नाइट क्लब में उस वक्त ज्यादा रश नहीं था। कई मेजें खाली पड़ी थीं। स्टेज पर किक बॉक्सिंग का मुकाबला जारी था। दो अधेड़ उम्र औरतें थकी हुई बिल्लियों की तरह एक-दूसरे पर झपट रही थीं। उनके जिस्मों पर यद्यपि लिबास बराये नाम ही थे लेकिन हॉल में बैठे हुए लोगों को तो शायद उनसे ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी।

उसे वहां बैठे हुए अभी दो मिनट ही गुजरे थे कि एक आदमी बड़ी बेतकल्लुफी से उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। उसकी

उम्र तेईस-चौबीस साल रही होगी—लम्बा कद—बाल चिड़िया के घोंसले की तरह बिखरे हुए। क्लीन शेव—गले में स्याह डोरी और सामने का एक दांत टूटा हुआ। उसने जीन्स और बगैर आस्तीन के धारीदार बनियान पहन रखी थी। उसका जिस्म गठा हुआ और बाजुओं के मसल्स उभरे हुए थे। वह कुछ थका-थका-सा लग रहा था।

"हैल्लो बॉस...।" वह काला बच्चा की तरफ देखकर मुस्कराया।

"हैल्लो...।" काला बच्चा ने गहरी नजरों से उसका जायजा लिया, पहले तो काला बच्चा उसे अपनी मेजपर बैठे देखकर चौंका था लेकिन अब काला को एहसास होने लगा कि उसे इस शख्स से कोई खतरा नहीं हो सकता।

"लगता है तुम्हारा धन्धा खूब चल रहा है।" यह काला ब का जायजा लेते हुए बोला—"यहां धन्धा तो सबका ही चल रह। एक मैं ही ठोकरें खा रहा हूं।"

"क्या काम करते हो?" काला बच्चा ने सवालिया निगाहों से उसकी तरफ देखा।

"कोई भी काम मिलकर कर सकता हूं।" उसने जवाब दिया—"वैसे मैं मोटर मैकेनिक हूं।" पताया में अच्छा-खासा काम चल रहा था—एक दोस्त के बहकाने पर यहां आ गया। वह सा चोरी के जुर्म में पकड़ा गया और मैं दर-दर की ठोकरें खा रहा हूं।

"शायद तुम्हें वापसी का किराया चाहिए।" काला बच्चा कहा। बहुत से हरामी किस्म के लोग पैसे बटोरने के लिए दूसरों सामने अपने आपको मजलूम बनाकर पेश करते हैं।

"नहीं।" उसने इन्कार में सिर हिलाया—"मैं अपने स नाकामी और नामुरादी की दास्तान लेकर वापस नहीं जाना चाहता

"चाय या कॉफी पियोगे।" काला ने पूछा।

"मैंने कल रात से खाना नहीं खाया।"

काला बच्चा ने एक बार फिर उसे गौर से देखा। उसकी बा में और उसके चेहरे पर सच्चाई की झलक नजर आ रही थी।

"वेट्रेस आ रही है—जो खाना चाहो मंगवा लो।" काला कहा।

"यहां नहीं।" उसने कहा—"यह नाइट क्लब है तो थर्ड क्ला मगर यहां के रेट ज्यादा हैं। उधर एक रेस्टोरेन्ट है—सस्ता और अच खाना मिलता है।"

काला बच्चा एक लम्हे को ठिठका। वह उसे यहां से उठाक

कहीं और ले जाना चाहता था, किसी गड़बड़ की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता था लेकिन काला बच्चा ने बहरहाल रिस्क लेने का फैसला कर ही लिया और वह मेरी लैण्ड नाइट क्लब से निकलकर एक दरमियाने दर्जे के रेस्टोरेन्ट में आ गये और फिर काला बच्चा को यह देखकर बड़ी हैरत हुई कि उसने निहायत सस्ते किस्म के खाने का आर्डर दिया था। हालांकि ऐसे मौके पर जब बिल दूसरे की जेब से अदा होना हो अच्छी से अच्छी और महंगी चीज मंगवाने की कोशिश की जाती है। काला बच्चा ने वेट्रेस को बुलाकर उसका आर्डर कैंसिल कर दिया और बढ़िया किस्म के खाने का आर्डर दे दिया।

खाना खाने के बाद कॉफी भी पी गयी। वह काला बच्चा का बेहद अहसानमंद नजर आ रहा था।

"मैं तुम्हारा यह अहसान कभी नहीं भूल सकूंगा। अगर आज भी मुझे खाना न मिलता तो शायद... ।"

"मैंने तुम पर कोई अहसान नहीं किया।" काला बच्चा ने उसकी बात काट दी—"किसी को एक वक्त का खाना खिला देना कोई ऐसी बात नहीं होती।"

"मैं तो इसे अहसान समझता हूं और हिम्मत हुई तो कभी इस बोझ को उतारने की कोशिश करूंगा।" उसने कहा।

काला बच्चा के जहन में अचानक ही एक और ख्याल गुजरा। मास्टर के रिंग से बाहर भी उसे किसी ऐसे आदमी की जरूरत थी, ज़ो भरोसे के योग्य हो और बाहिम्मत भी और उसे यह शख्स पसंद आया था और इस संक्षिप्त-सी मुलाकात में काला बच्चा ने उसे पहचानने में गलती नहीं की थी, अगर उसे सही तरीके से हैण्डिल किया जाए तो वह दोस्तों पर जान तक कुर्बान करने वालों जैसा लगता था।

"तुम्हारा नाम क्या है कहां रहते हो?" काला बच्चा ने पूछा।

नाम रामन प्रसाद है और रिहाइश फुटपाथ पर।" उसने जवाब दिया, उसके होठों पर एक जख्मी-सी मुस्कराहट आ गयी—"एक महीना पहले पताया से यहां आया था, दो-चार दिन होटल में रहा फिर फुटपाथ पर आ गया।"

"दोस्ती करोगे?" काला बच्चा ने उसके चेहरे पर नजरें जमा दीं।

"दोस्ती।" इसकी आंखों में चमक-सी उभर आई—"इसका मतलब समझते हो?"

"इसका अन्दाजा तुम इस बात से लगा सकते हो कि मैंने
पहचानने में गलती नहीं की। तुम एक सच्चे और खरे इंसान हो
काला बच्चा ने उसकी तरफ हाथ बढ़ा दिया।

उसने बड़ी गर्मजोशी से काला बच्चा का हाथ थाम लिय

"दोस्ती के नाम पर जान भी चली जाए तो मुझे अफसोस
होगा।" उसने कहा।

रामन प्रसाद बुद्ध का पैरोकार था। उसे धर्म से ज्यादा लग
नहीं था। वह एक सीधा-सादा आदमी था, जिसकी जिन्दगी के
उसूल थे, जिन पर वह अटल रहता था।

"फिलहाल यह अपने पास रखो।" काला बच्चा ने कई
निकालकर उसके हाथ पर रख दिए—"आज की रात किसी होट
में बसर करो। कल मुझे इसी जगह पर मिलना। मैं तुम्हें कुछ
रकम दूंगा। अपने लिए कुछ कपड़े खरीद लेना और किसी फ्लैट
भी बन्दोबस्त कर लेना।" वह हैरत से काला बच्चा की तरफ
रहा था।

"इसमें हैरान होने की क्या बात है।" काला बच्चा ने उस
तरफ देखकर कहा—"तुम तो दोस्ती में जान भी देने को तैयार
और मैं तो तुम्हें कागज के यह चंद टुकड़े दे रहा हूं।"

रामन प्रसाद ने कुछ कहना चाहा, मगर उसके होंठ फड़फ
कर रह गये।

"आओ, अब यहां से चलें।" काला ने उठते हुए कहा

वह एक बार फिर मेरी नाइट क्लब में आ गये। इस व
ग्राहकों की संख्या में इजाफा हो गया था। स्टेज पर फाइटिंग
मुजाहरा करने वाली लड़कियां भी दूसरी थीं।

"यहां कुछ नहीं है बॉस!" रामन प्रसाद बोला—"आओ,
तुम्हें एक ऐसी जगह ले चलूं कि सारी जिन्दगी याद करोगे।"

वह मेरी लैण्ड से निकलकर एक टैक्सी में बैठ गये। रा
प्रसाद ने ड्राइवर को टाक्सन ब्रिज की तरफ चलने को कहा
फिर काला बच्चा की तरफ देखते हुए बोला।

"जब मैं पताया से यहां आया था तो मेरा वह दोस्त मुझे
जगह ले गया था। वहां कुछ चीजें देखकर तुम्हें हैरत होगी।"

टाक्सन ब्रिज से वह कॉटेज ज्यादा दूर नहीं था, जहां क
बच्चा इन दिनों ठहरा हुआ था लेकिन उसने रामन प्रसाद को
बताया।

टैक्सी दरिया के किनारे सड़क पर रुक गयी। संग्रीला

था। गेट पर गेस्ट हाउस का न्योन साइन भी रोशन था। एक बहुत बड़ा रकबा चारदीवारी ने घेर रखा था जहां दरख्तों की बहुतायत थी।

काला बच्चा ने रामन प्रसाद को यह नहीं बताया कि मेरी लैण्ड जैसे घटिया क्लब में जाने का उसका क्या मकसद था। उसके साथ वह यहां महज दोस्ती निभाने चला आया था।

गेस्ट हाउस का बड़ा हॉल कुछ अजीब-सा मंजर पेश कर रहा था। लगता था वह किसी कब्रिस्तान में आ गये हों। नौजवान खूबसूरत वेट्रेस इधर-उधर घूम रही थी। उनके जिस्मों पर लिबास बराए नाम ही था। काला बच्चा को अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई कि यह गेस्ट हाउस अय्याशी का बहुत बड़ा अड्डा था। एक लम्हे को उसके जहन में यह ख्याल न भी आया हो—लेकिन बहरहाल अब तो वह आ ही गया था। ओखली में सिर दे ही दिया था, अब मूसलों का इन्तजार था।

वहां बैठे हुए दस मिनट से ज्यादा नहीं हुए थे कि अन्दरूनी दरवाजे से एक आदमी को बरामद होते देखकर वह उछल पड़ा। वह दारा था। उसका असली दुश्मन, जिसने नर्क की आत्मायें उसके पीछे लगा रखी थीं। उसके जिस्म पर बेहतरीन सूट था। बायीं तरफ बगल के नीचे कुछ उभार-सा नजर आ रहा था। काला को समझने में देर नहीं लगी कि वह बगली हौलस्टर था, जो कोट के नीचे छुपा हुआ था। उसे देखकर काला अपने आप में अजीब-सी बेचैनी महसूस करने लगा और रामन प्रसाद ने काला की इस बेचैनी को महसूस कर लिया।

"क्या बात है बॉस...? तुम इस लम्बे आदमी को देखकर परेशान क्यों हो रहे हो?" उसने काला की तरफ देखकर सरगोशी में पूछा।

"ओह...कुछ नहीं।" काला ने कहा फिर जुआ खेलने का फैसला कर लिया—"इसे देखकर कुछ पुरानी यादें जहन में उभर आई हैं।"

"अगर इसने तुम्हें कभी कोई नुकसान पहुंचाया हो तो मुझे बताओ बॉस! अभी इसकी गर्दन का स्क्रू ढीला करता हूं।" रामन प्रसाद ने कहा।

काला बच्चा ने गहरी नजरों से रामन प्रसाद की तरफ देखा। अब उसे यकीन हो गया कि प्रसाद उन लोगों में से नहीं था और इस पर पूरा भरोसा किया जा सकता था।

"यह बहुत खतरनाक आदमी है प्रसाद।" इसने मेरे मां-बाप

भी हैं। वह भी दुनिया के क्रूरतम लोगों में से हैं। यह लोग मुझे भी कत्ल करना चाहते हैं। मैं इनसे बचने के लिए सिंगापुर से भागा और पहले कुआलाम्पुर और फिर यहां आ गया। यह लोग मेरा पीछा करते हुए यहां भी पहुंच गये। इन्होंने टाइगर से यारी गांठ ली है और यह सब लोग मुझे तलाश करते फिर रहे हैं। कई बेगुनाह भी बैंकाक में इनके हाथों मारे जा चुके हैं। आज मैं इनकी तलाश में निकला था कि तुमसे मुलाकात हो गयी। अच्छा हुआ तुम मुझे यहां ले आये और वह मेरी नजरों में आ गया।

"इसने भी तुम्हें देखा है लेकिन हैरत है तुम्हारी तरफ ध्यान नहीं दिया।" प्रसाद ने कहा।

"मैंने इस वक्त अपना हुलिया बदल रखा है, इसलिए नहीं पहचान सका।"

"अब तुम फिक्र मत करो बॉस।" रामन प्रसाद ने कहा–"मैं अभी इसकी गर्दन का स्क्रू ढीला करता हूं।"

"यहां नहीं।" काला ने उसका हाथ पकड़ लिया–"सबसे पहले मैं इसका ठिकाना मालूम करना चाहता हूं। हम दो इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। यहां इसके कुछ और साथी भी होंगे। हां तुम एक बात याद रखो, अगर हम यहां से बिछुड़ गये तो कल शाम आठ बजे चायना टाउन में महाराज जिमानिजयम के करीबी रेस्टोरेन्ट में मेरा इन्तजार करना।"

"इतना लम्बा इन्तज़ार क्यों बॉस अभी क्यों नहीं?" प्रसाद ने कहा।

"अभी वह तुम्हारी गर्दन का स्क्रू ढीला कर देंगे और मैं नहीं चाहता कि एक अच्छे दोस्त से महरूम हो जाऊं।" काला ने कहा।

रामन प्रसाद कंधे उचकाकर रह गया और फिर दूसरे ही लम्हे काला बच्चा को एक बार फिर चौंक जाना पड़ा। उसकी नजरें धोखा नहीं खा सकती थीं। वह वही खूबसूरत लड़की थी, जिसने उस रोज खानकाह के गेट पर काला को गुलदस्ता दिया था, जिसमें टाइम बम फिट था। वह चंद लम्हें दारा के पास रुककर बातें करती रही फिर अन्दरुनी दरवाजे में चली गयी। दारा भी वहां से हटकर एक मेज पर बैठ गया, जहां दो खूबसूरत लड़कियां पहले से बैठी थीं। वह उनसे हंस-हंस कर बातें करने लगा।

"तुम इस पर निगाह रखना। मैं अभी आता हूं।" काला बच्चा ने रामन प्रसाद की तरफ देखकर सरगोशी की और उठकर उस दरवाजे

की तरफ बढ़ गया।

दरवाजे के दूसरी तरफ एक चौड़ी राहदारी थी। बायीं तरफ ऊपर जाने के लिए जीना था, इस लड़की को काला ने उस तरफ मुड़ते देखा था। जीने पर सुर्ख कालीन बिछा हुआ था। काला बच्चा ऊपर चढ़ता चला गया।

जीने के अंत में राहदारी बिल्कुल सीधी चली गयी थी। अंत में अंग्रेजी के जैड अक्षर की तरह दायें-बायें मुड़ गयी थी। राहदारी में दोनों तरफ कमरे थे। तमाम कमरों के दरवाजे बन्द थे। वह राहदारी के अंत तक पहुंचकर रुक गया।

दायीं तरफ आखरी कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। वह दबे कदमों आगे बढ़ने लगा, इस राहदारी के दायें बायें कमरे थे और आखिर में खुली जगह थी—सिर्फ तीन फुट ऊंची मुंडेर थी। उसके दूसरी तरफ नीचे लॉन था।

दरवाजे के सामने गहरे नीले रंग का पर्दा फैला हुआ था। वह ओड़ में खड़ा होकर अन्दर झांकने की कोशिश करने लगा। पर्दा जरा-सा सरका हुआ था और सामने एक सोफे पर किम टांगे फैलाए बैठा हुआ था। उसके हाथ में शराब का गिलास था और उसके करीब खड़ी हुई वह लड़की उससे कुछ कह रही थी।

काला बच्चा उन लोगों की बातें सुनने में इतना खोया था कि उसे एहसास ही नहीं हुआ कि कब कोई उसके पीछे आकर खड़ा हो गया है। चौंका तो वह उस वक्त जब किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। उसने मुड़कर देखा तो सीने में सांस रुकता हुआ महसूस होने लगा।

वह दारा था।

और इससे पहले कि दारा कुछ समझ सकता, काला बच्चा ने बड़ी फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए उछलकर उसके जबड़े पर घूंसा रसीद कर दिया। दारा कराहकर पीछे हटा। काला बच्चा ने संभलने का मौका दिए बगैर उसके घुटने पर ठोकर रसीद कर दी। इस मर्तबा वह बिलबिला उठा। वह आगे को झुक गया था। काला बच्चा ने एक लम्हा जाया किए बगैर उसके थोबड़े पर किक रसीद कर दी। वह उलटकर दीवार से टकरा गया। उसका सिर बड़ी जोर से दीवार से टकराया था।

काला बच्चा उसकी तरफ बढ़ते हुए रुक गया। उसने कमरे के अंदर किसी प्रकार की हरकत महसूस की और फिर दूसरे ही लम्हे किम बाहर आ गया। उसकी तेज नजरों ने फौरन ही परिस्थिति का

ही काला बच्चा अपनी जगह से उछला। उसकी फ्लाइंग किक किम के सीने पर पड़ी। वह कराहता हुआ दरवाजे की चौखट से जा टकराया। काला बच्चा ने अरने भैंसे की तरह उसके पेट पर सिर से टक्कर मार दी। किम ने संभलने की कोशिश में उसके बाल पकड़ लिए। काला बच्चा ने सिर को जोरदार झटका दिया। उसकी विग किम के हाथों में रह गयी और वह पीछे हट गया।

विग हटते ही किम उसे देखकर उछल पड़ा। विग उतर जाने के बाद काला बच्चा को पहचानना ज्यादा मुश्किल नहीं था। दारा ने भी काला को पहचान लिया था, वह कोट के नीचे हाथ डालते हुए उठने की कोशिश करने लगा। उसी दौरान में राहदारी की तरफ से एक साया हवा में उड़ता हुआ आया और दारा पर गिरा। दारा चीख उठा।

वह रामन प्रसाद था।

काला बच्चा ने किम को संभाल रखा था और रामन प्रसाद ने दारा को संभाल लिया था। वह भी एक अच्छा फाइटर था और दारा को संभलने का मौका नहीं दे रहा था। कमरे के अन्दर वह लड़की शायद टेलीफोन पर चीखकर किसी को कुछ कह रही थी, उसके कुछ ही देर बाद राहदारी में दौड़ते हुए कदमों की आवाज सुनाई देने लगी।

"रामन भागो—इस तरफ।" काला बच्चा ने चीखकर कहा।

रामन प्रसाद ने दारा को जोरदार किक लगाकर नीचे गिरा दिया और मुंडेर पर चढ़कर पिछले लॉन की तरफ छलांग लगा दी। किम काला बच्चा से लिपटने की कोशिश कर रहा था। काला ने उसकी टांगों पर घुटने की जोरदार चोट मारी; वह बिलबिला उठा। घुटने की दूसरी चोट उसकी ठोड़ी पर लगी। वह चीखता हुआ उलट गया और फिर काला बच्चा ने एक पल भी गंवाए बिना मुंडेर पर से छलांग लगा दी।

नर्म जमीन पर गिरते ही काला बच्चा संभल गया लेकिन फिर यों लगा जैसे कंधे से जरा नीचे अंगारे से भर गये हों। फायर की आवाज भी दूर तक फैल गयी थी। उसने एक तरफ छलांग लगा दी और बाउण्ड्री वॉल की तरफ दौड़ने लगा। एक और फायर हुआ। इस बार गोली उसके सिर के ऊपर से गुजर गयी। वह दौड़ता हुआ बाउण्ड्री वाल के करीब पहुंच गया। दीवार पर चढ़कर दूसरी तरफ छलांग लगाने के लिए पर तौल ही रहा था कि दायीं पिंडली में अंगारे से भरते चले गये। वह दीवार की दूसरी तरफ गिरा और ढलान पर

लुढ़कता चला गया। इसके साथ ही उसकी आंखों के सामने स्याह चादर-सी फैलती चली गयी। उसे दौड़ते हुए कदमों की आवाजें सुनाई दे रही थीं और फिर उसका जहन अंधकार में डूबता चला गया।

लेकिन जल्दी ही उसके हवास फिर बहाल होने लगे। दौड़ते हुए कदमों की आवाजें अब भी सुनाई दे रही थीं। यह आवाजें उसे साफतौर पर सुनाई देने लगी थीं। वह थाई भाषा में चीख-चीख कर कुछ कह रहे थे। फिर एक के बाद एक दो गोलियां चलने की आवाज सुनाई दीं। लगता था फायरिंग की यह आवाज उसके चारों तरफ फैल रही है। उसने आंखें खोल दीं। उसके चारों तरफ अब भी अंधकार था। इतने गहन अंधकार में उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था और फिर उसे एहसास हुआ जैसे उसे किसी ने अपनी गिरफ्त में ले रखा हो। वह अपने आपको छुड़ाने के लिए कसमसाया तो उसके बायें बाजू और दाहनी टांग में टीसें उभरीं और दर्द की लहर पूरे जिस्म में फैलती चली गयी। उसके मुंह से बेइख्तियार कराह निकल गयी। उस लम्हें एक हथेली ने उसका मुंह दबा दिया और उसके साथ ही एक निहायत ही मद्धिम सरगोशी उसके कानों से टकराई—

"आराम से लेटे रहो—मुंह से आवाज मत निकालना और न ही अपनी जगह से हरकत करना। वह हमें तलाश कर रहे हैं और हमारे बहुत करीब हैं। कोई मामूली-सी आवाज भी उन्हें हमारा पता बता सकती है।"

काला बच्चा के हवास पूरी तरह बहाल नहीं हुए थे। उसे वह आवाज अजनबी होते हुए भी जानी-पहचानी सी महसूस हो रही थी। दिमाग में सनसनाहट-सी हो रही थी और वह सोचने की कोशिश कर रहा था कि यह कौन-सी जगह है और उसके बदन में टीसें क्यों उभर रही हैं? यह कौन शख्स है, जिसने उसे अपनी गिरफ्त में ले रखा है।

फायर की एक और आवाज सुनाई दी। यह आवाज कुछ करीब से सुनाई दी थी। काला बच्चा पर वह पकड़ और मजबूत हो गयी। वह जो कोई भी था, उसने काला को अपने साथ लिपटा रखा था। उसके मुंह पर एक बार फिर हाथ रख दिया गया ताकि आवाज न निकल सके।

काला बच्चा की आंखें पूरी तरह खुली हुई थीं और वह क जैसे इस अंधकार में घूरते हुए सोच रहा था कि यह कौन-सी जग हो सकती है। उसके बाजू और टांग में निरंतर टीसें उभर रही थीं उसने दायें हाथ को आहिस्तगी से हरकत देकर बायें बाजू पर रख

तो नमी और चिपचिपाहट-सी महसूस हुई, इसके साथ ही उसके जहन ने काम करना शुरू कर दिया और उसे याद आ गया कि क्या हुआ था?

उसे बाउण्ड्री वॉल पार करने से पहले दो गोलियां लगी थीं और वह ढलान पर लुढ़कता चला गया था—फिर मालूम नहीं कितनी देर बेहोश रहा लेकिन चारों तरफ बिखरा अंधकार बता रहा था कि वह रात का कोई हिस्सा था, मगर यह कौन-सी जगह है और यह आदमी कौन है, जिसने उसे जकड़ रखा है। हालांकि यह गिरफ्त दोस्ताना थी। निश्चय ही यह उसका कोई हमदर्द है, जो उसे दुश्मनों से बचाना चाहता है। अचानक काला बच्चा के जहन में रामन प्रसाद का ख्याल उभरा। काला उसका नाम लेना चाहता था पर उसके मुंह पर हाथ जमा हुआ था।

"अरे...इस तरफ...।" एक चीखती हुई आवाज काला बच्चा के कानों से टकराई। काला को यूं लगा जैसे वह शख्स उसके चंद गज के फासले पर हो।

"यहां किसी की मौजूदगी के आसार नजर नहीं आते—इस तरफ चलो...दरिया के पुल की तरफ...वह उधर से निकलने की कोशिश करेंगे।"

काला बच्चा अपनी अकड़ती टांग को हरकत देना चाहता था लेकिन यह आवाज सुनकर वह बे हरकत होकर रह गया। अंधकार में दौड़ते हुए कदमों की आवाजें सुनाई दीं और फिर यह आवाजें दूर होती चली गयीं।

काला बच्चा के मुंह से हाथ हटा लिया गया। इसके साथ ही एक गहरा सांस लेने की आवाज भी सुनाई दी।

"प्रसाद...।" काला के होंठों से सरगोशी निकली।

"हां—यह मैं हूं बॉस।" जवाब में सरगोशी सुनाई दी—"अभी खामोश रहो और आराम से पड़े रहो। वह लोग ज्यादा दूर नहीं गये। पलटकर आ भी सकते हैं।"

इस मर्तबा काला बच्चा ने बात नहीं की अलबत्ता दांयीं टांग को समेटने की कोशिश की थी, जो लकड़ी के तख्ते की तरह अकड़ी जा रही थी। उसके मुंह से बेइख्तियार कराह निकल गयी।

"क्या हुआ?" रामन प्रसाद ने पूछा।

"बहुत तकलीफ हो रही है।" काला बच्चा फिर कराहा—"मेरे बाजू और टांग में गोलियां लगी हैं। यह पीड़ा अब असहनीय होती जा रही है।"

"बर्दाश्त करो।" प्रसाद ने कहा—"तुम एक बहादुर और साहसी नौजवान हो। यह तो मामूली-सी तकलीफ है। थोड़ी देर बर्दाश्त करो। वह लोग अभी ज्यादा दूर नहीं हैं। मौका देखकर यहां से निकलने की कोशिश करेंगे।"

"यह कौन-सी जगह है?" काला ने पूछा।

"मुझे भी मालूम नहीं है।" प्रसाद ने जवाब दिया—"मैंने तुम्हें चीखकर दीवार से गिरते और ढ़लान पर लुढ़कते देख लिया था। जब मैं तुम्हारे करीब पहुंचा तो तुम बेहोश हो चुके थे। मैं तुम्हें वहां से उठाकर भाग निकला था। मुझे छिपने के लिए यही जगह नजर आई थी। अब तक तो यह जगह हमारे लिए सेफ रही है। वह लोग चंद कदम के फासले से गुजर गये लेकिन हमारी मौजूदगी का पता नहीं चला। हम अभी खतरे से बाहर नहीं हुए। हमें कुछ देर और इन्तजार करना होगा। बेहतर यही है कि हम खामोशी से बैठे रहें ताकि अगर वह दोबारा इस तरफ निकल आये तो...।"

वह एकाएक खामोश हो गया। दूर से फायर की एक और आवाज सुनाई दी थी।

"इन्होंने कदाचित् खासे बड़े इलाके को घेरे में ले रखा है।" प्रसाद ने सरगोशी की—"हमें यहां से निकलने में मुश्किल तो पेश आयेगी मगर जाहिर है हम यहां रात भर बैठे भी नहीं रह सकते। बहरहाल हमें कुछ और इन्तजार करना पड़ेगा लेकिन इसके साथ ही एक और बात भी मेरे जहन को उलझा रही है।"

"वह क्या?" काला ने पूछा।

"यहां से निकलकर हम जायेंगे कहां।" रामन प्रसाद ने कहा—"मुझे तुम्हारी फिक्र हो रही है बॉस। तुम्हें मेडिकल हैल्प की जरूरत है—अगर ठीक वक्त पर मेडिकल ऐड न मिली तो जख्म बिगड़ने का अन्देशा है, जिससे तुम्हारी जिन्दगी को भी खतरा हो सकता है।"

"हमें यहां आये हुए कितनी देर हुई है?" काला ने पूछा

"लगभग एक घण्टा हो चुका है।" उसने जवाब दिया—"अभी थोड़ी देर बाद मैं यहां से निकलकर देखूंगा कि क्या परिस्थिति है लेकिन सवाल फिर वही है कि यहां से निकलकर हम जायेंगे कहां?"

"इसकी तुम फिक्र मत करो।" काला बच्चा ने कहा—"जरूरत सिर्फ यहां से बच निकलने की है। दरिया के पार वांगदंग याए रोड पर एक ऐसी सुरक्षित जगह है, जहां हम पनाह ले सकते हैं और मुझे मैडिकल ऐड भी मिल सकती है लेकिन हम दरिया के दूसरी तरफ

कैसे जायेंगे। उनके आदमी तो ब्रिज पर भी मौजूद होंगे और कोई शख्स उनकी नजरों से बचकर नहीं जा पायेगा।"

"परिस्थिति का अन्दाजा लगाने के बाद मैं कोई न कोई रास्ता निकाल ही लूंगा।" प्रसाद ने जवाब दिया और चंद लम्हों की खामोशी के बाद बोला—"तुम यहीं रुको—मैं परिस्थिति का जायजा लेकर आता हूं।"

काला बच्चा का सिर प्रसाद की गोद में रखा हुआ था। उसने काला बच्चा को आहिस्तगी से उठा दिया। अंधकार में अब भी कुछ नजर नहीं आ रहा था। काला बच्चा ने टटोलकर देखा तो पता चला वह एक बहुत बड़े पत्थर की आड़ में थे और यह जगह कुछ ज्यादा चौड़ी भी नहीं थी। उनके सिरों के ऊपर छतनुमा कोई चीज भी थी, जो ज्यादा ऊंची नहीं थी। काला बच्चा का हाथ छत से छू गया था।

प्रसाद रेंगता हुआ वहां से निकल गया। काला बच्चा ने पत्थर की पुश्त से टेक लगाकर टांगें फैला दीं। बाजू और टांग से पीड़ा की तीव्र लहर उठ रही थी और यह दर्द पूरे जिस्म में फैल रहा था। तकलीफ की शिद्दत को कम करने के लिए उसने बड़ी सख्ती से दांत भींच लिए थे।

काला बच्चा को वहां पड़े हुए एक घण्टा हो चुका था और इस एक घण्टे में उसके जख्मों से अच्छा-खासा खून बह चुका था। प्रसाद ने ठीक ही कहा था कि उसे फौरीतौर पर मैडिकल हैल्प की जरूरत थी वरना जख्म बिगड़ जाने और उसकी जान का खतरा था।

रामन प्रसाद को यह भी परेशानी थी कि यहां से निकलकर वह कहां जायेंगे और काला बच्चा ने तुरन्त ही उसे अपने साथ घर ले जाने का फैसला कर लिया था, वह घर जहां वह थाईवांग के साथ रह रहा था। प्रसाद भरोसे का आदमी साबित हुआ था। उसने काला बच्चा की खातिर अपनी जिन्दगी भी खतरे में डाल दी थी। उन लोगों के हाथ आ जाने की सूरत में वह प्रसाद को भी यातनायें देकर मार डालेंगे, इसलिए काला बच्चा ने उसे भी अपने साथ ले जाने का फैसला कर लिया था। प्रसाद अगर खुदगर्ज होता तो वहां झगड़ा शुरू होने के बाद परिस्थिति का अन्दाजा लगते ही काला बच्चा को छोड़कर भाग निकलता लेकिन उसने अपनी जान की परवाह नहीं की थी और काला बच्चा की मदद के लिए जान हथेली पर रख ली थी। उस जैसे वफादार और जांनिसार को इस तरह छोड़ा नहीं जा सकता था।

लगभग पन्द्रह मिनट बाद सरसराहट की ऐसी आवाज सुनाई दी जैसे कोई जमीन पर रेंग रहा हो। चंद सेकिण्ड बाद ही प्रसाद

की सरगोशी सुनाई दी।

"बॉस।"

"यस प्रसाद।" काला बच्चा ने भी सरगोशी में जवाब दिया।

वह रेंगता हुआ काला बच्चा के करीब आ गया।

"सड़क या किसी और रास्ते से निकलने का कोई चान्स नहीं है बस।" प्रसाद ने कहा—"उन्होंने पूरे इलाके को घेरे में ले रखा है। हमारे लिए सिर्फ एक ही रास्ता बाकी बचा है।"

"और वह रास्ता कौन-सा है?"

"दरिया।" प्रसाद ने जवाब दिया—"क्या तुम तैरना जानते हो बॉस?"

उसकी बात सुनकर काला बच्चा कांप उठा, तैरना तो उसे आता था और यह तैराकी उसने सिंगापुर के एक स्वीमिंग क्लब में सीखी थी। लेकिन स्वीमिंग पूल और दरिया में बहुत फर्क होता है। पूल के ठहरे हुए पानी में तैरना और बात है और दरिया के गहरे बहते पानी में तैरना और बात और फिर इस वक्त उसकी हालत...बाजू और टांग में गोलियां लगी थीं। खून ज्यादा बह जाने की वजह से वह कमजोरी महसूस कर रहा था, लेकिन भयानक मौत ने चारों तरफ घेरा डाल रखा था और मौत के इस हिस्से को तोड़ने का वही एक रास्ता था। उसके सिवा कोई चारा नहीं था।

"ठीक है।" काला बच्चा ने कहा—"यह रिस्क लेना ही पड़ेगा।"

"तो ठीक है—इस तरफ चलो—लेकिन कुछ दूर तक रेंगना ही पड़ेगा।" प्रसाद ने कहा। उसने हाथ से इशारा भी किया लेकिन अंधेरे में तो हाथ को हाथ सुझाई ही नहीं दे रहा था, इशारा क्या दिखाई देता।

प्रसाद के रेंगने से सरसराहट की जो हल्की-सी आवाज पैदा हो रही थी—काला बच्चा उसे फालो करते हुए उसके पीछे रेंगता रहा। उसके जख्मी बाजू और टांग में दर्द की तीव्रता बढ़ गयी थी। वह बड़ी मुश्किल से अपने आपको घसीट रहा था। लगभग पांच मिनट बाद तक उस तंत्र-सी जगह से निकलकर खुली जगह पर आ गये। चेहरे से टकराने वाली ताजा हवा बड़ी खुशगवार लगी थी। इस जगह यद्यपि रोशनी नहीं थी लेकिन सामने दरिया के दूसरे किनारे पर रोशनियां जगमगा रही थीं और उनसे अंधेरे की घुटन का एहसास भी खत्म हो गया था।

रामन प्रसाद उठकर खड़ा हो गया था और जब काला बच्चा

ने उठने की कोशिश की तो मुंह से बेइख्तियार कराह निकल गयी। उसकी जख्मी टांग ने बोझ उठाने से साफ इन्कार कर दिया था और मामूली-सा बोझ पड़ने से जख्म से जो टीसें उठी थीं वह उसके पूरे वजूद में फैलती चली गयी थीं।

प्रसाद फौरन ही उसकी तरफ आकर्षित हो गया उसने अपना सीधा बाजू काला बच्चा की गर्दन में लपेट लिया और उसे सहारा देकर आहिस्ता-आहिस्ता चलाने लगा। काला बच्चा का दायां पैर जमीन पर घिसट रहा था। गोली उसकी पिंडली की पिछली तरफ लगी थी और अन्दर ही रह गयी थी जिस वजह से उसे ज्यादा तकलीफ हो रही थी। पूरी टांग में तीव्र चुभन और खिंचाव था।

चंद कदम चलने के बाद वह रुक गये बल्कि काला बच्चा तो गिर-सा गया था। उसने तकलीफ जब्त करने की कोशिश करते हुए इधर-उधर देखा। वह गेस्ट हाउस बायीं तरफ लगभग तीन सौ गज के फासले पर था। उससे परे होटल संग्रीला का जगमगाता हुआ न्योन साइन नजर आ रहा था। काला बच्चा ने गर्दन घुमाकर उसकी तरफ देखा जहां से वह निकलकर आये थे। उस जगह को देखकर काला बच्चा को अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई थी कि यह किसी पुल का शुरुआती हिस्सा था। हो सकता है पहले यहां दरिया पर पुल बैंनाने की योजना बनी हो लेकिन किसी वजह से योजना रोककर वहां से हजार गज आगे पुल बनाया गया हो। इस जगह जमीन से पुल की बुनियादें और साइड की दीवारें उठाकर शुरू के हिस्से में कंक्रीट की भराई की गयी थी और आगे कुछ हिस्से पर कंक्रीट के गार्डर डालकर छत या सड़क का कुछ हिस्सा भी बनाया गया था लेकिन बाद में उसे अपूर्ण छोड़ दिया गया था। इस छत के नीचे बड़े-बड़े पत्थर और मलबे के ढेर ऐसे ही पड़े रह गये थे और प्रसाद उसे उसके आखरी हिस्से में एक ऐसे ही बड़े पत्थर के पीछे ले गया था, जिसकी वजह से वह तलाश करने वालों की नजरों से बचे रहे थे।

"यहां रुकना खतरे से खाली नहीं है बॉस...।" प्रसाद की आवाज ने उसे चौंका दिया अगर वह लोग दोबारा इस तरफ निकल आये तो हमारे पास छुपने की कोई और जगह भी नहीं है।"

उसने काला बच्चा को दोबारा सहारा देकर उठा दिया और काला बच्चा उसके साथ घिसटने लगा। उनका रुख दरिया की तरफ था। बैंकाक वालों ने शहर के मध्य में बहते हुए इस दरिया से खूब लाभ उठाया था। कई बार क्लब थे। दरिया के साथ बड़े-बड़े होटलों

ने भी किनारों तक की जगह घेर रखी थी, जहां छोटी-छोटी जेटियां बनवाकर अपने मेहमानों के लिए बोटिंग की सहूलियतें उपलब्ध कर रखी थीं। कुछ लोगों ने वैसे ही जगह घेरकर छोटे-छोटे घर बना रखे थे जहां दरिया की सैर के लिए आने वालों को किराए पर किश्तियां उपलब्ध की जाती थीं लेकिन बहुत-सी जगहें ऐसी थीं जो अब भी वीरान पड़ी थीं। इन जगहों पर आसपास तो गहरे खड्ड थे या किसी और वजह से उन्हें नजर अन्दाज कर दिया गया था।

इस वक्त वह जिस जगह पर मौजूद थे वहां से बायीं तरफ लगभग तीन सौ गज के फासले पर तो वह गेस्ट हाउस था और दूसरी तरफ लगभग पांच सौ गज तक वीरान था। उससे आगे रोशनियां नजर आ रही थीं। बीच में इस वीराने में झाड़ियां फैली हुई थीं।

"मेरा ख्याल है इस तरफ किनारे पर हमें कोई ऐसी जगह मिल जायेगी जहां से हम दरिया में उतर सकें।" रामन प्रसाद ने एक तरफ संकेत करते हुए कहा।

"मगर प्रसाद।" काला बच्चा कराह उठा—"मुझसे तो कदम नहीं उठाया जा रहा—बाजू भी बुरी तरह अकड़ा हुआ है—दरिया में कैसे तैर सकूंगा?"

"फिक्र न करो बॉस...।" प्रसाद बोला—"मैं सिर्फ मोटर मैकेनिक ही नहीं हूं। एक बहुत अच्छा तैराक भी हूं। बताया कि गहरे साहिल पर तैराकी के कई खतरनाक मुकाबले जीत चुका हूं। तुम मेरी पुश्त पर सवार हो जाना। मैं तुम्हें बड़ी आसानी से दूसरे किनारे तक ले जाऊंगा। रास्ते में तुम्हारे कपड़े तक गीले नहीं होने दूंगा। बस हमें दरिया में उतरने के लिए मुनासिब जगह मिल जाए।"

रामन प्रसाद उसे सहारा देकर झाड़ियों में घसीटता रहा। इस तरह चलने से उसकी टांग में तकलीफ बढ़ती जा रही थी लेकिन वह जानता था कि दारा और किम के आदमी शिकारी कुत्तों की तरह आसपास के इलाके में उनकी गंध सूंघते फिर रहे थे। वह किसी लम्हे इस तरफ भी आ सकते थे।

वह उस जगह से काफी दूर निकल आये थे। आसपास झाड़ियां यद्यपि काफी ऊंची थी मगर ज्यादा गुंजान नहीं थीं। उन्हें आगे बढ़ने के लिए आसानी से रास्ता मिल रहा था और फिर अचानक वह ठिठककर रुक गये।

उनसे लगभग पन्द्रह गज आगे एक शोला-सा चमका था। काला बच्चा ने गौर से उस तरफ देखा तो कांपकर रह गया। वहां कुछ ऊंची जगह पर एक आदमी खड़ा था, जिसने सिग्रेट सुलगाने

के लिए दियासलाई जलाई थी। उसका रुख दूसरी तरफ था। दि
सलाई की रोशनी में उसका चेहरा तो नजर नहीं आया था लेकि
बिखरे हुए बाल और धारीदार टी-शर्ट से उसे अन्दाजा लगाने
दुश्वारी नहीं आई कि वह कौन हो सकता है। वह यकीनन दारा क
ही कोई गुरगा था जो निगरानी के लिए वहां खड़ा था।

रामन प्रसाद ने होठों पर उंगली रखकर उसे खामोश रहने
इशारा किया। उसे आहिस्तगी से झाड़ियों की आड़ में जमीन पर बि
दिया और झाड़ियों की आड़ लेकर झुककर तेजी से आगे बढ़ने लग

काला बच्चा अपनी जगह पर बे हरकत बैठा सामने देख र
था। प्रसाद उसकी निगाहों से ओझल हो गया था, मगर वह आद
अपनी जगह पर खड़ा इत्मीनान से सिग्रेट के कश लगा रहा थ
सिग्रेट कदाचित् बहुत ही घटिया किस्म का था। हवा का रुख
की वजह से उसकी दुर्गन्ध यहां तक आ रही थी।

और फिर उस शख्स के अकब में चंद कदम के फांसले
प्रसाद को प्रकट होते देखकर उसके दिल की धड़कनें तेज हो
और वह दिल ही दिल में उसकी कामयाबी की दुआ मांगने लग
प्रसाद बहुत आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ रहा था और फिर शा
उसका पैर किसी झाड़ी में उलझ गया था। वह लड़खड़ा गया।

आवाज सुनकर वह शख्स तेजी से पीछे पलटा। उसने सि
फेंक दिया और प्रसाद की तरफ लपका। प्रसाद संभल गया था।
दोनों एक-दूसरे से गुत्थम-गुत्था हो गये। दोनों जमीन पर गिरे फि
उठ गये। काला बच्चा कुछ ढलुवां हिस्से में था और वह दोनों
जगह पर थे। आसमान पर चमकते हुए सितारों की रोशनी
पेशे-मंजर में काला बच्चा को उन दोनों के हयोले तो नजर आ
थे मगर यह अनुमान लगाना दुश्वार था कि उनमें से प्रसाद कौ
था और गुण्डा कौन-सा था।

वह एक बार फिर जमीन पर गिर गये। अब वह उसे न
नहीं आ रहे थे लेकिन झाड़ियों के चटखने की आवाजों से काला बच्
अन्दाजा लगा सकता था कि वहां क्या हो रहा है और फिर ए
खौफनाक चीख फिजां में उभरी।

यह चीख प्रसाद की भी हो सकती थी। यह ख्याल आते
काला बच्चा अपने स्थान से घिसटता हुआ गुंजान झाड़ियों में
गया। दो मिनट गुजर गये और फिर दौड़ते हुए कदमों की आव
सुनाई दी। एक हयोला ठीक उस जगह पर आकर रुक गया, ज
थोड़ी देर पहले वह मौजूद था।

"बॉस!" यह प्रसाद की आवाज थी।

"मैं यहां हूं प्रसाद!" काला बच्चा ने उसे आवाज दी।

"वह खत्म हो गया बॉस।" प्रसाद तेज-तेज कदम उठाता हुआ काला बच्चा के करीब आ गया—"मैंने उसकी गर्दन मरोड़ दी है। वहां एक छोटी-सी जेटी पर दो किश्तियां भी खड़ी हैं बॉस।" उसने एक तरफ इशारा किया—"इस मरदूद की चीख सन्नाटे में दूर तक फैली होगी, इससे पहले कि इसका कोई साथी इस तरफ पहुंचे, हमें यहां से निकल जाना चाहिए।"

"मैं उठ नहीं सकता। मुझे सहारा दो प्रसाद।" काला बच्चा ने अपना ठीक हाथ ऊपर उछाल दिया। वह इस वक्त कुछ ज्यादा ही कमजोरी महसूस कर रहा था।

प्रसाद नीचे झुका और सहारा देने की बजाय उसे पुश्त पर लाद लिया। काला बच्चा के मुंह से हल्की-सी चीख भी निकल गयी। उसका एक हाथ काला की टांग के जख्म पर पड़ा था।

प्रसाद उसे उठाकर तेजी से एक तरफ दौड़ने लगा। लगभग पचास गज का फासला तय करके उसने काला बच्चा को जेटी पर उतार दिया। यहां दरिया के किनारे पर एक पुख्ता चबूतरा बना हुआ था और एक तंग-सी खाड़ी इस चबूतरे के साथ ही अन्दर को निकल गयी थी। यहां दो छोटी किश्तियां थीं, जिनकी रस्सियां एक पाइप के साथ बंधी हुई थीं। यह चप्पुओं वाली किश्तियां थीं। प्रसाद ने काला को उठाकर एक किश्ती में डाल दिया और पाइप के साथ बंधी हुई रस्सी खोलकर चप्पू संभाल लिए। वह किश्ती को खाड़ी से निकालकर दरिया में ले आया और उसे दूसरे किनारे की तरफ खेने लगा।

काला बच्चा किश्ती के फर्श पर निढ़ाल-सा बैठा तेज-तेज सांस ले रहा था। कमजोरी बहुत बढ़ गयी थी। जख्मी टांग और बाजू तख्ते की तरह अकड़ गये थे और दर्द ने उसे निढ़ाल कर रखा था और वह उस वक्त सोच रहा था कि अपने ठिकाने पर पहुंच भी सकेगा या नहीं।

"अब परेशानी की कोई बात नहीं बॉस...।" प्रसाद ने शायद उसके ख्यालात पढ़ लिए थे, दरिया का पानी बहुत पुरसुकून और समतल है। हम अधिक से अधिक पांच मिनट में दूसरे किनारे पर पहुंच जायेंगे।" वहां से हमें कितनी दूर जाना होगा?"

काला बच्चा को उसकी बातों से हौसला मिल रहा था। वह सचमुच वफादार था, महज उसे बचाने के लिए प्रसाद ने एक इंसान

के खून में भी हाथ रंग लिए थे। चंद घण्टे पहले काला बच्चा ने जब उसकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया था तो उसने काला बच्चा से पूछा था कि दोस्ती का अर्थ जानता भी है या नहीं, यद्यपि उनकी दोस्ती की उम्र चंद घण्टों से ज्यादा की नहीं थी लेकिन उसने खुद ही काला बच्चा को दोस्ती का अर्थ समझा दिया था।

"मेरी बात का जवाब नहीं दिया बॉस... ।" प्रसाद ने दोबारा कहा—"हमें कितनी दूर जाना होगा।"

"लगभग एक मील।" काला बच्चा ने संभलकर बैठने की कोशिश करते हुए कहा—"किंग टाक्सन की प्रतिमा से जरा आगे।"

"वांगदंग याए रेलवे स्टेशन के करीब।" उसने पूछा।

"नहीं, उससे विपरीत दिशा में।" काला बच्चा ने जवाब दिया और इधर-उधर देखने लगा। दरिया का पानी वाकई पुरसुकून था और उसे किश्ती खेने में ज्यादा दुश्वारी पेश नहीं आ रही थी। दरिया के दोनों तरफ दूर-दूर तक रंग-बिरंगी रोशनियां जगमगा रही थीं। उस वक्त बारह बजने वाले थे। काला बच्चा थाईवांग के बारे में सोच रहा था। वह शाम का अंधेरा फैलने से थोड़ी देर बाद घर से निकला था और थाई से कहा था कि दो-तीन घण्टों में वापस आ जायेगा। अब उसे तकरीबन चार घण्टे हो चुके थे। वह यकीनन परेशान हो रही होगी। कहीं उसने घबराकर मास्टर होचिन को फोन न कर दिया हो।

दूसरे किनारे तक पहुंचने में लगभग दस मिनट लगे थे। रामन प्रसाद ने किश्ती एक वीरान जगह पर रोकी थी। किश्ती को किनारे से लगाकर उसने काला बच्चा को अपने ऊपर लाद लिया और किश्ती के किनारे पर खड़े होकर छलांग लगा दी।

"मुझे नीचे उतार दो। मैं तुम्हारा सहारा लेकर चलने की कोशिश करूंगा।" काला ने कहा।

"नहीं बॉस!" प्रसाद ने जवाब दिया—"हो सकता है उनका कोई आदमी इस तरफ भी मौजूद हो और किश्ती को आते हुए देख लिया गया हो। कुछ दूर तक तो तुम मेरे ऊपर सवारी करते रहो। किसी सुरक्षित जगह पर पहुंचकर मैं तुम्हें उतार दूंगा।"

रामन प्रसाद का ख्याल गलत नहीं हो सकता था—लेकिन उन्हें बड़ी सड़क तक कोई दुश्वारी पेश नहीं आई। सड़क पार करके वह एक गली में दाखिल हो गये। प्रसाद ने उसे नीचे उतार दिया—जमीन पर पैर रखते ही उसके होठों से कराह-सी निकली।

"बॉस!" प्रसाद ने काला बच्चा का स्वस्थ बाजू अपने गले

में डाल लिया—"मुझे मालूम है तुम्हारी हालत बहुत नाजुक हो रही है। तुम्हारा जिस्म भी तपने लगा है। तुम्हारे जख्मों से खून बहुत बह चुका है मगर तुम वाकई एक हौसलामंद नौजवान हो। कोई और होता तो हिम्मत हार चुका होता।" वह चंद लम्हों को खामोश हुआ फिर बात जारी रखते हुए बोला—"तुम्हें फौरीतौर पर मेडिकल एड की जरूरत है। अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मैं अपने आपको मुआफ नहीं कर सकूंगा। घर पहुंचकर किसी डॉक्टर को बुलाने में देर लगेगी और यह भी मुमकिन है कि वह डॉक्टर तुम्हारी हालत देखकर ट्रीटमेन्ट देने से इन्कार कर दे। मैंने मेन रोड की तरफ एक हस्पताल का न्योन साइन देखा है। अगर कहो तो मैं तुम्हें अस्पताल ले चलूं। हम पुलिस को भी उन लोगों के बारे में सूचना दे देंगे।"

"नहीं प्रसाद।" काला ने कहा—"तुम उन लोगों को नहीं जानते। वह इंसान नहीं दरिन्दे हैं। पूरे बैंकाक की पुलिस उनका आज तक कुछ नहीं बिगाड़ सकी। तुम मेरी हालत की परवाह मत करो। मुझे घर ले चलो—डॉक्टर का प्रबन्ध हो जायेगा।"

वह काला बच्चा की हालत देखकर समझ गया कि चलना उसके लिए सम्भव न होगा। उसने एक बार फिर काला बच्चा को अपने ऊपर लाद लिया और तेजी से चलने लगा। काला बच्चा उसे रास्ता बताता जा रहा था और अंततः लगभग आधे घण्टे बाद वह इच्छुक गली में पहुंच गये।

गेट के सामने पहुंचकर उसने काला बच्चा को नीचे उतार दिया।काला बच्चा सतून के साथ टेक लगाकर खड़ा हो गया। प्रसाद ने कॉलबैल का बटन दबा दिया। सिर्फ एक मिनट बाद गेट का इनर डोर खुल गया। वह थाईवांग थी और न जाने कब से उसका इन्तजार बरामदे में बैठकर कर रही थी। कॉलबैल की आवाज सुनते ही गेट पर पहुंच गयी लेकिन दरवाजा खोलते ही काला बच्चा की बजाए किसी अजनबी को देखकर वह स्तब्ध-सी रह गयी।

"कौन हो तुम...मैं तुम्हें नहीं जानती...चले जाओ यहां से...।" उसने धीरे से दरवाजा बन्द कर दिया।

"मैं हूं थाई दरवाजा खोलो।" काला बच्चा ने कमजोर-सी आवाज में कहा।

दरवाजा एकदम खुल गया। थाई ने गर्दन निकालकर बाहर झांका और फिर काला बच्चा को स्तम्भ के साथ खड़े देखकर बदहवास-सी हो गयी।

"क्या हुआ तुम्हें...इस तरह क्यों खड़े हो?"

"मैं जख्मी हूं थाई...मुझे अन्दर ले चलो।" काला ने कहा।

प्रसाद ने झुककर काला को गोद में उठा लिया।

"यह...यह कौन है?" थाई बोली।

"मेरा दोस्त है, घबराओ नहीं।" काला ने कहा।

थाईवांग रास्ते से हट गयी, प्रसाद के अन्दर दाखिल होने के बाद उसने गेट बन्द कर दिया और तेज-तेज कदम उठाती हुई उनके साथ चलने लगी। बरामदे की बत्ती भी बुझी हुई थी लेकिन कमरे में दाखिल होने के बाद उसकी हालत देखते ही थाई के मुंह से हल्की-सी चीख निकल गयी।

"य...यह क्या हुआ है तुम्हें...किसने की है तुम्हारी यह हालत। मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी।" थाईवांग चीख रही थी।

इस दौरान प्रसाद ने काला बच्चा को कमरे में लाकर बिस्तर पर लिटा दिया था।

"मैं जिन्दा हूं थाई! मैं जिन्दा हूं। अपने हवास काबू में रखो।" काला बच्चा ने उसकी तरफ देखते हुए कहा—"मुझे गोलियां लगी हैं। खून बहुत कम हो चुका है। इससे पहले कि मेरी हालत ज्यादा बिगड़ जाए जानकी देवी को फोन करके बुला लो। उसे बता देना एक गोली अभी तक मेरी पिंडली के अन्दर मौजूद है। जाओ थाई देर न करो।"

थाईवांग दौड़ती हुई टेलीफोन के करीब पहुंच गयी। उसने रिसीवर उठाया और नम्बर मिलाकर जानकी को परिस्थिति से आगाह करने लगी। फिर रिसीवर पटककर वापस आ गयी।

"हुआ क्या...तुम्हें कैसे गोली लगी और यह कौन है?" थाई ने कहा और प्रसाद की तरफ देखने लगी।

"कुछ खतरनाक लोगों से आमना-सामना हो गया था।" काला बच्चा, ने जवाब दिया और यह...।" उसने प्रसाद की तरफ देखा—"यही मुझे मौत के मुंह से निकालकर लाया है, अगर यह न होता तो आज की रात मेरी जिन्दगी की आखरी रात साबित होती। मुझे तो इसका शुक्रिया अदा करने के लिए शब्द नहीं मिल रहे हैं।"

"इसमें शुक्रिया अदा करने की क्या बात है बॉस...मैंने तो दोस्ती का हक अदा किया है।" प्रसाद ने कहा और चंद लम्हों की खामोशी के बाद बोला—"अब मैं जाऊं बॉस।"

"नहीं, तुम यहीं रहोगे।" काला ने मुस्कराने की कोशिश करते हुए कहा।

थाईवांग की अजीब हालत हो रही है। उसकी कैफियत बयान

करने के लिए काला बच्चा के पास शब्द नहीं थे। उसकी आंखों में आंसू थे और होठों पर बड़बड़ाहट थी। काला बच्चा का रक्त-रंजित लिबास देखकर बार-बार उसकी मुट्ठियां भिंच जातीं कदाचित् उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे?

जानकी देवी लगभग चालीस मिनट बाद वहां पहुंची थी। काला बच्चा की हालत देखकर वह भी हड़बड़ा गयी। मुसाफिर जब मंजिल पर पहुंचता है तो थकान से निढाल होकर गिर पड़ता है। काला बच्चा की भी शायद कुछ ऐसी ही कैफियत थी। वह मौत को धक्के देता हुआ अपनों में पहुंच गया था और उसका हौसला पस्त हो गया था। हिम्मत और सहनशक्ति जवाब दे रही थी। कमजोरी इस कदर बढ़ गयी थी कि अब बेहोशी-सी छाने लगी थी और उसके लिए अपने आपको होश में रखना मुश्किल हो रहा था।

थाईवांग ने पहले ही पानी गरम कर रखा था। जानकी देवी ने सबसे पहले प्रसाद की मदद से काला बच्चा के कपड़े उतरवा कर खून से लिथुड़ा हुआ जिस्म साफ कर दिया और आप्रेशन की तैयारी शुरू कर दी। पहले काला बच्चा के बाजू की ड्रेसिंग की गयी। यहां गोली गोश्त को चीरती हुई निकल गयी थी। बाजू की ड्रेसिंग मुकम्मल करने के बाद वह काला बच्चा की टांग की तरफ आकर्षित हुई। जानकी ने टांग का आप्रेशन शुरू कर दिया। उस वक्त तक काला बच्चा पूरी तरह बेहोशी की नींद में डूब चुका था और उसे कुछ पता नहीं था कि उसके साथ क्या हो रहा है?

कई घण्टे बेहोश रहने के बाद उसकी आंख खुली तो कमरे में खिड़की के रास्ते आने वाली धूप फैली हुई थी। बेड के करीब दायीं तरफ थाईवांग एक कुर्सी पर बैठी ऊंघ रही थी। काला बच्चा के होठों से हल्की-सी कराह खारिज हुई तो वह हड़बड़ाकर उठ गयी। उसकी नजरों के सामने धुंध-सी फैली हुई थी, जो धीरे-धीरे साफ होती चली गयी। काला बच्चा ने पहले थाईवांग की तरफ देखा और फिर इधर-उधर देखने लगा। बेड के साथ ही एक स्टैण्ड पर खून की बोतल लटकी हुई थी, जिसका खून धीरे-धीरे उसकी रगों में पहुंच रहा था।

थाईवांग काला बच्चा के ऊपर झुकी हुई थी। उसकी आंखों में नमी तैर रही थी। उसने काला की पेशानी पर बोसा दिया और कुछ कहे बगैर उसकी तरफ देखती रही। काला बच्चा उसकी अन्दरुनी कैफियत को समझ रहा था। चंद मिनट बाद जानकी देवी भी आ गयी। उसने मुस्कराकर काला बच्चा की तरफ देखा। उसकी

पेशानी पर हाथ रखा और खून की बोतल को चैक करने लगी। उस लगभग पन्द्रह मिनट उसके मुआयने पर लगा दिए।

"अब खतरे की कोई बात नहीं है।" वह थाईवांग की तरफ देखते हुए बोली–"बुखार तेज है। उसे शाम तक उतर जान चाहिए।"

वह भी करीब ही एक कुर्सी पर बैठ गयी थी। उस वक्त दि के ग्यारह बज रहे थे। जानकी देवी रात को यहां आने के बाद वापस नहीं गयी थी। काला बच्चा के लिए खून का बन्दोबस्त उ ने किया था। पिछली रात उसकी टांग से गोली निकालने के बा उसने जख्म की ड्रेसिंग तो कर दी थी लेकिन खून ज्यादा बह जा की वजह से वह काला के लिए खासी परेशान थी। उसने थाई व दो टूक शब्दों में कह दिया था कि काला बच्चा के लिए खून क बन्दोबस्त होना जरूरी था। अगर खून न मिला तो उसकी जिन्द खतरे में पड़ सकती थी और फिर रात को वह काला बच्चा का ख एक सीरेंज में लेकर चली गयी थी। एक प्राइवेट अस्पताल के ब्लड बैंक में मिल गया था। उसने हस्पताल के ड्रग स्टोर से कु जरूरी चीजें भी खरीद ली थीं। दो घण्टे बाद वापस आकर उसन काला बच्चा को खून की बोतल लगा दी थी। यह खून की दूसरी बोतल थी, जो लगभग आधा घण्टा पहले लगाई गयी थी। खून की यह दूसरी बोतल जानकी देवी सुबह हस्पताल से लाई थी। इन तमाम इन्तजामात के लिए जहां उसे भाग-दौड़ करनी पड़ी थी, वह अच्छी-खासी रकम भी खर्च करनी पड़ी थी। बहरहाल ठीक वक्त पर खून मिल जाने से काला की जान बच गयी थी और अब वह खतरे से बाहर था।

थाईवांग की आंखों में तैरते हुए आंसू और जानकी देवी की इस भागदौड़ से उसे अन्दाजा हो गया कि वह दोनों उसे कितना चाहती थीं। लेकिन उनसे उसका क्या रिश्ता था। सिर्फ इंसानियत का रिश्ता। इस दुनिया में इंसान ही तो बसते हैं, जो हैवानों से ज्यादा बदतर और दरिन्दों से ज्यादा खूंखार हैं। एक-दूसरे का गला काटने में जरा भी झिझक महसूस नहीं करते। वह भी इंसान ही कहलाते हैं। उसे मौत के घाट उतारना चाहते हैं और यह भी इंसान ही है, जो उसके लिए इस कदर परेशान है कि अपना सब कुछ दावं पर लगा रहा है। फर्क सिर्फ इतना है कि थाई और जानकी ने इस रिश्ते की शनाख्त कर ली है कि जिसके लिए मजहब और खून का काला होना जरूरी नहीं। इंसानियत ही एक ऐसा रिश्ता है, जो खून और धर्म की परवाह

किए बगैर एक-दूसरे को करीब लाता है।

"अब तुम ठीक हो जाओगे।" जानकी देवी ने उसकी तरफ देखकर मुस्कराते हुए कहा—"लेकिन कई रोज तक तुम बिस्तर से नहीं उठ सकोगे।"

"प्रसाद कहां है, क्या वह चला गया?" काला ने पूछा।

"नहीं... ।" थाई ने जवाब दिया—"वह तो रात भर तुम्हारे पलंग की पट्टी से लगा बैठा रहा है, एक घण्टा पहले मैंने जबरदस्ती उसे यहां से उठाया है। सो रहा है इस वक्त, लेकिन यह है कौन? क्या तुमने इसे यहां लाकर गलती नहीं की?"

"नहीं।" काला के होठों पर हल्की-सी मुस्कराहट आ गयी—"वह भरोसे का आदमी है। अगर मुझे उस पर जरा-सा भी शक होता तो उसे यहां कभी न लाता।" काला चंद लम्हों को खामोश हुआ और फिर रुक-रुक कर बताने लगा कि रामन प्रसाद कौन है और उससे उसकी मुलाकात कैसे हुई थी—"अगर वह मेरे साथ न होता तो मैं इस गेस्ट हाउस से जिन्दा लौटकर नहीं आ सकता था। उसने अपनी जान पर खेलकर मेरी जान बचाई है।"

"उसने गेस्ट हाउस में होने वाले हंगामे की तफसील बता दी थी—लेकिन वह कौन लोग थे टाइगर या उसके आदमी?" थाई ने पूछा।

"किम और दारा।" काला ने जवाब दिया।

"क्या?" थाई उछल पड़ी।

"हां... ।" काला ने कहा—"जिन्दगी में पहली बार सीधे उनसे सामना हुआ था। वह शायद मुझे अब भी बच्चा ही समझ रहे थे लेकिन मैंने उनकी जो दुर्गत बनाई है उसे शायद वह अरसे तक नहीं भूल सकेंगे। अगर मैं अकेला होता तो शायद क्या बल्कि यकीनन किसी बड़ी मुसीबत में फंस सकता था लेकिन रामन प्रसाद ठीक वक्त पर वहां पहुंच गया था।"

"इसलिए मैंने तुम्हें मना किया था कि अकेले बाहर मत निकलो।" थाई ने उसे घूरते हुए कहा—"अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो ...तो... ।" वह उसके आगे कुछ नहीं कह सकी थी।

काला बच्चा भी कुछ कहने के बजाए गहरी नजरों से थाई की तरफ देखता रहा। उसी रात थाई ने काला बच्चा के कहने पर मास्टर होचिन को फोन किया तो यह दिलचस्प रहस्योद्घाटन हुआ कि उन लोगों को पिछली रात ही इस घटना का पता चल गया था और मास्टर होचिन के आदमी काला को शहर भर में तलाश कर रहे थे ताकि

उसकी हिफाजत का प्रबन्ध किया जा सके।

"मैं बिल्कुल सुरक्षित हूं मास्टर होचिन।" काला ने कहा—"अब मैंने अपने दुश्मनों से टकराना सीख लिया है। तुम मेरी फिक्र मत करो।"

"वह लोग शिकारी कुत्तों की तरह पूरे शहर में तुम्हें तलाश करते फिर रहे हैं।" मास्टर होचिन ने कहा—"आज दोपहर वह हमारे आदमियों से भी उलझ पड़े थे। हमारा एक आदमी अत्यधिक जख्मी हुआ है। मुझे पता चला है कि रात को गेस्ट हाउस में फायरिंग भी हुई थी। तुम ठीक तो हो ना। तुम्हारी आवाज से मुझे शक हो रहा है।"

"रात को मुझे दो गोलियां लगी थीं।" काला बच्चा ने जवाब दिया—"परेशानी की कोई बात नहीं है मास्टर! एक गोली जिस्म में रह गयी थी जिसे आप्रेशन करके निकाल दिया गया है। मैं चंद रोज में बिल्कुल ठीक हो जाऊंगा।"

"अगर तुम अपना ठिकाना बता दो तो तुम्हारी हिफाजत का बन्दोबस्त कर दिया जाए।" मास्टर होचिन ने कहा।

"मैं बिल्कुल सुरक्षित हूं मास्टर!" काला ने जवाब दिया—"अगर किसी और को मेरी सुरक्षा के लिए रखा गया तो वह दूसरों की नजरों में आ जायेगा और इस तरह मैं भी निगाहों में आ जाऊंगा, फिलहाल वैसे भी मैं बिस्तर से नहीं उठ सकूंगा इसलिए चंद रोज तक तो मेरे लिए परेशान होने की जरूरत नहीं। इस दौरान में अगर कोई इमरजेन्सी हुई तो मैं फौरन सम्पर्क करूंगा।"

"ओ.के. ब्वाय।" मास्टर होचिन ने गहरा सांस लेते हुए कहा—"तुम बहुत जिद्दी हो, अपना ख्याल रखना।"

काला बच्चा ने रिसीवर रख दिया और थाईवांग की तरफ देखने लगा।

वक्त की रफ्तार जैसे थम गयी थी, एक-एक दिन बरसों समान लग रहा था। काला के जख्म यद्यपि तेजी से भरते जा रहे थे लेकिन उसे बिस्तर से उठने की इजाजत नहीं थी। जानकी देवी उसे देखने के लिए दिन में दो मर्तबा जरूर आती थी और थाईवांग...उसने तो अपने आपको काला के लिए पूरी तरह समर्पित कर रखा था। वह ज्यादातर काला के पास ही बैठी बातें करती रहती। वह काला बच्चा का मुंह-हाथ धुलाती। अपने हाथ से नाश्ता और खाना खिलाती और उसकी हर जरूरत का ख्याल रखती थी।

रामन प्रसाद भी कैद होकर रह गया था बल्कि वह खुद भी

काला को छोड़कर नहीं जाना चाहता था। वह भी काला के आसपास मंडराता रहता।

"बॉस!" एक रोज वह काला बच्चा के करीब बेड के करीब कुर्सी पर बैठते हुए बोला—"यह तो मालूम हो गया है कि वह कौन लोग हैं और उनसे तुम्हारी क्या दुश्मनी है लेकिन...।"

"लेकिन क्या?" काला बच्चा ने सवालिया निगाहों से उसकी तरफ देखा।

"वह लोग तो तुम्हारी तलाश में होंगे। तुम्हारे बारे में मालूमात हासिल करते फिर रहे होंगे। लेकिन हम उनकी सरगर्मियों से कतई नाइल्म हैं। क्या यह बेहतर न होगा कि हम भी उनके बारे में कुछ मालूम करने की कोशिश करें।" प्रसाद ने कहा।

"महाराज के आदमी उनके पीछे लगे हुए हैं।" काला ने जवाब दिया।

"वह मैं जानता हूं।" प्रसाद बोला—"टाइगर और उसके आदमी महाराज के आदमियों को पहचानते हैं। मेरा मतलब था कोई ऐसा आदमी जिसे वह न जानते हों और वह उनके बीच में रहकर उनकी सरगर्मियों से आगाह हो सके।"

"क्या कहना चाहते हो?" काला बच्चा ने उसे घूरा। वैसे काला बच्चा उसका मतलब समझ गया था।

"बॉस! यह मत समझना कि मैं तुमसे तंग आ गया हूं या यहां से भागना चाहता हूं।" प्रसाद ने कहा—"मुझे वह लोग नहीं जानते। अगर मैं उनके अन्दर घुसने की कोशिश करूं तो उनकी सरगर्मियों का पता चल सकता है।"

"उस रात तुम मेरे साथ थे। पहचान लिए जाओगे।"

"नहीं बॉस!" प्रसाद मुस्कराया—"हमारा साथ तो चंद मिनट का था। उन्हें तो पता भी नहीं चला होगा कि मैं तुम्हारे साथ हूं और जब मैंने ऊपर आकर हमला किया था तो उन दोनों में से किसी को इतना होश कहां रहा होगा कि मेरा चेहरा याद रख सकें। तुम्हें तो इसलिए पहचान लिया गया कि वह तुम्हें पहले से पहचानते थे। मुझे कोई नहीं पहचान सकेगा और अगर पहचान भी लिया गया तो वह मुझसे तुम्हारे बारे में मालूम नहीं कर सकेंगे। वह मेरी बोटी-बोटी कर डालेंगे। तब भी तुम्हारा नाम मेरी जुबान पर नहीं आयेगा।"

"मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।" काला ने कहा—"लेकिन ऐसा रिस्क लेने की क्या जरूरत है।"

"रिस्क तो लेना ही पड़ेगा बॉस।" प्रसाद ने कहा—"हम

जिन्दगी भर तो इस चार-दीवारी में कैद होकर रह नहीं सकते और मैं जानता हूं कि ठीक होने के बाद तुम भी चैन से नहीं बैठोगे। तुम्हारे पास पहले से कुछ मालूमात होगी तो तुम्हें अपने काम में आसानी रहेगी।"

"वैसे भी मैं सोच रहा हूं कि हमारे पास एक और पनाहगाह होनी चाहिए ताकि किसी हंगामी परिस्थिति में हमें कोई परेशानी न हो।" काला ने कहा—"तो फिर ऐसा करते हैं कि तुम कल सुबह यहां से निकलो और सबसे पहले किसी ऐसे फ्लैट या मकान का बन्दोबस्त करो, जो वक्त जरूरत पर हमारे काम आ सके और अगर इस दौरान में तुम उनकी नजर में आ गये तो...?"

"फिक्र मत करो बॉस...।" प्रसाद ने काला बच्चा की बात काट दी—"ऐसी सूरत में मैं इधर का रुख नहीं करूंगा।"

थाईवांग खामोशी से उनकी बातें सुन रही थी। उसने प्रसाद की बातों का समर्थन किया था। उसके ख्याल में यह मुनासिब तजवीज थी। दारा वगैरह की सरगर्मियों पर निगाह रखना जरूरी था।

अगले रोज सुबह दस बजे के करीब प्रसाद उसके सामने आया तो काला बच्चा उसे देखकर बगैर चौंके न रह सका। वह काला बच्चा के कपड़े पहने हुए था और उसका चेहरा भी बदला हुआ-सा लग रहा था। कल रात तक उसके बाल गर्दन तक फैले हुए थे लेकिन अब उसके बाल छोटे और सलीके से तराशे हुए थे।

"यह थाईवांग के हाथों का कमाल है।" प्रसाद ने मुस्कराते हुए कहा—"उसने मुझे आदमी बनाने में पूरा एक घण्टा लगाया है।"

उसी लम्हे थाईवांग भी कमरे में दाखिल हुई। उसने नोटों का एक बण्डल प्रसाद के हाथ में थमा दिया।

"सबसे पहले तुम्हें मकान का बन्दोबस्त करना है।" वह बोली—"और मकान ऐसा हो, जो हर लिहाज से हमारे लिए सेफ हो—उसके बाद तुम किसी दूसरे काम पर ध्यान दोगे।"

जवाब में प्रसाद ने केवल मुस्कराना ही काफी समझा। थोड़ी देर बाद वह रुखसत हो गया। थाईवांग बाहर का गेट बन्द करके काला बच्चा के पास आ गई।

"सुबह जानकी का फोन आया था।" वह कुर्सी पर बैठते हुये बोली—"वह किसी व्यस्तता की वजह से इस वक्त नहीं आ सकती। शाम को चक्कर लगायेगी। वैसे उसने कहा था कि तुम्हें अब उठकर थोड़ा बहुत चलना चाहिए।"

"पन्द्रह दिन हो गये बिस्तर पर पड़े-पड़े। मैं खुद भी उकता

गया हूं।" काला बच्चा ने उसकी तरफ देखते हुए कहा।

"तो फिर अभी शुरू हो जाये यह एक्सरसाइज।" थाई ने कहा।

काला बच्चा उस वक्त अधलेटा था। अपने आपको ऊपर खींचकर बैठ गया। इन चंद दिनों में शुरू के दो चार दिन तो वह बिल्कुल ही बे हरकत रहा था। फिर लेटे-लेटे टांग और बाजू को आहिस्ता-आहिस्ता हरकत देने लगा था। टांग में ज्यादा तकलीफ थी।

थाईवांग ने उसे सहारा देकर फर्श पर खड़ा कर दिया। काला बच्चा ने अपना तंदुरुस्त बाजू उसके गले में डाल दिया। थाई ने भी एक बाजू उसके गिर्द जमा दिया था, इस तरह उसका सारा बोझ थाई पर था।

दायीं टांग की नसों में तनाव था। शुरू में तो पैर जमीन पर रखते हुए भी तकलीफ महसूस हो रही थी लेकिन फिर आहिस्ता-आहिस्ता यह खिंचाव कम होता गया। थाई उसे सहारा दिए हुए पंद्रह-बीस मिनट तक पूरे घर में घुमाती रही और फिर दोबारा बिस्तर पर लिटा दिया।

रामन प्रसाद उस रात वापस नहीं आया और न ही अगले रोज उसने कोई खबर दी—हालांकि उसके पास यहां का टेलीफोन नम्बर मौजूद था।

"तुमने बताया था कि वह मोटर मैकेनिक है और पैसा कमाने के लिए पताया से यहां आया था।" थाईवांग ने काला की तरफ देखते हुए कहा। वह उस वक्त काला के बेड पर बैठी अपने हाथ से उसे सूप पिला रही थी—"कहीं ऐसा तो नहीं कि वह बड़ी रकम उसके हाथ आई तो वह रफू चक्कर हो गया हो।"

"ऐसा नहीं हो सकता।" काला ने जवाब दिया—"मैंने उसे पहचानने में कोई गलती नहीं की। हो सकता है किसी वजह से वह हमसे सम्पर्क न कर सका हो—लेकिन यह बात तो मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि वह हमारे साथ धोखा नहीं कर सकता।"

और फिर वह देर तक उसके बारे में बातें करते रहे। यह संयोग की बात थी कि उस रोज जानकी देवी भी नहीं आई थी और न ही उसने फोन किया था।

काला बच्चा जब से बीमार हुआ था थाईवांग उसी के कमरे में सोती थी। उसने बेड के करीब ही सेटी डाल ली थी। वह ज्यादातर तो कुर्सी पर ही बैठी रहती और जब काला बच्चा सो जाता तो वह भी सेटी पर बैठकर ऊंघ लेती। सोते में करवट बदलते हुए काला

बच्चा के मुंह से कराह भी निकलती तो वह उठकर उसके पास आ जाती। वह जिस तरह काला बच्चा की देखभाल कर रही थी, ऐसी मिसाल मिलना मुश्किल थी।

एक हफ्ता और गुजर गया। प्रसाद की तरफ से कोई सूचना नहीं थी। अब काला बच्चा को भी उसकी तरफ से परेशानी होने लगी थी, इसलिए नहीं कि वह पैसे के लिए भाग गया होगा बल्कि वह यह सोच रहा था कि कहीं किसी मुसीबत में न फंस गया हो। इस दौरान में काला बच्चा की एक्सरसाइज जारी थी। पहले वह थाई का सहारा लेकर चलता था अब बगैर सहारे के चलने लगा। जानकी भी उसके इलाज पर पूरा ध्यान दे रही थी। मास्टर होचिन से भी फोन सम्पर्क होता रहा था।

प्रसाद को गये हुए वह ग्यारहवां दिन था। वह बिस्तर पर आंखें बन्द किए लेटा था, दिमाग पर कुछ धुंध-सी छाई थी। शायद वह सो जाता लेकिन टेलीफोन की घण्टी की आवाज से चौंक गया। गहरी खामोशी में वह आवाज बम के धमाके से कम साबित नहीं हुई थी। सेटी पर ऊंघती थाई भी उछल पड़ी। कई रोज से टेलीफोन उसी कमरे में रखा हुआ था। थाई ने पहले काला बच्चा की तरफ देखा और फिर सेटी के सिरहाने की तरफ एक साइड टेबिल पर रखते हुए टेलीफोन की तरफ देखने लगी।

"इस वक्त किसका फोन हो सकता है।" वह कुछ नर्वस-सी नजर आ रही थी।

"शायद जानकी देवी हो। इसके सिवा और कौन हो सकता है।" काला ने कहा।

थाईवांग ने रिसीवर उठा लिया। वह रिसीवर कान से लगाये खामोश रही। उसने हैल्लो भी नहीं कहा था और जब दूसरी तरफ से हैल्लो कहा गया तो वह बोली–

"हैल्लो! कौन हो तुम...किससे बात करनी है?"

और फिर दूसरी तरफ से आवाज सुनकर थाई को इत्मीनान सा आ गया। उसने रामन प्रसाद का नाम लेते हुए रिसीवर काला बच्चा की तरफ बढ़ा दिया।

"हैल्लो प्रसाद।" कहां गायब हो। कुशल तो है।" काला बच्चा ने माउथपीस पर कहा।

"सॉरी बास! इतने दिन तक तुम्हें सूचना न दे सका।" रिसीवर पर प्रसाद की आवाज सुनाई दी–"दरअसल कुछ ऐसी परिस्थिति में फंस गया था कि मुझे तुमसे फोन पर भी सम्पर्क करने का मौका

नहीं मिल सका। मेरे पास कुछ दिलचस्प और सनसनीखेज सूचनायें हैं। अगर तुम जाग रहे हो तो आ जाऊं।"

"तुम इस वक्त कहां से बोल रहे हो।" काला ने पूछा।

"वांगदंग याए रेलवे स्टेशन के एक पब्लिक फोन बूथ से।" प्रसाद ने जवाब दिया—"मुझे वहां पहुंचने में चंद मिनट से ज्यादा नहीं लगेंगे।"

"ठीक है—आ जाओ। मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूं।" काला ने कहकर रिसीवर थाई को थमा दिया जिसे उसने क्रेडिल पर रख दिया—"वह वांगदंग रेलवे स्टेशन के करीब है चंद मिनट में पहुंच जायेगा।" काला बच्चा ने थाई की तरफ देखते हुए कहा।

वांगदंग याए रेलवे स्टेशन किंग टाक्सन की प्रतिमा वाले चौराहे से जरा आगे था। उनके घर का फासला आधे मील से ज्यादा नहीं था और काला बच्चा के ख्याल में रामन प्रसाद को ज्यादा से ज्यादा पन्द्रह मिनट में पहुंच जाना चाहिए था।

काला बच्चा का ख्याल दुरुस्त निकला। ठीक पन्द्रह मिनट बाद कॉलबैल की आवाज सुनाई दी। थाई ने उस वक्त स्लीपिंग सूट पहन रखा था। उसने टेबिल पर रखी हुई फल काटने वाली छुरी उठाई और काला बच्चा की तरफ देखती हुई बाहर निकल गयी। चंद मिनट बाद वह रामन प्रसाद के साथ अन्दर दाखिल हो रही थी।

रामन प्रसाद नीले रंग की खुले पांयचे वाली पतलून और सफेद शर्ट पहने हुए था। क्लीन शेव और सलीके से बने हुए बाल। वह खासा स्मार्ट लग रहा था। उसने आगे बढ़कर पहले काला बच्चा से हाथ मिलाया फिर पेशानी पर बोसा दिया और बेड के करीब बैठकर काला बच्चा की कुशलता पूछने लगा।

"कहां गायब रहे।" अंततः काला बच्चा ने पूछा—"और वह दिलचस्प और सनसनीखेज खबरें क्या हैं, जिनका तुमने टेलीफोन पर जिक्र किया था।"

"इन चंद दिनों के दौरान में मैं यह जान चुका हूं कि किम और दारा कौन हैं और वह तुम्हारे दुश्मन क्यों हैं?" रामन प्रसाद ने कहा—"मैं ज्यादा डीप नहीं जाऊंगा क्योंकि तमाम हालात व वाक्यात तुम मुझसे बेहतर समझते हो। मुझे जो कुछ मालूम हुआ है उसका खुलासा यह है कि दारा हेरोइन की स्मगलिंग का एक रैकेट बनाने के लिए सिंगापुर आया था लेकिन वहां तुम्हारे बाप से आमना-सामना हो गया। दारा का ख्याल था कि तुम्हारा बाप सिंगापुर में उसके रास्ते की रुकावट बन सकता है, इसलिए उसने किम और

चीफांग जैसे क्रूर दरिन्दों की मदद से तुम्हारे मां-बाप का कत्ल कर डाला लेकिन यह रहस्योद्घाटन बाद में हुआ कि तुम बच गये हो और इस वारदात के चश्मदीद गवाह हो, उन्होंने तुम्हें कत्ल करने की कोशिश शुरू कर दी, जिसमें वह अब तक कामयाब नहीं हो सके। वह लोग तुम्हारा पीछा करते हुए पहले कुवालाम्पुर और फिर यहां आ गये। यहां उन्होंने टाइगर की खिदमत हासिल कर ली लेकिन तुम्हें भी महाराज ने अपनी पनाह में ले लिया, इसलिए उनका काम कुछ मुश्किल हो गया और फिर महाराज से टाइगर की जंग छिड़ गयी, जिसके नतीजे में कई आदमी मारे गये और यह सिलसिला जारी है।" वह चंद लम्हे खामोश हुआ फिर बात जारी रखते हुए बोला—"दारा नाम का वह शख्स जो तुम्हारा असली दुश्मन है, तुम्हारे काम तमाम करने की ड्यूटी टाइगर को सौंपकर कई बार सिंगापुर जा चुका है और उसने वहां अपना एक सिंडीकेट कायम कर लिया है, जिसमें तीन बड़े शामिल हैं। एक आदमी पाकिस्तानी है जो कुछ अर्सा पहले ही वहां आया था। दूसरा एक स्थानीय यूरेशियन है और तीसरा एक इंडियन है। इस सिन्डीकेट का सरदार दारा ही है। अभी माल की आमद का सिलसिला शुरू नहीं हुआ। शुरुआती इन्तजामात हो रहे हैं और इसके अलावा दारा और टाइगर गोल्डन ट्राईएंगिल में भी किसी से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश कर रहे है। चीफांग इस सिलसिले में इन दिनों च्यांगराय गया हुआ है।"

यह खबरें वाकई चौंका देने वाली और सनसनीखेज थीं।

"तुम्हें यह सब कुछ कैसे मालूम हुआ?" काला बच्चा ने पूछा।

"पैसे में बड़ी ताकत होती है बॉस।" प्रसाद मुस्कराया—"उसे रोज यहां से निकलने के बाद मैंने सबसे पहले तुम्हारी इच्छा के अनुसार एक मकान का बन्दोबस्त किया। यह मकान दरिया के उस तरफ फरान नोक रोड की एक बगली गली सोय फिफ्टी सेवन पर है और हर लिहाज से सेफ है और दिलचस्पी की बात यह है कि उसके नीचे एक तहखाना भी है—।" बहरहाल वह चंद लम्हे खामोश हुआ फिर बोला—"उस रात मैं उस गेस्ट हाउस में गया, जहां दारा और किम से दो-दो हाथ हुए थे। मेरे दिल में हल्का-सा खौफ भी था कि अगर पहचान लिया गया तो वह लोग मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेंगे। वहां दारा भी था और किम भी। वह दो-तीन मर्तबा मेरे करीब से गुजरे लेकिन मुझे नहीं पहचान सके। भिड़ंत वाली रात उनका सारा ध्यान तुम पर था। मैं तो साये की तरह उनके सामने आया था। वह तो मेरा चेहरा भी न देख सके होंगे, इसलिए मुझे नहीं पहचान सके थे। वहीं पर

मेरी मुलाकात पामेला नामक एक लड़की से हो गयी। उस लड़की का बाप हिन्दू और मां थाई है। उसकी मां भी एक शिकारी औरत थी—बेटी भी उसके नक्शे-कदम पर चल रही है। पामेला ने मुझे भी शिकार समझकर फांसने की कोशिश की थी और मैं फंस गया था। वह मुझे बिगड़ा हुआ दौलतमंद नौजवान समझ रही थी और मेरे पास पैसे की कमी नहीं थी। मैंने उसे बढ़िया से बढ़िया शराब पिलाई और उस पर दिल खोलकर पैसा खर्च किया।

पामेला को मैंने बताया कि मेरा सम्बन्ध च्यांगराय से है और मैं यहां कोई व्यापार करना चाहता हूं। वह मुझे तरह-तरह के मशवरे देती रही और फिर हुआ यह कि मैं रोजाना पामेला से मिलने लगा। मैं उसे एक मर्तबा भी अपने उस मकान पर लेकर नहीं गया बल्कि वह मुझे अपने साथ लेकर जाती रही। वह चायना टाउन के इलाके में एक घटिया से फ्लैट में अपने बाप के साथ रहती है। पामेला की मां पिछले साल एक गुण्डे के हाथों मारी गयी थी और बाप शराबी है। उसे किसी काम-धन्धे से कोई दिलचस्पी नहीं। उसने शराब ही को अपनी जिन्दगी बना लिया है। जब उसे शराब के लिए पैसे नहीं मिलते तो बेटी को मारता-पीटता है।

मैंने पहले ही रोज अन्दाजा लगा लिया था कि पामेला का सम्बन्ध टाइगर के सर्कल से है। मेरा यह अन्दाजा दुरुस्त साबित हुआ था, इसलिए मैं पामेला को अपनी गिरफ्त में लेने के लिए उस पर पैसे लुटाता रहा और उसके बाप को भी बर्दाश्त करता रहा। मेरी मेहनत व्यर्थ नहीं गयी लेकिन उन लोगों को भी शायद मुझपर किसी किस्म का शक हो गया था। पामेला मुझसे थाईवांग, काला बच्चा और महाराज के कुछ खास आदमियों के बारे में कुरेदती रहती थी। महाराज के आदमियों के नाम पर तो मैं बुरी तरह भड़क उठता था। मैंने बातों ही बातों में उस पर जाहिर कर दिया था कि महाराज के आदमियों के हाथों मेरा एक अजीज-तरीन दोस्त मारा गया था, इसलिए मैं महाराज और उसके आदमियों को अपना बदतरीन दुश्मन समझता हूं लेकिन मेरे पास इतनी ताकत नहीं कि अपने दोस्त के कत्ल का इन्तकाम ले सकूं और इस नफरत की वजह से मैं महाराज या उसके किसी आदमी का नाम भी नहीं सुनना चाहता और अंततः कई रोज बाद मेरी मेहनत रंग लाई और कल रात पामेला ने इन बातों को बताया जो मैं अभी बता चुका हूं।''

''तुम तो वाकई बहुत काम के आदमी निकले।'' काला बच्चा ने मुस्कराकर प्रसाद की तरफ देखा।

"काला बच्चा यह तुम्हारे सामने बैठा है।" थाईवांग ने पहली बार जुबान खोली—"इसी की जिन्दगी जहन्नुम बना रखी है उन वहशियों ने।"

"ओह!" प्रसाद चौंक गया—"सॉरी बस! मुझे तुम्हारा नाम मालूम नहीं था। वैसे एक बात बताऊं—तुम्हारे नाम ने उन पर दहशत तारी कर रखी है। वह तुम्हें हर कीमत पर खत्म करना चाहते हैं।"

"और मैं उनके लिए डेथ वारंट की हैसियत रखता हूं।" काला बच्चा ने कहा—"मैं अभी पूरी तरह तैयार नहीं हूं। उस रोज जो कुछ भी हुआ उससे उन्होंने अन्दाजा लगा लिया होगा कि मैं उनका मुकाबला करने की हिम्मत रखता हूं लेकिन मैं समझता हूं कि अभी मुझे इतनी ताकत नहीं मिली कि खुलकर उनका मुकाबला कर सकूं, इसलिए मैं खुद भी उनसे छिपता फिर रहा हूं।"

"फिक्र मत करो बॉस।" प्रसाद ने कहा—"आज तुम उनसे छिपते फिर रहे हो, कल वह अपनी जान बचाने के लिए पनाह ढूंढते फिरेंगे। वैसे पामेला के बारे में एक बात बताना भूल गया।"

"वह क्या?" काला बच्चा ने सवालिया निगाहों से उसकी तरफ देखा।

"दारा बैंकाक आया था तो सबसे पहले उसकी मुलाकात पामेला से हुई थी।" प्रसाद ने कहा—"वह कई रोज पामेला के पास रहा था और फिर पामेला के ही माध्यम से उसकी मुलाकात टाइगर से हुई थी। पामेला कभी-कभी टाइगर के किसी क्लब में डांस प्रोग्राम भी करती है लेकिन पिछली रात उसकी बातों से मैंने अन्दाजा लगाया था कि वह दारा से कुछ खिंची-खिंची सी रहने लगी है। इसकी वजह शायद यह है कि दारा अब दूसरी लड़कियों पर ज्यादा ध्यान देने लगा है।"

"हां...यह बात हो सकती है।" काला ने कहा—"औरत की फितरत बड़ी अजीब होती है। वह जब किसी मर्द को अपना बना लेती है तो उसे अपनी मिलकियत समझने लगती है और जब वह मर्द किसी और औरत की तरफ आकर्षित होता है तो वह उसे पसन्द नहीं करती और कभी-कभार तो वह ऐसा भयानक इन्तकाम लेती है कि देखने वाले कांप उठते हैं। अब तुम्हें करना यह है कि बातों का जाल बिछाकर पामेला को अपनी गिरफ्त में ले लो और किसी तरह उससे सिंगापुर के उन तीनों आदमियों के नाम वगैरह मालूम करने की कोशिश करो, जो दारा की सिंडीकेट के पार्टनर हैं। यह काम तुम्हें बड़ी होशियारी से करना होगा, अगर उसे जरा भी शक

हो गया तो तुम्हारी जिन्दगी का चिराग गुल हो जायेगा। इसके साथ ही तुम्हें एक और काम करना होगा।"

"वह क्या?" प्रसाद ने पूछा।

"चायना टाउन के इलाके में एक छोटा-सा फ्लैट किराये पर ले लो ताकि तुम्हारे पास एक अस्थाई ठिकाना हो जाए।" काला ने कहा—"अगर तुम्हें और पैसों की जरूरत हो तो... ।"

"मेरे पास इतने पैसे हैं कि मैं एक महीना आराम से गुजार सकता हूं।" प्रसाद ने जवाब दिया—"तो ठीक है अब मैं चलता हूं।"

"रुकोगे नहीं।" काला ने पूछा।

"नहीं।" प्रसाद ने इंकार में सिर हिला दिया—"अगर रात भर गायब रहा तो कहीं पामेला को किसी किस्म का शक न हो जाए।"

"ओ.के. विश यू गुड लक।"

"सेम टू यू।" प्रसाद ने मुस्कराते हुए हाथ हिलाया।

उसके जाने के बाद थाई गेट बन्द करके आई तो सेटी पर लेटने की बजाए कुर्सी पर बैठ गयी। काला बच्चा की तरह अब उसकी भी नींद गायब हो गयी थी।

"सॉरी काला बच्चा! मुझे इस लड़के की नीयत पर शक नहीं करना चाहिए था।" थाई ने काला बच्चा की तरफ देखते हुए कहा।

"आज तो मैं भी कुछ ऐसी ही बातें सोचने लगा था।" काला ने मुस्कराते हुए कहा और फिर वह प्रसाद ही के बारे में बातें करने लगे।

प्रसाद ने काला बच्चा को मायूस नहीं किया था। काला बच्चा ने उसे सिर्फ एक वक्त का खाना खिलाया था और वह काला का जरखरीद गुलाम बन गया था। काला बच्चा का उस पर कोई दबाव नहीं था लेकिन वह दोस्ती के नाम पर अपनी जान तक लुटाने को तैयार हो गया था। वह सचमुच एक सच्चा और खरा आदमी था। अगर वह न मिलता तो दारा के बारे में यह तमाम जानकारियां न मिल पातीं। काला को पता ही न चलता कि वह सिंगापुर में सिंडीकेट बना चुका है। काला बच्चा ने तय कर लिया कि वह दारा को उसके घिनावने मकसद में हरगिज कामयाब नहीं होने देगा।

एक सप्ताह और गुजर गया। रामन प्रसाद फिर गधे के सींग की तरह गायब हो गया था लेकिन अब काला बच्चा को उसकी तरफ से कोई परेशानी नहीं थी, काला बच्चा समझ गया था कि वह एक दिलेर और जहीन नौजवान है और हर किस्म की परिस्थिति का मुकाबलना करना जानता है और उसके बारे में परेशान होने की जरूरत

नहीं थी।

काला बच्चा अब किसी सहारे के बगैर चलने लगा था, जख्मों से खून बह जाने से उसके अन्दर जो कमजोरी पैदा हुई थी, वह धीरे-धीरे दूर हो रही थी। जानकी देवी की दी हुई दवायें बड़ी तेजी से अपना असर दिखा रही थीं और सबसे बढ़कर थाईवांग की तीमारदारी। काला बच्चा को उस औरत पर हैरत हो रही थी। उसने काला के लिए दिन रात एक कर दिया था। वह इस तरह काला बच्चा की देखभाल कर रही थी कि कोई मां अपने बच्चे की देखभाल भी न करती होगी लेकिन वह काला को अपना बच्चा तो बहरहाल नहीं समझती थी। काला यह भी नहीं जानता था कि उसने जहनी तौर पर उससे क्या रिश्ता वाबस्ता कर रखा था लेकिन उस रिश्ते की गहराई का अन्दाज वह लगा सकता था।

जानकी देवी अब रोजाना नहीं दो-तीन दिन के अंतराल के बाद आती थी। काला को इस तरह से तेजी से स्वस्थ होते देखकर वह भी हैरान थी। उस रात वह काला बच्चा को देखने के लिए आई तो काला बच्चा लॉन में टहल रहा था। थाई लॉन के बीच में कुर्सी पर बैठी हुई थी। उसने काला बच्चा की एक्सरसाइज में एक भी नागा नहीं होने दी थी और वह थाईवांग ही थी जिसकी वजह से वह इब वक्त चल फिर रहा था। अगर वह न होती तो काला अब तक शायद बिस्तर पर ही पड़ा होता लेकिन थाई ने काला बच्चा के अन्दर हिम्मत पैदा की थी और अब वह उसे एक-एक घण्टे तक चलाती रहती थी।

उस वक्त रात के साढ़े दस बजे थे। उसे टहलते हुए आधा घण्टा हो चुका था। कभी वह रुककर थाई से बातें करने लगता और कभी फिर चलने लगता। उसी दौरान एक कार गेट के सामने आकर इस तरह रुकी कि उसकी हैडलाइट्स की रोशनी गेट की झिरियों से अन्दर आने लगी। काला बच्चा लॉन के उस हिस्से की तरफ चला गया जहां पौधों की बहुतायत थी। पौधों के पीछे दीवार के साथ चलता हुआ काला बच्चा गेट के करीब पहुंचकर पौधों के पीछे रुक गया। थाई अभी तक कुर्सी पर बैठी हुई थी और जब कॉलबैल की आवाज सुनाई दी तो वह उठकर गेट की तरफ चलने लगी। काला बच्चा भी तैयार खड़ा था कि अगर कोई गड़बड़ हो तो कोई कार्यवाही कर सके। थाई ने काला की तरफ देखा फिर गेट खोलने से पहले ऊंची आवाज में पूछा।

"कौन है...बाहर कौन है?"

"मैं हूं जानकी।"

यह आवाज सुनकर काला बच्चा के मुंह से भी गहरा सांस निकल गया। थाई ने गेट खोल दिया और जानकी अन्दर आ गयी उसने एक बास्केट भी उठा रखी थी जिससे जरूरत की और चीजों के अलावा फल वगैरह भी थे।

जानकी देवी भी कुछ देर उनके साथ वहां बैठी रही और फिर वह अन्दर आ गये। जानकी ने खुद ही बास्केट की चीजें निकालकर मेज पर रख दीं और वह सेब प्लेट में काटकर ले आई।

"मुझे आशा नहीं थी कि तुम इतनी जल्दी बिस्तर से उठकर चलने-फिरने लगोगे। वह काला बच्चा की तरफ देखती हुई बोली...मैं तुम्हारे हौंसले और बुलन्द इरादे की दाद देती हूं। कुछ लोग तो मामूली तकलीफ पर भी महीनों बिस्तर से लगे रहते हैं और तुम्हारी तरह मजबूत इरादों के लोग बीमारी की हालत में भी बिस्तर पर लेटना पसंद नहीं करते।"

"इसमें हौंसले और बुलन्द इरादों वाली तो कोई बात नहीं है। मेरी इस तरह चलने-फिरने की कोशिश में थाई की कोशिश का ज्यादा दखल है। अगर यह न होती तो मैं अब तक वाकई बिस्तर पर पड़ा होता।"

"हां, मैं थाई की हिम्मत की भी दाद दूंगी।" जानकी बोली—"अच्छा अब तुम अपना बाजू दिखाओ।"

काला बच्चा ने शर्ट की आस्तीन ऊपर उठा दी। पट्टी तो कई रोज पहले उतार दी गयी थी। जख्म की जगह और उसके आसपास सुर्ख निशान-सा रह गया था जिस पर बाकायदगी से मरहम लगाया जा रहा था। जानकी ने सिर हिला दिया और काला की तरफ देखते हुए बोली—

"अब इस सोफे पर लेट जाओ। मैं तुम्हारी पिंडली के जख्म का निरीक्षण करूंगी।" काला बच्चा ने उसकी हिदायत पर अमल किया।

"ठीक है।" वह काला बच्चा की टांग का निरीक्षण करने के बाद बोली—"यही दवा इस्तेमाल करते रहो। सिर्फ चंद रोज की बात है उसके बाद तो तुम घोड़े की तरह दौड़ने लगोगे।" वह चंद लम्हों को खामोश हुई फिर बारी-बारी उन दोनों की तरफ देखते हुए बोली—"अब तुम्हारे लिए एक और सूचना है।"

"वह क्या?" काला बच्चा ने चौंककर उसकी तरफ देखा।

"कल शाम एक भिक्षु मेरे क्लीनिक पर आया था।" जानकी

ने कहा—"किसी भिक्षु का क्लीनिक पर आना कोई नयी बात नहीं है। सरकारी हस्पताल होने के बावजूद यह भिक्षु लोग अपना इलाज कराने के लिए जिस क्लीनिक में चाहे घुस जाते हैं लेकिन वह भिक्षु बीमार नहीं था।"

"तो फिर...।" काला बच्चा ने उलझी हुई नजरों से उसकी तरफ देखा।

"वह मुझे किसी औरत को दिखाने के लिए अपने साथ ले जाना चाहता था।" जानकी ने कहा और चंद लम्हों की खामोशी के बाद बोली—"उस वक्त क्लीनिक पर कुछ मरीज मौजूद थे। मैंने उसे एक घण्टे बाद आने को कहा और एक घण्टे बाद जब मैं क्लीनिक बन्द करने के लिए बाहर निकली तो वह भिक्षु एक तरफ बैठी मेरा इन्तजार कर रहा था। मुझे उसके साथ जाना पड़ा। वह भिक्षु सीलाम रोड की एक बगली गली में स्थित एक इमारत में ले गया। जिसकी तीसरी मंजिल पर स्थित फ्लैट में वह औरत मौजूद थी, जिसे वह दिखाना चाहता था।"

"वह औरत कौन थी?" काला ने पूछा।

"मैं उसे नहीं जानती। उसका नाम शाईवान है। भिक्षु ने बताया कि यह लड़की उसे सड़क पर बड़ी पस्त हालत में पड़ी हुई मिली थी, जिसे वह उठाकर अपने फ्लैट में ले आया। पड़ोस के फ्लैट में रहने वाली औरत की मदद से उसका हुलिया दुरुस्त कर दिया और इस बिल्डिंग में रहने वाली एक नर्स को बुला लिया लेकिन बात नर्स की समझ में नहीं आ सकी थी या जानबूझ कर वह पीछे हटना चाहती थी। उसने मशवरा दिया कि इस लड़की को हस्पताल ले जाया जाए और वह भिक्षु हस्पताल ले जाने के बजाए मेरे पास आ गया।"

"क्या नाम बताया था तुमने शाईवान?" काला ने पूछा।

"हां...बड़ी खूबसूरत लड़की है।" जानकी ने जवाब दिया।

"बात कुछ समझ में नहीं आई।" काला बड़बड़ाया—"भिक्षु तो आमतौर पर खानकाह में ही रहते हैं अगर उसे सड़क पर कोई औरत पड़ी मिली थी तो वह उसे हस्पताल पहुंचा देता लेकिन फ्लैट में...।"

"तुम यहां के भिक्षुओं को नहीं जानते।" जानकी ने कहा—"यह लोग तो हमारे मन्दिरों के पुजारियों से भी चार हाथ आगे हैं। कुछ लोग तो महज इसलिए भिक्षुओं का लबादा ओढ़े हुए हैं कि उनसे कोई पुच्छ-गुच्छ न की जाए। ऐसे भिक्षु करोड़पति होते हैं और नाजायज जरिए से दौलत समेटते हैं और ऐसे-ऐसे गैर कानूनी धन्धे

करते हैं जिनके बारे में सुनकर हम जैसे लोगों की गर्दन शर्म से झुक जाती है। मेरा ख्याल है थाई ने तुम्हें कोई न कोई ऐसी कहानी जरूर सुनाई होगी।"

"कहानी सुनाने की क्या जरूरत है—यह खुद अपनी आंखों से देख चुका है।" थाईवांग ने कहा—"शोतुंग को तो तुम नहीं भूले होंगे, जिसने हमें पहाड़ वाले कॉटेज से अगुवा किया था। वह भी तो एक भिक्षु ही था।"

"मैं उसे कैसे भूल सकता हूं।" काला बच्चा के मुंह से गहरा सांस निकल गया—"बहरहाल तुम कुछ बता रही थी। वैसे शाईवान के नाम से एक चेहरा मेरे जहन में उभर रहा है। पहले तुम अपनी बात पूरी करो फिर मैं बताऊंगा।"

"मैंने शाईवान का निरीक्षण किया तो पता चला कि वह मां बनने वाली है और इसके साथ ही वह हेरोइन की आदी है।" जानकी ने कहा—"मैंने थंगचो नामक उस भिक्षु को बता दिया कि मैं उसका इलाज नहीं कर सकती। वह उसे सरकारी हस्पताल ले जाए।"

काला बच्चा उछल पड़ा। शाईवान और फिर यह नाम थंगचो। काला बच्चा ने जानकी से उसका हुलिया पूछा तो काला के दिमाग में धमाके होने लगे। उसे यकीन हो गया कि थंगचो वही भिक्षु था जो जंगल वाले कैम्प में काला का प्रतिद्वंदी बना था और जिसे उसने महाराज की मौजूदगी में एक मुकाबले में जबरदस्त शिकस्त दी थी और उसने अपनी शिकस्त का बदला लेने के लिए थाईवांग को हेरोइन का आदी बना दिया था।

काला बच्चा ने थाई की तरफ देखा। उसके चेहरे के भाव ही बदल गये थे।

"यह वही शैतान है।" वह चीख उठी।

"और शाईवान नामक यह लड़की भी वही है, जो मुझे एक नाइट क्लब में मिली थी और एक मकान में ले आई थी, जहां मुझे और उसे जिन्दा जलाने की कोशिश की गयी थी—लेकिन वह तो कांग के संरक्षण में थी, जिसे एक बंगले में रखा गया था। वह चीफांग और टाइगर के खौफ से खुद भी वहां से नहीं जाना चाहती थी लेकिन... ।" काला बच्चा खामोश होकर थाईवांग की तरफ देखने लगा—"लेकिन थाईवान वहां से निकली कैसे? थंगचो के हाथ कैसे लग गयी और वह भी इस हालत में कि... ।" काला ने एक बार फिर खामोश होकर जानकी की तरफ देखा—"क्या तुम्हें यकीन है कि तुम्हारे गिर्द कोई जाल नहीं बुना जा रहा। थंगचो बहुत खतरनाक

आदमी है। मुझसे अपनी अपमानजनक शिकस्त का बदला लेने के लिए उसने थाई को हेरोइन का आदी बनाकर मौत के घाट उतारने की कोशिश की थी। कहीं उसे शक तो नहीं हो गया कि तुम्हारा हमसे कोई ताल्लुक है और इस तरह तुम्हारे जरिए वह हम तक पहुंचना चाहता हो?"

"यह तो मैं नहीं कह सकती कि उसे मुझ पर कोई ऐसा शक है या नहीं लेकिन इस तरफ आते हुए मैं हमेशा इस बात का ख्याल रखती हूं कि मेरी निगरानी या पीछा तो नहीं हो रहा। आज भी मैंने इस बात का ख्याल रखा था।" जानकी ने जवाब दिया।

"उसके बाद थंगचो ने तुमसे दोबारा सम्पर्क नहीं किया?"

"नहीं।"

"अब तुम खुद उससे सम्पर्क करोगी।" काला बच्चा ने उसके चेहरे पर नजरें जमाते हुए कहा—"मेरा मतलब है उसके फ्लैट पर जाओगी और शाईवान से यह मालूम करने की कोशिश करोगी कि वह थंगचो के हाथ कैसे लग गयी और असल मामला क्या है?"

"ठीक है मैं कल वहां जाऊंगी।" जानकी ने जवाब दिया।

वह कुछ देर इसी विषय पर बात करते रहे। काला बच्चा को याद था कि उस रात जब थंगचो आखरी मर्तबा खानकाह के गेट पर थाईवांग को हेरोइन देने के लिए आया था। तो उसे पकड़ लिया गया था बल्कि उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया था लेकिन वह इस तरह आजादी से कैसे घूम रहा था?

जानकी देवी के जाने के बाद काला बच्चा ने फोन का रिसीवर उठाकर मास्टर होचिन का नम्बर मिलाया। उस वक्त रात के बारह बजने लगे थे लेकिन कॉल मास्टर होचिन ने ही रिसीव की थी। चंद रस्मी बातों के बाद काला ने पूछा—"मास्टर! तुम्हें शाईवान नामक वह लड़की याद है जिसके साथ मुझे जिन्दा जलाने की कोशिश की गयी थी।"

"हां, मुझे अच्छी प्रकार याद है।" मास्टर होचिन ने जवाब दिया—"लेकिन वह तीन-चार दिन बाद ही किसी को बताये बगैर उस बंगले से चली गयी थी और हमने भी उसे तलाश करने की कोशिश नहीं की थी, मगर तुम्हें वह कैसे याद आ गयी?"

"और वह भिक्षु थंगचो जिसे हेरोइन फरोख्त करने के जुर्म में पकड़ा गया था?"

"उसे पुलिस के हवाले कर दिया था—फिर उसने जमानत करवा ली थी। उसका केस चल रहा है—मगर तुम यह सब कुछ क्यों

पूछ रहे हो?" मास्टर होचिन ने कहा।

"शाईवान इन दिनों थंगचो के पास है और वह मां बनने वाली है।"

"क्या...तुम्हें यह सब कुछ कैसे मालूम हुआ?"

"मेरे कुछ सोसिजि हैं।" काला ने जवाब दिया—"मैं उसके बारे में और भी जानकारियां हासिल करने की कोशिश कर रहा हूं और क्या तुम्हें मालूम है कि टाइगर और दारा हेरोइन की स्मगलिंग के सिलसिले में गोल्डन ट्राइ एंगिल की किसी पार्टी से सम्पर्क करने की कोशिश कर रहे हैं?"

"लड़के... ।" मास्टर होचिन की आवाज सुनाई दी—"तुम्हारे कुछ ज्यादा ही पर-पुर्जे नहीं निकल आये?"

"यह बात तो है मास्टर।" काला बच्चा ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—"दरअसल मुझे एक ऐसा आदमी मिल गया है, जिस पर पूरा भरोसा किया जा सकता है। यह तमाम जानकारियां मैंने उसी के जरिए हासिल की हैं और मेरा ख्याल है चंद रोज बाद मैं इस पोजीशन में आ जाऊंगा कि दारा और टाइगर पर एक भरपूर वार कर सकूं।"

"ज्यादा ऊंचा उड़ने की कोशिश करोगे तो... ।"

"नहीं मास्टर।" काला ने उसकी बात काट दी—"मैंने उड़ने का प्रशिक्षण तुमसे हासिल किया है—गिरूंगा नहीं।"

"मुझे खुशी है कि तुम्हारे अन्दर आत्मविश्वास पैदा हो गया है।" मास्टर होचिन ने कहा—"बहरहाल! अपना ख्याल रखना। महाराज तुम्हारे बहुत फिक्रमंद हैं।"

"मैं चंद रोज बाद महाराज के पास आऊंगा।" काला ने जवाब दिया और चंद बातें और करने के बाद फोन डिस्कनेक्ट कर दिया।

और फिर दो दिन बाद काला को रामन प्रसाद से भी रिपोर्ट मिल गयी। उसने उन तीनों आदमियों के नाम मालूम कर लिए थे, जो सिंगापुर में दारा की सिंडीकेट के पार्टनर थे। उनके न सिर्फ नाम बल्कि सिंगापुर में उनके फोन नम्बर भी मालूम कर लिए थे। प्रसाद यह रिपोर्ट देने खुद आया था।

"हैरत है।" काला बच्चा ने उसकी तरफ देखते हुए कहा—"पामेला ने यह सब कुछ तुम्हें इतनी आसानी से कैसे बता दिया?"

"मैंने तुम्हें बताया था बॉस दारा जब बैंकाक आया था सबसे पहले उसकी मुलाकात पामेला से हुई थी और चंद रोज उसके घर पर भी रहा था। पामेला उसे अपनी मिलकियत समझ बैठी थी लेकिन

अब उसे अपने हाथों से निकलते देखकर उसकी सोच का रुख बदल गया है उसकी बातों से मैंने अन्दाजा लगाया है कि वह उससे इन्तकाम लेने का मंसूबा बना रही है। उसे मुझ पर शक हो गया है कि मैं दारा और टाइगर की विरोधी पार्टी से सम्बन्ध रखता हूं। शायद वह अपने इस मंसूबे में मुझे इस्तेमाल करना चाहती है इसीलिए वह आहिस्ता-आहिस्ता सब उगलती जा रही है।" प्रसाद ने कहा।

"ठीक है।" काला ने कहा—"लेकिन उसे तुम पर यह शक नहीं होना चाहिए कि तुम्हारी हकीकत क्या है?"

"रामन प्रसाद की जुबान खुलवाना आसान काम नहीं है बॉस।" प्रसाद मुस्कराया।

"क्या तुम मुझे पामेला से मिलवा सकते हो?" काला के जहन में अचानक ही एक ख्याल आया था।

"क्या?" प्रसाद ने चौंककर काला की तरफ देखा।

थाईवांग काला को घूरने लगी।

"मिस थाई!" काला ने मुस्कराते हुए कहा—"बहुत आराम हो चुका और मेरे इस आराम से फायदा उठाकर दारा और टाइगर बहुत आगे निकल गये। आजकल कामयाबी उसको मिलती है, जो वक्त के साथ चलता है मगर हम थोड़ा पीछे रह गये। अब हमें जरा तेजी दिखानी होगी ताकि उनके बढ़े हुए कदम रोके जा सकें, अगर सिंगापुर में उनके रैकेट ने काम शुरू कर दिया और गोल्डन ट्राईएंगिल में भी यह लोग अपना रैकेट बनाने में कामयाब हो गये तो फिर इन्हें रोकना मुश्किल हो जायेगा। हमारे लिए बेहतरीन मौका है और मैं समझता हूं कि यह हमारी खुशकिस्मती है जो पामेला जैसी अन्दर की हमें जानकारी दे रही है। अगर हमने यह मौका खो दिया तो शायद फिर कभी ऐसा चांस न मिल सके।"

"मगर तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। तुम भागदौड़ नहीं कर सकोगे।" थाई ने कहा।

"अब मैं बिल्कुल ठीक हूं। तुम दोनों की मोहब्बत ने मुझे फिर से अपने पैरों पर खड़ा कर दिया है, जानकी ने जिस निष्ठा से मेरा इलाज किया है वह काबिले-तारीफ है। तुम दोनों नहीं बल्कि तीनों मेरे लिए बहुत बड़ा सहारा हो और मैं तुममें से किसी का शुक्रिया इसलिए अदा नहीं करूंगा कि इसमें तुम लोगों की तोहीन होगी—बहरहाल..."

काला बच्चा एक लम्हें खामोश हुआ फिर बात जारी रखते हुए बोला—"यह मेरे लिए एक बेहतरीन मौका है और मैं इससे

पूरा-पूरा फायदा उठाना चाहता हूं। वैसे भी हम कब तक चूहों की तरह बिल में दुबके रहेंगे। अगर हम इसी तरह छिपकर बैठे रहे तो दारा और उसके साथी वह सब कुछ कर गुजरेंगे जिससे हम उन्हें रोकना चाहते हैं। तो फिर तुम पामेला से कब मुलाकात कर रहे हो?" काला ने आखरी शब्द प्रसाद की तरफ देखते हुए कहे थे।

"कल तो नहीं...कोशिश करूंगा कि परसों तुम्हारी उससे मुलाकात करवा दी जाए।" प्रसाद ने जवाब दिया।

"परसों यह मुलाकात हर हाल में होनी चाहिए।" काला ने कहा—"एक आइडिया है मेरे जहन में।"

"वह क्या?"

"परसों रात दस बजे तुम पामेला को लेकर सोरावांग रोड पर स्थित इंडियन रेस्टोरेन्ट पहुंच जाओ। यह रेस्टोरेन्ट होटल मनोहरा के सामने है। हम भी वहां आ जायेंगे और तुम यह जाहिर करोगे कि हमारी मुलाकात महज इत्तेफाक से हुई है। थाईवांग तुम्हारे शहर की रहने वाली है और वहां तुम लोग एक-दूसरे मिलते रहे हो। हम अपने असली हुलियों में होंगे।"

"क्या?" थाईवांग चौंक गयी—"आत्महत्या करने का इरादा है क्या?"

"नहीं।" काला मुस्कराया—"मैं दारा और उसके साथियों पर यह जाहिर करना चाहता हूं कि अब मेरे दिल में कोई डर नहीं रहा। डरने की जरूरत नहीं है थाई। हमारे इस तरह सामने आ जाने से उन पर कुछ न कुछ असर तो पड़ेगा और वैसे भी हम सारी जिन्दगी अपने चेहरे तो नहीं छिपा सकते।"

"बॉस ठीक कहता है।" प्रसाद ने कहा—"तो ठीक है। अब मैं चलता हूं। परसों इंडियन रेस्टोरेन्ट में मुलाकात होगी, रात दस बजे।"

प्रसाद चला गया। थाई काला के सामने बैंठी कुछ कहे बगैर उसके चेहरे को ताकती रहीं। थाई के चेहरे पर इस वक्त कुछ अजीब से भाव थे।

"क्या बात है थाई मुझे इस तरह क्यों देख रही हो?" काला ने कहा।

"ओह कुछ नहीं।" थाई जैसे चौंक गयी।

"सिंगापुर का कोई फोन नंबर मालूम है तुम्हें—कोई भी...।" काला ने कहा।

"इस मैगजीन में सिंगापुर के कई होटलों के नम्बर मौजूद हैं,

मगर तुम क्या करना चाहते हो?" थाई ने मेज पर रखे हुए मैगनीन की तरफ संकेत किया।

काला ने वह मैगनीन उठा लिया। एक होटल उस इलाके में था जहां काला का परिवार रहता था। वह दरअसल इंसपेक्टर च्यांग शो को फोन करके दारा के सिन्डीकेट के बारे में सूचना देना चाहता था लेकिन काला बच्चा को उसका नम्बर मालूम नहीं था। वह इंटर नेशनल डायलिंग कोड डायरेक्ट्री में मौजूद था। काला बच्चा ने सिंगापुर के उस होटल को फोन करके इन्सपेक्टर च्यांग शो का नम्बर हासिल कर लिया और चंद सेकिण्ड बाद उसका नम्बर मिलाने लगा।

इन्सपेक्टर च्यांग शो इस वक्त पुलिस स्टेशन पर ही था। जब काला बच्चा ने उसे अपने बारे में बताया तो वह बहुत खुश हुआ। प्रताप सिंह के कत्ल का पता तो उसे उन्हीं दिनों चल गया था लेकिन काला बच्चा के बारे में उसे कोई सूचना नहीं थी। लगभग पांच मिनट तक दोनों के बीच में रस्मी बातचीत होती रही, फिर काला बच्चा असली मुद्दे पर आ गया।

"अंकल। आपको मालूम है दारा और किम वगैरह आजकल बैंकाक में हैं, लेकिन दारा ने सिंगापुर में भी अपनी सरगर्मियां जारी रखी हुई हैं।"

"मेरे को उसके दो-तीन मर्तबा यहां आने का पता चला। मगर वह गायब हो गया।" इन्सपेक्टर च्यांग शो ने कहा।

"दारा ने जिस मकसद को हासिल करने के लिए मेरे मां-बाप को कत्ल किया था, उसने सिंगापुर में अपने उस मकसद की बुनियाद रख दी है।"

"मैं समझा नहीं–खुलकर बताओ।"

"उसने हेरोइन की स्मगलिंग के लिए सिंगापुर में एक रैकेट कायम कर लिया है।" काला ने कहा और फिर अपनी जानकारियां देने लगा। उसने उन तीनों लोगों के नाम और टेलीफोन नम्बर भी लिखवा दिए–"इन फोन नम्बरों से उनके एड्रेस मालूम किए जा सकते हैं। मैं कल रात दोबारा फोन करूंगा ताकि यह मालूम हो सके कि मेरी इस सूचना का क्या नतीजा निकला।"

"तुम अच्छी खबर सुनेगा माई सन।" इन्सपेक्टर च्यांग शो ने कहा–"अपना ख्याल रखना–विश यू गुड लक।"

"यह सब कुछ मुझे वक्त ने सिखाया है।" काला के होठों की मुस्कराहट गायब हो गयी और स्वर में संजीदगी आ गयी–"उस वक्त ने जिसने मेरा सब कुछ छीन लिया और मुझे वक्त से पहले जवान

कर दिया। मेरी उम्र के लड़के स्कूलों में पढ़ते हैं—खेलते कूदते हैं और अपनी पसंद से वक्त गुजारते हैं। कराटे आजकल खेल बन गया है—लड़के इसे खेल समझकर ही सीखते हैं लेकिन मैं इसे अपनी जिन्दगी के बचाव का वसीला बना रहा हूं। मेरी आजादी छिन गयी है। मैं चारों तरफ से खूनी भेड़ियों में घिरा हुआ हूं। अपने आपको इन दरिन्दों से बचाने की कोशिश कर रहा हूं। अगर मेरे साथ वह हादसा पेश न आता तो शायद क्या बल्कि यकीनन इन सारी मुसीबतों से दूर होता।"

काला बच्चा की आवाज भर्रा गयी। इन्सपेक्टर च्यांग शो से फोन पर बातों के दौरान मेरे कुछ पुराने जख्म छिल गये थे। वह जख्म इतने पुराने भी नहीं थे कि उन्हें भूल जाता, उन्हीं यादों के सहारे तो वह जी रहा था। वही जज्बा तो उसे जिन्दा रखे हुए था। च्यांग शो की बातों ने उसके जख्मों में टीस-सी पैदा कर दी थी और वह बेचैन हो गया था।

थाईवांग ने फौरन ही उसकी कैफियत को महसूस कर लिया। वह कुर्सी से उठकर बेड पर आ गयी और उसे अपने साथ लिपटा लिया और फिर एक अजीब से एहसास ने उसे अपनी लपेट में ले लिया। वह पुरसुकून होता चला गया और थाईवांग की गोद में सिर रखे-रखे सो गया।

उस रात वह कई रोज बाद पुरसुकून और गहरी नींद सोया था। सुबह आंख खुली तो वह अपने आपको बहुत हल्का-फुल्का महसूस कर रहा था। थाईवांग उस वक्त किचन में था। बर्तनों की आवाज सुनाई दे रही थी। वह भी उठकर किचन में आ गया। थाई चाय बना रही थी। उसकी तरफ देखकर मुस्करा दी।

वह लाउन्ज में बैठे चाय पी रहे थे कि जानकी देवी आ गयी। उसे देखकर काला बच्चा का माथा ठनका। अभी साढ़े सात बजे थे और इतनी सुबह वह कभी नहीं आई थी। थाई की आंखों में भी उलझन-सी तैर गयी।

"क्या हुआ जानकी?" तुम परेशान-सी लग रही हो थाई ने कहा।

"वह लड़की मेरे घर आ गयी है आज सुबह पांच बजे।" जानकी ने कहा।

"कौन-सी लड़की?" काला ने चौंककर उसकी तरफ देखा।

"वही शाईवान।" जानकी ने जवाब दिया—"मुझे नहीं मालूम कि उसे मेरे घर का पता कैसे चला लेकिन उसने जो कुछ बताया है वह

बड़ा सनसनीखेज है।"

"एक मिनट...।" थाई कुर्सी से उठती हुई बोली—"मैं तुम्हारे लिए चाय बना लाऊं—फिर बात करते हैं।"

थाई दस मिनट बाद चाय बनाकर ले आई।

"हां अब बोलो क्या किस्सा है?" वह जानकी की तरफ कप बढ़ाकर बोली।

"सुबह पांच बजे कॉलबैल की आवाज सुनकर मेरी आंख खुल गयी थी।" जानकी देवी कहने लगी—"मैं एकदम बदहवास सी हो गयी। मेरे जहन में अचानक ही ख्यालात उभर आया था कि कहीं तुम लोगों पर तो कोई आफत नहीं आन पड़ी। मैंने दरवाजा खोला तो वह सामने खड़ी थी। उस वक्त दिन की रोशनी भी पूरी तरह नहीं फैली थी। मैं उसका चेहरा भी पूरी तरह नहीं देख सकी। दरवाजा खुलते ही वह मुझे धक्का देकर अन्दर आ गयी और खुद ही दरवाजा बन्द भी कर दिया।

मैं उसे देखकर चौंक गयी और वह मेरे कदमों पर गिर गयी और रो-रो कर कहने लगी कि मुझे बचा लो। मैं उसे कमरे में ले आई। थोड़ी देर बाद जब उसके होश बहाल हुए तो उसने बताया कि एक रात तुम उसे जलते हुए मकान से बचाकर ले गये थे और एक कॉटेज में छोड़ दिया था। जहां दो आदमी थे। शाईवान के कहने के मुताबिक वहां कोई तकलीफ नहीं थी। कोई पाबन्दी भी नहीं थी। आजादी से पूरे घर में घूमती-फिरती थी लेकिन उसके दिल में चोर था। वह समझती थी कि उसने तुम्हें फंसाया था और तुम वापस आओगे तो उससे पूछताछ जरूर करोगे। इसके लिए यद्यपि बाहर भी खतरा था लेकिन तुम्हारी पूछताछ के खौफ से वह एक रात उस कॉटेज से निकल गयी।

वह दो-तीन दिन तक इधर-उधर छिपती रही और फिर एक रोज थंगचो के हाथ लग गयी। थंगचो को भी किसी तरह पता चल चुका था कि तुम उसे जलते हुए मकान से निकाल ले गये थे और उसका ख्याल था कि तुमने ही उसे पनाह दे रखी थी। वह उसे बहला-फुसला कर अपने साथ ले गया और शहर में एक मकान में छिपाये रखा। इस दौरान वह न सिर्फ उससे तुम्हारे बारे में पूछता रहा बल्कि उसे हेरोइन भी इस्तेमाल कराता रहा। हेरोइन के नशे ने शाईवान को बेबस कर दिया और उसने उस कॉटेज का पता बता दिया, जहां तुम उसे लेकर गये थे। थंगचो ने उस कॉटेज की निगरानी शुरू कर दी। कई रोज बाद उसे पता चला कि तुम्हारा उस कॉटेज

से कोई ताल्लुक नहीं है। तुम वहां उसे धोखे से छोड़ गये थे और कॉटेज में रहने वाले दो आदमियों को कुछ रकम दे गये थे कि दो चार दिन बाद इस लड़की को वहां से रुख्सत कर दिया जाए। थंगचो ने शाईवांग को यातना देनी शुरू कर दी। हेरोइन की एक वक्त की खुराक रोक लेना ही उसके लिए सबसे बड़ी यातना थी। वह उसके साथ मारपीट भी करता था। दरअसल वह हर हालत में तुम्हारा पता मालूम करना चाहता था। अण्डरवर्ल्ड में दारा और टाइगर का यह ऐलान गर्दिश कर रहा है कि, जो शख्स तुम्हें उनके हवाले करेगा उसे एक मिलेन मात का इनाम दिया जायेगा वह इसलिए हर सूरत में तुम्हारा पता मालूम करना चाहता था कि तुम्हें पकड़कर उनके हवाले कर दिया जाए। इस तरह उसे इनाम भी मिल जायेगा और उसका इन्तकाम भी पूरा हो जायेगा।

और फिर न जाने उसे किस तरह यह शक हो गया कि मेरा तुमसे कोई सम्बन्ध है। शाईवान जितने दिन थंगचो की कैद में रही थी, वह रोजाना उसे यातना देता रहा था और अंततः जब उसे यकीन हो गया कि वह तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानती तो थंगचो ने उसे कत्ल कर देने का फैसला कर लिया था लेकिन उसी रोज उसके जहन में इस शक ने सिर उभारा और उसके शैतानी जहन में वह तरकीब आ गयी। उसे पता था कि शाईवान के पेट में उसका गुनाह पल रहा है। वह उसे अपने मंसूबे के तहत फ्लैट में ले आया और पड़ोसियों को भी वही कहानी सुनाई, जो उसने मुझे सुनाई थी—यानि वह शाईवान को बेसहारा समझकर इंसानी हमदर्दी के तहत उठा लाया था। उसने शाईवान को धमकी दी थी कि अगर उसने जुबान से एक शब्द भी निकाला तो उसे मार दिया जायेगा।

पहले रोज शाईवान की हालत देखकर मैंने उसका इलाज करने से इन्कार कर दिया था। कल रातथंग चो फिर मेरे क्लीनिक पर आ गया और मुझे शाईवान के इलाज के लिए एक भारी रकम की पेशकश की। दरअसल वह इस इलाज के बहाने मुझे किसी चक्कर में फंसाना चाहता था ताकि मुझसे तुम्हारे बारे में कुछ उगलवा सके। पिछली रात ग्यारह बजे मैं उसके घर पर थी, मुझे चूंकि तुमसे शाईवान के बारे में मालूम हो चुका था। इसलिए मैंने थंगचो को एक इंजैक्शन लेने के बहाने फ्लैट से बाहर भेज दिया और इससे पहले कि उसके जाने के बाद मैं शाईवान से कुछ पूछती उसने मुझे मेरे नाम से सम्बोधित करते हुए बताया कि थंगचो मुझे किसी चक्कर में फंसाकर ब्लैकमेल करना चाहता है, उसके बाद मैंने उससे कोई बात नहीं की।

और आज सुबह पांच बजे वह मेरे घर पहुंच गयी। उसने मुझे यह सारी कहानी सुनाई है। उसे यकीन है कि अब वह थंग चो के हाथ लगी तो वह उसे मार डालेगा। मैं नहीं जानती कि उसे मेरे घर का पता कैसे चला और यह बात भी मेरी समझ में नहीं आ रही कि अब मैं उसका क्या करूं? उसे घर में भी नहीं रखा जा सकता और यहां भी नहीं ला सकती। वह हेरोइन की आदी है। ऐसे लोगों का जब नशा टूटता है तो वह अपने आपको नोंचने लगते हैं। चीखने-चिल्लाने लगते हैं। घर में उसकी मौजूदगी को राज नहीं रखा जा सकता।"

"वह इस वक्त किस हालत में है।" काला बच्चा ने जानकी देवी के खामोश होने पर पूछा।

"मैंने उसे नींद का इंजेक्शन लगा दिया है–वह कम से कम पांच घण्टे सोती रहेगी।"

काला बच्चा और थाई एक-दूसरे की तरफ देख रहे थे। समस्या सचमुच काफी गम्भीर थी। इसका कोई न कोई हल तलाश करना जरूरी था वरना ऐसा मुमकिन था कि थंगचो किसी न किसी तरह जानकी और काला बच्चा के सम्बन्धों का पता चलाने के लिए गड़बड़ शुरू कर देता।

"उससे छुटकारा पाने का एक ही तरीका समझ में आता है।" थाईवांग ने बारी-बारी उन दोनों की तरफ देखते हुए कहा–"अगर तुम दबने की कोशिश करोगी तो थंगचो के शक को बल मिलेगा इसलिए इससे पहले कि वह तुम्हारे खिलाफ कदम उठाये, तुम उस पर चढ़ दौड़ो।"

"वह कैसे?" जानकी ने पूछा।

"पुलिस को सूचना दे दो।" थाई ने जवाब दिया–"थंगचो पहले ही हेरोइन के केस में फंसा हुआ है और जमानत पर है, अगर शाईवान भी उसके खिलाफ बयान देगी तो उसका बचना मुश्किल हो जायेगा।"

थाई की तजवीज उचित थी लेकिन अब यह सोचना बाकी था कि उसके बाद क्या होगा। अगर थंगचो पुलिस के हाथ न लग सका या शाईवान ने उसके खिलाफ बयान न दिया तो खुद जानकी देवी की जिन्दगी खतरे में पड़ जायेगी।

वह तीनों सिर जोड़कर बैठे सोचते रहे और फिर यह तय पाया कि जानकी देवी पहले शाईवान को मजबूत करे और अगर वह थंग चो के खिलाफ बयान देने पर आमादा हो जाए तो ठीक है अन्यथा

Pinku Library
Market, M. ...

उसे रात के अंधकार में घर से कहीं दूर छोड़ दिया जाए। उसका नशा जब टूटेगा तो चीखेगी-चिल्लायेगी और कोई न कोई उसके बारे में पुलिस को सूचना दे ही देगा।

"मेरे जहन में एक और तरकीब आई है।" जानकी ने कहा—"क्यों न उसे रात तक अपने घर में ही रखा जाए और समझा-बुझा कर आधी रात के लगभग उसे अकेले ही पुलिस स्टेशन भेज दिया जाए। उसे यह समझा दिया जाए कि मैं पृष्ठभूमि में रहकर उसकी मदद करती रहूंगी लेकिन इस मामले में मेरा नाम न आने पाये।"

"अगर यह बात वह मान जाए तो सारा मसला हल हो जायेगा। लेकिन उसे तुम्हारे घर से पुलिस स्टेशन कौन लेकर जायेगा।" काला ने कहा और फिर उसके दिमाग में धमाका-सा हुआ।

"रामन प्रसाद।" वह बड़बड़ाया—"हां प्रसाद यह काम कर सकता है।"

"यह ठीक है।" थाई ने कहा—"उसका एक कान्टेक्ट नम्बर हमारे पास मौजूद है। अभी दो दिन पहले ही तो उसने यह नम्बर दिया था। आज दोपहर तुम इस नम्बर पर उसके लिए पैगाम छोड़ दो। वह शाम को यहां आ जायेगा।"

"तो ठीक है।" काला ने जानकी देवी की तरफ देखते हुए कहा—"तुम रूटीन के अनुसार अपने क्लीनिक पर जाओ लेकिन तुम्हें इस बात का यकीन कर लेना चाहिए कि तुम्हारी अनुपस्थिति में शाईवान कोई नयी समस्या न खड़ी कर दे।"

"मैं इस बात का ख्याल रखूंगी।" जानकी ने कहा।

थाईवांग किचन में जाकर नाश्ता तैयार करने लगी और फिर साढ़े नौ बजे के करीब जानकी नाश्ता करके रुख्सत हो गयी।

काला बच्चा ने ग्यारह बजे के करीब प्रसाद के नम्बर पर फोन किया, जहां उसने बॉस के हवाले से संदेश छोड़ दिया। दरअसल वह एक छोटे से रेस्टोरेन्ट का नम्बर था, जहां प्रसाद इस वक्त नाश्ता करने आता था।

आधे घण्टे बाद ही प्रसाद का फोन आ गया। जाहिर है फोन पर ऐसी कोई बात नहीं हो सकती थी। काला बच्चा ने उसे यहां आने के लिए कहकर फोन बन्द कर दिया।

"परिस्थिति वाकई खौफनाक हो गयी है।" थाई ने काला बच्चा की तरफ देखते हुए कहा—"अगर थंगचो को यकीन हो गया कि जानकी देवी का हमसे कोई ताल्लुक है तो वह हमारा सुराग लगा

लेगा और हमारे लिए खतरे बढ़ सकते हैं।"

"खतरे तो पहले ही हमारे चारों तरफ मंडला रहे हैं। देखना सिर्फ यह है कि हम इनसे किस तरह सुरक्षित रह सकते हैं।" काला ने जवाब दिया—"हो सकता है हमें यह पनाहगाह भी छोड़नी पड़े लेकिन मेरा ख्याल है कि प्रसाद सिचुयेशन को हैण्डिल कर लेगा। मुझे उस पर पूरा भरोसा है। वैसे हमें भी अपने तौर पर तैयार रहना चाहिए।"

"वैसे मेरे जहन में एक और तजवीज है।" थाई ने कहा—"क्यों न हम कुछ अरसे के लिए शहर से बाहर चले जाएं—मसलन च्यांगराय। वहां शीनियो मौजूद है, वह हमारी रिहाइश का बन्दोबस्त कर सकती है।"

शहर से बाहर तो रिहाइश का बन्दोबस्त कहीं भी हो सकता है लेकिन फिलहाल मैं बैंकाक छोड़ना नहीं चाहता।" काला ने जवाब दिया—"यहां की परिस्थिति ऐसी हैं कि हमारी फरारी से उनके लिए रास्ता खुल जायेगा और मैं उनके लिए आसानियां पैदा नहीं करना चाहता।"

थाईवांग जवाब देने की बजाए काला की तरफ देखती रही फिर वहां से उठकर चली गयी। दोपहर दो बजे के करीब रामन प्रसाद आ गया। उससे लगभग एक घण्टे तक इस विषय पर बात होती रही।

"ठीक है बॉस।" प्रसाद ने कहा—"आज यह काम हो जायेगा और अगर थंगचो ने रास्ते में आने की कोशिश की तो उसकी कहानी भी खत्म कर दी जायेगी।"

"तुम किस वक्त जाओगे?" काला ने पूछा।

"मेरे ख्याल से रात बारह बजे के बाद का वक्त सही रहेगा।" प्रसाद ने जवाब दिया। थाई ने उसे जानकी देवी के घर का पता अच्छी तरह समझा दिया और उसके कुछ देर बाद वह रुख्सत हो गया।

उस शाम आठ बजे के करीब जानकी देवी का फोन आ गया। वह इस वक्त अपने क्लीनिक पर थी।

"सारा मामला तय हो गया है।" उसने बताया—"वह हमारे बताये गये प्रोग्राम पर अम्ल करने को तैयार है। मैंने उससे वादा किया है कि पृष्ठभूमि में रहकर मैं उसकी भरपूर मदद करूंगी। न सिर्फ उस भिक्षु से निजात मिल जायेगी बल्कि मैं उसका इलाज भी करूंगी।"

"भिक्षु को यह शक तो नहीं हुआ कि वह तुम्हारे पास है।"

"नहीं।" जानकी ने जवाब दिया—"आज सुबह दस बजे के करीब वह क्लीनिक पर आया था, यह पूछने कि शाईवान मुझसे कोई मशवरा करने या दवा वगैरह लेने के लिए यहां तो नहीं आई थी। बहरहाल तसल्ली करके चला गया लेकिन कह नहीं सकती कि उसे मेरी बात का यकीन आ गया था या नहीं। मैं आज दिन भर खासी सावधान रही हूं। मैंने अपने आसपास किसी ऐसे शख्स को भी नहीं देखा जिस पर शक हो कि वह मेरी निगरानी कर रहा है।"

"गुड।" काला ने कहा—"प्रसाद आज रात बारह बजे के बाद किसी भी वक्त तुम्हारे पास पहुंच जायेगा।"

"ठीक है! मैं इन्तजार करूंगी।" जानकी ने जवाब दिया।

काला बच्चा ने फोन बन्द कर दिया और थाई को जानकी देवी से होने वाली बातचीत के बारे में बताने लगा और फिर उसी रात ग्यारह बजे के करीब उसने सिंगापुर फोन किया। इन्सपेक्टर च्यांग शो उसकी कॉल की प्रतीक्षा में था। वह काला की आवाज सुनते ही बोला—"तुम्हारी इन्फारमेशन बिल्कुल सही थी माई सन। मैंने कल रात ही तुम्हारे बताये फोन नम्बरों से उन तीनों के एड्रेस मालूम करके दो घण्टों के अन्दर-अन्दर उनके बारे में जरूरी मालूमात हासिल कर ली थी और आज सवेरे-सवेरे तीनों जगहों पर एक साथ छापे मारे गये थे। उनका यूरेशियन पार्टनर पुलिस मुठभेड़ में मारा गया है अलबत्ता इंडिया से ताल्लुक रखने वाला पार्टनर भोलानाथ और पाकिस्तान का पार्टनर जमाल पकड़े गये हैं। उनके पास से दस किलोग्राम हेरोइन बरामद कर ली गयी है जिसे वह योरोप की तरफ स्मग्ल करने का मंसूबा बना रहे थे। इन लोगों से पूछताछ चल रही है और उम्मीद है इनसे और भी सनसनीखेज बातों का पता चलेगा।"

"थैंक्यू च्यांग अंकल।" काला बच्चा ने गहरा सांस लेते हुए कहा—"मेरे सिर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया। यह दारा के खिलाफ मेरी पहली बड़ी कामयाबी है। अब मैं उसे यहां भी टिकने नहीं दूंगा।"

"यह लोग बहुत खतरनाक हैं माई सन। अपना ख्याल रखना।" इन्सपेक्टर च्यांग शो ने कहा—"अपना नम्बर दो ताकि कभी तुमसे सम्पर्क कर लिया जाए।"

काला ने मास्टर होचिन का नम्बर बता दिया—"कभी कोई बात हो तो इस नम्बर पर संदेश दे दिया करें। मैं बाद में खुद ही आपको फोन कर लिया करूंगा।"

काला बच्चा ने फोन बन्द कर दिया और थाईवांग को बताने लगा कि सिंगापुर में दारा के तीन खास आदमियों में से एक पुलिस

के हाथों मारा गया है और दो गिरफ्तार हो गये हैं। पुलिस ने उनसे भारी मात्रा में हेरोइन भी बरामद की है।"

"दारा को यहां सूचना मिल चुकी होगी। वह तो अपने बाल नोंच रहा होगा।" थाई ने मुस्कराते हुए कहा।

"मैं उसे अपनी बोटियां नोंचने पर मजबूर कर दूंगा।" काला ने कहा।

वह देर तक इस विषय पर बातें करते रहे। साढ़े बारह बजे के करीब जानकी देवी ने फोन पर सूचना दी कि प्रसाद थोड़ी देर पहले शाईवान को ले जा चुका है। अब काला को प्रसाद की सूचना का इन्तजार था।

दो बजे के लगभग प्रसाद खुद ही आ गया। उसके चेहरे के भावों से काला को यह अनुमान लगाने में कठिनाई नहीं हुई कि कोई गड़बड़ हुई है।

"हां गड़बड़ तो हुई है।" उसने काला बच्चा के सवाल के जवाब में कहा—"मैंने शाईवान को ले जाने के लिए एक होटल के पार्किंग लाट से एक गाड़ी चुराई थी। मैं शाईवान को सेन्टलुइस स्ट्रीट पर स्थित पुलिस स्टेशन ले जाना चाहता था लेकिन जैसे ही मैं चीयम रोड पर पहुंचा, एक कार मेरे पीछे लग गयी। मुझे किसी गड़बड़ का अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई थी क्योंकि उस कार की ड्राइविंग सीट पर मैंने एक आदमी को भिक्षुओं जैसे लिबास में देख लिया था और मुझे शक हो गया कि वह थंगचो के सिवा कोई नहीं हो सकता। मेरा शक सही निकला। वह थंगचो ही था, जो हमारा पीछा कर रहा था। मैंने पुलिस स्टेशन के सामने गाड़ी रोक दी। शाईवान कार से उतरकर पुलिस स्टेशन के गेट की तरफ जा रही थी कि पीछे से आने वाली कार एक लम्हें को वहां रुकी। उस कार से एक के बाद एक कई गोलियां चलाई गयीं। शाईवान चीखकर ढेर हो गयी। मैं उस वक्त अपनी कार साइड स्ट्रीट पर मोड़ रहा था। मैं कार रोककर नीचे उतर गया। दूसरी कार तेज रफ्तारी से सीधी निकल जाती लेकिन इत्तेफाक से दो पुलिस आफिसर मोटर साइकिलों पर सवार उस तरफ निकल आये। उन्होंने कार का पीछा शुरू कर दिया। दो तरफ फायरिंग के दौरान उसकी कार बेकाबू होकर फुटपाथ पर चढ़कर उलट गयी। पुलिस ने थंगचो को अत्यधिक जख्मी हालत में हिरासत में ले लिया है। शाईवान खत्म हो चुकी है, उसे एक गोली सिर में लगी थी, जिससे तुरन्त ही उसकी मौत हो गयी।"

काला बच्चा को शाईवान की मौत का अफसोस तो हुआ पर

इस मीत का यह फायदा जरूर हुआ कि जो खतरा हमारी तरफ बढ़ रहा था वह फिलहाल टल गया था।

रामन प्रसाद ने वह रात उनके पास ही गुजारी थी। सुबह नाश्ता करके वह चला गया और फिर उस रात ठीक दस बजे काला बच्चा और थाई इंडियन रेस्टोरेन्ट में दाखिल हो रहे थे। थाई के अनुरोध पर उन्होंने अपने हुलिए किसी सीमा तक तब्दील कर लिए थे। रामन प्रसाद एक लड़की के साथ कोने वाली मेज पर बैठा हुआ था। लड़की की पुश्त उनकी तरफ थी। काला बच्चा उसका चेहरा नहीं देख सका। करीब की मेज पर बैठते हुए काला अचानक ही प्रसाद की मेज की तरफ बढ़ गया।

"ऐ...प्रसाद तुम...तुम्हें यहां देखकर मुझे हैरत हो रही है। च्यांगराय से कब आये?" काला ने समीप पहुंचकर कहा।

रामन प्रसाद ने हाथ मिलाते हुए बड़ी गर्मजोशी का प्रदर्शन किया और फिर उस लड़की की शक्ल देखकर काला चौंके बगैर न रह सका। जाहिर है वह पामेला थी और यह वही लड़की, जो खानकाह के गेट पर काला बच्चा को यह गुलदस्ता देकर गयी थी जिसमें बम लगा हुआ था।

रामन प्रसाद ने पामेला पर यही जाहिर किया कि मैं उसका पुराना दोस्ता हूं और महज संयोगवश मुलाकात हो गयी है। उसके निमंत्रण पर काला और थाई भी उसी मेज पर आ गये। प्रसाद भी थोड़ी देर पहले वहां आया था और उसने आर्डर भी नहीं दिया था लिहाजा यह जिम्मेदारी अब काला बच्चा ने संभाल ली।

वह आधे घण्टे बाद वहां से उठ गये थे। रामन प्रसाद उन्हें चायना टाउन के इलाके में स्थित एक फ्लैट में ले आया था। यह फ्लैट उसने अपने लिए ले रखा था और यहां जरूरत की तमाम चीजें मौजूद थीं।

पामेला कुछ बुझी-बुझी सी लग रही थी और उसकी बातों से भी मायूसी झलक रही थी।

"मेरा ख्याल है तुम्हें कोई ऐसा सदमा पहुंचा है, जिसने तुम्हें अपसेट कर रखा है।" काला ने उसके चेहरे पर नजरें जमाते हुए कहा—"कोई ऐसी बात है तो हमें बताओ। शायद हम तुम्हारी कोई मदद कर सकें।"

"मुझे किसी की मदद की जरूरत नहीं—उस कमीने से मैं अकेली ही निपट लूंगी।" पामेला ने कहा।

"ओह!" काला बच्चा ने चौंकने वाले अन्दाज में कहा—"मेरा

ख्याल है तुम्हारे किसी बहुत करीबी दोस्त ने तुम्हें धोखा दिया है।''

''ऐसा-वैसा धोखा।'' प्रसाद बीच में बोल पड़ा—''यह एक अजनबी को चाहने लगी थी और उसे अपना सब कुछ समझ बैठी थी। वह अजनबी कुछ अरसे तक तो इसे चाहता था और जब उसका मकसद पूरा हो गया तो इसे नजर अन्दाज करने लगा। पामेला को इस बात का दुख है।''

''इसमें परेशान होने की क्या बात है।'' काला ने कहा—''उसका नाम पता बताओ। हम उसे पकड़कर सड़क पर जूते लगायेंगे।''

''वह बहुत बड़ा गैंगस्टर है।'' पामेला ने कहा। वह चंद लम्हे खामोश रही फिर दारा के खिलाफ बोलमे लगी।

काला बच्चा यही चाहता था कि वह अपने मुंह से कुछ उगले, यह अण्डरवर्ल्ड की दुनिया भी बड़ी अजीब है। यहां एक-दूसरे के खिलाफ साजिशें चलती रहती हैं और पामेला जैसी हसीन लड़कियां इन साजिशों में बड़े अहम किरदार अदा करती हैं। कभी तो वह अप- आका के लिए जान तक देने को तैयार हो जाती है और कभी कि- मामूली-सी बात पर इस तरह बिगड़ती है कि अपने आका को तबा- के गार में धकेल देती हैं। पामेला की गिनती भी ऐसी ही लड़कि- में होती थी। उसने दारा और टाइगर के कहने पर काला को ब से उड़ाने की कोशिश की थी और अब काला बच्चा को अपना हमद पाकर दारा के खिलाफ अपने दिल की भड़ास निकाल रही थी

''दारा सिंगापुर से आया था।'' काला ने पामेला की तरफ देख हुए कहा—''और आज ही मुझे पता चला है कि सिंगापुर में उस कुछ आदमी पकड़े गये हैं और उसे बहुत बड़ा नुकसान उठाना प- है।''

''त...त तुम्हें कैसे पता चला?'' पामेला ने चौंककर काल की तरफ देखा।

''ऐसी खबरें छिपी नहीं रहतीं।'' काला बच्चा ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—''अण्डरवर्ल्ड में तो सब ही लोग यह बात जान चु हैं कि सिंगापुर में पकड़े जाने वाले दारा के आदमी थे।''

''यह सच है।'' पामेला ने कहा—''उसे कल शाम को या सूचना मिली थी और वह पागल हुआ फिर रहा है। सिंगापुर में उसके आदमियों के पकड़े जाने के हवाले से यह बात भी सुनने में आई है कि उनकी मुखबरी काला बच्चा ने की थी।''

''लेकिन काला बच्चा तो यहां बैंकाक में है। वह सिंगापुर

किसी की मुखबरी कैसे कर सकता है?" काला बच्चा ने कहा।

"काला के अपने सोर्स हैं—सिंगापुर के अखबारों में उसका नाम छपा है। उसने यहां से सिंगापुर के किसी पुलिस आफिसर को फोन किया था। दारा पहले ही उसकी तलाश में था। वह उस पर कई वार कर चुका है लेकिन वह हर मर्तबा बच निकलता है। उसे कुछ अरसे पहले बम से उड़ाने की कोशिश की गयी थी लेकिन वह फिर बच निकला। एक महीने पहले तो वह गेस्ट हाउस में दारा और किम की पिटाई करके चला गया। दारा को यकीन है कि गेस्ट हाउस से फरार होते हुए उसे कम से कम दो गोलियां जरूरत लगी थीं। गेस्ट हाउस में लॉन से दीवार तक खून के धब्बे देखे गये थे। दारा और टाइगर के आदमियों ने शहर के तमाम सरकारी और प्राइवेट हस्पताल छान मारे लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला।"

"अब दारा के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है—क्या चाहती हो तुम?" काला बच्चा ने उसके चेहरे पर नजरें जमाते हुए पूछा।

"वह मुझपर भी शक करने लगा है और मुझे दूसरी औरतों के सामने जलील करता रहता है। मैं उससे ऐसा इन्तकाम लेना चाहती हूं कि वह जिन्दगी भर याद रखे।"

"क्यों न हम मिलकर काम करें। मुझे भी उससे कुछ हिसाब चुकाना है।" काला ने कहा।

"क्या...?" उसने चौंककर काला बच्चा की तरफ देखा।

"दारा ने तुम्हें दुःख पहुंचाया है। तुम्हारे विश्वास को ठेस पहुंचाई है। तुम्हारे दिल को चूर-चूर किया है। अगर तुम उससे इन्तकाम लेने में सचमुच गम्भीर हो तो हम तुम्हारा साथ दे सकते हैं। वैसे तुम पहली लड़की नहीं हो जो दारा के फरेब का शिकार हुई हो।" काला ने कहा।

"इसका मतलब है कि...।"

"हां...।" काला ने उसकी बात काट दी—"दारा एक जरायम पेशा आदमी और पेशावर शिकारी है।" काला बच्चा उसके इन्तकाम की आग को भड़काने की कोशिश कर रहा था—"सिंगापुर की बातों पर शायद तुम्हें यकीन न आये लेकिन यहां की चंद मिसालें दूंगा। मैं जिन लड़कियों के नाम ले रहा हूं उन्हें तुम भी बहुत करीब से जानती होगीं। कौशल्या जिसे दारा ने अपने जाल में फांसकर पहले उसे महाराज के खिलाफ बगावत पर आमादा किया और उसे अपने बिस्तर की जीनत बनाता रहा। जब उसका मकसद पूरा हो गया, उससे तबियत भर गयी तो उसे बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया।

शाईवान उसके बारे में तो तुमने आज ही सुना होगा। अखबारों में भी छपा है उसके बारे में। पिछली रात दारा के आदमियों ने उस वक्त गोलियों से भून डाला जब वह दारा के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाने पुलिस स्टेशन जा रही थी। कुछ अरसा पहले इसी शाईवान को एक मकान में जिन्दा जलाने की कोशिश की गयी थी। सिर्फ यही दो मिसालें नहीं हैं। मैं तुम्हें और भी बहुत-सी लड़कियों के नाम गिनवा सकता हूं, जो दारा के जुल्म का शिकार हुई है। एक ताजा तरीन मिसाल तो तुम खुद हो।" पामेला फटी-फटी नजरों से काला बच्चा की तरफ देख रही थी। वह कुछ कहना चाहती थी लेकिन काला बच्चा उसे अवसर दिए बगैर बोलता रहा—"तुमने दारा के लिए क्या कुछ नहीं किया। उसे उस वक्त पनाह दी जब वह यहां अनजबी था और पुलिस उसकी तलाश में थी। तुमने उसे न सिर्फ पनाह दी बल्कि अपने आपको भी उसकी सुपुर्दगी में दे दिया। उसके कदम धीरे-धीरे जमने लगे। तुमने उसे टाइगर तक भी पहुंचा दिया। वह न सिर्फ खुद तुम्हें खिलौने की तरह इस्तेमाल करता रहा बल्कि तुम्हें अपने नये दोस्तों के सामने भी पेश करता रहा, जिनसे वह कोई फायदा उठाना चाहता था। तुम उसकी खुशी की खातिर सबकुछ करती रही—यहां तक कि तुमने एक ऐसे शख्स को भी बम से उड़ाने की कोशिश की जिसे तुम जानती तक नहीं।"

"त...तुम...यह सब कुछ कैसे जानते हो?" वह हकलाई उसके चेहरे पर हल्का-सा खौफ था और आंखों में दहशत थी।

"उस धमाके में कई बेगुनाह मारे गये थे और दर्जनों जख्मी हो गयी थे।" काला बच्चा ने उसकी बात नजर अन्दाज करते हुए बात जारी रखी—"लेकिन क्या तुम्हें मालूम है दारा उस नौजवान को क्यों कत्ल करना चाहता है इसलिए कि वह नौजवान दारा के एक ऐसे जुर्म का चश्मदीद गवाह है, जो उसे फांसी के तख्ते पर पहुंचा सकता है। दारा ने उसकी आंखों के सामने उसके मां-बाप को जिब्ह किया था, वह दारा से छिपता फिर रहा था लेकिन अब वह... ।"

"त...तुम... ।" पामेला एक बार फिर हकलाई।

"तुम्हारा ख्याल ठीक है। मैं ही वह शख्स हूं, जिसे दारा अपना बदतरीन दुश्मन समझकर हर कीमत पर मौत के घाट उतारना चाहता है।" काला बच्चा ने सिर पर से विग और ऊपरी होठों पर चिपकी हुई बारीक सी मोछें उतार दीं।

वह उछल पड़ी। उसका चेहरा खौफ से एकदम सफेद हो गया। उसने अब काला बच्चा को पहचान लिया था।

"डरो नहीं... मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा।" काला बच्चा ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा। उसका हाथ बर्फ की तरह ठण्डा हो रहा था—"मैंने तुम्हें उस रोज पहचान लिया था जब गेस्ट हाउस की ऊपरी मंजिल पर मैंने किम और दारा की पिटाई की थी और उसके अगले ही दिन से मेरा यह दोस्त तुम्हारे साथ रहा है।" काला ने प्रसाद की तरफ संकेत किया—"अगर हम चाहते तो तुम्हें किसी भी वक्त मौत के घाट उतार सकते थे लेकिन तुमसे हमारी कोई दुश्मनी नहीं। मैं जानता हूं तुम बेकसूर हो। दारा तुम्हें इस्तेमाल कर रहा है और अब शायद उसकी नजरों में तुम्हारी कोई अहमियत नहीं रही, इसलिए वह तुम्हें निरंतर नजर अन्दाज कर रहा है। उसने तुम्हारे साथ धोखा किया है। तुम्हारे विश्वास को ठेस पहुंचाई है। तुम शायद यही समझती हो कि अब उसे तुम्हारे जिस्म से कोई दिलचस्पी नहीं रही इसलिए वह तुम्हें नजर अन्दाज करके दूसरी लड़कियों पर ज्यादा ध्यान दे रहा है। बात सिर्फ इतनी-सी नहीं है पामेला।" काला बच्चा चंद लम्हे खामोश हुआ फिर बोला—"अब तुम उसके लिए बेकार हो चुकी हो अलबत्ता एक लिहाज से तुम उसके लिए अहम हो सकती हो कि तुम उसके बहुत से राजों से वाकिफ हो और उसे जैसे ही इस बात का एहसास होगा वह तुम्हें भी कौशल्या और दूसरी लड़कियों की तरह मौत के घाट उतार देगा और अभी थोड़ी देर पहले तुमने बताया था कि वह सिंगापुर वाले मामले में तुम पर भी शक करने लगा है।"

"उसने खुलकर शक का इजहार नहीं किया लेकिन उसका ख्याल है कि हो सकता है कि वह बात मेरे जरिए से बाहर निकली हो।" पामेला ने कहा।

"शक और कैसा होता है।" काला बच्चा ने उसे घूरा—"वह एक दो दिन तक तुम पर निगाह रखेगा और फिर...।"

"फिर मुझे क्या करना चाहिए?" वह कांप उठी।

"वही जो तुम करना चाहती हो।" काला बच्चा ने उसके चेहरे पर नजरें जमाते हुए कहा—"हम तुम्हारे साथ हैं और इस मामले में तुम्हारी हर मदद करने को तैयार हैं।"

"तुम्हारी बातें सुनकर मुझे लगता है कि वह शैतान मुझे अब वाकई जिन्दा नहीं छोड़ेगा।" पामेला ने कहा—"मैं अब वाकई उसे माफ नहीं करूंगी। बताओ तुम क्या चाहते हो?"

काला बच्चा तुरन्त जवाब देने की बजाए खामोशी से उसकी तरफ देख रहा। वह दिल ही दिल में मुस्करा रहा था कि दारा की

तरफ की अहम साथी को उससे तोड़ने में कामयाब हो गया है। वह न सिर्फ दारा बल्कि टाइगर के भी बहुत से गुनाहों की साक्षी थी। पुलिस को अब भी उन लोगों की तलाश थी, जिन्होंने खानकाह के सामने बम ब्लास्ट कराया था और जिसमें कई बेगुनाह मारे गये थे। किम और टाइगर वगैरह के खिलाफ यद्यपि बुद्ध की प्रतिमा से सोना चुराने वाली रिपोर्ट भी मौजूद थी लेकिन वह मामला ठण्डा पड़ गया था और पुलिस को भी शायद उस मामले से ज्यादा दिलचस्पी नहीं रही थी लेकिन बम ब्लास्ट में कई लोग मारे गये थे। पुलिस के सामने पामेला का बयान हंगामा खड़ा कर सकता था।

वह लगभग डेढ़ घण्टे तक वहां बैठे बातें करते रहे, इस दौरान में काला बच्चा ने पामेला से दारा वगैरहा के बारे में बहुत-सी बातें मालूम कर ली थीं और पामेला को बहुत-सी बातें समझा भी दी थीं।

जब वह प्रसाद के फ्लैट से निकले तो रात का एक बज चुका था। बाहर आने से पहले काला ने होठों पर बारीक मोछे और सिर पर विग जंमा ली थी। गली से निकलकर हम बड़ी सड़क पर आ गये। एक खाली टिकटिक फौरन ही मिल गया और काला बच्चा थाईवांग के साथ चौराहे की तरफ पैदल चलता रहा।

थाईवांग चलते-चलते अचानक लड़खड़ा गयी थी। अगर काला बच्चा उसे तुरन्त सहारा न देता तो वह यकीनन गिर पड़ती। काला बच्चा ने प्रसाद के फ्लैट में भी यह बात महसूस की थी कि थाई जितनी देर वहां रही थी बेचैनी-सी महसूस करती रही थी। कभी वह बैठ जाती और कभी उठकर टहलने लगती और इस वक्त वह इस तरह लड़खड़ाई थी जैसे नशा टूट रहा था। वह कभी एक हाथ मरोड़कर कमर और पुश्त सहलाने लगती और कभी दूसरे हाथ से। काला बच्चा को समझने में देर नहीं लगी कि उसकी वह हालत क्यों हो रही है। थाई ने लगभग तीन महीनों से हांगसो की बताई हुई एक्सरसाइज छोड़ रखी थी और अब यह बेचैनी उसी का परिणाम थी।

"क्या हुआ थाई?" तुम्हारी तबियत तो ठीक है ना?

"मेरी तबियत ठीक नहीं है। अब तक बड़ी मुश्किल से बर्दाश्त करती रही हूं।" थाई ने कराहते हुए कहा—"कोई सवारी तलाश करो और जल्दी घर पहुंचने की कोशिश करो।"

काला बच्चा इधर-उधर देखने लगा। चौराहा लगभग सौ गज आगे था। वहां कुछ टैक्सियों और टिकटिक खड़े नजर आ रहे थे लेकिन वहां तक पहुंचने से पहले ही एक टिकटिक एक गली से निकलकर उसके सामने आ गया और वह दोनों उसमें बैठ गये।

टिकटिक किंग टाक्सन स्टेच्यू वाले चौराहे पर छोड़कर बाकी रास्ता उन्हें पैदल ही तय करना पड़ा और यह रास्ता बड़ी मुश्किल से तय हुआ था। बंगले के गेट में दाखिल होकर काला बच्चा तो अन्दर से गेट बन्द करने लगा और थाई उस दौरान में बरामदे में पहुंच चुकी थी और जब काला बच्चा बरामदे वाला दरवाजा बन्द करके अन्दर आया तो थाई बेड पर औंधी पड़ी हुई थी। उसकी पीठ नग्न थी। काला बच्चा ने बैड के नीचे रखी छड़ी उठा ली और आंखें बन्द करके थाई की पीठ पर बरसाने लगा।

सड़ाक...सड़ाक...सड़ाक...।

□□□

□□□

खलोंग टोई डिस्ट्रिक्ट के इलाके में एक्सप्रेस वे और रेलवे लाइन से जरा हटकर कोसा रोड पर स्थित वह बंगला तलाश करने में उन्हें ज्यादा परेशानी नहीं आई थी। वह बहुत बड़ा बंगला था। चार-दीवारी ने लम्बा-चौड़ा रकबा घेर रखा था। चारदीवारी खासी ऊंची थी लेकिन उसके ऊपर कंटीले तारों की बाड़ भी लगी हुई थी। काला बच्चा को शक हुआ कि कहीं वह गलत जगह पर तो नहीं आ गये। लेकिन राम्न प्रसाद ने इस भ्रम का खंडन कर दिया था कि वह गलत जगह आये हैं। वह ठीक जगह आये थे।

"आज दिन में पामेला भी आई थी।" प्रसाद ने काला बच्चा के कान में सरगोशी की—"और दो घण्टों बाद मैंने उसे टाइगर के साथ यहीं से निकलते देखा था।"

"तुम्हारे ख्याल में यहां इस वक्त कितने लोग मौजूद होंगे?" काला ने पूछा।

"टाइगर, दारा और पामेला के अलावा सिर्फ एक और आदमी होना चाहिए।" प्रसाद ने जवाब दिया—"पामेला ने शाम को बताया था कि च्यांगराय से एक आदमी आया हुआ है जिसे दारा आज की रात यहां अय्याशी कराना चाहता है। पामेला को इस सिलसिले में यहां बुलाया गया है। मेरा ख्याल है च्यांगराय से आने वाला वही शख्स है, जिससे गोल्डन ट्राई एंगील के सिलसिले में कारोबारी सौदा होने वाला है और मेरा ख्याल है आज रात यहां बिजनेस की बात भी तय होगी। वह ठीक बारह बजे यहां आयेगा।"

उस वक्त रात के साढ़े ग्यारह बजे थे। वह कोठी के सामने का एक चक्कर लगाकर पीछे की तरफ एक नीम तारीक गली के मोड़पर कार में बैठे हुए थे। इस कार का बन्दोबस्त प्रसाद ने ही किया

था। थाईवांग भी उसके साथ थी और वह ड्राइविंग सीट पर बैठी हुई थी।

उस रात पामेला से बातचीत के बाद यह प्रोग्राम बना था कि किसी मुनासिब मौके पर हमें उस कोठी तक ले जायेगी जो दारा की खुफिया पनाहगाह थी। दारा की इस कोठी के बारे में टाइगर किम और चीफांग के सिवा किसी और को इल्म नहीं था या फिर पामेला और एक-दो वह लड़कियां उस कोठी के बारे में जानती थीं, जिन्हें वह अय्याशी के लिए समय-समय पर यहां लेकर आया था, लेकिन उन लड़कियों में यह हिम्मत नहीं हो सकती थी कि वह किसी और पर कोठी का राज फाश करें।

पामेला ने आज शाम ही प्रसाद को बताया था कि आज रात इस कोठी में दारा का एक अहम मेहमान आने वाला है और इस मीटिंग में उनकी तरफ से दारा और टाइगर के सिवा कोई नहीं होगा।

''अगर कोई बिजनेस मीटिंग है तो इसमें किम और चीफांग की अनुपस्थिति मेरे लिए हैरत की बात है। वह दोनों तो उसके दो बाजू हैं।'' काला ने कहा।

''मुझे पामेला ने बताया था कि दारा अब इन दोनों से पीछा छुड़ाना चाहता है।'' प्रसाद ने जवाब दिया—''गोल्डन ट्राई ऐंगिल में सम्पर्क हो जाने के बाद वह इन्हें भी शायद ठिकाने लगा देगा। उसकी शायद यही फितरत है कि नये लोगों से मुलाकात के बाद वह पुराने लोगों से छुटकारा हासिल कर लेता है। गोल्डन ट्राई ऐंगिल वाले मामले में राजादारी के ख्याल से उन दोनों को इस मिटिंग में नहीं बुलाया गया।''

''लेकिन चीफांग को तो इस सिलसिले में विशेष रूप से च्यांगराय भेजा गया था।'' काला ने कहा।

''सिर्फ संदेशवाहक की हैसियत से।'' प्रसाद ने जवाब दिया—''उसने भी बीच के एक आदमी को संदेश पहुंचाया था। उन्हें तो यह भी मालूम नहीं कि च्यांगराय से कोई आदमी यहां आया हुआ है।''

''इसका मतलब है कि हम बाद में इस परिस्थिति से फायदा उठा सकते हैं।'' थाईवांग खामोशी से स्टेयरिंग के सामने बैठी हुई थी। प्रसाद नौ बजे के करीब उनके पास आया था। उसके साथ प्रोग्राम बनाने के बाद उन्होंने फैसला किया था कि आज वह अपने असली चेहरों के साथ इस मिशन पर जायेंगे ताकि दारा को यह बता सकें कि वह उससे सामना करने की हिम्मत रखते हैं।

पौने बारह बजे के करीब प्रसाद कार से उतरकर सड़क की तरफ चला गया। काला बच्चा और थाईवांग कार में बैठे रहे। प्रसाद की वापसी लगभग बीस मिनट बाद हुई थी। कार में रखा हुआ एक थैला उठाकर उसमें से एक-दो चीजें निकालीं और काला बच्चा को नीचे उतरने का संकेत किया।

"वह लोग आ गये हैं। कार में टाइगर और एक भारी-भरकम आदमी के अलावा एक लड़की भी है।"

"इसका मतलब है। दारा पहले से ही कोठी में मौजूद था। पामेला भी यहीं होगी।" काला बच्चा ने कार का दरवाजा खोलते हुए कहा और थाईवांग की तरफ देखते हुए बोला—"अपना ख्याल रखना थाई। अगर कोई गड़बड़ महसूस करो तो हमारा इन्तजार करने की बजाए एक भी लम्हा गवाये बिना यहां से निकल जाना।"

"ठीक है तुम लोग जाओ।" थाई ने सिर हिला दिया।

काला बच्चा और प्रसाद उस अंधेरी गली में चलते हुए कोठी की दीवार के करीब आ गये। यह कोठी की अकबी गली थी। सामने वाली कोठियों के पिछवाड़े भी इस तरफ थे। इस तरह इस गली में रात के वक्त लोगों की आमद-रफ्त नहीं होती थी और यहां रोशनी का प्रबन्ध भी नहीं था।

दीवार के साथ एक जगह कूड़े का ढ़ेर लगा हुआ था। वह दोनों इस ढ़ेर पर चढ़ गये। दीवार की बुलन्दी इस तरफ तीन-चार फुट रह गयी थी और ऊपर जाकर तारों तक भी हाथ आसानी से पहुंच सकता था। प्रसाद ने जेब से इलेक्ट्रिक टेस्टर निकाला और एक-एक तार को चैक करने लगा। अन्देशा था कि शायद रात को इन तारों में बिजली का करंट छोड़ दिया जाता हो लेकिन किसी तार में करंट नहीं था। उसने टेस्टर जेब में रख लिया और कटर से तार काटने लगा। आठ-आठ इंच के फासले पर नीचे से ऊपर तक पांच तार लगे हुए थें। उसने एक तरफ से तमाम तार काट दिये।

वह दोनों दीवार पर चढ़कर बड़ी आहिस्तगी से अन्दर कूद गये। वृक्षों की वजह से इस जगह यद्यपि अंधेरा था मगर कोठी की खिड़कियों में रोशनी हो रही थी वह दोनों-एक-दूसरे से अलग हो गये और अलग-अलग खिड़कियों में झांकने लगे एक खिड़की से झांकते ही वह चौंक गया।

वह शानदार फर्नीचर से सजा हुआ बहुत बड़ा हॉलनुमा कमरा था। एक सोफे पर दारा उस लड़की के साथ बैठा हुआ था, जो दूसरे आदमी के साथ आई थी और दूसरे सोफे पर पामेला उस मोटे आदमी

के साथ बैठी हुई थी। दरम्याने कद के उस आदमी की उम्र पैंतालीस के लगभग रही होगी। उसके चेहरे पर चीनियों जैसी समानता थी। वह नीले रंग का सूट पहने हुए था। मगर टाई नहीं थी, सफेद कमीज का कालर कोट के कालर से ऊपर था। एक सामने का ऊपर वाला दांत टूटा हुआ था।

पामेला और उस दूसरी लड़की के जिस्म पर लिबास नाम मात्र को ही था। लम्बे कद की मालिक वह लड़की भी बड़ी हसीन थी। उसके सामने शराब के गिलास रखे हुए थे। वह कुछ बातें भी कर रहे थे, मगर खिड़की बन्द होने की वजह से आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। टाइगर उस कमरे में नजर नहीं आ रहा था।

प्रसाद दबे कदमों चलता हुआ काला बच्चा के करीब पहुंच गया और आगे की तरफ चलने का इशारा किया। चंद कदम चलकर वह रुक गये।

"हम बरामदे से या अकबी दरवाजे से अन्दर दाखिल नहीं हो सकते।" प्रसाद ने काला बच्चा के कान में सरगोशी की—"अलबत्ता छत पर पहुंच जायें तो जीने के रास्ते राहदारी में पहुंच सकते हैं। इस तरफ आओ।"

वह दोनों दीवार के साथ-साथ घूमते हुए दूसरी तरफ आ गये और वहां से छत पर पहुंचना उनके लिए ज्यादा मुश्किल साबित नहीं हुआ था। प्रसाद ने सीढ़ियों वाले दरवाजे के हैण्डिल पर हाथ रखकर सावधानी से घुमाया और दरवाजा आवाज पैदा किए बगैर आहिस्तगी से खुलता चला गया। सीढ़ियों का यह दरवाजा अन्दर से लॉक करने की जरूरत शायद इसलिए नहीं समझी गयी थी कि वह इस बंगले को सुरक्षित समझते थे और किसी के अन्दर दाखिल होने का अन्देशा नहीं था।

सीढ़ियों पर ऊपर नीचे राहदारी में अंधेरा था, क्योंकि राहदारी से हॉल में दाखिल होने वाला दरवाजा बन्द था। उन दोनों ने अपने अपने खंजर निकाल लिए और दबे कदमों सीढ़ियां उतरने लगे।

इस राहदारी का दूसरा दरवाजा बाहर की तरफ खुलता था। सीढ़ियों के नीचे की जगह पर शायद बाथरूम बना हुआ था और दूसरी तरफ भी दरवाजा था जो बन्द था।

वह दोनों हॉल वाले दरवाजे के करीब रुक गये। काला बच्चा ने झुककर की-होल से आंख सटा दीं। टाइगर अब भी कमरे में नजर नहीं आ रहा था। उस मोटे आदमी ने अपना कोट उतारकर सोफे की पुश्त पर डाल दिया था। उसने बगली हौलेस्टर पहन रखा था

और बायीं बगल के नीचे रिवॉल्वर का दस्ता झांक रहा था। काला बच्चा सीधा खड़ा हो गया।

"टाइगर नजर नहीं आ रहा।" काला बच्चा ने प्रसाद के कान में सरगोशी की।

"अन्दर ही होगा।" प्रसाद ने कहा—"होशियार! मैं दरवाजा खोलने जा रहा हूं।"

उसने दरवाजे के हैण्डिल पर हाथ रखा लेकिन इससे पहले कि वह हैण्डिल थामता चट की हल्की आवाज आई और राहदारी में तेज रोशनी फैली गयी। वह दोनों एक साथ ही घूम गये। राहदारी में दायीं तरफ वाला दरवाजा खुला था और टाइगर रिवॉल्वर हाथ में लिए खड़ा था। उसके होठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट थी। रिवॉल्वर का रुख उनकी तरफ था।

"खंजर फेंककर हाथ ऊपर उठा लो।" टाइगर के कंठ से गुर्राहट सी निकली—"इत्तेफाक से मैंने तुम लोगों को दीवार पर से कूदते देख लिया था। पहले तो मैं समझा था कि तुम लोग चोर हो मगर चोरी का वक्त नहीं है और चोर उस घर में कभी नहीं घुसते जहां तमाम बत्तियां जल रही हों। खंजर फेंक दो।"

उसके हुक्म की तामील के सिवा कोई चारा नहीं था। हम दोनों ने खंजर फेंक दिए।

"गुड... !" टाइगर बोला—"तुम्हें तो शायद मैंने पहले भी देखा है मगर यह चेहरा मुझे अजनबी-सा लग रहा है।" उसने आखरी शब्द काला बच्चा की तरफ देखकर कहे थे। टाइगर का और काला का आज तक आमना-सामना नहीं हुआ था और शायद इसीलिए वह उसे पहचान नहीं सका था—"बहरहाल दरवाजा खोलो और अन्दर दाखिल हो जाओ। हम मालूम कर लेंगे कि तुम दोनों कौन हो और किस नीयत से यहां आये हो—ऐ तुम एक हाथ से दरवाजा खोलो। दूसरा हाथ सिर के ऊपर ही रहना चाहिए।" उसने प्रसाद को इशारा किया।

प्रसाद ने दायां हाथ झुकाकर दरवाजे के हैण्डिल पर रख दिया। इस दौरान में टाइगर भी दरवाजे से निकलकर इनके पीछे आ चुका था। प्रसाद ने दरवाजा खोल दिया।

कमरे का दृश्य बहुत ही शर्मनाक था। दारा उस लम्बी कद-काठी वाली लड़की को अपनी आगोश में समेटे हुए था और पामेला दूसरे आदमी की आगोश में थी। दरवाजा खुलने पर दारा ने लड़की के चेहरे पर झुका हुआ सिर उठाकर देखा और फिर उस

लड़की को धक्का देकर एक झटके से उठकर खड़ा हो गया। वह चंद लम्हे उलझी हुई नजरों से काला बच्चा की तरफ देखता रहा फिर उसके मुंह से हल्का-सा कहकहा निकल गया।

"बहुत तब्दीलियां आ गयी हैं तुममें मगर मेरी आंखें धोखा नहीं खा सकतीं।" वह काला बच्चा के चेहरे पर नजरें जमाते हुए बोला—"तुम आखिर मेरे जाल में फंस ही गये मिस्टर काला बच्चा। अब दुनिया की कोई ताकत तुम्हें नहीं बचा सकती।"

काला बच्चा का नाम सुनकर टाइगर भी उछल पड़ा—"य...यह काला बच्चा है?" उसके लहजे में बड़ी हैरत थी—"फिर तो इसे फौरन ही खत्म कर देना चाहिए।" उसने रिवॉल्वर का रुख काला की तरफ कर दिया।

"नहीं टाइगर! अभी नहीं।" दारा ने हाथ उठाया—"इसे यहां लाने के लिए बड़ी मेहनत करनी पड़ी है। बड़ा लम्बा-चौड़ा जाल फैलाना पड़ा था। यह इस कदर आसानी से हमारे हाथ नहीं आया, जितना तुम समझ रहे हो और अभी तो इससे कुछ हिसाब भी करना है बहुत नुकसान पहुंचाया है इसने मुझे। इसे तो मैं इस तरह तड़पा-तड़पा कर मारूंगा कि दूसरे भी कुछ सबक हासिल करेंगे और दारा के सामने आने की हिम्मत नहीं करेंगे।"

"यह तुम्हारी खुशफहमी है दारा।" काला बच्चा ने अपनी अन्दरुनी कैफियत पर काबू पाने की कोशिश करते हुए कहा—यह रहस्योद्‌घाटन काला बच्चा के लिए बड़ा सनसनीखेज साबित हुआ था कि पामेला टूटी नहीं थी बल्कि उसके जरिए दारा ने उन पर जाल फैलाया था—"अब वक्त बदल चुका है। पहले मैं तुमसे छिपता फिर रहा था, अब भागने की तुम्हारी बारी है। तुम जिन्दगी भर इसलिए भागते रहोगे कि तुम्हें कहीं पनाह नहीं मिलेगी।"

"पिद्दी न पिद्दी का शोरबा।" दारा ने कहकहा लगाया—"वैसे अब तुम बड़े हो गये हो और बड़ी-बड़ी बातें करना सीख गये हो मगर बातों से तो कोई झंडे नहीं गड़ते। तुम मेरा क्या बिगाड़ सकते हो मेरा?"

"शायद तुम भूल गये हो कि सिर्फ दो दिन पहले सिंगापुर में तुम्हारे तीन आदमी और दस किलोग्राम हेरोइन पकड़ी गयी है। इन्सपेक्टर च्यांग शो को मैंने ही यहां से फोन करके तुम्हारे उन आदमियों के बारे में आगाह किया था।" काला बच्चा ने उसके चेहरे पर नजरें जमाते हुए कहा—"तुमने मेरे बाप को सिर्फ इसलिए कत्ल किया था कि वह तुम्हारे घिनावने मकसद में रुकावट पैदा कर सकता

था। मेरा बाप नहीं रहा तो क्या हुआ, मैं तो हूं। मैं कहीं भी तुम्हें टिकने नहीं दूंगा। मुझे तुमसे अपने बेगुनाह बाप के कत्ल का इन्तकाम भी लेना है।"

दारा की आंखें फैल गयीं। पहले शायद वह यही समझता रहा था कि सिंगापुर वाले वाकये में काला बच्चा का नाम महज शक है लेकिन अब वह शक नहीं था। टाइगर रिवॉल्वर लिए तैयार खड़ा था। दूसरा आदमी भी सोफे से उठकर खड़ा हो चुका था। पामेला भी उसके करीब ही खड़ी थी। उसके होठों पर अर्थपूर्ण मुस्कराहट थी।

"मैं तुम्हें इस गंदगी से निकालना चाहता था।" काला बच्चा ने पामेला की तरफ देखकर कहा—"लेकिन अब पता चला कि गंदगी के कीड़े गंदगी में ही रहना पसंद करते हैं।"

"तुम मुझे बेवकूफ समझते थे कि ऐशो-आराम की जिन्दगी छोड़कर अपनी जान बचाने के लिए तुम्हारे साथ छिपती फिरती।" पामेला ने कहा—"रामन प्रसाद पर तो मुझे पहले ही दिन शक हो गया था और जब मुझे यकीन हो गया कि यह तुम्हारा आदमी है तो सिर्फ तीन दिन पहले मैंने दारा को बता दिया और फिर वह सारा ड्रामा तुम्हें फंसाने के लिए किया गया था। तुम सचमुच बेवकूफ हो। किस कदर आसानी से मेरे जाल में फंस गये।"

"लेकिन यह जाल बहुत कच्चा है।" काला ने जवाब दिया—"मैं इतना बेवकूफ नहीं हूं जितना तुम समझ रहे हो। महाराज के आदमी इस कोठी को घेरे में ले चुके होंगे। तुम लोगों में से कोई भी यहां से बचकर नहीं जा सकेगा।"

दारा के चेहरे पर उलझन की परछाइयां उभर आईं। उसने जेब से पिस्तौल निकालकर काला बच्चा और प्रसाद को अपनी जद में ले लिया और टाइगर को इशारा किया। टाइगर तेजी से बाहर निकल गया। उसकी वापसी लगभग पांच मिनट बाद हुई।

"बाहर दूर-दूर तक कोई नहीं है। यह ब्लफ कर रहा है हमसे।"

"ठीक है टाइगर!" दारा ने कहा—"फिलहाल इन दोनों को बांधकर साथ वाले कमरे में डाल दो। हम मिस्टर शांग से बिजनेस की बातें कर लें, बाद में इनसे निबट लेंगे।"

पामेला उस वक्त भारी-भरकम शांग के साथ खड़ी थी। उसके चेहरे पर कुछ अजीब से भाव थे और फिर उसने वह हरकत की जिसकी किसी को भी कोई आशा नहीं थी, उसने बड़ी फुर्ती से मिस्टर शांग के बगली होलेस्टर में से रिवॉल्वर खींच लिया और पुश्त पर पहुंचकर

रिवॉल्वर की नाल शांग की कनपटी पर लगाकर गुर्राई।

"नहीं टाइगर! तुम इस कमरे से बाहर नहीं निकलोगे। रिवॉल्वर फेंक दो और तुम भी मिस्टर दारा। मैं तुम दोनों को सिर्फ तीस सेकिण्ड का वक्त दे रही हूं।"

"य...यह तुम क्या कर रही हो? पागल हो गयी हो क्या?" दारा चीखा।

"पिस्तौल फेंक दो।" पामेला गुर्राई—"मैं सिर्फ तीन तक गिनूंगी और तीन कहते ही इसकी खोपड़ी उड़ा दूंगी।" उसने गिनती शुरू कर दी और फिर उसने जैसे ही दो कहा और टाइगर ने हथियार फेंक दिए।

'इसमें शक नहीं कि तुम बहुत चालाक हो लेकिन हद से ज्यादा चालाकी और आत्म-विश्वास भी ले डूबता है।" पामेला दारा की तरफ देखते हुए बोली—"मैं तुम्हारी फितरत से वाकिफ हो चुकी हूं। अपना मकसद पूरा हो जाने के बाद तुम अपने वफादारों को भी मौत के घाट उतार देते हो। इंसानी जिन्दगी तुम्हारे लिये कोई अहमियत नहीं रखती तुम सिर्फ और सिर्फ अपना फायदा देखते हो। तुम्हारा मंसूबा यह है कि इन दोनों के साथ मुझे भी खत्म कर दिया जाए, क्योंकि अब मैं तुम्हारे लिए अहम नहीं रही। तुम्हें शक था कि सिंगापुर में तुम्हारे आदमियों के नाम और पते मैंने काला बच्चा को दिए हैं इसलिए तुमने प्रोग्राम बनाया था कि काला बच्चा हाथ आ जाए तो उसके साथ मुझे भी खत्म कर दिया जाए।"

"तुम्हें गलतफहमी हुई है पामेला।" दारा ने कहा।

"मुझे गलतफहमी नहीं हुई। मैंने फोन पर टाइगर से तुम्हारी बातें सुन ली थीं।" पामेला ने कहा—"और तुमने यह भी कहा था कि काला बच्चा ने तुम्हारे भाई को कत्ल किया था और तुम इस कत्ल का बदला लेना चाहते हो लेकिन हकीकत यह है कि तुमने इसके बेगुनाह मां-बाप को कत्ल किया था और इसे भी रास्ते से हटाना चाहते हो, क्योंकि यह तुम्हारे उस संगीन जुर्म का चश्मदीद गवाह है।"

"यह कहानी तुम्हें इसने सुनाई होगी।" दारा ने काला बच्चा की तरफ इशारा करते हुए कहा—"यह बहुत चालाक आदमी है। लोगों की हमदर्दियां हासिल करने के लिए इस किस्म की झूठी और मनगढ़ंत कहानियां सुनाता रहता है और इसलिए अब तक बचा हुआ है।"

"यह दुरुस्त है कि यह कहानी मुझे इसी ने सुनाई थी

लेकिन... ।" पामेला कह रही थी—"कल की रात का बाकी हिस्सा मैंने किम के साथ गुजारा था। किम के साथ मैं पहली मर्तबा बिस्तर पर लेटी थी और वह इतना खुश था कि मेरी हर बात का जवाब देता चला गया। उसने इस कहानी की तस्दीक कर दी है। तुम्हीं ने किम और चीफांग को पैसे देकर उसके मां-बाप को कत्ल करवाया था। तुम भी वहां मौजूद थे और फिर लोग इसके पीछे पड़ गये। तुमने किम से वादा किया था कि उसे अपने सिंडीकेट में सिंगापुर का चीफ बना दोगे लेकिन तुम्हारा असली मंसूबा यह है कि वक्त आने पर किम और चीफांग को भी रास्ते से हटा दिया जाए। अब तुम्हें टाइगर मिल गया है और टाइगर के माध्यम से तुम गोल्डन ट्राई एंगिल तक अपनी पहुंच बनाना चाहते हो लेकिन तुम्हारी यह इच्छा कभी पूरी नहीं होगी। तुमने मेरे साथ भी धोखा किया है लेकिन तुम शायद यह भूल गये हो कि औरत जब इंतकाम लेने पर आती है तो दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकत को भी रौंद डालती है।" पामेला के लहजे में बेपनाह नफरत थी। जहर भरा हुआ था। वह चंद लम्हों को खामोश हुई फिर प्रसाद की तरफ देखते हुए बोली—"प्रसाद खड़े-खड़े क्या देख रहे हो—रिवॉल्वर और पिस्तौल उठा लो।"

"तुम बहुत बड़ी गलती कर रही हो पामेला।" दारा बोला—"मेरी बाहें अब भी तुम्हारे लिए खुली हुई हैं। इसमें शक नहीं कि मेरे दिल में मैल आ गया था लेकिन मैं तुम्हें कत्ल हरगिज नहीं करना चाहता था। यह आदमी बहुत खतरनाक है, अगर बचकर निकल गया तो न सिर्फ हमें बल्कि तुम्हें भी खत्म कर देगा। भूल जाओ सब कुछ अब भी वक्त है।"

"बन्द करो बकवास।" पामेला चीखी।

प्रसाद पिस्तौल और रिवॉल्वर उठाने के लिए आगे बढ़ा तो टाइगर ने बड़ी फुर्ती से उसकी टांग में टांग फंसा दी। प्रसाद लड़खड़ाकर पामेला से टकरा गया। पामेला भी लड़खड़ाकर पीछे गिर गयी।

हर एक ने इस परिस्थिति का लाभ उठाने की कोशिश की। टाइगर ने कालीन पर पड़े रिवॉल्वर की तरफ छलांग लगाई, मगर प्रसाद ने संभलकर उसे छाप लिया। दारा भी पिस्तौल की तरफ झपटा लेकिन काला बच्चा किसी ताकतवर स्प्रिंग की तरह अपनी जगह से उछला। काला का एक पैर दारा के बायें कंधे पर और दूसरा मस्तक पर लगा था वह बिलबिलाता हुआ पीछे उलट गया। काला बच्चा उसके करीब खड़ी हुई लड़की से टकराया और वह दोनों सोफे पर

गिर पड़े। सोफा पीछे की तरफ उलट गया। उस [illegible] के मुंह से खौफनाक चीख निकल गयी थी।

पामेला सोफे के पिछली तरफ गिरी थी। रिवॉल्वर उसके हाथ से छूटकर सोफे के नीचे जा गिरा था। भारी-भरकम शांग पहले तो कुछ गड़बड़ाया फिर वह पामेला को गिरफ्त में लेने की कोशिश करने लगा। पामेला ने उसकी कलाई पर दांत गाड़ दिए और बुरी तरह भंभोड़ने लगी। शांग बिलबिला उठा।

प्रसाद टाइगर की गिरफ्त में आ चुका था लेकिन फिर अचानक ही उसने टाइगर के चेहरे पर सिर की जोरदार टक्कर मारी। उसकी नाक से खून बह निकला। प्रसाद ने इस मौके का फायदा उठाते हुए बाजी पलट दी। अब वह टाइगर पर ताबड़-तोड़ हमले कर रहा था। टाइगर जिस तरह प्रसाद के हाथों पिट रहा था। उससे एक अन्दाजा हुआ कि उस जैसे बड़े-बड़े बदमाश खुद अन्दर से खोखले होते हैं। वह खुद किसी का मुकाबला करने की ताब नहीं रखते। उनके रौब व दबदबे और ताकत का दारोमदार उनके गुर्गो पर होता है।

दारा उठकर खड़ा हो गया था। गुस्से की अधिकता से उसकी आंखें सुर्ख हो रही थीं। भला यह बात उसके लिए काबिले बर्दाश्त कैसे हो सकती थी कि जो लौण्डा उसके खौफ से छिपता फिर रहा हो, आज उस पर इस तरह बेखौफ होकर हमलावर हो।

काला बच्चा को यह अन्दाजा लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई थी कि वह गैन्डे की तरह ताकतवर था लेकिन उसका अन्दाजा बता रहा था कि वह लड़ाई के दावपेंच से वाकिफ नहीं था और काला को उस पर यह बरतरी हासिल थी कि वह लड़ाई के फन से वाकिफ था।

दारा ने काला बच्चा पर हमला किया लेकिन काला वार बचा गया। दूसरे हमले में उसका हाथ काला बच्चा की गिरफ्त में आ गया लेकिन काला बच्चा ने बाजू छुड़ाने की कोशिश करने के बजाए खड़े-खड़े उछलकर उल्टी कलाबाजी के अन्दाज में अपने जिस्म को दोहरा किया और उसकी गर्दन को दोनों टांगों की कैंची में लेकर अपने आपको नीचे की तरफ झटका दिया। काला बच्चा खुद तो नीचे गिरा था लेकिन दारा भी सिर के बल नीचे गिरा और कलाबाजी खाता हुआ दीवार से जा टकराया। उसने उठने में भी बड़ी फुर्ती दिखाई थी लेकिन काला बच्चा उससे पहले ही उठकर खड़ा हो गया। उसने घूंसा मारने के लिए हमला किया। काला बच्चा ने बड़ी फुर्ती से उसका हाथ पकड़ लिया और उछलकर उसकी बगल में जोरदार किक लगा

दी। वह बिलबिला उठा। उसका बाजू अभी तक काला की गिरफ्त में था। काला ने उछलकर एक और किक लगाई और इसके साथ ही उसका हाथ छोड़ दिया। वह लड़खड़ाकर उस लड़की पर गिरा जो उठने की कोशिश कर रही थी।

अचानक फायर की आवाज सुनकर काला बच्चा पलटा। भारी भरकम शांग ने न सिर्फ रिवॉल्वर पर कब्जा कर लिया था, बल्कि पामेला भी उसकी गिरफ्त में थी। उसने पामेला को बाजू की लपेट में ले रखा था। पामेला के चेहरे पर पीड़ा के भाव नुमाया थे।

"अब अगर तुम दोनों में से किसी ने हरकत की तो गोली मार दूंगा।" शांग चीखा, बाजी पलट गयी थी। टाइगर ने भी बड़ी फुर्ती से रिवॉल्वर उठाकर प्रसाद को जद में ले लिया था।

दारा भी उधर खड़ा हो गया। वह चंद लम्हें काला बच्चा की तरफ देखता रहा फिर अचानक ही काला बच्चा की कनपटी पर जोरदार घूंसा मार दिया। काला को यों लगा जैसे कई किलोग्राम वजनी हथौड़े से चोट लगाई गयी हो। काला बच्चा लड़खड़ा गया। दिमाग झनझना उठा। आंखों के सामने नीली-पीली चिंगारियां-सी नृत्य करने लगीं। काला बच्चा बड़ी मुश्किल से अपने आपको संभालने में कामयाब हो सका।

दारा ने आगे बढ़कर पामेला को अपनी गिरफ्त में ले लिया।

"पागल कुतिया।" वह उसके बालों को झटके देते हुए गुर्राया—"तुम्हारा ख्याल दुरुस्त था। अब मुझे सचमुच तुम्हारी जरूरत नहीं रही। पहले तो शायद एक ही गोली से तुम्हारा खात्मा कर दिया जाता लेकिन अब तुम्हारी मौत इतनी आसानी नहीं होगी, मैं तुम्हारे इस खूबसूरत जिस्म को इस तरह काटूंगा कि... ।"

पामेला ने अपने आपको छुड़ाने की कोशिश की। दारा ने उसके बालों को झटका देकर सर ऊपर उठाया और दूसरे हाथ से उसके पेट पर कई घूंसे रसीद कर दिए। पामेला हर चोट पर बिलबिला उठती। दारा ने उसे एक जोरदार झटका देकर नीचे गिरा दिया और लपककर राहदारी के करीब पड़ा हुआ खंजर उठा लिया।

टाइगर ने काला बच्चा और प्रसाद को एक तरफ दीवार के साथ खड़ा करके रिवॉल्वर की जद पर ले रखा था। उन दोनों में से किसी के लिए अपनी जगह से हरकत करने का मौका नहीं था।

पामेला उठने की कोशिश कर रही थी। दारा ने पहले उसे दो-तीन जोरदार ठोकरें मारीं और फिर उसके सीने पर सवार हो गया।

"मैं तुम्हें एक बार में नहीं किश्तों में मौत के घाट उतारूंगा।

पहले यह तुम्हारे खूबसूरत होंठ फिर रुख्सार और फिर तुम्हारे उरोज जिन्होंने मुझे तुम्हारा दीवाना बना दिया था।"

दारा उसके सीने पर इस तरह बैठा था कि पामेला की दोनों बाहें भी घुटनों के नीचे दबा रखी थीं। पामेला सर पटक रही थी। दारा ने बायें हाथ से उसकी ठोड़ी को गिरफ्त में ले लिया और खंजर की धार उसके होठों पर फेंक दी। पामेला के मुंह से खौफनाक चीख निकली, उसका निचला होंठ कट गया था। दारा ने ठोड़ी तक गोश्त काट डाला था। खून का फौव्वारा बह निकला।

काला बच्चा कांपकर रह गया। दारा ने पामेला का एक रुख्सार भी काट दिया। काला बच्चा ने अपनी जगह से हरकत करने की कोशिश की मगर टाइगर ने रिवॉल्वर को इस तरह हरकत दी कि काला बच्चा अपनी जगह पर खड़ा रह गया।

दारा ने वहशियाना अन्दाज में कहकहा लगाया और पामेला के ब्लाउज पर हाथ डालकर जोरदार झटका दिया। उसका सीना नग्न हो गया। दारा के चेहरे पर बेपनाह दरिन्दगी थी। उसका खंजर वाला हाथ हरकत में आया और पामेला के सीने के दायीं तरफ खून का फौव्वारा बह निकला। उसने खंजर का दूसरा वार सीने के बायीं तरफ किया। काला बच्चा ने आंखें बन्द कर लीं और उसकी बन्द आंखों के सामने वह खौफनाक मंजर उभर आया जब चीफांग ने उसकी मां पर इस तरह खंजर से वार किए थे। किरदार बदल गये थे, दृश्य वही था। पामेला की चीखों की आवाजों ने उसकी आंखें खोल दीं। दारा अब पामेला के पेट पर खंजर की नोक से एक गहरी लकीर खींच रहा था। पामेला जिब्ह होते हुए बकरे की तरह मचल रही थी लेकिन दारा ने उसे अपने बोझ के नीचे दबा रखा था।

काला बच्चा के दिमाग में धमाके हो रहे थे। उसकी सहनशक्ति जवाब दे गयी। उसने प्रसाद की तरफ देखा और दूसरे ही लम्हे फेफड़ों की पूरी शक्ति से चीखते हुए अपनी जगह से उछला, टाइगर ने फायर कर दिया। गोली काला के पहलू के करीब से गुजर गयी। इससे पहले कि वह दूसरी गोली चलाता। काला बच्चा की किक उसकी ठोड़ी पर नीचे की तरफ लगी। वह चीखता हुआ पीछे उलट गया। रिवॉल्वर उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरा।

प्रसाद भी अपनी जगह से उछला उसकी ठोकर दारा के सिर पर लगी थी। दारा उछलकर सोफे से टकराया लेकिन फौरन ही संभल गया। पामेला कालीन पर तड़प रही थी। उसके जख्मों से खून फौव्वारों की तरह उछल रहा था।

शांग के हाथ में रिवॉल्वर था। उसने फायर कर दिया। काला बच्चा के सिर के ऊपर से गुजर गयी। वह एकदम नीचे गिर गया था और फिर ठीक उसी लम्हें एक और फायर हुआ। उसके साथ ही शीशा टूटने की आवाज भी सुनाई दी थी यह गोली खिड़की के बाहर से चलाई गयी थी जो शांग के बाजू में लगी थी और वह भी चीख उठा था। रिवॉल्वर उसके हाथ से छूटकर गिर गया था।

काला बच्चा ने खिड़की की तरफ देखा तो उसे थाईवांग का चेहरा दिखाई दिया। दारा और उसका साथी यह समझे कि महाराज के आदमी आ गये हैं। उन्होंने अचानक ही राहदारी की तरफ एक साथ दौड़ लगा दी। काला बच्चा और प्रसाद भी एक ही वक्त में अपनी-अपनी जगह से उछले थे और फिर उन दोनों ने टाइगर को ही गिरफ्त में ले लिया—काला बच्चा टाइगर को प्रसाद की सुपुर्दगी में छोड़कर राहदारी की तरफ लपका लेकिन बाहर निकलते हुए दारा ने दरवाजे को धक्का दिया। काला की पेशानी दरवाजे से टकराई वह चीखकर गिर गया लेकिन दूसरे ही लम्हें उठकर फिर दरवाजे की तरफ लपका। बदहवासी में काला से दरवाजा भी नहीं खुल सका और जब वह दरवाजा खोलकर राहदारी में दौड़ता हुआ बाहर आया तो उसे देर हो चुकी थी। दारा और शांग बाहर खड़ी हुई कार में बैठ चुके थे और कार तेजी से गेट से बाहर निकल रही थी।

इस दौरान में थाईवांग भी दौड़ती हुई सामने आ गयी। दारा का पीछा करना बेकार था। वह और थाई अन्दर आ गये। प्रसाद टाइगर को बुरी तरह रगड़ रहा था और दूसरी लड़की बेहोश हो चुकी थी।

पामेला को देखकर थाईवांग के मुंह से हल्की-सी चीख निकल गयी। पामेला अब तड़प नहीं रही थी। अब वह एक ही जगह पड़ी हुई थी और उसके जिस्म को हल्के-हल्के झटके लग रहे थे। जख्मों से बहने वाला खून उसके जिस्म के नीचे और इर्द-गिर्द एक छोटे से तालाब की शक्ल इख्तियार कर गया था।

'पामेला...आंखें खोलो पामेला...।" थाईवांग उसके करीब झुककर बोली।

पामेला की पलकों में हरकत हुई, मगर उसने आंख नहीं खोली। उसके जिस्म को अब भी हौले-हौले झटके लग रहे थे। उसका निचला होंठ और नीचे का गोश्त ठोडी तक गायब था नीचे वाले दांत जड़ों तक और मसूड़े साफ नजर आ रहे थे। एक रुख्सार कटा हुआ था। सीने के दोनों तरफ गोश्त के कटे हुए लोथड़े थे और पेट पर नाभि

तक तकरीबन छः इंच लम्बी और गहरी लकीर थी जिससे अब भी खून उबल रहा था। ऐसी सफ्फाकी का यह मुजाहरा काला बच्चा ने अपनी आंखों से दूसरी मर्तबा देखा था और एक बात बहरहाल तय थी कि वह पामेला की कोई मदद नहीं कर सकते थे, अगर उसे जिन्दा बचा लिया जाता तो वह मेडिकल साइन्स का एक करिश्मा ही होता।

काला ने गर्दन घुमाकर देखा। प्रसाद ने टाइगर को फर्श पर औंधा लिटाकर घुटने से उसकी कमर को दबा रखा था और उसके गले से टाई निकालने की कोशिश कर रहा था। काला बच्चा तेजी से उसके करीब पहुंच गया। टाइगर का चेहरा फर्श से चंद इंच ऊपर उठा हुआ था। काला ने उसके गले से टाई निकालकर प्रसाद के हवाले कर दी। प्रसाद ने टाइगर के दोनों हाथ पुश्त पर समेटकर टाई से बांध दिए और उठकर उसकी पसलियों पर जोरदार ठोकर रसीद कर दी और पलटकर पामेला की तरफ देखने लगा। उस वक्त काला बच्चा ने उसके चेहरे पर अजीब से भाव देखे थे। वह पामेला के करीब बैठ गया। चंद लम्हें उसके चेहरे को देखता रहा फिर उसने बारी-बारी उसकी दोनों आंखों को खोलकर देखा और फिर गहरा सांस लेते हुए उठकर खड़ा हो गया।

"गाड़ी कहां है?" काला बच्चा ने थाईवांग की तरफ देखा।

"वहीं खड़ी है—गली के मोड़ पर।" थाईवांग ने जवाब दिया।

काला बच्चा ने प्रसाद को संकेत किया। वह तेजी से बाहर दौड़ गया।

सिर्फ पांच मिनट बाद पोर्च में गाड़ी रुकने की आवाज सुनाई दी और उसके ... सेकिण्ड बाद प्रसाद अन्दर आ गया। उसने टाइगर को बालों से पकड़कर झटका देते हुए उठाया और बाहर ले जाने के लिए उसके कूल्हे पर जोरदार किक लगा दी। इस दौरान में काला बच्चा उस बेहोश लड़की को उठा चुका था। वह होश में आ चुकी थी। उसका जिस्म हौले-हौले कांप रहा था और खौफ से चेहरा बिल्कुल सफेद पड़ गया था। वह पामेला की तरफ देखने से गुरेज कर रही थी।

"और यह...क्या इसे यहीं छोड़ दिया जाए...।" थाईवांग ने काला की तरफ देखते हुए पामेला की तरफ संकेत किया।

"इसके लिए हम कुछ नहीं कर सकते थाई।" काला ने जवाब दिया—"यह हो सकता है कि बाहर जाकर कहीं से पुलिस को फोन कर दें। पुलिस ने इसे हस्पताल पहुंचा भी दिया तो...वैसे मेरा ख्याल

है कि अब दुनिया की कोई ताकत इसे नहीं बचा सकेगी।"

थाईवांग चन्द लम्हे पामेला की तरफ देखती रही और फिर खामोशी से बाहर आ गयी।

"प्रसाद...! तुम स्टेयरिंग संभालो...हमें दो नम्बर मकान में जाना है।" काला बच्चा ने कार के करीब पहुंचकर कहा।

प्रसाद ने टाइगर को पिछली सीट पर बिठाकर दरवाजा अन्दर से लॉक कर दिया। काला बच्चा ने दूसरी तरफ से पहले उस लड़की को अन्दर बिठाया और उसके साथ खुद भी बैठ गया। थाईवांग अगली सीट पर बैठ गयी थी। प्रसाद ने स्टेयरिंग संभाल लिया।

कार कोठी से निकलकर जैसे ही गली के मोड़पर पहुंची अकब से पुलिस साइरन की आवाज सुनाई दी। काला ने गर्दन घुमाकर देखा। पुलिस की एक गाड़ी दूसरी तरफ से गली में दाखिल हो रही थी। प्रसाद ने बड़ी फुर्ती से कार दूसरी गली में घुमा दी।

कोठी में फायरिंग की आवाजें सुनकर किसी ने पुलिस को फोन कर दिया था और वह ठीक वक्त पर वहां से निकल आये थे।

कोसा रोड से निकलकर गाड़ी रामा फोर रोड पर आ गयी और तेज रफ्तारी से दौड़ने लगी, एक बजे के लगभग का वक्त था। सड़क पर ट्रैफिक ज्यादा नहीं था, इसलिए प्रसाद को गाड़ी दौड़ाने में ज्यादा दुश्वारी पेश नहीं आ रही थी। वह सीधी सड़क वार ट्रीम्पर और उससे आगे चाइना टाउन की तरफ चली गयी थी। प्रसाद ने वार ट्रीम्पर से पहले ही बैंकाक सेन्टर के करीब से कार एक और सड़क पर मोड़ ली और वह सोंगवार रोड से होते हुए चक्राफीट रोड पर आ गये और फिर किंग रामाइन के स्टैच्यू वाले चौक से कार बायीं तरफ मुड़ गयी।

मैमोरियल ब्रिज से दरिया पार करके वह थानजोरी डिस्ट्रिक्ट में दाखिल हो गये थे। प्रसाद बड़ी महारत से ड्राइविंग कर रहा था। इस बात का अन्देशा भी था कि पुलिस ने कोठी में जख्मी पामेला या उसकी लाश देखकर रेडियो ट्रांसमीटर पर इत्तला कर दी होगी और अगर चेकिंग शुरू हो गयी तो वह फंस भी सकते थे।

लेकिन खैरियत गुजरी। वह किसी हादसे से दो-चार हुए बगैर फ्रान नोक रोड पर पहुंच गये। प्रसाद ने कार की रफ्तार उस वक्त कम की थी जब सोप फिफ्टी सेविन्थ की तरफ मुड़ना था।

गली में सन्नाटा था। एक बंगले के सामने उसने कार रोक दी। बड़ी फुर्ती से नीचे उतरकर गेट खोला और फिर कार अन्दर ले गया।

प्रसाद मशीनी अन्दाज में हरकत कर रहा था। उनके कार से उतरने से पहले वह बाहर का गेट बन्द कर आया था।

वह बंगला तीन कमरों का था। एक कमरे में तहखाने का रास्ता था। प्रसाद ने फर्श पर बिछे हुए कालीन का कोना हटाकर चार वर्ग फुट का एक तख्ता हटा दिया, जिसके नीचे तारीक सीढ़ियां थीं। प्रसाद ने दीवार पर लगे हुए स्विच बोर्ड पर एक स्विच आन कर दिया। सीढ़ियों पर रोशनी हो गयी।

सीढ़ियों के अन्त में चंद फुट चौड़ी लैण्डिंग थी और एक लोहे का दरवाजा था। प्रसाद ने दरवाजा खोल दिया और अन्दर दाखिल होकर बत्ती जला दी। उसके पीछे ही काला बच्चा टाइगर को लेकर दाखिल हुआ था।

तहखाना ज्यादा बड़ा नहीं था। सीलन और एक नागवार-सी बू का एहसास नुमाया था। इस सीलन ही की वजह से दीवारों का प्लास्टर भी जगह-जगह से उधड़ा हुआ था। इस तहखाने में फर्नीचर नाम की कोई चीज नहीं थी। फर्श पर भी धूल अटी पड़ी थी।

"हां तो मिस्टर टाइगर! तुम कुछ देर यहां आराम करो—हम बाद में तुमसे बात करेंगे... ।" प्रसाद ने टाइगर की तरफ देखते हुए कहा और उसे चलने का इशारा किया।

तहखाने का दरवाजा बन्द करके वह ऊपर आ गये। तख्ता फर्श पर डालकर कालीन बराबर कर दिया गया। दूसरे कमरे में थाईवांग उस लड़की को रिवॉल्वर की जद में लिए खड़ी थी। वह लड़की एक कुर्सी पर बैठी हुई थी। खौफ व दहशत से उसकी आंखें फटी पड़ रही थीं और उसका जिस्म अब हौले-हौले कांप रहा था।

"मेरा ख्याल है—इस पर रिवॉल्वर तानने की जरूरत नहीं।" काला बच्चा ने थाईवांग की तरफ देखते हुए कहा—"यह न तो शोर मचायेगी और न ही भागने की कोशिश करेगी। यह तो पहले ही अधमरी हो रही हैं, इसे और अधिक भयभीत करने की जरूरत नहीं।"

थाईवांग ने रिवॉल्वर हटा लिया और एक कुर्सी पर बैठ गयी।

"मैं कॉफी बनाकर लाता हूं बॉस—उसके बाद कोई बात करेंगे।" प्रसाद कहते हुए कमरे से निकल गया।

काला बच्चा थाईवांग को उस लड़की के पास छोड़कर घूम फिरकर मकान का जायजा लेने लगा। वह वेलफर्नीश्ड मकान था। जरूरत की हर चीज नजर आ रही थी। किचन में एक छोटा-सा फ्रीज भी था। कुछ बर्तन और मोहरबन्द खुराक के कुछ डिब्बे भी नजर आ रहे थे।

"मैं हर दूसरे-तीसरे दिन यहां चक्कर लगा लिया करता था।" प्रसाद ने काला बच्चा की तरफ देखते हुए कहा—"मुझे अन्दाजा था कि हमें किसी हंगामी सूरतेहाल में ही पनाह लेनी पड़ेगी—इसलिए मैंने जरूरत की हर चीज यहां जमा कर रखी है बॉस।"

काला बच्चा ने पसंदगी के अन्दाज में सिर हिला दिया। वह कॉफी तैयार कर चुका था। काला बच्चा ने अपना मग उठा लिया। प्रसाद ने बाकी मग एक ट्रे में रख लिए और वह किचन से निकलकर कमरे में आ गये। एक मग उस लड़की को भी दिया गया। उसका हाथ कांप रहा था। उसने मग सामने छोटी मेज पर रख दिया।

"तुमसे हमारी कोई दुश्मनी नहीं है।" काला बच्चा ने लड़की की तरफ देखते हुए कहा—"तुम्हें हमसे डरने की जरूरत नहीं है। कॉफी पियो उससे तुम्हें अपने हवास पर काबू पाने में मदद मिलेगी।"

वह सब इस वक्त काफी जैसी तलव चीज की जरूरत महसूस कर रहे थे। काफी के चंद घूंट भरने के बाद काला बच्चा अपने आपको पुरसुकून-सा महसूस करने लगा। हकीकत यह है कि दारा की दरिन्दगी देखकर वह अपने हवास पर काबू नहीं रख सका था। अगर थाईवांग ठीक वक्त पर न पहुंचती तो शायद उसका दिमाग पलट जाता।

"तुम वहां अचानक कैसे पहुंच गयी थी?" उसने कॉफी का घूंट लेते हुए सवालिया निगाहों से थाईवांग की तरफ देखा।

"तुम लोगों को गये हुए काफी देर हो गयी थी।" थाई ने जवाब दिया—"फायर की आवाज सुनाई दी तो मैं चौंके बगैर न रह सकी। न जाने क्यों मेरा दिल कर रहा था कि तुम दोनों किसी मुसीबत में फंस गये हो। मैंने हैण्डबैग में से रिवॉल्वर निकाला और कार से उतरकर इस तरफ आने लगी। जिस वक्त मैं टूटे हुए तारों वाले हिस्से से दीवार फांदकर खिड़की के सामने पहुंची तो अन्दर का मंजर देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गये। उस मोटे ने तुम पर गोली चलाई थी और दूसरे फायर का मौका दिये बगैर मैंने उस पर गोली चला दी। अगर मैं वहां न पहुंचती तो वह तुम दोनों को भी खत्म कर देते।"

"इस वक्त दरपेश सूरतेहाल देखकर यह कहा जा सकता है कि मेरी मौत यकीनी थी लेकिन तुमने एक बार फिर मेरी जिन्दगी बचा ली।" काला बच्चा ने मुस्कराते हुए कहा और फिर उस लड़की की तरफ देखने लगा—"तुम बताओ, तुम कौन हो?"

"म...मैं ब...बेगुनाह हूं।" वह लड़की हकलाई—"मैं कुछ नहीं जानती। आज ही शाम को शांग के साथ च्यांग राय से आई

थी। मुझे नहीं मालूम था कि यहां आकर किसी मुसीबत में फंस जाऊंगी।"

"शांग से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?" मैंने पूछा।

"क...क...कुछ नहीं...।" उसने जवाब दिया—"मैं च्यांगराय के एक नाइट क्लब की नर्तकी हूं। नृत्य मैंने शौकियातौर पर सीखा था। लेकिन हालात की मजबूरी मुझे नाइट क्लब तक ले गयी। मुझे क्लब में डांस करते हुए अभी सिर्फ तीन ही महीने हुए हैं। आज तकरीबन बीस दिन पहले इस नाइट क्लब में शांग से मुलाकात हुई थी। वह बहुत जल्द मेरे करीब आ गया। वह चाहता था कि मैं बैंकाक के किसी बड़े नाइट क्लब में अपनी कला का प्रदर्शन करूं। उसका कहना था कि जो दौलत और शौहरत मुझे बैंकाक के किसी बड़े नाइटक्लब में सिर्फ दो चार दिन में मिल सकती है वह मैं च्यांगराय में रहते हुए जिन्दगी भर नहीं कमा सकती। मैं लालच में आ गयी, दौलत और शौहरत हर शख्स की ख्वाइश होती है, मैंने भी कोई गलत नहीं सोचा था।

और फिर एक रोज शांग ने बताया कि उसने बैंकाक के क्लब ट्वन्टी सिक्स से बात कर ली है। यह बहुत बड़ा नाइट क्लब है। इसकी शौहरत मैंने च्यांगराय में भी सुनी थी। मैंने शांग से प्रोग्राम बना लिया और आज उसके साथ यहां पहुंच गयी। हमने रायबेन्जा होटल में कयाम किया। इस होटल में हमारे लिए पहले से ही डबल बेड का एक लग्जरी रूम बुक था। मैं तो इतने बड़े होटल में कयाम की सोच भी नहीं सकती थी। हम ग्यारह बजे तक होटल में रहे। इस दौरान में शांग बार-बार किसी को फोन करता रहा। फिर एक आदमी हमें लेने के लिए पहुंच गया। बाद में उसका नाम टाइगर मालूम हुआ, शांग ने मुझे बताया था कि हम नाइट क्लब के मालिक से मिलने जा रहे हैं। वह मुझे इस बंगले में ले आया। शांग ने मुझे पहले ही समझा दिया था कि अगर मैंने क्लब के मालिक को खुश कर दिया तो मुझे कल ही से प्रोग्राम मिलना शुरू हो जायेगा।

लेकिन इस बंगले में पहुंचकर उनकी बातों से पता चला कि शांग हेरोइन की स्मगलिंग के किसी रैकेट का एजेन्ट है और वह शख्स भी इसी बिजनेस से सम्बन्ध रखता है। मुझे बहरहाल इसकी परवाह नहीं थी। नाइट क्लबों की आड़ को ऐसे बिजनेस तो होते ही हैं। मुझे तो अपने काम से काम था। मैं तो बैंकाक के सबसे बड़े क्लब में डांस करना चाहती थी। मुझे यकीन था कि सिर्फ एक रात प्रोग्राम पेश करके मैं स्टार बन जाऊंगी। टाइगर के बारे में भी मुझे बताया

१९ बैंकाक के अण्डरवर्ल्ड का बेताज बादशाह है। तमाम छोटे-बड़े नाइट क्लब उसके कंट्रोल में हैं। मुझे उसको भी खुश रखना पड़ेगा। उस बंगले में बैठे हुये अभी यही बातें हो रही थी कि तुम लोगों के आते ही वहां खूनी खेल शुरू हो गया। मुझे बिल्कुल मालूम नहीं कि असल मामला क्या है? मैं तो एक मामूली-सी नर्तकी हूं। मेरा इन मामलात से कोई सम्बन्ध नहीं। अब मुझे यह भी यकीन हो गया है कि शांग मुझे धोखे से यहां लाया था।" बात करते हुए उसकी आवाज भर्रा गयी थी और थोड़ी ही देर बाद वह फूट-फूट कर रोने लगी।

"तुम्हारा नाम क्या है और च्यांगराय में कौन से नाइट क्लब में थी?" काला ने पूछा।

"मेरा नाम नवैता है और मैं वहां कन्ट्री क्लब में थी।" उसने जवाब दिया।

काला बच्चा ने प्रसाद को इशारा किया कि वह टेलीफोन पर मालूम करे कि रायल बेन्जा होटल में शांग के नाम से कोई कमरा बुक हुआ था या नहीं। प्रसाद उठकर दूसरे कमरे में चला गया, जहां टेलीफोन रखा हुआ था। उसकी वापसी तकरीबन दस मिनट बाद हुई।

"इस होटल में मिस्टर और मिसेज शांग के नाम से डबलबेड लक्जरी रूम बुक है। वहां से यह भी पता चला है कि यह दोनों ग्यारह बजे के लगभग बाहर गये थे। अभी तक वापस नहीं आये।" प्रसाद ने बताया।

"इस हद तक तो तुम्हारा बयान दुरुस्त है।" काला बच्चा ने नवैता की तरफ देखते हुए कहा—"कल दिन में हम च्यांगराय से भी पुष्टि कर लेंगे।"

"मुझे कन्ट्री क्लब का फोन नम्बर मालूम है, अभी मालूम कर लो।" वह बोली। काला बच्चा ने प्रसाद की तरफ देखा। वह दूसरे कमरे से फोन उठा लाया और उसका प्लग दीवार के साकिट से लगा दिया। काला बच्चा ने नवैता से पूछकर च्यांगराय में कन्ट्री क्लब का नम्बर मिलाया। उससे पहले उसने ऐरिया कोड जीरो फाइव थ्री मिलाया।

कन्ट्री क्लब में रात दो बजे तक प्रोग्राम चलता था और अभी दो नहीं बजे थे। उसकी कॉल जल्दी ही रिसीव कर ली गयी। जब उसने नवैता के बारे में दरयाफ्त किया तो दूसरी तरफ से कहा गया—

"वह बैंकाक जा चुकी हैं। मैंने उसे रोकने की कोशिश की

थी मगर वह सुपर स्टार बनना चाहती है। अब हमारे क्लब से उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहा।"

"नवैता तुमसे बात करना चाहती है।" काला बच्चा ने कहते हुए रिसीवर नवैता के हाथ में दे दिया। वह लगभग दो मिनट तक रो-रो कर फोन पर बात करती रही फिर काला बच्चा ने उससे रिसीवर ले लिया—"क्या तुम इस आवाज को पहचानते हो?"

"हां यह नवैता है लेकिन अगर यह बैंकाक में किसी मुसीबत में फंस गयी है तो हम इसके लिए कुछ नहीं कर सकते—हमारा अब इससे कोई सम्बन्ध नहीं रहा।"

काला बच्चा ने फोन बन्द कर दिया। नवैता के बयान की पुष्टि हो गयी थी। उसका इस मुआमले से कोई सम्बन्ध नहीं था। वह महज दौलत और शौहरत के लालच में शांग के बरगलाने पर उसके साथ चली आई थी और शांग उससे कोई और काम लेना चाहता था लेकिन पहली ही रात गड़बड़ हो गयी।

"अब परिस्थिति यह है।" काला बच्चा ने नवैता की तरफ देखते हुए कहा—"तुम एक कत्ल की चश्मदीद गवाह हो। पुलिस को भी तुम्हारी जरूरत है और पुलिस से ज्यादा दारा और शांग को तुम्हारी जरूरत होगी। वह कभी यह नहीं चाहेंगे कि तुम पुलिस तक पहुंच सको। वह तुम्हें देखते ही गोलियों से भून डालेंगे। अब तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम पुलिस की पनाह में चली जाओ। इन हालात में पुलिस ही तुम्हें संरक्षण प्रदान कर सकती है।"

"मैं उन्हें समझ गयी हूं। वह दरिन्दे हैं। मुझे मार डालेंगे।" वह फिर से फूट-फूट कर रोने लगी।

काला बच्चा को उसकी हालत पर तरस आ रहा था। उसने बताया कि वह बैंकाक पहली बार आई थी। यहां उसका कोई जानने वाला भी नहीं है।

"ठीक है।" हम सुबह तुम्हारे बारे में कोई फैसला करेंगे।" काला यह कहते हुए उठ गया।

काला बच्चा और प्रसाद तहखाने में आ गये। टाइगर दीवार से टेक लगाये बैठा था। हाथ पुश्त से बंधे होने की वजह से उसे शायद इस तरह बैठने में तकलीफ हो रही थी।

"हां तो मिस्टर टाइगर।" काला बच्चा उसके समीप पहुंचकर बोला—"क्या तुम हमारे कुछ सवालों का जवाब देना पसंद करोगे?"

और टाइगर ने जिस तरह जवाब दिया वह उसके लिए बिल्कुल आशा के विपरीत था। वह किसी ताकतवर स्प्रिंग की तरह अपनी

जगह से उछला। उसका घूंसा काला के जबड़े पर और पैर की जोरदार ठोकर प्रसाद की पिण्डली पर लगी। वह दोनों कराह उठे। टाइगर ने दरवाजे की तरफ छलांग लगा दी लेकिन उसे दरवाजे तक पहुंचने का मौका नहीं मिल सका। काला बच्चा और प्रसाद ने उस पर एक साथ छलांग लगा दी थी।

काला बच्चा की समझ में नहीं आ सका कि टाइगर ने पुश्त पर बंधे हुए हाथ किस तरह खोल लिए थे लेकिन अब वह काला बच्चा और प्रसाद के बीच फुटबाल बन गया था। उसके जिस्म का कोई हिस्सा ऐसा नहीं था जो उनके घूसों और ठोकरों से सुरक्षित रहा हो। उसके नाक मुंह और कान से खून बहने लगा।

प्रसाद ने तो हाथ रोक लिया था लेकिन काला बच्चा के जनून में कमी नहीं आई। बैंकाक अण्डरवर्ल्ड का शहन्शाह जिसके नाम से ही लोग कांपते थे, मुकम्मल तौर पर बेबस था और काला बच्चा के रहमोकरम पर था। वह दोनों जमीन पर गिरे हुए थे। काला बच्चा ने अपना बाजू उसकी गर्दन पर लपेट रखा था। वह हाथ-पैर पटक रहा था। उस वक्त काला बच्चा को पिकोला के शब्द याद आ रहे थे। सांप अपने अन्दर मौजूद ची की शक्ति से काम लेकर मोटे-ताजे पहलवान की टांग की हड्डी भी तोड़ देता है। काला बच्चा ने अपना बाजू सांप ही की तरह टाइगर की गर्दन पर लपेट रखा था और उसके जिस्म की तमामतर कुव्वत उस बाजू में सिमट आई थी और फिर काला बच्चा ने एक जोरदार झटका दिया "कड़ाक" की आवाज उभरी और गर्दन की हड्डी टूट गयी। टाइगर बुरी तरह मचल रहा था लेकिन काला बच्चा ने उसे उस वक्त तक नहीं छोड़ा जब तक उसका जिस्म बे हरकत न हो गया।

और जब वह टाइगर की लाश घसीटते हुए तहखाने से बाहर लेकर आये तो नवैता एक बार फिर खौफ की वजह से थरथर कांपने लगी।

यह प्रसाद की सोच थी कि रात ही रात में टाइगर की लाश को ठिकाने लगा दिया जाए।

"तुम फिक्र मत करो बॉस।" प्रसाद ने कहा—"मैं इसें इस तरह लेकर जाऊंगा कि अगर किसी ने देख भी लिया तो शक नहीं करेगा।"

प्रसाद टाइगर की लाश को कार में डालकर ले गया। उसकी वापसी दो घण्टों बाद हुई थी।

"सुबह तक वह मछलियों की खुराक बन चुका होगा।" उसने

मुस्कराते हुए कहा।

काला बच्चा को समझने में देर नहीं लगी कि वह टाइगर की लाश को दरिया में फेंक आया था।

रात अपने अन्तिम पड़ाव में दाखिल हो चुकी थी। वह रह रहकर नवैता के बारे में सोच रहा था। उसके पुलिस के पास पहुंचने का कोई फायदा नहीं था। टाइगर और दारा के खिलाफ पुलिस के पास पहले से ही बहुत-सबूत मौजूद थे लेकिन पुलिस भी शायद बेबस हो गयी थी कि उनके खिलाफ आज तक कोई कार्यवाही नहीं हो सकी थी। अगर कोई कार्यवाही हुई भी थी तो छोटी मछलियां ही पकड़ी गयी थीं। यह मगरमच्छ हमेशा सुरक्षित रहे थे।

नवैता पामेला के साथ पेश आने वाले वाक़्यात की चश्मदीद गवाह थी। वह यही कह सकती थी कि दारा ने उसकी मौजूदगी में पामेला को जिब्ह किया था लेकिन आगे कोई कार्यवाही करना तो पुलिस का काम था और पुलिस अब तक तकरीबन बेबस ही नजर आई थी और काला को यह भी शंका थी कि नवैता को पुलिस तक पहुंचने से पहले ही खत्म कर दिया जायेगा। मौत उसका मुकद्दर बन चुकी थी। कौशल्या, शाईवान और अब पामेला इन सबको इसलिए मौत के घाट उतार दिया गया कि यह टाइगर के खिलाफ जुबान खोलना चाहती थीं।

टाइगर खत्म हो चुका था। बैंकाक अण्डरवर्ल्ड का बेताज बादशाह, जिसके नाम ने पूरे शहर में दहशत फैला रखी थी, उसकी मौत अंततः काला बच्चा के हाथों हुई थी।

उस रात नवैता को एक कमरे में बन्द करके बाहर से ताला लगा दिया गया था ताकि उनकी गफ़लत का फ़ायदा उठाकर भागने की कोशिश न करे। वह रात के आखरी पहर सोये थे और लगाग पूरे दिन सोते ही रहे थे। शाम को काला बच्चा ने मास्टर होचिन को फोन किया तो यह सनसनी खेज रहस्योद्घाटन हुआ कि टाइगर की लाश आज सुबह सवेरे ही दरिया में मिल गयी थी।

"शहर के चंद नौजवान सुबह सवेरे दरिया में मछलियां पकड़ने गये थे।" मास्टर होचिन बता रहा था—"टाइगर की लाश किनारे के करीब ही अकबी झाड़ियों में फंसी हुई थी। उसकी कमीज एक नौजवान मछली पकड़ने वाले के कांटे में फंस गयी। पुलिस को इस लाश के बारे में सूचना दी गयी और जब लाश की शनाख्त हुई तो पूरे शहर में सनसनी की लहर दौड़ गयी। देखते-देखते आधे से ज्यादा शहर बन्द हो गया। लोगों को अन्देशा था कि टाइगर के गुर्गे शहर

में तबाही मचा देंगे। तमाम नाइट क्लब और शराबखाने भी बन्द हैं। चंद बड़े होटल खुले हैं, जहां पुलिस का जबरदस्त पहरा है। सड़कों पर भी पुलिस गश्त कर रही है। कुछ इलाकों में इक्का-दुक्का छोटे हंगामें तो हुए हैं लेकिन कोई बड़ा नाखुशगवार वाक्या पेश नहीं आया।"

"हैरत है।" काला ने कहा—"मेरा ख्याल था कि लोग टाइगर जैसे शख्स की मौत पर खुशियां मनायेंगे लेकिन मुझे यह जानकर बड़ी हैरत हुई कि लोग डर के मारे घरों में दुबककर बैठ गये हैं।"

"टाइगर जैसा कोई आदमी मरता है तो इस किस्म की प्रतिक्रिया होती है लेकिन लोगों ने बहरहाल उसकी मौत से सुख का सांस लिया है—बहरहाल मैं उस आदमी की हिम्मत की दाद जरूर दूंगा, जिसने टाइगर की गर्दन तोड़कर उसकी लाश दरिया में फेंक दी।" मास्टर ने कहा।

"यह फख्र भी तुम्हारे इस शार्गिद को है मास्टर।" काला ने कहा।

"क्या...?" मास्टर होचिन उछल पड़ा।

काला बच्चा ने उसे पिछली रात का विवरण बता दिया और अंत में बोला—"वह लड़की नवैता अब मेरे लिए समस्या बनी हुई है—समझ में नहीं आता कि उसका क्या करूं?"

"उसे एक दो दिन अपने पास ही रखो—बाद में उसके लिए कुछ सोचेंगे लेकिन... ।" मास्टर होचिन एक लम्हें को खामोश रहकर बात जारी रखते हुए कह रहा था—"तुम तो हमारी आशा से कहीं ज्यादा बढ़कर निकले। अब मुझे यकीन है कि दारा तुम्हारे सामने नहीं टिक सकेगा। उसे भागना ही पड़ेगा।"

"वह भागने वाला नहीं है मास्टर। मैं उसकी फितरत को समझ गया हूं। वह एक-दो दिन तक अपनी चोटें सहलायेगा और फिर मुझ पर भरपूर वार करने की तैयारी करेगा और मैं उसकी तरफ से गाफिल नहीं हूं।" काला ने कहा।

"गुड!" मास्टर होचिन बोला—"अब मुझे यकीन हो गया है कि तुम अपनी हिफाजत खुद कर सकते हो—लेकिन हमें तुम्हारी फिक्र रहती है। मुलाकात कब हो रही है?"

"बस एक दो दिन में मास्टर।" काला ने कहा और चंद रस्मी बातों के बाद फोन बन्द कर दिया। दारा वगैरह के खिलाफ एक-दो छोटी-मोटी कामयाबियों का मतलब यह नहीं था कि काला बच्चा बहुत ताकतवर और हावी हो गया हो। वक्त और तजुर्बात ने यद्यपि

उसे जिन्दा रहने के चंद गुर सिखा दिए थे लेकिन अभी तो उसने इस कंटीली राह पर अपना सफर शुरू किया था। उसे अभी बहुत कुछ सीखना था और उसे मास्टर होचिन और महाराज जैसे लोगों की सरपरस्ती की जरूरत थी। वह इस वक्त भी जो कुछ था उन्हीं की बदौलत था। यदि महाराज उसे अपनी पनाह में न लेता तो आज वह इस तरह आत्मविश्वास से दुश्मन के सामने खड़े होने की बजाए अपनी जान बचाने के खौफ से कहीं छिपा न होता। उसे मास्टर होचिन और महाराज जैसे लोगों की जरूरत थी। उन्हें छोड़ने का तो वह तसव्वुर भी नहीं कर सकता था।

उसके थोड़ी देर बाद थाईवांग ने जानकी देवी को फोन किया। जानकी उनके लिए बहुत परेशान थी। सुबह वह पहले खुद बंगले पर गयी थी फिर दिन में कई मर्तबा फोन किया था। थाई ने उसे भी वाक्यात से आगाह कर दिया और बताया कि वह सुरक्षित हैं. एक-दो दिन बाद उसके बंगले पर जायेंगे। थाई ने उसे यहां का फोन नम्बर भी दे दिया था।

नवैता ने उनके लिए कोई समस्या खड़ी नहीं की थी। वह खौफजदा थी। सारी परिस्थिति अब उसकी समझ में आ गयी थी। वह जान चुकी थी कि यहां से बाहर निकलते ही उसे मौत के घाट उतार दिया जायेगा। इस मकान की चारदीवारी ही उसके लिए सुरक्षित पनाहगाह थी। वह इस पनाहगाह से बाहर नहीं निकलना चाहती थी, इसलिए काला बच्चा को भी उससे कोई खतरा नहीं रहा था। उस पर उन्होंने कोई पाबन्दी नहीं लगाई थी और यद्यपि पूरे घर में घूमने-फिरने की आजादी थी लेकिन वह खुद ही एक कमरे तक सीमित होकर रह गयी थी। किसी चीज की जरूरत होती तो किचन तक चली जाती।

नवैता पहली बार बैंकाक आई थी। उसका बाप च्यांगराय में टूरिस्ट गाइड था, लेकिन अरसा पहले एक हादसे का शिकार होकर इस दुनिया से रुखसत हो चुका था। उस वक्त नवैता की उम्र ...साल थी। मां ने एक वेट्रेस की हैसियत से होटल में नौकरी कर ली। नवैता पढ़ाई के साथ-साथ नृत्य भी सीखने लगी। स्याम (थाईलैण्ड) के परम्परागत नृत्य के अलावा उसने हिन्दोस्तानी नृत्य भी सीखा था लेकिन यह महज उसका शौक था।

मां की मौत के बाद वह अकेली रह गयी। उसकी शिक्षा का सिलसिला जारी न रह सका और उसने नौकरी शुरू कर दी। वह अपने इर्द-गिर्द के माहौल से बेखबर नहीं थी। अट्ठारह साल की

उम्र तक तो वह कयामत बन गयी थी और फिर वह लिबास भी ऐसे पहनती कि उसके बदन के कट्स नुमाया हो जाते। मर्दों की हवस भरी निगाहें दूर तक उसका पीछा करती रहतीं। वह उन निगाहों से बचती रहती लेकिन एक रोज बकरी छुरी तले आ ही गयी। उसने कन्ट्री क्लब में अपने प्रोग्राम शुरू किए, यही उसकी हिफाजत थी। यहां शांग से मुलाकात हो गयी और वह उसे धोखे से बैंकाक ले आया। यहां आकर वह ऐसी मुसीबत में फंस गयी कि उसे निजात का कोई रास्ता नजर नहीं आया था।

इस दौरान में नवैता काला बच्चा के बारे में थोड़ा बहुत जान चुकी थी। वह समझ चुकी थी कि काला बच्चा ही वह शख्स है, जो उसकी इस परिस्थिति में कोई मदद कर सकता है, इसलिए उसने यहां से भागने की कोशिश ही नहीं की।

दो-तीन रोज गुजर गये। नवैता की बातों से पता चला कि पताया में उसकी रिश्ते की एक बुआ रहती है, जो वहां टूरिस्ट महकमे में गाइड हैं।

"बैंकाक में तुम्हारी जिन्दगी सुरक्षित नहीं—च्यांगराय तुम वापस जाना नहीं चाहती, मेरे ख्याल में तुम पताया चली जाओ अपनी बुआ के पास। वह जगह तुम्हारे लिए सुरक्षित रहेगी।" काला बच्चा ने नवैता की तरफ देखते हुए कहा। जाहिर है वह उसे ज्यादा अरसे तक साथ नहीं रख सकते थे।

नवैता बड़ी मुश्किल से जाने को आमादा हुई थी। दरअसल वह उनके साथ रहना ही सुरक्षित समझती थी और उनका साथ नहीं छोड़ना चाहती थी।

पामेला के कत्ल के दूसरे रोज उसकी मौत की खबर मिल गयी थी। उस घटना को पांच दिन गुजर चुके थे। पुलिस की सरगर्मियां यद्यपि मानिन्द पड़ गयी थीं कि काला बच्चा को यकीन था कि टाइगर और दारा के आदमी शिकारी कुत्तों की तरह उनकी तलाश में पूरे शहर में फिर रहे होंगे।

पताया—यह खूबसूरत साहिली शहर बैंकाक के पूरब में लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर के फासले पर स्थित था। विदेशी सैलानियों के लिए यहां बहुत-सी दिलचस्पी थीं। स्थानीय बाशिन्दे भी बड़ी संख्या में इस तरफ जाते रहते थे। हाईवे नम्बर तीन से ढ़ाई तीन घण्टों का रास्ता था। वर्नमेंट ट्रांसपोर्ट के अलावा प्राइवेट बसें, टैक्सियां वगैरह भी चौबीसों घण्टे मिलती थीं।

उस रोज वह सुबह पांच बजे घर से निकले थे। स्टेयरिंग के

सामने प्रसाद विराजमान था। उसके साथ वाली सीट पर काला बच्चा और पीछे थाईवांग और नवैता बैठी हुई थी। पूर्वी बस टर्मिनल तक पहुंचने के लिए पूरा शहर पार करने की जरूरत थी। उनका प्रोग्राम यह था कि नवैता को पताया जाने वाली बस में बिठाकर वह जानकी देवी वाले बंगले में वापस चले जायेंगे।

उस वक्त सड़कों पर ट्रैफिक बराए नाम था। प्रसाद को तेज रफ्तारी से कार चलाने में ज्यादा दुश्वारी पेश नहीं आ रही थी। विभिन्न सड़कों और फिर सोखम बररोड पर होते हुए वह छः बजे से पहले ही बस स्टेशन पहुंच गये। हर दस-पन्द्रह मिनट बाद कोई न कोई बस बसअड्डे से निकल रही थी।

नवैता खौफजदा थी। काला बच्चा भी सतर्क नजरों से इधर-उधर देख रहा था। नवैता एक कोच पर बैठ चुकी थी। थाईवांग ने उसे कुछ रकम भी दे दी थी। वह उस वक्त तक टर्मिनल पर खड़े रहे जब तक बस हरकत में नहीं आ गयी।

वापसी पर वह एक्सप्रेस से होते हुए थैंग डिस्ट्रिक्ट की तरफ निकल आये और विभिन्न छोटी सड़कों से होते हुए टाक्सन ब्रिज पार करके थानबोरी डिस्ट्रिक्ट में दाखिल हो गये। वहां से जानकी देवी वाले बंगले में पहुंचने के थोड़ी ही देर बाद थाईवांग नाश्ता तैयार करने के लिए किचन में घुस गयी। नाश्ते के लिए कुछ चीजें वह रास्ते से लेते आये थे।

जानकी देवी को उन्होंने पिछली रात ही अपने प्रोग्राम से आगाह कर दिया था, इसलिए नौ बजे के करीब उनका फोन आ गया।

"तुम्हारे लिए एक अहम सूचना है काला बच्चा।" जानकी ने कहा।

"मैं सुन रहा हूं।" काला ने कहा।

"तुमने बताया था कि उस रात हंगामे में शांग थाईवांग की गोली से जख्मी हो गया था।" जानकी देवी ने कहा—"मैंने इस चीनी का सुराग लगा लिया है।"

"क्या?" काला उछल पड़ा। उसने जानकी को इस किस्म की कोई जिम्मेदारी नहीं सौंपी थी क्योंकि वह उसे इस हंगामें से दूर ही रखना चाहता था—"मैंने तो तुम्हें ऐसा कोई काम नहीं कहा था जानकी।"

"महज संयोग से ही उसका पता चला है।" जानकी ने जवाब दिया—"कल शाम तुम्हारा फोन आने के थोड़ी ही देर बाद मेरी एक दोस्त सोनाली मुझसे मिलने आ गयी थी। वह एक प्राइवेट हस्पताल

में सर्जन है। उसने बताया कि चंदरोज पहले आधी रात के बाद उसके घर में दो आदमी घुस आये थे। एक भारी-भरकम चीनी और दूसरा इंडियन था। वह दोनों जख्मी थे। चीनी को बाजू में गोली लगी थी और उस इंडियन की नाक और मुंह से खून बह रहा था। मेरा ख्याल है यह उस रात की बात है जब तुम्हारी दारा वगैरह से झड़प हुई थी। उन्होंने सोनाली के छः साला बेटे को बंधक बना लिया और सोनाली से अपना इलाज कराते रहे। वह दोनों अब भी उसके घर पर हैं। उन्होंने सोनाली को धमकी दी है कि अगर उनकी मौजूदगी के बारे में किसी को बताया तो न सिर्फ उसके बेटे को बल्कि उसे भी मौत के घाट उतार देंगे।''

''ओह!'' काला बच्चा यह बात सुनकर उछल पड़ा उसे समझने में देर नहीं लगी कि शांग के साथ दूसरा आदमी दारा है उस रात वह काला बच्चा के हाथों बुरी तरह पिटा था—''क्या तुम मुझे सोनाली के घर का पता बता सकती हो?''

''अगर तुम्हारा कुछ करने का इरादा है तो इस तरह सोनाली और उसके बच्चे की जिन्दगी खतरे में पड़ जायेगी।'' जानकी देवी ने कहा।

''मैं सिर्फ उस मकान की निगरानी करना चाहता हूं ताकि जब वह लोग वहां से निकलें तो उनका पीछा करके उनके ठिकाने के बारे में मालूम किया जाए। यकीन करो जानकी मैं वहां कुछ नहीं करूंगा।'' काला बच्चा ने कहा।

''तुम्हारा नहीं तो और किसका यकीन करूंगी।'' जानकी ने कहा और चंद लम्हों की खामोशी के बाद बोली—''सोनाली का मकान इस जगह से ज्यादा दूर नहीं, जहां थाईवांग का मकान था। टाक्सन रोड पर स्ट्रीट में बायीं तरफ तीसरा मकान है।''

''गुड!'' काला बच्चा ने कहा—''अगर कोई और बात मालूम हो तो मुझे तुरन्त सूचना देना।'' काला बच्चा ने फोन बन्द कर दिया और थाई को परिस्थिति से आगाह करने लगा।

''टाक्सन रोड स्ट्रीट।'' उसकी आंखों में चमक-सी उभर आई—''मेरा मकान उसके सामने नहर की तरफ था। स्ट्रीट में मेरी एक दोस्त रहती है। एक मिनट मुझे सोचने दो। मैं उसका फोन नम्बर याद करने की कोशिश कर रही हूं।''

यह एक दिलचस्प सूरतेहाल पैदा हो गयी थी। थाईवांग लम्बे अरसे से उस इलाके में रहती थी। उस स्ट्रीट में उसके दोस्त भी मौजूद थे।

"एक मिनट।" थाईवांग कागज पर कुछ लिखने लगी—"यह है उसका नम्बर। मैं अभी मालूम करती हूं।"

वह फोन का रिसीवर उठाकर नम्बर मिलाने लगी। लाइन मिलने में ज्यादा देर नहीं लगी थी। दूसरी तरफ से फौरन ही कॉल रिसीव कर ली गयी।

"हैल्लो माया।" मैं थाई बोल रही हूं।" थाईवांग बोली। कुछ देर तक दूसरी तरफ की आवाज सुनती रही फिर बोली—"हां मजबूरी है। मैं फिलहाल सामने नहीं आ सकती। तुम्हारी गली में सोनाली नाम की कोई डॉक्टर रहती है। उसके बारे में कुछ मालूम करना है।"

"उस बेचारी के साथ तो बहुत बड़ी ट्रेजडी हो गयी है थाई।" दूसरी तरफ से कहा—"दो बदमाश पांच छः रोज से उसके घर में घुसे हुए थे। उसे धमकी दी थी कि अगर उनके बारे में किसी को बताया तो वह उसे और उसके बेटे को कत्ल कर देंगे। आज सु चार बजे वह उसके बेटे को बंधक बनाकर उसके घर से निकलना चाहते थे। सोनाली ने प्रतिरोध किया तो उन्होंने न सिर्फ उसके बेटे को कत्ल कर दिया बल्कि सोनाली भी अत्यधिक घायल हुई है। वह इस वक्त जिन्दगी और मौत की कशमकश में हस्पताल में पड़ी है। उसके घर पर पुलिस का पहरा है। पुलिस वाले उस गली में रह वालों से जानकारी हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं कि वह कौ लोग थे। मगर तुम उसके बारे में क्यों पूछ रही हो?"

"मुझे उसके बारे में कुछ भनक लगी थी। यह वही लोग जिन्होंने मेरा घर जलाया था। मैं सोनाली की मदद करना चाहती थी लेकिन...।"

"तुम पुलिस को बताकर अब भी उसकी मदद कर सकती हो अगर पुलिस को उनके बारे में बता दिया जाए तो उन्हें आसानी से गिरफ्तार किया जा सकता है।"

"हां मैं पुलिस से सम्पर्क करूंगी और एक-दो रोज बाद तुम मुलाकात करूंगी।" थाईवांग ने यह कहते हुए जवाब का इन्तजार किए बगैर फोन काट दिया।

"माया कौन है?" काला ने पूछा। काला उसके करीब ही बैठा हुआ था और सारी बातें सुन ली थीं। उसे इस अफसोसनाक वाकये पर अफसोस हुआ था। दारा सचमुच खूंखार भेड़िया था। इंसानी जिन्दगी की उसके नजदीक वाकई कोई अहमियत नहीं थी। वह बड़ी बेरहमी से लोगों को मौत के घाट उतार रहा था।

"माया का मसाज पार्लर है होटल प्लाजा में—लेकिन तुम क्य

पूछ रहे हो?" थाईवांग ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"अगर वह भरोसेमंद हो तो उससे कुछ काम लिया जा सकता है।" काला बच्चा ने कहा—"दारा के ठिकाने का पता लगाना जरूरी है और उसका सुराग उस गेस्ट हाउस से मिल सकता है जहां पहली बार मेरी उससे मुठभेड़ हुई थी। मैं और प्रसाद वहां जा नहीं सकते। तुम्हारा जाना ठीक नहीं है। यह काम किसी ऐसी हस्ती से लिया जा सकता है जिस पर किसी किस्म का शक न हो सके।"

"ऐसी सूरत में मुझे खुद माया के पास जाना पड़ेगा ताकि उसे बात समझाई जा सके।" थाईवांग ने जवाब दिया।

और फिर उसी रात बारह बजे के करीब वह टाक्सन रोड की स्ट्रीट एटी टू पर स्थित माया के घर में मौजूद थे। अपने मकान के सामने से गुजरते हुए काला बच्चा ने थाईवांग के चेहरे पर अजीब से भाव देखे थे। मकान की जगह पर मलबे का ढेर अभी तक पड़ा हुआ था।

माया की उम्र पैंतीस के लगभग थी। वह लम्बे कद की हसीन औरत थी। उसे देखकर काला बच्चा को याद आ गया कि उसने किसी मैगजीन के एक विज्ञापन में उसकी तस्वीरें भी देखी थीं। वह शादीशुदा थी लेकिन उसका पति कई साल पहले बरमा गया था और उसके बाद लौटकर न आया था। उसके बारे में ख्याल था कि मर-खप चुका था। जिन्दा होता तो उसके बारे में कोई सूचना जरूर मिलती।

माया को अपनी बात समझाने में आधा घण्टा लगा था और अंततः वह उनका साथ देने के लिए तैयार हो गयी थी।

"ठीक है।" वह गहरा सांस लेते हुए बोली—"मैं कल ही से इस मिशन पर काम शुरू कर देती हूं।" माया से रुख्सत होकर वह वापस पहुंचे तो रात के दो बज रहे थे।

उसके तीसरे ही दिन माया से एक दिलचस्प रिपोर्ट मिल गयी। थाईवांग ने उसे खुद फोन किया था। माया ने बताया कि शांग तो च्यांगराय वापस जा चुका है और दारा वक्तीतौर पर स्वामी रघुनाथ के आश्रम में पनाह ले चुका है जबकि किम और चीफांग भी शहर में किसी जगह रूपोश हैं।

स्वामी रघुनाथ के आश्रम के बारे में पूछने पर थाई ने बताया—"यह उस तरह का आश्रम नहीं जैसा तुम सोच रहे हो—यह रजनीश आश्रम की तरह का आश्रम है—बल्कि उससे भी कई कदम आगे है। स्वामी रघुनाथ चंद साल पहले इंडिया से यहां आया था। कुछ अरसा वह एक मंदिर में रहा फिर उसने बैंकाक के पूरब में

पौराणिक शहर से कुछ फासले पर एक आश्रम बना लिया था, जहां वह सेक्स की शिक्षा देता है लेकिन शक यह है कि यह आश्रम मदाक पदार्थों और जरायम का बहुत बड़ा अड्डा है, लोग संगीन जरायम करने के बाद यहां पनाह लेते हैं लेकिन कानून आज तक इसके खिलाफ हरकत में नहीं आया क्योंकि इसके चेलों में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो हुकूमत में ऊंची कुर्सियों पर बैठे हुए हैं।"

"दिलचस्प।" काला बच्चा ने उसके खामोश होने पर कहा—"इसका मतलब है माया की रिपोर्ट दुरुस्त ही मालूम होती है और मेरा ख्याल है कि जानकी देवी को और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए वहां भेजने में कोई हर्ज नहीं होना चाहिए।"

"अगर वह तैयार नहीं होती तो...?" थाईवांग ने कहा।

"तो फिर कोई और तरकीब सोचेंगे। बहरहाल सुबह मैं खुद जानकी से बात करूंगा।"

अगले रोज जानकी से बात हुई तो वह फौरन ही इसके लिए तैयार हो गयी—"और कोई खतरा महसूस करो तो वहां से निकलने में देर मत करना।" काला ने कहा।

"सुना तो मैंने भी यही है कि वह आश्रम जरायम का बहुत बड़ा अड्डा है और जरायम पेशा लोग गिरफ्तारी से बचने के लिए वहीं पनाह लेते हैं और जब उनका मामला ठण्डा पड़ जाता है तो वह आश्रम से निकलकर दोबारा अपनी सरगर्मियों में व्यस्त हो जाते हैं। बहरहाल मैं कोशिश करूंगी कि मुआमला उलझने न पाये।" जानकी ने कहा।

जानकी देवी के जाने के बाद उस रात काला बच्चा ने मास्टर होचिन से बात की। उसने यह दिलचस्प खबर सुनाई कि टाइगर की मौत के बाद पेड्रो ने अण्डरवर्ल्ड की कमान संभाल ली थी और उसने एलान किया था कि जब तक टाइगर के कत्ल का बदला नहीं लेगा, चैन से नहीं बैठेगा। टाइगर ने काला बच्चा के सिर की कीमत एक मिलियन मात मुकर्रर कर रखी थी। पेड्रो ने यह कीमत दो मिलिन मात कर दी है।

पेड्रो के बारे में मालूम करना जरूरी था कि वह कौन है और यह जानकारियां सिर्फ और सिर्फ रामन प्रसाद ही हासिल कर सकता था। प्रसाद को यकीन था कि उसे टाइगर के किसी आदमी ने नहीं देखा था, वह सात-आठ दिन पामेला के साथ रहा था और इस दौरान में उसने यह बात विशेष रूप से नोट की थी कि कभी किसी आदमी को अपनी निगरानी करते हुए नहीं पाया था—लेकिन फिर एकाएक

काला बच्चा को एक और ख्याल आ गया। प्रसाद ने बताया था कि शुरू में उसे पामेला के साथ देखकर उन्हें किसी किस्म का संदेह हुआ था और उसके बारे में कुछ जानकारियां भी हासिल की गयी थीं। इसका मतलब था कि प्रसाद को उनके किसी अड्डे पर भेजना खतरे से खाली न था।

"तुम उसकी फिक्र मत करो बॉस! वह मुझे नहीं पहचान सकेंगे।" प्रसाद ने कहा—"तुम्हें याद है जब मैं यहां से गया था तो मेरे बाल छोटे थे और लिबास से भी मैं बन्दे दा पुत्तर लग रहा था। और वैसे भी कई रोज हो चुके हैं। अगर बाल बढ़ाकर मोछें रख ली जाएं तो उनके फरिश्ते भी मुझे नहीं पहचान सकेंगे।"

"लेकिन इसमें कई रोज लग जायेंगे।" काला ने कहा।

"कई रोज।" प्रसाद मुस्कराया—"मोछें और बाल तो चुटकी बजाते ही आ सकते हैं।" वह आलमारी में से ब्राउन बालों वाली एक विग और मोछें निकाल लाया।

"यह चीजें कई रोज पहले मैंने यहां लाकर रखी थीं और अब इनके इस्तेमाल का वक्त आ गया है।" उसने आइने के सामने खड़े होकर विग सिर पर जमाई और टूथ ब्रश टाइप की मोछें होठों पर चिपका लीं। इस हुलिए में सचमुच उसके चेहरे में बड़ी तब्दीली आ गयी थी।

"मैं ऐसे ही जरा इनके इलाके का एक चक्कर लगाकर आता हूं। अगर कोई गड़बड़ नजर आई तो प्रोग्राम बदल देंगे।"

काला बच्चा जानता था कि प्रसाद उसके रोके भी नहीं रुकेगा, इसलिए उसने प्रसाद को रोकने की कोशिश भी नहीं की थी।

उसकी वापसी लगभग चार घण्टों बाद हुई थी। उस वक्त शाम के पांच बज रहे थे, लेकिन उसके साथ नवैता को कार से उतरते देख काला बच्चा चौंके बगैर न रह सका था। वह बहुत भयभीत नजर आ रही थी। अन्दर आकर उसने काला बच्चा और थाई को देखा तो उसके चेहरे के भाव बदल गये। वह उलझी हुई नजरों से प्रसाद की तरफ देखने लगी। प्रसाद ने विग और मोछें उतार दीं तो नवैता के मुंह से गहरा सांस निकल गया।

"हमने तो तुम्हें उस रोज पताया जाने वाली कोच पर सवार कराया था। तुम दोबारा यहां क्यों आ गयी?" थाईवांग ने उसे घूरा।

"यह तुम्हें कहां मिली?" काला बच्चा ने नवैता के बोलने से पहले प्रसाद से पूछा।

"मैं सोखमबर रोड की तरफ से आ रहा था कि यह होटल

यह वहां के सामने खड़ी हुई नजर आ गयी, मैं गाड़ी रोककर इसके पास आ गया। मैंने इससे बात करना चाही तो यह डरकर पीछे हट गयी। सम्भव है मुझे कोई गुण्डा समझकर शोर मचा देती लेकिन मैंने इसे अपना नाम बताया और कुछ पिछली बातें याद दिलाईं तो यह खामोशी से मेरे साथ कार में बैठ गयी। तुम लोगों को देखने से पहले तक यह डरी हुई थी और शायद यही सोच रही थी कि किसी गलत आदमी के हाथ लग गयी है।"

"तुम वापस क्यों आ गयी?" इस मर्तबा उसने नवीता से पूछा।

"जब मैं पताया पहुंची तो बड़ी मुश्किल से अपनी बुआ का एडरेस तलाश किया लेकिन पता चला कि वह च्यांगराय गयी हुई है और एक हफ्ते बाद वापस आयेगी। वहां मुझे बुआ का एक दोस्त मिल गया। वह भी उस डिपार्टमेन्ट का एक गाइड है। उसने हमदर्दी का इजहार करते हुए मुझे अपने घर में रहने को जगह दे दी। तीन-चार रोज तो खैरियत से गुजर गये और फिर एक रोज वह शराब के नशे में मेरे कमरे में घुस आया। वह अपनी हमदर्दी की कीमत वसूल करना चाहता था। मैंने उस रात बड़ी मुश्किल से अपने को बचाया और सुबह होते ही वहां से निकल गयी। दो-तीन दिन तक होटल में गुजारे। वहां भी मैं हर वक्त अपने लिए खतरा महसूस करती रही। कल मैंने टूरिस्ट डिपार्टमेन्ट से बुआ के बारे में मालूम किया तो पता चला कि उसने एक और हफ्ते की छुट्टी ले ली है। मैं आज दोपहर बैंकाक आ गयी और यहां तुम लोगों को तलाश करती फिर रही थी। मुझे यह भी खौफ था कि अगर शांग के आदमियों ने देख लिया तो मुझे गोली मार देंगे।"

"बैंकाक जैसे शहर में एड्रेस के बगैर किसी को तलाश कर लेना कोई आसान काम नहीं। यह तुम्हारी खुशकिस्मती है कि तुम प्रसाद की नजरों में आ गयी और वह तुम्हें यहां ले आया। वैसे मुझे एक और बात याद आ रही है।" काला बच्चा चंद लम्हे खामोश हुआ फिर बोला—"उस रोज तुमने बताया था कि शांग के साथ शाम के वक्त बैंकाक पहुंची थी और रात ग्यारह बजे तक होटल के कमरे में रही थी फिर शांग के साथ उस कोठी में आ गयी थी। क्या इस दौरान में किसी और आदमी से भी तुम लोगों की मुलाकात हुई थी?"

"नहीं!" नवीता ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

इसका मतलब है टाइगर, पामेला, दारा और शांग के सिवा कोई और तुम्हें नहीं पहचानता।" काला बच्चा ने कहा--"पामेला और टाइगर मर चुके हैं। शांग च्यांगराय वापस जा चुका है और दारा

एक ऐसी जगह रूपोश है जहां से कई रोज तक वह बाहर नहीं आयेगा। इसका मतलब है कि तुम्हें फौरीतौर पर कोई खतरा नहीं है और तुम आजादी से घूम-फिर सकती हो।"

बात नवेता की समझ में आ गयी थी।

और फिर उसी रात प्रसाद अपने मिशन पर रवाना हुआ तो नवेता भी उसके साथ थी। काला बच्चा की बातों से नवेता का खौफ बड़ी हद तक खत्म हो गया था और उसका आत्मविश्वास किसी हद तक बहाल हो गया था।

उन दोनों की वापसी रात दो बजे के करीब हुई थी। पहली सनसनीखेज खबर यह मिली कि पेड्रो ने काला बच्चा को मौत को घाट उतारने के लिए एक डेथ स्क्वायड तैयार किया था, जिसमें बैंकाक के चार सफ्फाक तरीन पेशावर कातिल शामिल थे। उन्हें हुक्म दिया गया था कि काला बच्चा को जहां भी देखें पकड़ने की कोशिश करने की बजाए काला बच्चा के टुकड़े कर दें और वह टुकड़े-टुकड़े एक बोरी में बन्द करके तोहफे के तौर पर महाराज को भेज दिए जाएं।

मास्टर होचिन ने कई बार काला बच्चा को खतरों से आगाह करने की कोशिश की थी, काला बच्चा ने उसकी हर बात को टाल दिया था लेकिन अब सूरतेहाल संगीनतर हो चुकी थी। काला बच्चा बुजदिल तो नहीं था। अब तक जो कुछ भी हुआ था, उससे उसके अन्दर आत्मविश्वास पैदा हुआ था। लेकिन हद से बढ़ा हुआ आत्मविश्वास उसके लिए हानिकारक साबित हो सकता था। वह एक-दो दुश्मनों का मुकाबला तो कर सकता था लेकिन कातिलों का एक गिरोह उसके पीछे आ गया था। वह शिकारी कुत्तों की तरह उसकी गंध सूंघते फिर रहे थे। अगले रोज एक और चिन्ताजनक खबर सुनने को मिली। पेड्रो के आदमियों ने फरान नोक रोड वाले उस मकान का सुराग लगा लिया था-जहां काला बच्चा ने टाइगर का सफाया किया था और तहखाने से टाइगर की घड़ी भी उन्हें मिल गयी थी, जो लड़ाई के दौरान उसकी कलाई से निकलकर वहां में गिर गयी थी।

यह खबर भी उस रोज प्रसाद ने ही उसे सुनाई थी। उस रात वह गेस्ट हाउस का चक्कर लगाकर आया था और जिस मेज पर [illegible] के साथ बैठा हुआ था, उसके पिछले वाली मेज पर बैठे दो आदमी यह बातें कर रहे थे।

"पेड्रो तो कुछ ज्यादा ही तेज जा रहा है।" काला बच्चा ने प्रसाद की तरफ देखते हुए कहा—"उसने फरान नोक वाले मकान

का सुराग लगा लिया है। वह यहां भी पहुंच सकता है। सबसे पहले वह लोग यह मालूम करने की कोशिश करेंगे कि वह मकान किसने किराए पर लिया था।"

"मकान के एग्रीमेन्ट द्वारा वह मेरा सुराग नहीं लगा सकते है, मैंने एक फर्जी नाम-पता लिखवाया था और जब नोट सामने रखे हुए हों तो स्टेट एजेन्ट भी किसी बात पर ज्यादा खोजबीन नहीं करता। उसे अपने कमीशन से मतलब होता है अलबत्ता यह कार हमारे लिए कुछ उलझन पैदा कर सकती है।" प्रसाद ने कहा।

काला बच्चा कुछ बोलने की बजाए प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगा।

कार किराए पर लेते वक्त उसने फ्लैट का पता लिखवाया था। इस फ्लैट से वह कुछ मालूम नहीं कर सकते लेकिन कार की नम्बर प्लेट यह कार उस मकान में भी जाती रही है और यहां भी उस मकान के पड़ोसियों से वह कार के बारे में भी मालूम कर लेंगे और फिर अगर वह लोग इधर आ गये जैसी कि मुझे आशा है तो उनके लिए यह मालूम करना ज्यादा मुश्किल नहीं होगा कि इस कार का सम्बन्ध उस बंगले से भी है।"

"और उन्हें यह भी पता चल जायेगा कि यह बंगला जानकी देवी का है। इस तरह जानकी की जिन्दगी भी खतरे में पड़ जायेगी। हमारे पास ऐसा कोई जरिया नहीं कि हम उसे खतरे से आगाह कर सकें।" काला ने कहा।

"एक तरीका है।" प्रसाद बोला।

"वह क्या?"

"हम यह बंगला तुरंत छोड़कर। किसी सुरक्षित जगह पर शिफ्ट हो जायें और मैं आज ही रात स्वामी रघुनाथ के आश्रम पहुंच जाता हूं ताकि जानकी देवी को इस खतरे से बचाया जा सके।" प्रसाद ने कहा।

"सुझाव उचित है।" काला बच्चा ने कहा और फोन का रिसीवर उठाकर मास्टर होचिन के नम्बर मिलाने लगा।

कॉल मास्टर होचिन के एक शार्गिद ने रिसीव की थी लेकिन काला बच्चा का नाम सुनते ही उसने मास्टर होचिन को बुला दिया।

"तुम कहां हो।" मास्टर होचिन काला बच्चा की आवाज सुनते ही चीख—"तुम इस वक्त सख्त खतरे में हो। तुम्हें चारों तरफ से घेरने की कोशिश की जा रही है। मेरी एक जानकारी के अनुसार वह तुम्हारे एक ठिकाने का पता लगा चुके हैं। उस मकान के तहखाने

से उन्हें टाइगर की घड़ी और कुछ ऐसी चीजें मिली हैं जो तुम्हारी निशानदेही करती हैं। पेड्रो को सौ प्रतिशत यकीन है कि टाइगर को तुमने ही हलाक किया है। वह तुम्हारे गिर्द घेरा तंग कर रहे हैं।

"तुम्हें यह सब कुछ कैसे मालूम हुआ मास्टर होचिन?" काला ने पूछा।

"हमने तुम्हारी तरफ से आंखें बन्द नहीं कर रखीं।" मास्टर होचिन ने जवाब दिया—"हमारे आदमी चारों तरफ फैले हुए हैं और यह खबर तो पूरे अण्डरवर्ल्ड में गर्दिश कर रही है कि पेड्रो ने तुम्हारे एक ठिकाने का पता लगा लिया है और वह बहुत जल्द तुम्हें छापने वाला है। वैसे तुम हो कहां पर। मुझे अपनी लोकेशन बताओ ताकि मैं अपने आदमी भेज दूं।"

"यह तमाम खबरें मुझे भी मिल चुकी हैं मास्टर।" काला बच्चा ने जवाब दिया—"मैं भी अब यह महसूस कर रहा हूं कि मेरी यह पनाहगाह अब सुरक्षित नहीं रही। मैं इस वक्त टाक्सन रोड के करीब हूं और हम यहां से निकलना चाहते हैं।"

"तुम्हारे साथ थाईवांग के अलावा कौन है?" मास्टर होचिन ने पूछा।

"दो लोग और हैं।" काला ने जवाब दिया।

"ठीक एक घण्टे बाद एक स्याह वैन तुम्हें किंग टाक्सन के स्टेच्यू वाले चौराहे के करीब खड़ी मिलेगी। कांग को तुम पहचान लोगे। वैसे मेरे कुछ आदमी रेलवे स्टेशन की तरफ भी मौजूद हैं। मैं उन्हें खबरदार कर देता हूं।"

फोन बन्द हो गया। काला बच्चा ने रिसीवर रख दिया और उन लोगों को परिस्थिति से आगाह करने लगा। इसके साथ ही उन्होंने वहां से निकलने की तैयारी शुरू कर दी। उन्होंने हर वह चीज समेट ली जिससे वहां उनकी मौजूदगी का सबूत मिल सकता था। वैसे काला बच्चा के ख्याल में यह बेकार ही था, क्योंकि जब उन्हें पता चल जायेगा कि वह यहां थे तो किसी चीज की मौजूदगी या ना मौजूदगी से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

किंग टाम्सन की मूर्ति वाला चौराहा वहां से सिर्फ दस मिनट के फासले पर था। जब वह बंगले से निकले तो ग्यारह बजकर बीस मिनट हुए थे। गाड़ी इन्होंने बंगले में ही छोड़ दी थी। उसे इस्तेमाल करना अब खतरनाक हो सकता था। गेट को ताला लगाकर चाबियों का गुच्छा थाई ने अपने बैग में डाल लिया और वह चारों इकट्ठे ही चौराहे की तरफ चलने लगे।

टाक्सन स्क्वायर पर उस वक्त खासी रौनक थी। चौराहे के मध्य में बहुत बड़ा गोल चबूतरा बना हुआ था। चबूतरे के ऐन मध्य में एक और चबूतरे पर किंग टाक्सन की प्रतिमा थी। उसके बेस पर चारों तरफ चार शेरों की प्रतिमायें थीं। इस बेस के इर्दगिर्द एक हौज-सा बना हुआ था। चारों शेरों के मुंह में फौव्वारे लगे हुए थे। शाम को यह फौव्वारे खोले जाते थे तो पानी हौज में गिरता रहता था। बड़े चबूतरे के गिर्द लगभग चार फुट ऊंचा लोहे का जंगला-सा था। आवागमन के लिए चार लोहे की सलाखों वाले दरवाजे थे लेकिन वह दरवाजे टूट-फूट चुके थे। जंगले की कई सलाखें भी गायब थीं और कई जगहों पर कुछ सलाखें मुड़ी हुई नजर आ रही थीं।

जंगले के अन्दर वाले चबूतरे और उसके आस-पास में गोलाई में बने फुटपाथ पर चरसियों और मवालियों का कब्जा था। यह सब वह लोग थे, जो नशे के आदी थे और उनके पास सिर छुपाने तक को जगह नहीं थी। दिन में तो यह लोग इधर-उधर घूमते रहते और शाम होते ही यहां जमा होना शुरू हो जाते।

चौराहे पर पहुंचकर काला बच्चा ने इधर-उधर देखा। स्याह वैन कहीं भी नजर नहीं आ रही थी। अचानक सफेद रंग की एक कार उस गली के मोड़ पर रुकी उसमें तीन आदमी थे। एक ड्राइविंग सीट पर और दो पीछे। वह कार चंद सेकिंड वहां रुकी और फिर गली में दाखिल हो गयी।

"वह कार देखी तुमने?" प्रसाद ने काला बच्चा के समीप आकर सरगोशी की–"वह तीन टाइगर के आदमी हैं, जो शख्स ड्राइविंग सीट पर बैठा हुआ था, उसे तो मैं अच्छी तरह जानता हूं।"

परिस्थिति खतरनाक हो गयी। अगर वह गली में मुड़ने की बजाए सीधे उनकी तरफ आते तो उन्हें देख लिया जाता। काला बच्चा ने इधर-उधर देखा स्याह वैन कहीं भी नजर नहीं आ रही थी।

यहां खड़े रहना खतरे से खाली नहीं है। मेरे साथ आओ।" काला बच्चा ने उन्हें संकेत किया। वह सड़क पार करके मूर्ति वाले चबूतरे पर आ गये। जंगले के बाहरी फुटपाथ पर भी मवाली कब्जा जमाये हुए थे। वह जंगले के अन्दर आ गये। यहां अजीब माहौल था। कोई लेटा हुआ था। कोई सिर घुटनों में फंसाये बैठा था और कोई खोयी-खोयी-सी नजरों से इधर-उधर देख रहा था। एक तरफ थोड़ी-सी जगह नजर आई तो वहां बैठ गये। उनके करीब ही दो आदमी बैठे हशीश भरे सिग्रेट के कश लगा रहे थे। हशीश की गंध से दिमाग फटा जा रहा था। थोड़ी देर बाद पता चला कि उन दोनों

में एक औरत थी।

वह इन मवालियों के दरमियान इस तरह बैठ गये थे कि अगर सड़क पर से कोई उस तरफ देखे तो वह नजरों में न आ सकें।

दस मिनट गुजर गये। स्याह वैन अभी तक नहीं आई थी। काला बच्चा की चिन्ता बढ़ रही थी और फिर उसी लम्हे वह सफेद कार गली से निकलकर तेज रफ्तारी से एक तरफ चली गयी। उसमें सिर्फ ड्राइवर था। काला बच्चा के दिल की धड़कनें तेज हो गयीं। उसे समझने में देर नहीं लगी कि उन्होंने वह बंगला तलाश कर लिया है। पेड्रो सचमुच बहुत तेज चल रहा था।

तीन और मवाली उनके करीब आकर बैठ गये। उनमें एक मर्द था और दो औरतें थीं। वह भी हशीश भरे सिग्रेट पी रहे थे। एक औरत ने सुलगता हुआ सिग्रेट थाईवांग की तरफ बढ़ा दिया। थाईवांग ने सिग्रेट लेकर कश लगाया और सिग्रेट वापस कर दिया लेकिन सिग्रेट के एक ही कश ने अपना असर दिला दिया था। थाईवांग बुरी तरह खांसने लगी। उसकी आंखों और नाक से भी पानी बह निकला था। वह बड़ी मुश्किल से अपने आपको संभाल सकी थी लेकिन उसका सांस धौंकनी की तरह चल रहा था।

पांच मिनट और गुजर गये और फिर स्याह रंग की एक वैन चौराहे के दूसरी तरफ सड़क के किनारे पर रुकी और फिर काला बच्चा ने कांग को वैन से उतरते देखा तो उसके मुंह से बेइख्तियार गहरी सांस निकल गयी।

"चलो वैन आ गयी है इस तरफ... ।" काला बच्चा ने सरगोशी की।

वह चारों उठकर चबूतरे के दूसरी तरफ चलने लगे। हशीश भरे सिग्रेट के एक ही कश ने थाईवांग की हालत बिगाड़ दी थी। उसने एक हाथ सर पर रखा हुआ था और दूसरा हाथ काला बच्चा ने थाम रखा था। जंगले से निकलकर वह सड़क पर आ गये।

वह सड़क के मध्य में थे वह सफेद कार बायीं तरफ से घूमती हुई उनके सामने से गुजरी और चंद गज आगे जाकर, ब्रेकों के बीच चरमराहट से रुक गयी। दरवाजा खुला और ड्राइविंग सीट पर बैठा आदमी नीचे उतर आया। उसके हाथ में रिवॉल्वर था जिसका रुख उनकी तरफ था। नवैता के मुंह से खौफनाक चीख निकल गयीं।

लेकिन इससे पहले कि वह आदमी गोला चलाता फिजा फायर की आवाज से गूंज उठी। वैन के करीब खड़े हुए कांग ने उसे देख लिया था और परिस्थिति का अनुमान लगाते हुए उसने गोली चला

दी थी।

गोली उस शख्स के पेट में लगी। वह नीचे गिरा। रिवॉल्वर भी उसके हाथ से छूटकर चंद फुट दूर जा गिरा था। जख्मी होने के बावजूद वह शख्स सड़क पर रेंगता हुआ रिवॉल्वर की तरफ हाथ बढ़ा रहा था।

"काला बच्चा। भागो वैन में जल्दी।" कांग चीखी। उसने एक और गोली चला दी थी।

वैन का पिछला दरवाजा खुला। एक और आदमी नीचे उतरा। उसने भी फायरिंग शुरू कर दी थी। काला बच्चा ने पहले थाई और नवैता को वैन में सवार कराया फिर खुद चढ़ गया। प्रसाद उसके साथ ही था। कांग ने चीखकर कुछ कहा और वैन तेजी से हरकत में आ गयी। कांग का दूसरा साथी दौड़ता हुआ चलती वैन में सवार हो गया था।

चौराहे पर भगदड़ मच गयी थी लेकिन उनकी वैन चंद सेकिण्ड में ही वहां से दूर निकल चुकी थी।

उनकी मंजिल वार ट्रीम्पर थी, जिसे महाराज ने अपना हैड क्वार्टर बना रखा था। यह वह खानकाह थी, जहां बुद्ध की खालिस सोने की दुनिया की सबसे बड़ी प्रतिमा रखी थी।

उन्हें फौरन ही महाराज के सामने पेश कर दिया गया। वहां मास्टर होचिन भी था। महाराज ने कहा कुछ नहीं फिर मास्टर होचिन को इशारा कर दिया।

उन्हें एक और लम्बे-चौड़े कमरे में पहुंचा दिया गया। महाराज के व्यवहार से काला बच्चा को समझने में देर नहीं लगी कि वह उससे नाराज थे।

दूसरे दिन बड़ी मुश्किल से वह महाराज की इजाजत लेकर प्रसाद के साथ स्वामी रघुनाथ के आश्रम की तरफ रवाना हो गया। महाराज ने उन्हें एक कार भी उपलब्ध करा दी थी। आश्रम के सामने एक लम्बे-चौड़े मैदान में अनगिनत कारें खड़ी थीं। आश्रम के गिर्द बहुत ऊंची चारदीवारी थी, जिसने कई एकड़ जमीन घेर रखी थी। आवागमन के लिए सिर्फ एक ही गेट था। गेट के अन्दर एक रिसैप्शन काउन्टर बना हुआ था, जहां अर्धनग्न लिबास में एक लड़की बैठी हुई थी। काउण्टर के पीछे एक कमरा था।

स्वामी रघुनाथ के आश्रम में दाखिल होने के लिए धर्म की कोई पाबन्दी नहीं थी। लड़की ने मुस्करा कर उनकी तरफ देखा और एक तरफ रखी हुई बड़ी-सी पेटी की तरफ संकेत किया, जिस पर डोनेशन

लिखा हुआ था। काला बच्चा और प्रसाद ने कुछ नोट उस पेटी में डाल दिए। लड़की ने काउण्टर के नीचे से दो कन्टोप निकालकर उनकी तरफ बढ़ा दिए। कपड़े के बने हुए यह टोप पहन लेने से ना सिर्फ मस्तक बल्कि चेहरे का बहुत-सा हिस्सा छुप गया था। वह टोप पहनकर एक दरवाजे में दाखिल हो गये।

अन्दर की दुनिया निराली थी। एक तरफ आश्रम की इमारत थी और उसके सामने कंक्रीट की छत वाला बहुत बड़ा शेड था। छत को सहारा देने के लिए अनगिनत स्तम्भ थे। नीचे पुख्ता फर्श था। इस छत के नीचे एक साथ पन्द्रह-सोलह सौ लोग बैठ सकते थे।

उस वक्त रात के नौ बजे थे। लगभग दो सौ लोग उस वक्त वहां मौजूद थे और उनकी तरह बहुत से लोग आ रहे थे। शेड से आगे अंधेरा वीराना था, जहां ऊंचे-नीचे टीले और झाड़ियां फैली हुई थीं।

इतने लोगों में किसी को तलाश कर लेना आसान नहीं था जबकि लोगों के चेहरे कन्टोप में छुपे हुए थे लेकिन डेढ़ घण्टे की जुस्तजू के बाद उन्होंने जानकी देवी को तलाश कर लिया।

''क्या दारा यहां मौजूद है?'' काला बच्चा ने सरगोशी में पूछा।

''वह आश्रम के अन्दर है, स्वामी के साथ ही बाहर आयेगा।'' उसने जवाब दिया।

लोगों की संख्या बढ़ रही थी और फिर ठीक बारह बजे लोग उस लम्बे-चौड़े शेड के नीचे जमा हो गये। उसके चंद सेकिण्ड बाद ही स्वामी आश्रम से बरामद होकर एक चबूतरे पर बैठ गया। वह अजीब डील-डौल का आदमी था। गंजा सिर बटन जैसी छोटी आंखें, फूले हुए गाल, नोकदार टोढ़ी और बहुत भद्दे और भारी होंठ उसकी गर्दन बहुत छोटी थी। लगता था तरबूज जैसा बड़ा सिर कंधों पर टिका हुआ है। उसके साथ चार-पांच लड़कियां थीं जिनके जिस्मों पर लिबास बराए नाम ही था, वह लड़कियां उसके कदमों में बैठ गयीं। कन्टोप वाले तीन आदमी पीछे खड़े थे।

स्वामी रघुनाथ सेक्स के प्रवचन देने लगा। लोग खामोशी से सुन रहे थे। स्वामी के मुंह से निकलने वाला हर शब्द जहर में बुझा हुआ था। उसकी बातों का रुख बदलता जा रहा था। नग्नता भरी बातें, सेक्स को भड़काने वाली बातें उसके कदमों में बैठी हुई लड़कियां अब हरकत में आ गयी थीं। कोई उसकी बाहों और कोई टांगों से लिपट गयी थी।

काला बच्चा ने महसूस किया कि शेड में बैठे हुए लोग भी

कसमसाने लगे थे। उनके हाथ एक-दूसरे को छूने लगे थे। शेड की बत्तियां इस तरह बुझ रही थीं जैसे धीरे-धीरे शाम ढल रही हो और फिर अंधेरा छा गया। स्वामी की आवाज उस अंधेरे में गूंज रही थी।

"तुम सब एक-दूसरे के लिए हो। मर्द और औरत को एक-दूसरे के लिए बनाया गया है समाज की मान मर्यादा एक ढोंग है। एक-दूसरे से दूर रहोगे तो घाटे में रहोगे। करीब हो जाओ—फांसला मिटा दो—फांसले ही दूरियां पैदा करते हैं।"

लोग एक-दूसरे की तरफ झुक रहे थे। जानकी देवी ने काला बच्चा को अपनी बाहों की लपेट में ले लिया और कन्टोप खिसका कर उसके चेहरे पर बोसे देने लगी।

"यह क्या कर रही हो जानकी?" काला बच्चा ने सरगोशी की।

"मुझे अपनी बाहों में ले लो वरना कोई और मुझे ले जायेगा।" जानकी ने सरगोशी की।

लोग जोड़ों की सूरत में उठ-उठ कर इधर-उधर जाने लगे थे। शेड में दूर कहीं मद्धिम-सी रोशनी का बल्ब जल गया। जानकी काला बच्चा को उस तरफ ले जा रही थी जहां बहुत मद्धिम-सी रोशनी हो रही थी। काला बच्चा ने महसूस किया कि प्रसाद भी उनके पीछे किसी औरत को दबोचे आ रहा है।

"हम पिछले दरवाजे से आश्रम की इमारत में दाखिल होने की कोशिश करेंगे।" जानकी ने उसके कान में सरगोशी की।

वह लोगों के हुजूम से दूर हटते जा रहे थे और फिर अचानक एक आदमी बेख्याली में उनसे आ टकराया। उसके साथ भी एक औरत थी। टक्कर इस तरह हुई थी कि वह दोनों नीचे गिर गये। काला बच्चा के सिर से कन्टोप गिर गया था। उससे टकराने वाले शख्स और औरत के भी कन्टोप गिर गये थे और जब वह दोनों सीधे हुए तो काला का दिल एकदम ब्लैक एण्ड व्हाइट हो गया।

उसके सामने दारा खड़ा था।

वहां रोशनी बहुत मद्धिम थी और एक-दूसरे की जान के दुश्मन वह दोनों सिर्फ दो-तीन फुट के फासले पर आमने-सामने खड़े एक-दूसरे की आंखों में झांक रहे थे।

वह सिर्फ चंद घड़ियों की बात थी [illegible] —लेकिन लगता था जैसे उन्हें एक-दूसरे के सामने खड़े स[illegible] गयी हों। उन [illegible] में से किसी की पलक तक नहीं झपकी थी, जो कुछ होने [illegible] झपकने की देर [illegible] होना था।

और फिर सांप जैसी वह फुंकार काला बच्चा की नाक से टकराई तो वह जैसे होश में आ गया। उसने एक पल भी गंवाये बिना अपने आपको संतुलित कर लिया।

"तुम्हारी मौत ही तुम्हें यहां खींच लाई है नादान छोकरे।" नाग की फुंकार जैसी यह सरसराती हुई आवाज दारा के होंठों से निकली थी—"उस बंगले में धोखे से हमें घेरकर तुमने यह समझ लिया था कि बहुत बड़ा तीर मार लिया है, लेकिन तुमने देख लिया था कि तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते थे। मैं तो तुम्हारे जाल से बच निकला था, मगर तुमने यहां आकर बहुत बड़ी गलती की है। अब तुम यहां से वापस नहीं जा सकोगे।"

"यह तुम्हारी भूल है दारा।" काला बच्चा ने उसके चेहरे से नजरें हटाये बगैर जवाब दिया—"वह जाल मैंने नहीं तुमने ही बिछाया था और खुद तुम्हें ही चोट खाकर वहां से भागना पड़ा। तुम सिर्फ उन लोगों पर हावी हो जो तुम्हारे सामने आवाज नहीं उठा सकते। तुमने किस बेदर्दी से पामेला को कत्ल कर दिया था, कितनी बहादुरी दिखाई थी तुमने एक कमजोर और बेबस औरत का गला काटने में। मेरे ऊपर तुमने कितने हमले कराये हैं। मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सके। आज भी तुम मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकोगे। मैं इसी तरह अपने कदमों पर चलकर वापस जाऊंगा। मैं तुम्हें कत्ल करके भी जा सकता हूं—लेकिन मैं तुम्हें दौड़ा-दौड़ा कर मारूंगा। तुम मुझसे खौफजदा होकर सारी दुनिया में पनाह लेने के लिए भागते फिरोगे—जिस तरह मैं भागता रहा था। इस वक्त मैं यहां इसलिए आया हूं कि तुम्हें बता सकूं कि जहां भी तुम पनाह लोगे—मैं वहां पहुंच जाऊंगा। इस वक्त तो मैं तुमसे सिर्फ उस मासूम बच्चे का हिसाब लूंगा, जिसे तुमने बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया था और उसकी मां सोनाली अब भी जिन्दगी और मौत की जंग लड़ रही है। मैं पूछता हूं क्या बिगाड़ा था उन्होंने तुम्हारा। तुमने उनके घर में पनाह ली। उस औरत ने तुम्हारा और तुम्हारे साथी का इलाज किया। अपने हाथों से खाना पकाकर खिलाया और तुमने उसकी नेकियों का क्या सिला दिया? उसके मासूम बच्चे को मौत के घाट उतार दिया और वह खुद जिन्दगी मौत की दहलीज पर खड़ी है तुम जैसा कम जर्फ और बेजिगर आदमी आज तक मेरी नजरों से नहीं गुजरा। तुम्हें एक-एक बात का हिसाब देना होगा दारा। तुम बच नहीं सकोगे।"

"ऐसे सम्वाद फिल्मों में बोले जाते हैं।" दारा ने कहा—"और हम किसी फिल्म की शूटिंग में हिस्सा नहीं ले रहे हैं। तुमने वाकई

यहां आकर बहुत बड़ी गलती की है। यह स्वामी रघुनाथ का आश्रम है। यहां सिर्फ उसका हुक्म चलता है। इस चार-दीवारी के अन्दर लाशें बिछा दी जायें तो भी उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हो सकती। कानून की रक्षा करने वाले उसकी तरफ टेढ़ी आंख से नहीं देख सकते। वह तो यहां आकर रघुनाथ के तलुवे चाटते हैं। तुम्हारी लाश भी यहां पड़ी सड़ती रहेगी और कोई पूछेगा नहीं।"

"यह तुम्हारी खुशफहमी है दारा।" काला बच्चा ने जवाब दिया—"दूसरों पर भरोसा करने वाला हमेशा घाटे में रहता है। तुम्हें तो टाइगर पर भी बड़ा नाज था। उसका हश्र तुमने देख लिया। वह तो मेरे इन हाथों का एक हल्का-सा झटका भी बर्दाश्त नहीं कर सका था और अब यह... ।" काला बच्चा की नजरें उसके साथ खड़ी हुई लड़की की तरह उठ गयीं। वह काला को नहीं जानती थी लेकिन उनके बीच होने वाले सम्वादों को सुनकर उसे परिस्थिति का अन्दाजा लगाने में दुश्वारी नहीं हुई थी। उसके चेहरे पर खौफ के भाव उभर आये थे और आंखों में दहशत-सी फैल रही थी और फिर किसी खतरे का एहसास करके वह पीछे हटने लगी।

फिजां में अब संगीत की आवाज सुनाई देने लगी थी। जज्बात भड़का देने वाले संगीत की मद्धिम-सी आवाज चारों तरफ से आती हुई महसूस हो रही थी। स्वामी रघुनाथ ने रूहानी तालीमात की आड़ में अपने चेलों की अय्याशी का मुकम्मल बन्दोबस्त कर रखा था। लम्बे-चौड़े शेड के अनगिनत स्तम्भों में स्पीकर छिपे हुए थे, जिनसे उत्तेजक संगीत फूट रहा था और यह आवाज हर तरफ से आती हुई महसूस हो रही थी। काला बच्चा ने कनखियों से इधर-उधर देखा, लोग अपने मतलब की जगह तलाश करते फिर रहे थे।

दारा के हाथ को हरकत करते देखकर काला चौंक गया। उसका हाथ पतलून की जेब की तरफ बढ़ रहा था लेकिन इससे पहले कि वह कोई हरकत करता, काला के करीब खड़ा हुआ प्रसाद हरकत में आ गया। वह हवा में उड़ता हुआ दारा से टकराया। दारा अपनी साथी लड़की से टकरा गया। वह खौफजदा अन्दाज में चीखती हुई पीछे गिरी। उसकी चीख पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। होश ही किसे था। संगीत की आवाज भी क्षण-प्रतिक्षण तेज होती जा रही थी।

दारा अपने आपको प्रसाद से बचाकर संभलने की कोशिश कर रहा था। काला बच्चा ने उस पर छलांग लगा दी। काला बच्चा उसे गिरफ्त में लेना चाहता था लेकिन वह मछली की तरह काला बच्चा के हाथों से फिसल गया और उठकर एक तरफ भाग खड़ा हुआ।

वह समझ गया कि काला बच्चा वहां अकेला नहीं है। खतरा महसूस करते ही वह भाग निकला था।

उसकी साथी लड़की अब भी जमीन पर पड़ी चीख रही थी। काला बच्चा उसकी तरफ ध्यान दिए बगैर दारा की तरफ लपका लेकिन वह लोगों के हज्जुम में गायब हो गया। शेड के उस हिस्से में कुछ खलबली-सी मच गयी थी और दारा ने उससे पूरा-पूरा फायदा आया था। वह कन्टोप पहनकर उन लोगों में गायब हो गया था। काला बच्चा ने भी अपना चेहरा कन्टोप में छुपा लिया था, जानकी अब भी उसके साथ चिपकी हुई थी। वह काला बच्चा को बाजू से पकड़कर एक तरफ खींचती चली गयी। किसी जवाबी हमले से बचने के लिए जगह तब्दील करना जरूरी था और जानकी देवी उसे वहां से कई गज दूर ले गयी थी। उसे अन्दाजा नहीं था कि प्रसाद भी उनके साथ था या वहीं रह गया था।

जगह तब्दील करने का जानकी का फैसला बड़ा सूदमंद साबित हुआ था। चंद मिनट बाद ही वहां एक बार फिर खलबली-सी मच गयी, जहां दारा से आमना-सामना हुआ था। दो लम्बे-तड़ंगे आदमी वहां लोगों के चेहरों से कन्टोप नोंच रहे थे। उन दोनों के हाथों में खंजर थे। औरतें चींख रही थीं और कुछ मर्द उन्हें गालियां दे रहे थे लेकिन वह दोनों गालियों और चीखों की परवाह किए बगैर अपने काम में लगे रहे। जानकी देवी काला बच्चा का हाथ पकड़कर वहां से और दूर हटती चली गयी। काला बच्चा को प्रसाद की फिक्र थी—कहीं वह उनके हाथ न लग जाए लेकिन दूसरे ही लम्हें अपने करीब किसी की सरगोशी सुनकर काला उछल पड़ा।

"वह आश्रम के अन्दर चला गया है बॉस। उसके गुर्गे हमें तलाश कर रहे हैं।"

काला बच्चा के मुंह से गहरा सांस निकल गया। प्रसाद उसे अकेला नहीं छोड़ सकता था।

"इस तरफ से आओ। हम पिछले दरवाजे से आश्रम में दाखिल होने की कोशिश करेंगे।" यह जानकी देवी की आवाज थी।

वह तीनों लोगों को धकेलते हुए एक तरफ बढ़ने लगे। वहां अजीब परिस्थिति थी। उत्तेजक संगीत की आवाज कुछ और तेज हो गयी थी। लोग मुंह छुपाकर यहां इसलिए आते थे कि स्वामी की रूहानी तालीमात से फायदा उठाकर अपने वासनामयी जज्बात की प्यास बुझा सकें और किसी की नजरों में भी न आयें, लेकिन आज उनमें कुछ बेचैनी फैल रही थी। वह दो लम्बे-तड़ंगे आदमी निरंतर

लोगों के चेहरों से कन्टोप नोंच रहे थे।

वह तीनों तेजी से एक तरफ बढ़ रहे थे। जानकी देवी सबसे आगे थी। उसके पीछे काला बच्चा और काला से कुछ फासले पर प्रसाद था। काला ने महसूस किया था कि कुछ लोग शेड से निकलकर खुली जगहों पर इधर-उधर फैल रहे हैं। इस चार-दीवारी के अन्दर कई एकड़ रकबा घिरा हुआ था। एक हिस्से पर वह आश्रम और शेड बना हुआ था जबकि बाकी जगह खाली थी। छोटे-छोटे टीले और गुंजान झाड़ियां हर तरफ फैली हुई थीं।

वह एक लम्बा चक्कर काटकर आश्रम वाली इमारत के पिछली तरफ आ गये। इस तरफ भी इमारत के सामने एक लम्बा-चौड़ा बरामदा था। सुर्ख पत्थरों की पांच सीढ़ियां थीं, जिन पर चढ़कर बरामदे में पहुंचा जा सकता था। बरामदे का एक सेन्ट्रल डोर था एक दायीं तरफ और एक बायीं तरफ। सेन्ट्रल डोर तो हॉल में दाखिले के लिए था और यह दोनों दरवाजे अलग-अलग कमरों में खुलते थे।

बरामदे में अंधकार था लेकिन अन्दर हॉल में बहुत मद्धिम-सी रोशनी नजर आ रही थी। जानकी देवी पिछले कई रोज से यहां थी और वह उस आश्रम के बारे में बहुत-सी जानकारियां हासिल कर चुकी थी। उसे आश्रम की इमारत के अन्दर आने का अवसर भी मिला था और उसे मालूम था कौन-सा दरवाजा किस कमरे में खुलता है।

बरामदे का सेन्ट्रल डोर बन्द था। उसने दायीं तरफ का दरवाजा आजमाया लेकिन यह दरवाजा भी अन्दर से बन्द था, वह बायीं तरफ वाले दरवाजे के सामने आ गई और हैंडिल पर हाथ रखकर उसे धीरे-धीरे हरकत देने लगी लेकिन वह दरवाजा भी अन्दर से बन्द था।

काला बच्चा उसी दौरान में दरवाजे से चन्द फुट के फासले पर खिड़की के सामने आ गया और अन्दर झांकने की कोशिश करने लगा लेकिन अंदर अंधकार था। खिड़की पर कोई ग्रिल वगैरह नहीं थी। काला बच्चा ने शीशे पर हाथ का हल्का-सा दबाव डाला तो खिड़की खुलती चली गयी। काला बच्चा ने वह खिड़की पूरी तरह खोल दी और जानकी और प्रसाद को संकेत करता हुआ चौखट पर चढ़कर आहिस्तगी से अन्दर कूद गया और दरवाजा खोल दिया। वह दोनों भी अन्दर आ गये।

काला बच्चा ने अपने लिबास में छुपा हुआ खंजर निकाल लिया और अंधकार में इधर-उधर घूरने लगा।

"इस तरफ...।" जानकी देवी ने सरगोशी की—"इस दरवाजे

से गुजरकर हम हॉल में दाखिल हो सकते हैं।"

वह अंधकार में दबे कदमों दरवाजे की तरफ बढ़ने लगे।

हॉल में बहुत मद्धिम-सी रोशनी थी—किसी जगह कोई बल्ब जल रहा था जिस पर शेड लगा हुआ था और रोशनी ज्यादा नहीं फैल रही थी। दायीं तरफ ऊपर जाने के लिए एक चौड़ा जीना था, जिस पर कालीन बिछा हुआ था। हॉल के फर्श पर भी मखमली कालीन बिछे हुए थे। वह दबे कदमों आगे बढ़ने लगे।

"यह तमाम कमरे स्वामी रघुनाथ के चेलों के हैं।" जानकी देवी ने सरगोशी की—"उसका कमरा ऊपर है और दासा भी ऊपर ही रहता है। मेरा ख्याल है वह इस वक्त भी ऊपर ही होगा और वहां से नीचे शेड में होने वाली सरगर्मियों का जायजा ले रहा होगा।"

वह जीने पर चढ़ने लगे। कालीन की वजह से उनके कदमों की हल्की-सी आवाज भी पैदा नहीं हो रही थी। ऊपर एक चौड़ी राहदारी थी और उसके साथ-साथ कमरे बने हुए थे।

एक दरवाजे के नीचे रोशनी देखकर काला बच्चा रुक गया। उसने झुककर की-होल से आंख लगा दी और दूसरे ही लम्हे उसका दिमाग भक्क से उड़ गया। बिल्कुल सामने दीवार के साथ एक चौड़ा स्लेब लगा हुआ था। जो दायें से बायें चला गया था। सामने ही चौड़ी स्क्रीन वाला एक रंगीन टी.वी. सेट रखा हुआ था और स्क्रीन पर जो मंजर दिखाई दे रहा था वह बड़ा शर्मनाक था। एक अधेड़ उम्र मर्द और एक नौजवान खूबसूरत लड़की। इस मर्द का चेहरा काला बच्चा को कुछ जाना-पहचाना-सा लगा और फिर उसके दिमाग में एक और धमाका हुआ। वह चेहरा उसने पहचान लिया था। वह एक सियासी लीडर किस्म का आदमी था और उसकी तस्वीरें अखबारों में छपती रहती थीं।

टी.वी. के सामने कुर्सी पर एक आदमी बैठा हुआ था और उसी के सामने स्लेब पर रिकार्डिंग के यंत्र रखे हुए थे और वह स्क्रीन के मंजर की वीडियो रिकॉर्डिंग कर रहा था। काला बच्चा को समझने में देर नहीं लगी कि वह सियासी लीडर आश्रम के किसी कमरे में था, जहां गुप्त कैमरा फिक्स था और उसकी शर्मनाक हरकतें रिकार्ड की जा रही थीं।

अब समझ में आ गया था कि रघुनाथ के खिलाफ क्यों कोई कानूनी कार्यवाही नहीं होती थी जबकि उसके बारे में अखबारों में काफी कुछ छपता रहता था। स्वामी रघुनाथ ने न जाने ऐसे कितने लोगों की ब्लू फिल्म बनाकर रखी होगी और उसी आधार पर वह

उन्हें ब्लैकमेल करता होगा।

ऊपर उस एक कमरे के अलावा बाकी सब कमरे खाली थे और वह तीनों उस वक्त उस कमरे में खड़े थे जिसे रघुनाथ का बेडरूम या ऐशगाह कहा जा सकता था। बहुत शानदार कमरा था। उसकी बाहर वाली एक दीवार शीशे की थी। वह शीशा यद्यपि बजाहिर ट्रांसपेरेन्ट ही था लेकिन इसकी खास बात यह थी कि उसके अन्दर से बाहर का नजारा तो किया जा सकता था लेकिन बाहर से अन्दर कुछ नजर नहीं आता था। यह शीशा बुलेटप्रूफ था।

काला बच्चा उसी शीशे से बाहर देख रहा था। शेड और उसके आस-पास का पूरा मंजर वहां से नजर आ रहा था। वहां पांच आदमी लोगों के चेहरों से जबरदस्ती कन्टोप नोंच रहे थे। कुछ लोग विरोध करते हुए अपने चेहरे छुपाने की कोशिश कर रहे थे। कन्टोप उतारने वालों का अन्दाजा जारहाना था। लोग उनकी उस हरकत पर ऐतराज कर रहे थे। एक अफरा-तफरी सी फैली हुई थी।

"यह कमरा साउण्ड प्रूफ है।" जानकी ने काला बच्चा के कान में सरगोशी की—"आम हालत में न तो बाहर की आवाज अन्दर आ सकती थी और न अन्दर की आवाज बाहर सुनी जा सकती है, लेकिन रघुनाथ ने ऐसा प्रबन्ध कर रखा है कि वह जरूरत के वक्त बाहर की आवाज भी सुन सकता है और अपनी आवाज भी बाहर पहुंचा सकता है।"

"लेकिन वह गया कहां और दारा कहां गायब हो गया?" काला ने कहा—"ऊपर के तो तमाम कमरे खाली हैं, वह किसी नीचे वाले कमरे में तो नहीं?"

"हो सकता है।" जानकी ने जवाब दिया—"आओ नीचे देखते हैं।"

वह उस कमरे से बाहर आ गये लेकिन उसी समय निचले हॉल में एक आदमी को देखकर वह दीवार के साथ चिपक गये। वह आदमी कदाचित इमारत के सामने वाले दरवाजे से हॉल में दाखिल हुआ था। इधर-उधर देखे बगैर एक कमरे का दरवाजा खोलकर अन्दर दाखिल हो गया।

"आओ हो सकता है वह लोग इस कमरे में हों।" काला बच्चा ने सरगोशी की और फिर वह तेज-तेज कदम उठाते हुए जीने से उतरकर निचले हॉल में आ गये। यहां उन्हें ज्यादा सतर्क हो जाना पड़ा। हॉल में किसी किस्म का फर्नीचर नहीं था। फर्श पर दीवार से दीवार तक मखमली कालीन बिछे हुए थे और एक तरफ दीवार

के साथ चार फुट चौड़ा और छः फुट लम्बा और जमीन से दो फुट ऊंचा तख्त बिछा हुआ था, जिस पर आरामदेह फोम का गद्दा पड़ा हुआ था। उस पर सुर्ख मखमल की चादर बिछी हुई थी और सुर्ख मखमल के कोर वाला कुशन रखा था।

''यहां दिन के वक्त स्वामी रघुनाथ अपनी बेहूदा शिक्षा का प्रचार करता है और उसके सेशन में सिर्फ चुने हुए लोग शामिल होते हैं उनका चयन भी वह खुद करता है।'' जानकी देवी ने काला बच्चा के कान में सरगोशी की।

यहां भी छुपने की कोई जगह नहीं थी, इसलिए उन्हें अधिक सतर्क होना पड़ा। प्रसाद ने भी अपना खंजर हाथ में ले लिया था। वह उस दरवाजे के करीब पहुंच गये, जहां बाहर से आने वाला शख्स दाखिल हुआ था। काला बच्चा ने जानकी और प्रसाद को संकेत किया। वह दोनों दायें-बायें दीवार के साथ चिपककर खड़े हो गये। काला बच्चा आगे बढ़कर एक लम्हे को रुका और फिर झुककर दरवाजे के की-होल में आंख लगा दी।

जहां तक नजर काम करती थी, कमरे में कोई नजर नहीं आ रहा था। वह कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश करने लगा लेकिन अन्दर से कोई मामूली-सी भी आहट सुनाई नहीं दे रही थी। उसने सीधे होकर प्रसाद और जानकी की तरफ देखा और दरवाजे के हैण्डिल पर हाथ रखकर उसे धीरे-धीरे दबाने लगा।

दरवाजा आवाज पैदा किए बगैर खुलता चला गया। काला बच्चा हैण्डिल छोड़कर बड़ी फुर्ती से एक तरफ हटकर जानकी के करीब दीवार के साथ चिपक गया और किसी के बाहर आने का इन्तजार करने लगा। खंजर के दस्ते पर उसकी गिरफ्त मजबूत थी और फिर वही नहीं जानकी और प्रसाद भी इस परिस्थिति से मुकाबला करने के लिए तैयार थे।

चंद लम्हे गुजर गये। दरवाजा खुलने की कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई। अन्दर से न कोई आहट सुनाई दी थी और न ही कोई बाहर आया था। काला बच्चा ने दूसरी तरफ खड़े हुए प्रसाद को इशारा किया। उसने आगे बढ़कर दरवाजे को आहिस्तगी से धकेलकर पूरी तरह खोल दिया। ओर एक लम्हे के इन्तजार के बाद उछलकर अंदर दाखिल हो गया।

काला बच्चा ने भी उसके पीछे ही कमरे में छलांग लगाई थी लेकिन कमरा खाली था। यह बेडरूम था लेकिन यहां किसी जीवात्मा की मौजूदगी के आसार नजर नहीं आ रहे थे। हालांकि वह शख्स

इसी कमरे में दाखिल हुआ था।

"कहां गया वह?" काला बच्चा इधर-उधर देखते हुए बड़बड़ाया।

उस कमरे में कोई ऐसी जगह भी नहीं थी, जहां कोई छुप सकता। बाथरूम का दरवाजा चंद इंच के करीब खुला हुआ था। वह शख्स कमरे में दाखिल होने के बाद बाथरूम में गया था और वहां से गायब हो गया था। यकीनन यहां कोई तहखाना मौजूद था और उसका रास्ता भी इस बाथरूम से होगा। क्योंकि बाथरूम खाली था। काला बच्चा ने प्रसाद की तरफ देखते हुस सरगोशी की और फिर वह तीनों तहखाने का रास्ता तलाश करने लगे।

जानकी देवी एक छोटे से कार्नस पर रखी हुई गणेश देवता की मूर्ति को देख रही थी। अचानक ही उसके जहन में एक ख्याल उभरा। कई रोज से यहां रहते हुए वह इस नतीजे पर पहुंची थी कि रघुनाथ तो किसी देवी-देवता को नहीं मानता फिर गणेश देवता की मूर्ति की मौजूदगी का क्या मतलब और वह भी बाथरूम में।

वह मूर्ति को छूकर देखने लगी। काला बच्चा भी उस मूर्ति को देख रहा था। जानकी देवी गणेश जी की मूर्ति के लगभग छः इंच लम्बे सूंड के एक दांत को देखने लगी। वह दांत किसी खास अन्दाज में मुड़ गया था या दब गया था लेकिन उसका नतीजा बहुत ही हैरत अंगेज निकला। इसी दीवार के करीब फर्श पर रखा हुआ पानी का टब अपनी जगह से हरकत करने लगा। वह टब सरकता हुआ दूसरी दीवार के साथ जा लगा और टब की जगह फर्श में रिक्त स्थान नजर आ रहा था। जिसमें सीढ़ियां बनी हुई थीं। जानकी ने हाथी के दूसरे दांत को हरकत दी। टब अपनी जगह पर आ गया। उसने दोबारा पहले वाले दांत को दबाया तो बाथटब फिर अपनी जगह से हट गया।

"प्रसाद।" काला बच्चा ने उसकी तरफ झुकते हुए सरगोशी की—"तुम यहीं रुको। मैं और जानकी अन्दर जा रहे हैं। अगर कोई आ जाए तो हमें सिग्नल दे देना।"

"तहखाने में उतरना खतरनाक हो सकता है।" प्रसाद ने जवाब दिया—"क्या हमारे लिए इतना काफी नहीं कि हम दारा के इस ठिकाने के बारे में भी इतना कुछ मालूम कर चुके हैं, जो उसे बदहवास कर देने के लिए काफी है। मेरा ख्याल है तहखाने में उतरने का खतरा मोल नहीं लेना चाहिए। हम तो पहले ही भेड़ियों के मठ में घुसे हुए हैं। किसी मुसीबत में न फंस जायें।"

"ओखली में सिर दे चुके हैं तो मूसलों से अब क्या डरना?" काला बच्चा ने कहा—"अगर अन्दर कोई खतरा महसूस हुआ तो हम फौरन वापस आ जायेंगे।"

प्रसाद कुछ कहना चाहता था मगर काला बच्चा ने हाथ उठाकर उसे रोक दिया। वैसे काला बच्चा समझता था कि उसे तहखाने में जाने से मना करके वह किसी किस्म की बुजदिली का प्रदर्शन नहीं कर रहा था। बुजदिल होता तो उसके साथ यहां तक न आता। वह काला बच्चा की तरह गरम दिमाग का नहीं था। सोच-समझकर अगला कदम उठाना चाहता था।

"तो ठीक है।" प्रसाद ने कहा —"काला बच्चा जानकी देवी आप यहीं रुके। मेरा ख्याल है इस आलमारी के पीछे खड़ी हो जायें। आप फौरीतौर पर किसी की नजर में नहीं आ सकेंगी और यह अपने पास रख लें। मैं बॉस के साथ तहखाने में जाऊंगा।" उसने अपना खंजर जानकी की तरफ बढ़ा दिया।

जानकी ने काला बच्चा की तरफ देखा और फिर प्रसाद की तरफ देखते हुये बोली—"मेरे पास अपनी हिफाजत का सामान मौजूद है।" उसने अपने लिबास के अन्दर से एक छोटा आटोमैटिक पिस्तौल निकालकर दिखाया।

काला बच्चा चौंके बगैर न रह सका था। जानकी ने अभी तक उसे पिस्तौल के बारे में नहीं बताया था लेकिन बहरहाल जानकी उनसे पहले यहां आई थी और अपनी हिफाजत का बन्दोबस्त किए बगैर नहीं आ सकती थी।

प्रसाद ने मुस्कराकर काला बच्चा की तरफ देखा और सीढ़ियों पर उतरने लगा। काला बच्चा ने भी उसके पीछे ही सीढ़ी पर कदम रख दिया और अगली सीढ़ी उतरने के बाद एक बार पीछे मुड़कर देखा—जानकी पिस्तौल हाथ में लिए आलमारी के पीछे घुम गयी थी।

वह पन्द्रह सीढ़ियां थीं, जिनकी समाप्ति पर एक छोटा-सा हॉल था और तीन चार कमरे थे। एक तरफ एक चौड़ी राहदारी थी और उस राहदारी में भी आमने-सामने दो कमरे थे। हॉल में मद्धिम रोशनी हो रही थी।

वह दोनों तमाम कमरों के दरवाजों के की-होल्स में झांकते रहे। तमामतर कमरे अन्दर से अंधकारमय थे। एक दो दरवाजे के हैण्डिलों को आजमाकर भी देखा था, वह लॉक्ड थे। काला बच्चा ने प्रसाद की तरफ देखा। वह काला बच्चा की निगाहों का मतलब समझ गया, जो कुछ भी था राहदारी वाले कमरे में ही था। वह दबे कदमों चलते

हुए राहदारी में आ गये।

एक दरवाजे के की-होल में झांककर देखा। अन्दर रोशनी तो हो रही थी मगर किसी की मौजूदगी के आसार दिखाई नहीं दे रहे थे। अगर कोई था भी तो की-होल की रेंज में नहीं था। काला बच्चा ने प्रसाद को वहीं रुकने का इशारा किया और स्वयं सामने वाले दरवाजे की तरफ आकर्षित हो गया। दरवाजा थोड़ा-सा खुला हुआ था मगर काला बच्चा सावधानी वश की-होल में झांकने लगा। की-होल से आंख लगाते ही वह चौंक गया।

इस कमरे में तीन आदमी थे। दो तो सामने नजर आ रहे थे और तीसरा जरा साइड में कुर्सी पर बैठा हुआ था। उसकी सिर्फ टांगें नजर आ रही थीं।

सामने जो दो आदमी नजर आ रहे थे, उनमें से एक स्वामी रघुनाथ था। कमरे में दूसरा आदमी दारा था, जिसके सामने एक रंगीन टेलीविजन सेट रखा हुआ था और वह किसी डिवाइस को हरकत दे रहा था, जिससे स्क्रीन का मंजर हर लम्हें तब्दील हो रहा था।

काला बच्चा को समझने में देर नहीं लगी कि यहां शार्ट सर्किट टी.वी. सिस्टम फिक्स था और दारा उस डिवाइस के जरिए बाहर लगे हुए किसी कैमरे को ऑपरेट कर रहा था। टीवी. स्क्रीन पर बाहर के शेड और उसके आसपास का मंजर था, जो हर पल तब्दील हो रहा था एक स्पॉट लाइट-सी थी जो हरकत में महसूस हो रही थी। बाहर यद्यपि अंधकार था लेकिन टी.वी. स्क्रीन पर हर दृश्य रोशन नजर आ रहा था, जिसका मतलब था कि कैमरे में इन्फ्रा रेड किरणों वाले लेन्स लगे हुए थे जो अंधकार में भी देखने की क्षमता रखता थे और दारा उसी कैमरे को ऑपरेट करते हुए बाहर का दृश्य देख रहा था।

बाहर खासी अफरा-तफरी फैली हुई थी। दारा के पांच छः मुर्गे बदस्तूर लोगों के सिरों से कन्टोप खींच रहे थे। एक जगह कुछ हाथापाई का भी दृश्य दिखाई दिया था।

''हैरत है, वह लोग कहां गायब हो गये।'' दारा कुर्सी पर बैठे हुए शख्स की तरफ देखकर बड़बड़ाया। उसकी आवाज बहुत हल्की थी।

''वह बाहर तो जा नहीं सकते।'' उस शख्स की आवाज सुनाई दी—''इस चार दीवारी के अन्दर इस वक्त साढ़े तीन चार सौ लोग मौजूद हैं इस तरह उन सबको चैक करना इतना आसान नहीं, एक तरीका हो सकता है कि रघुनाथ आज का सेशन खत्म होने का ऐलान

कर दे और फिर बाहर जाते हुए उन सबको चैक किया जा सकता है।"

"हां, मेरा ख्याल है यही करना पड़ेगा।" दारा ने कहा—"रघुनाथ को सेशन खत्म करने का ऐलान करना ही पड़ेगा।"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता।" रघुनाथ ने जवाब दिया—"तुम्हारे आदमियों ने पहले ही बहुत गैंड़बड़ फैला दी है। अगर ऐसा होता रहा तो कोई भी यहां नहीं आयेगा। अपने आदमियों से कहो कि यह तमाशा अब खत्म कर दें। यहां ऐसे लोग भी आते हैं जो समाज में बहुत सम्मानित मुकाम रखते हैं। उन्हें इस तरह दूसरों के सामने बेनकाब किया जा रहा है। अगर वह लोग हात्थे से उखड़ गये तो उन्हें संभालना मुश्किल हो जायेगा।"

"मुझे इसकी परवाह नहीं कि किसके साथ क्या हो रहा है?" दारा के कंठ से गुर्राहट-सी निकली—"मुझे वह लड़का चाहिए हर सूरत में। अगर वह आज इस चार-दीवारी से बाहर निकल गया तो मैं उसकी नजरों में जलील हो जाऊंगा।"

"वह तो तुम हो ही।" रघुनाथ ने जवाब दिया—"वह यहां से बचकर नहीं जायेगा। मैं कोई तरीका सोचता हूं। पहले तुम अपने आदमियों से कहो कि यह तमाशा बन्द करें।"

दारा ने भी जवाब में कुछ कहा था, जिसे काला नहीं सुन सका क्योंकि ठीक उसी लम्हें दूसरे कमरे का दरवाजा खुल गया था। काला बच्चा ने तेजी से घूमकर देखा। प्रसाद एक लम्बे-तड़ंगे आदमी को गिरफ्त में लेने की कोशिश कर रहा था। धींगा-मुश्ती की आवाजें शायद दारा वाले कमरे में भी सुन ली गयी थी।

"कौन है बाहर—क्या हो रहा है?" दारा की चीखती हुई आवाज सुनाई दी।

काला बच्चा ने झुककर की-होल से आंख लगा दी। दारा दरवाजे की तरफ बढ़ रहा था। काला बच्चा एकदम सीधा हो गया और बड़ी फुर्ती से बाहर से दरवाजे का कुण्डा लगा दिया। अन्दर से पहले तो दरवाजा खोलने की कोशिश की गयी और फिर दरवाजा जोर-जोर से धड़धड़ाया जाने लगा। उसके साथ ही दारा के चीखने की आवाज सुनाई दे रही थी।

"दरवाजा खोलो—कौन हो तुम? मैं तुम्हें ऐसी सजा दूंगा कि जिन्दगी भर याद रखोगे। खोल दो दरवाजा...मैं कहता हूं।"

"मिस्टर दारा।" काला बच्चा ने दरवाजे पर हाथ मारते हुए चिल्लाकर कहा—"मुझे सजा देने की हसरत कभी पूरी नहीं होगी—मैं

तुम्हें यह बताना चाहता था कि पाताल तक तुम्हारा पीछा कर सकता हूं। मैं चाहूं तो इस आश्रम को आग लगाकर तुम्हें राख कर सकता हूं लेकिन इस तरह बहुत से बेगुनाह भी मारे जायेंगे। मैं जा रहा हूं और मुझे उम्मीद है कि बहुत जल्द हमारा वन टू वन मुकाबला होगा और मैं तुम्हारा हिसाब बराबर कर दूंगा।"

हरामजादे! मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगा।" अन्दर से दारा की दहाड़ सुनाई दी।

प्रसाद उस आदमी को बुरी तरह रगड़ रहा था लेकिन फिर देखते ही देखते वह आदमी प्रसाद पर हावी हो गया। प्रसाद जमीन पर था और वह शख्स उसके सीने पर सवार था। उसका हाथ बुलन्द होते देखा तो काला बच्चा कांप उठा। इससे पहले कि वह खंजर का वार प्रसाद के सीने पर करता काला बच्चा का खंजर उसकी पुश्त में पैवस्त हो गया। उस शख्स के मुंह से एक खौफनाक चीख निकल गयी। काला बच्चा ने खंजर एक झटके से खींच लिया। प्रसाद ने उसे धक्का देकर एक तरफ गिराया और फुर्ती से उठ गया। उसने जमीन पर पड़ा हुआ खंजर उठाया और उस शख्स के सीने में पैवस्त कर दिया। उसके मुंह से एक और भयानक चीख निकली।

दूसरे कमरे से दारा के दहाड़ने की आवाज अब भी सुनाई दे रही थी फिर एक और आवाज सुनाई दी।

"दूसरा दरवाजा...।" यह रघुनाथ स्वामी की आवाज थी—"अन्दर वाला दरवाजा खोलो और माइक सिस्टम से अपने आदमियों को अलर्ट कर दो, जल्दी करो।"

यद्यपि कमरे के दरवाजे को काला बच्चा ने बाहर से लॉक कर दिया था तब भी स्वामी रघुनाथ इतनी तेज आवाज में निर्देश दे रहा था कि काला बच्चा उसे आसानी से सुन रहा था।

"प्रसाद!" काला बच्चा उसकी तरफ देखकर चीखा—"भागो! वह बाहर आने के लिए कोई और रास्ता इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्होंने अगर माइक सिस्टम पर अपने आदमियों को अलर्ट कर दिया तो हमारे लिए यहां से निकलना मुश्किल हो जायेगा।"

प्रसाद ने उस शख्स के सीने से अपना खंजर खींच लिया और हाल की तरफ दौड़ा। उस छोटी-सी राहदारी से निकलकर वह हॉल में पहुंचे ही थे कि ऊपर से एक जनाना चीख की आवाज सुनाई दी और उसके फौरन बाद ही एक फायर हुआ। यह पिस्तौल या रिवॉल्वर के फायर की आवाज थी। काला बच्चा के जहन में जानकी देवी का ख्याल आया और वह प्रसाद से पहले तेजी से दौड़ता हुआ ऊपर

जाने वाली सीढ़ियों पर पहुंच गया। प्रसाद भी उसके पीछे-पीछे आ रहा था। फिर वह दोनों ही तहखाने से बाहर आ गये।

ऊपर का मंजर देखकर काला बच्चा के होश उड़ गये। जानकी देवी एक आदमी से गुत्थम गुत्था थी। जानकी का पिस्तौल कमोड के करीब पड़ा हुआ था और वह आदमी जानकी को फर्श पर रगड़ रहा था। काला बच्चा को परिस्थिति का अनुमान लगाने में दुश्वारी पेश नहीं आई। वह जब तहखाने में उतरे थे तो जानकी देवी उस आलमारी के पीछे छिप गयी थी, जिसमें कपड़े वगैरह टंगे हुए थे। इस दौरान यह आदमी इस तरफ आ गया था। हो सकता है उस शख्स ने जानकी को देख लिया हो या जानकी ने उसे रोकने की कोशिश की हो। उस शख्स ने जानकी को पकड़ने की कोशिश की होगी और इस दौरान में गोली चल गयी लेकिन नतीजा उनके सामने था। पिस्तौल दूर पड़ा था और वह शख्स जानकी को रगड़ रहा था। उस शख्स के मुकाबले में कमजोर होने के बावजूद जानकी देवी भरपूर अन्दाज में प्रतिरोध कर रही थी।

काला बच्चा ने बड़ी तेजी से आगे बढ़कर उस शख्स के सिर पर जोरदार ठोकर रसीद कर दी। वह शख्स बिलबिला उठा। उसकी गिरफ्त ढीली होते ही जानकी देवी अपने आपको छोड़कर खड़ी हो गयी। सबसे पहले वह पिस्तौल की तरफ झपटी थी। प्रसाद भी तेजी से हरकत में आ गया था। उसने उस शख्स पर ठोकरों की बारिश कर दी। वह शख्स उठने की कोशिश कर रहा था। काला बच्चा ने आगे बढ़कर उसे जोरदार ठोकर मार दी। वह चीखता हुआ लड़खड़ाकर कमोड पर गिरा और उस वक्त पहली मर्तबा काला बच्चा ने देखा कि उसके बायें बाजू से खून बह रहा है।

प्रसाद ने झुककर उस शख्स को दोनों हाथों पर उठा लिया। उसी लम्हे तहखाने से दारा की आवाज सुनाई दी। वह चीख-चीख कर किसी से कुछ कह रहा था और फिर सीढ़ियों पर दौड़ते कदमों की आवाजें सुनाई देने लगीं।

"प्रसाद! जल्दी करो वह ऊपर आ रहे हैं।" काला ने चीखकर कहा।

प्रसाद ने उस शख्स को सिर के ऊपर से घुमाकर तहखाने की सीढ़ियों पर फेंक दिया। दारा एक और आदमी के साथ सीढ़ियों पर आ रहा था। वह शख्स उनके ऊपर गिरा। वह दोनों चीख उठे और सीढ़ियों पर लुढ़कते हुए नीचे चले गये।

"भागो इस तरफ...।" काला बच्चा ने चीखकर कहा और

जानकी देवी का हाथ पकड़ लिया।

बाथरूम से बाहर निकलते हुए प्रसाद ने दरवाजा धड़ से बन्द कर दिया। बेडरूम से निकलते हुए जानकी देवी रास्ते में पड़ी हुई एक कुर्सी से टकराई और उसके मुंह से हल्की-सी चीख निकल गयी।

बाहर आकर काला बच्चा ने बेडरूम का दरवाजा भी बन्द कर दिया। काला बच्चा उस दरवाजे का कुण्डा लगाना चाहता था कि प्रसाद की चीख सुनाई दी।

"बॉस...बचो...।"

काला बच्चा बड़ी तेजी से नीचे झुक गया। कोई चीज झन्न से उसके सिर के ऊपर से गुजरकर दरवाजे में पैवस्त हो गयी। काला बच्चा ने संभलकर देखा तो सीने में सांस रुकता हुआ महसूस होने लगा। वह त्रिशूल था, जो सामने के दरवाजे से दाखिल होने वाले एक शख्स ने फेंका था और वह बाल-बाल बचा था।

वह दो आदमी थे। उनमें से एक के हाथ में खंजर था। वह तेजी से आगे लपक रहा था, लेकिन उसी लम्हें हालॅ की फिजां फायर की आवाज से गूंज उठी। जानकी देवी के पिस्तौल से निकली हुई गोली उस शख्स के सीने में पैवस्त हो गयी थी और वह चीखता हुआ वहीं ढेर हो गया था। दूसरा वह आदमी था, जिसने काला बच्चा पर त्रिशूल फेंका था। उसने भी अपने लिबास में से खंजर निकाल लिया था और चीखता हुआ उनकी तरफ दौड़ रहा था।

प्रसाद ने अपना रक्त सना खंजर उस पर फेंक मारा। काला बच्चा प्रसाद के निशाने की दाद दिए बगैर नहीं रह सका था। खंजर उस शख्स के हलक में आर पार हो गया था और वह चीखता हुआ वहीं ढेर हो गया था। प्रसाद ने दरवाजे में गड़ा हुआ त्रिशूल भी बाहर खींच लिया।

काला बच्चा समझ गया कि दारा ने माइक सिस्टम से अपने आदमियो को उनके बारे में आगाह कर दिया है और वह दो आदमी उनकी तलाश में ही अन्दर आये थे। उनमें से एक जानकी देवी के हाथों मारा गया था और दूसरा प्रसाद के हाथों, लेकिन यह दोनों दारा के गिरोह के आखरी आदमी नहीं थे। काला बच्चा जानता था कि चंद मिनट में ही उनकी फरारी के तमाम रास्ते ब्लाक कर दिए जायेंगे। गेट से तो फरारी का सवाल ही पैदा नहीं होता था। वहां से कोई भी शख्स उनकी नजरों में आये बगैर नहीं जा सकता था लेकिन इससे पहले कि आश्रम की इस इमारत को घेरे में ले लिया जाए उन्हें वहां से निकलकर कम्पाउण्ड में पहुंच जाना जरूरी था।

"इस तरफ जल्दी...।" जानकी देवी अकबी बरामदे वाले दरवाजे की तरफ संकेत करते हुए चीखी।

"वह तीनों उस तरफ दौड़े। शीशे का दरवाजा अन्दर से लॉक था। प्रसाद ने लॉक खोलने की जहमत करने के बजाए त्रिशूल की चोट से शीशा तोड़ दिया और वह तीनों बाहर आ गये। इस तरफ अभी कोई नहीं आया था लेकिन ठीक उस वक्त जब वह अकबी बरामदे से निकल रहे थे—सामने वाले दरवाजे से दो और आदमी अन्दर दाखिल हुए। उनमें से एक ने उन्हें देख लिया और फेफड़ों की पूरी शक्ति लगाकर चीख उठा।

"वह रहे पिछली तरफ...वह इस तरफ से भाग रहे हैं।"

वह दोनों दौड़ते हुए बरामदे की सीढ़ियों से उतरे और कम्पाउण्ड में उस तरफ दौड़ लगा दी जहां बहुत से लोग जमा थे। काला बच्चा का ख्याल था कि शेड या कम्पाउण्ड में दूसरे लोगों के बीच थोड़ी देर तक सुरक्षित रह सकते थे।

हर तरफ अफरा-तफरी मची हुई थी। साढ़े तीन-चार सौ लोग थे, जो दारा के आदमियों की हरकतों से बौखलाये हुए थे। एक दो जगहों पर तो लोगों में हाथापाई भी हो रही थी।

काला बच्चा ने अभी तक जानकी का हाथ थाम रखा था। उसके दूसरे हाथ में पिस्तौल था जबकि काला बच्चा के एक हाथ में रक्त सना खंजर था और प्रसाद त्रिशूल उठाये हुए था। वह लोगों को धक्के देते हुए आगे घुसे जा रहे थे। विभिन्न जगहों पर लगे हुए स्पीकर्स में रह-रह कर एक आवाज सुनाई दे रही थी—

"शान्त हो जाओ बालकों...शान्त हो जाओ। कुछ अपराधी हमारे आश्रम में घुस आये हैं, उनकी वजह से यह सारी गड़बड़ हो रही है। उनकी तलाश जारी है। यह सब कुछ तुम लोगों की सुरक्षा के लिए किया जा रहा है। वह जल्द ही पकड़े जायेंगे।"

यह स्वामी रघुनाथ की आवाज थी, जो लोगों को पुरसकून रहने की हिदायत दे रहा था, लेकिन लोग ऐसी ज्यादती बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं थे कि उन्हें दूसरों के सामने बेनकाब किया जाए वह इज्जतदार लोग थे, उनका सम्बन्ध सम्मानित घरानों से था। वह रात के अंधेरे में मुंह छुपाकर अपनी प्यास बुझाने के लिए वहां आते थे और यह कैसे बर्दाश्त कर सकते थे कि उन्हें दूसरों के सामने बेनकाब किया जाए। अचानक ही काला बच्चा के जहन में एक और ख्याल उभरा, यहां से निकलना प्रत्यक्ष में कठिन नजर आ रहा था लेकिन परिस्थिति का लाभ उठाया जा सकता था।

यह ख्याल आते ही वह एक ऊंची जगह पर खड़ा हो गया और चीख-चीख कर बोलने लगा।

"लोगो सुनो! स्वामी रघुनाथ बहुत बड़ा फ्राड है। वह तुम सबके साथ धोखा कर रहा है। राजदारी की कीमत लेकर वह तुम सबको दूसरों के सामने बेनकाब कर रहा है। तुम लोगों को दूसरों के सामने जलील व रुसवा कर रहा है और इसकी वीडियो रिकार्डिंग भी हो रही है। वह इसका खूब फायदा उठायेगा। तुम लोगों को ब्लैकमेल किया जा रहा है। अगर तुम लोगों ने इस ज्यादती का विरोध नहीं किया तो स्वामी रघुनाथ तुम लोगों को कहीं मुंह दिखाने के काबिल नहीं छोड़ेगा। तुम लोग पैसा खर्च करके अपनी प्यास बुझाने और सुकून की तलाश में यहां आते हो, लेकिन अपने साथ यह ज्यादती कैसे बर्दाश्त कर रहे हो तुम लोग?" वह मिली-जुली अंग्रेजी और थाई भाषा में चीख-चीख कर लोगों को रघुनाथ के खिलाफ उकसा रहा था। प्रसाद के ख्याल में वह पूरी तरह अपना उद्देश्य प्रकट नहीं कर पा रहा था इसलिए यह जिम्मेदारी प्रसाद ने संभाल ली और काला बच्चा की जगह खड़े होकर थाई भाषा में चीखने लगा। उसके मुंह से गालियां भी निकल रही थीं।

"यही है वह अपराधी।" स्पीकरों पर स्वामी रघुनाथ की चीखती हुई आवाज सुनाई दी—"इन्हीं के आदमी तुम लोगों के चेहरे बेनकाब कर रहे हैं। इन्होंने हमारे तीन सेवकों की हत्या कर दी है। यह हत्यारे हैं। पकड़ लो इन्हें—जाने न पायें।"

और फिर उसी लम्हें फिजां तड़तड़ाहट की आवाज से गूंज उठी। दारा के किसी आदमी ने ऑटोमेटिक रायफल से फायरिंग की थी। कई गोलियां उनके सिरों के ऊपर से गुजर गयीं। उन्होंने फायरिंग शायद उन्हें खौफजदा करने के लिए की थी लेकिन सूरते हाल बिगड़ गयी। फायरिंग से वहां भगदड़ मच गयी।

उनके आस-पास मौजूद कुछ लोगों ने उन्हें भी पकड़ने की कोशिश की थी लेकिन वह परिस्थिति का अनुमान लगा चुके थे। काला बच्चा ने जानकी देवी का हाथ पकड़कर एक तरफ छलांग लगा दी। प्रसाद भी झुकाई देकर एक तरफ खिसक गया, जो लोग उन्हें पकड़ना चाहते थे आपस में गुत्थम-गुत्था हो गये।

स्वामी रघुनाथ बार-बार अपराधियों के बारे में ऐलान कर रहा था, लेकिन प्रसाद की बातें भी काम कर गयी थीं और फिर फायरिंग ने उनके सब्र का पैमाना छलका दिया। उन्होंने उन लोगों को पकड़ लिया जो उनके चेहरे से कन्टोप नोंच रहे थे।

ऐसे अवसर पर होता यह है कि असल आदमी तो हाथ नहीं आते, लोग आपस में ही उलझ पड़ते हैं। उन्हें यह एहसास नहीं रहता कि कौन दोस्त है और कौन दुश्मन। उस वक्त भी यही सब कुछ हो रहा था। लोग आपस में उलझ रहे थे। एक-दूसरे पर गिर-पड़ रहे थे और अब लोग एक-दूसरे को देखते हुए वहां से निकलने की कोशिश कर रहे थे। ज्यादातर लोगों का रुख गेट की तरफ था। कुछ लोग टीलों और झाड़ियों की तरफ भाग रहे थे। शायद वह दीवार कूदकर बाहर जाना चाहते थे।

"इस तरफ बॉस।" प्रसाद ने चीखकर कहा—"गेट से निकलना सम्भव नहीं। दीवार कूदकर ही जाना पड़ेगा।" और फिर वह झाड़ियों की तरफ दौड़ने लगे। दीवार खासी ऊंची थी और चढ़ना आसान नहीं था। वह दीवार के साथ-साथ दौड़ते रहे और फिर एक जगह रुक गये। वहां दीवार का ऊपर का कुछ हिस्सा टूटा हुआ था। प्रसाद दीवार के साथ टेक लगाकर खड़ा हो गया और दोनों हाथों की उंगलियां आपस में फंसा लीं। पहले जानकी उसके हाथों पर खड़ी होकर दीवार पर चढ़ी और फिर काला बच्चा दीवार पर पहुंच गया। जानकी दूसरी तरफ छलांग लगा चुकी थी। काला बच्चा प्रसाद का हाथ पकड़कर उसे ऊपर खींच रहा था कि वह तेज रोशनी में नहा गये। आश्रम की इमारत पर लगी हुई सर्चलाइटें रोशन हो गयीं।

और फिर ठीक उसी वक्त फिजा गोलियों की तड़तड़ाहट से गूंज उठी। उन लोगों ने उन्हें देख लिया था लेकिन यह उनकी खुश किस्मती थी कि वह गोलियों की जद में नहीं आये। गोलियां काला बच्चा के सिर के ऊपर से गुजर गयी थीं लेकिन यह जरूरी नहीं था कि वह दूसरी बाढ़ से सुरक्षित रहते, काला बच्चा पूरी शक्ति से प्रसाद को ऊपर खींचने लगा।

बॉस! मुझे छोड़ दो। तुम दीवार के पास से कूदकर गाड़ी के पास पहुंच जाओ। मैं किसी और तरफ से आने की कोशिश करता हूं।"

"नहीं पैर दीवार पर जमाकर ऊपर चढ़ने की कोशिश करो।" काला ने कहा।

प्रसाद ने दोनों पैर दीवार पर जमा दिए और काला बच्चा ने उसे पूरी शक्ति से ऊपर खींच लिया। उसी लम्हें एक और बाढ़ मारी गयी। इस मर्तबा गोलियां दीवार के उस हिस्से पर लगीं, जहां चंद सेकिन्ड पहले प्रसाद लटका हुआ था। वह जैसे ही दीवार पर पहुंचा उन्होंने दूसरी तरफ छलांग लगा दी और उसके साथ ही प्रसाद के

मुंह से हल्की-सी चीख निकल गयी।

बाहर से दीवार लगभग पन्द्रह फुट ऊंची थी। जमीन भी समतल नहीं थी और अंधकार में यह अन्दाजा लगाना दुश्वार था कि नी· क्या है? प्रसाद का पैर एक पत्थर पर पड़कर मुड़ गया था जिससे उसके मुंह से चीख निकल गयी थी। काला बच्चा भी नीचे गिरकर असमतल जमीन पर लुढ़कता चला गया।

जानकी चंद फुट दूर दीवार के साथ लगी खड़ी थी। वह तेज़ी से काला बच्चा की तरफ दौड़ी। काला बच्चा उसके चीखने से पह ही उठ खड़ा हुआ। उसने मुड़कर प्रसाद की तरफ देखा। वह उ जगह पड़ा कराह रहा था। काला बच्चा दौड़कर उसके समीप पहु गया।

"क्या हुआ प्रसाद?" उसने पूछा।

"मेरे पैर में मोच आ गयी है बॉस।" प्रसाद ने कहा—"म खड़ा नहीं हुआ जा रहा।"

काला बच्चा और जानकी ने उसे सहारा देकर उठाया। प्रस के बायें टखने पर मोच आ गयी थी और उससे पैर जमीन पर · रखा जा रहा था। काला बच्चा को यह भी डर था कि अगर दा का कोई गन मैन दीवार पर चढ़ गया तो वह तीनों बड़ी आस' से उसकी गोलियों का निशाना बन जायेंगे। वह जगह चटियल जैसी थी और छिपने की भी कोई जगह नहीं थी। काला और जान प्रसाद को बाहों से पकड़कर घसीटते रहे। आश्रम के गेट के आस-प भी हंगामें की वैसी स्थिति थी। लोगों ने गेट को तोड़ दिया था अ सड़क के दूसरी तरफ मैदान में दौड़ रहे थे, जहां अनगिनत गाड़ि खड़ी थीं। वह प्रसाद को घसीटते हुए उस मैदान में आ गये।

जब वह वहां आये थे तो पन्द्रह बीस गाड़ियां नजर आई लेकिन अब वहां अनगिनत गाड़ियां नजर आ रही थीं और उन गाड़ी उनमें कहीं फंस गयी थी। बदहवास लोग अपनी-अपनी गा· की तलाश में इधर-उधर भागे फिर रहे थे। कुछ लोग अपनी गा तक पहुंच गये थे और इन्जिन स्टार्ट करके आगे बढ़ने का र ढूंढ रहे थे।

"बॉस।" प्रसाद ने इधर-उधर देखते हुए कहा—"अपनी ग· तलाश करना मुश्किल है। कोई और गाड़ी पकड़ लें।"

"वह गाड़ी महाराज ने दी थी। अगर यहां छोड़ दी गयी गड़बड़ हो जायेगी।" काला बच्चा ने जवाब दिया।

"तो ठीक है चलो—मेरा ख्याल है हमने गाड़ी इस तरफ ·

की थी। उस वैगन के पास... ।" प्रसाद ने एक तरफ संकेत किया।

काला और जानकी उसे सहारा देकर घसीटते हुए उस सफेद वैगन के पास पहुंच गये। उस वैगन के साथ ही उनकी गाड़ी खड़ी थी लेकिन उसका अगला एक टायर फ्लैट हो रहा था।

"शिश।" काला बच्चा ने गुस्से में गाड़ी पर हाथ मारा।

"अब तो कोई और गाडी ढूंढो बॉस।" प्रसाद ने कहा और गाड़ी के साथ टेक लगाकर इधर-उधर देखने लगा—"बॉस! वह देखो...वह अकेली औरत है, जो उस गाड़ी में बैठ रही है।" उसने एक तरफ संकेत किया।

दायीं तरफ सफेद रंग की वह चौथी गाड़ी थी। एक औरत दरवाजे पर झुकी हुई थी। अब प्रसाद के मशवरे पर अमल करने के सिवा कोई चारा नहीं था। काला बच्चा ने जानकी देवी को संकेत किया, वह नपे-तुले कदम उठाती हुई उस कार के करीब पहुंच गयी और फिर सिर्फ एक मिनट बाद उसने काला बच्चा को संकेत कर दिया।

काला बच्चा प्रसाद को सहारा देकर चलता हुआ उनके समीप पहुंच गया। जानकी देवी ने उस औरत को गन प्वाइन्ट पर रखा हुआ था।

"यह शरीफ औरत हमें अपनी गाड़ी में लिफ्ट देने को तैयार है। तुम लोग पीछे बैठ जाओ।" जानकी देवी ने मुस्कराते हुए कहा।

गेट की तरफ से आने वाली मद्धिम-सी रोशनी में उस औरत के चेहरे पर खौफ के भाव साफ नजर आ रहे थे। एक तो आश्रम के हंगामे ने उसे भयभीत कर दिया था और उससे बड़ा सितम यह कि जानकी देवी ने पिस्तौल उसके पहलु से लगा रखा था।

उस औरत की उम्र तीस-बत्तीस साल रही होगी। वह स्कर्ट और स्लीवलेस ब्लाउज पहने हुए थी, बाल उलझे हुए थे। चेहरे का मेकअप भी बिगड़ा हुआ था। उसका लिबास और फिर यह गाड़ी देखकर अन्दाजा लगाया जा सकता था कि उसका सम्बन्ध किसी अच्छे घराने से था।

काला बच्चा ने पिछली सीट का दरवाजा खोलकर पहले प्रसाद को अन्दर बैठने में मदद दी और फिर खुद भी बैठ गया। जानकी ने उस औरत को इशारा किया। वह ड्राइविंग साइड का दरवाजा खोलकर स्टेयरिंग के सामने बैठ गयी। जानकी देवी ने पैसेन्जर सीट संभाल ली थी।

"तुम्हें डरने की जरूरत नहीं।" जानकी देवी ने उसकी तरफ

देखते हुए कहा–''हमारी गाड़ी खराब हो गयी है और हम भी तुम्हारी तरह इस जहन्नुम से निकलकर शहर पहुंचना चाहते हैं। तुम्हें हमसे कोई खतरा नहीं है लेकिन...।'' अपने अर्थपूर्ण अन्दाज में वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

''नहीं, मैं कोई गड़बड़ नहीं करूंगी डॉक्टर जानकी।'' उस औरत ने कहा।

उस औरत के मुंह से जानकी का नाम सुनकर न सिर्फ जानकी बल्कि काला बच्चा भी उछल पड़ा।

''त...तुम मुझे जानती हो?'' जनकी किसी कदर बदहवास हो गयी।

''तुम इस शहर की एक व्यस्त फिजीशिसन और सर्जन हो।'' उस औरत ने जवाब दिया। अब उसके चेहरे से डर के भाव भी समाप्त हो गये थे–''आधे से ज्यादा शहर तुम्हें जानता है...लेकिन मुझे तुम्हें यहां देखकर हैरत हो रही है।''

''हम इस मकसद से नहीं आये थे, जो तुम समझ रही हो।'' जानकी देवी ने कहा–''गाड़ी आगे बढ़ाओ, कुछ आगे वाली गाड़ी निकल रही है।''

वह औरत इंजिन स्टार्ट कर चुकी थी। उससे आगे एक गाड़ी बाहर निकल रही थी। उसने भी अपनी गाड़ी उसके पीछे लगा दी। काला बच्चा को यह अन्देशा था कि दारा के आदमी आश्रम से बाहर न आ जायें। उन्होंने उन्हें दीवार से कूदते देख लिया था। यों तो बहुत से लोग दीवार से कूदकर बाहर आये थे। यहां दारा के सिवा काला बच्चा को चेहरे से कोई नहीं पहचानता था लेकिन ऐन मुमकिन है वह बाहर आकर उन्हें तलाश करने की कोशिश करें और उनके साथ दारा भी हो ऐसी सूरत में उनके लिए कठिनाइयां पैदा हो सकती थीं।

बात अगर लोगों के चेहरों से कन्टोप उतारने तक सीमित रहती तो इतनी गड़बड़ न होती लेकिन फायरिंग से परिस्थिति बिगड़ गयी थी और लोग बदहवास होकर दौड़े थे।

सड़क पर भी गाड़ियां बेतरतीबी से एक-दूसरे से आगे निकलने की कोशिश कर रही थीं। उनकी गाड़ी अभी सड़क पर नहीं पहुंच पाई थी। काला बच्चा गेट की तरफ देख रहा था जो टूट चुका था और लोग अब भी हज्जुमदर हज्जुम एक-दूसरे को देखते हुए बाहर निकल रहे थे और फिर अचानक गेट के दूसरी तरफ आश्रम की इमारत में एक जगह धुवां उठते देखकर काला बच्चा चौंक गया।

"गाड़ी जल्दी निकालो। अब यहां एक और हंगामा शुरू होने वाला है।" जानकी ने उस औरत की तरफ देखते हुए कहा। उसने भी आश्रम की इमारत से धुवां उठते देख लिया था और कदाचित् कुछ देर बाद पेश आने वाले सूरतेहाल का कुछ अन्दाजा भी लगा लिया था।

धुंवा सिर्फ उन्होंने ही नहीं और भी बहुत से लोगों ने देखा था। अन्दर से अब शोर की आवाजें भी सुनाई देने लगी थीं। किसी दिलजले ने आश्रम की इमारत को आग लगा दी थी। धुवें के साथ अब शोले भी बुलन्द होने लगे थे।

ड्राइविंग सीट पर बैठी हुई औरत अब खासी बदहवास हो रही थी। सड़क पर आकर उसने तीन मर्तबा अपनी गाड़ी दूसरी गाड़ियों से टकराई थी। हंगामा बढ़ गया था और लोग अब जल्दी से जल्दी वहां से दूर निकल जाना चाहते थे।

कम्पाउण्ड के अन्दर से एक बार फिर फायरिंग की आवाजें सुनाई दीं। उसके साथ कुछ चीखें भी गूंजी थीं। यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता था कि स्ट्रेट फायरिंग की गयी थी या हवाई लेकिन बहरहाल इस फाायरिंग से लोग और अधिक बदहवास हो गये थे।

आश्रम की इमारत और बाहरी गेट के आसपास दीवारों पर सर्चलाइटें जल रही थीं–लेकिन फिर एकाएक अंधकार छा गया। इधर-उधर लहराती हुई गाड़ियों की हेडलाइट्स अजीब-सा दृश्य पेश कर रही थी। आश्रम की इमारत से उठने वाले शोले अब बुलन्द हो रहे थे। गेट के सामने सड़क पर गाड़ियां एक-दूसरे से टकरा रही थीं, लेकिन वह औरत बहरहाल हज्जुम से अपनी गाड़ी निकालने में कामयाब हो गयी और खुली जगह पर आते ही उसने एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया। कार बन्दूक से निकली हुई गोली की तरह सड़क पर दौड़ने लगी। उससे आगे भी कुछ गाड़ियां उसी रफ्तार से जा रही थीं। कदाचित् हर शख्स जल्द से जल्द उस इलाके से दूर निकल जाना चाहता था।

काला बच्चा पीछे मुड़कर आश्रम की इमारत से उठते हुए शोलों को देख रहा था। उस वक्त तक कदाचित पूरी इमारत आग की लपेट में आ चुकी थी और शहर के तमाम फायर स्टेशन मिलकर भी आश्रम को भस्म होने से नहीं बचा सकते थे और वैसे वक्त पर फायर ब्रिगेड का वहां तक पहुंचने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। आग लगने पर अगर शहर के किसी फायर ब्रिगेड स्टेशन को फोन पर सूचना दे भी दी गयी होगी तो फासला इतना अधिक था कि एक घण्टे स

पहले फायर ब्रिगेड की कोई गाड़ी वहां नहीं पहुंच सकती थी और जिस तरह से आग भड़क रही थी उससे यह अन्दाजा लगाना दुश्वार नहीं था कि इस एक घण्टे में पूरी इमारत मलबे का ढेर बन जायेगी।

काला बच्चा स्वामी रघुनाथ और दारा के बारे में सोचने लगा—उनका क्या अंजाम हुआ होगा। क्या वह भी आग में जलकर मर गये होंगे या बच गये होंगे। वैसे ज्यादा सम्भावना इस बात की थी कि उन्होंने अपने आपको बचा लिया होगा। दारा और उसके साथी तो उन्हें कम्पाउण्ड में तलाश करके फिर रहे थे—वह यकीनन बच गये होंगे—अलबत्ता स्वामी रघुनाथ तहखाने में था। उसके बारे में यकीन से कुछ कहना मुश्किल था।

अचानक प्रसाद के कराहने की आवाज सुनकर काला बच्चा चौंक गया। अपने ख्यालात में उलझकर काला बच्चा उसे तो भूल ही गया था और इस दौरान में कदाचित वह भी अपनी पीड़ा भुला बैठा था। जब वह इस हंगामे से दूर हो गये तो दर्द का एहसास प्रसाद को होने लगा और वह कराह उठा।

"क्या हुआ?" काला ने पूछा।

"बहुत तकलीफ हो रही है बॉस।" प्रसाद ने कराहते हुए जवाब दिया—"पैर सूज रहा है।"

काला बच्चा ने झुककर उसके पैर को टटोला और वह एक बार फिर कराह उठा। उसका पैर टखने के करीब से वाकई बहुत सूज गया था।

"थोड़ी देर तक तो तुम्हें यह तकलीफ बर्दाश्त करनी ही पड़ेगी।" जानकी देवी ने पीछे मुड़कर देखते हुए कहा—"अपने ठिकाने पर पहुंचने के बाद ही इसका कुछ इलाज होगा।"

प्रसाद ने सख्ती से दांत भींच लिए।

कार तेज रफ्तारी से चलती रही। उसी दौरान में पीछे से आने वाली दो कारें बड़ी तेज रफ्तारी से उन्हें ओवरटेक करते हुए आगे निकल गयीं। स्टेयरिंग पर बैठी हुई वह औरत भी बड़ी महाराना ड्राइविंग का सबूत दे रही थी, उसके साथ ही उसने जानकी देवी से बातें भी शुरू कर दी थीं। बातें क्या वह बस स्वामी रघुनाथ और उसके आदमियों को कह रही थी। जानकी देवी हूं हां में उसकी बातों का जवाब दे रही थी। बातों में उसने अपना नाम भी बता दिया था। यह हिप लेवंग थी।

शहर का पहला चौराहा अभी लगभग एक मील दूर था। उनकी कार लगभग सौ किलोमीटर की रफ्तार से दौड़ रही थी। पीछे से आने

वाली एक और तेज रफ्तार कार आगे निकलने के लिए उनके बराबर पहुंची तो उसके अन्दर पिछली सीट पर बैठे हुए आदमी को देखकर काला बच्चा चौंक गया। उसके दिल की धड़कनें एकदम से तेज हो गयी थीं। वह दारा था। उसका ड्राइवर और उसके साथ वाली दूसरी सीट पर बैठा हुआ आदमी शक्ल से ही गुण्डे लग रहे थे।

दारा ने पहले तो शायद ख्याल नहीं किया लेकिन उसकी कार जैसे ही कुछ आगे निकली तो उसने गर्दन घुमाकर उसकी तरफ देखा। इसके साथ ही वह चीखा—"वह हरामजादा इस कमरे में है रोको उसे।"

वह कार तेजी से आगे निकलकर उनकी कार के सामने आ गयी। काला बच्चा और प्रसाद ने दारा की आवाज सुन ली थी। प्रसाद सीट पर अधलेटा हो रहा था—वह एक झटके से सीधा हो गया।

"बॉस...वह...वह... ।"

"दारा है।" काला बच्चा ने कहा—"घबराओ नहीं, निबट लेंगे उनसे।"

जानकी देवी ने भी दारा को देख लिया था और हिप लेवंग ने भी परिस्थिति का अनुमान लगा लिया था। उसके चेहरे पर पीलाहट फैलने लगी थी।

दारा वाली कार उनके बिल्कुल सामने आ गयी थी और उसकी रफ्तार कम हो रही थी। हिव लेवंग ने अपनी कार को साइड से निकालना चाहा लेकिन अगली कार लहरा गयी और ब्रेक की तेज चरचराहट की आवाज के साथ रुक गयी। हिप लेवंग ने भी ब्रेक पैडल दबा दिया लेकिन कार रुकते-रुकते अगली कार से टकरा गयी थी।

"तुम यहीं बैठे रहो—अपनी जगह से हिलना मत।" काला बच्चा ने प्रसाद की तरफ देखकर कहा और दरवाजा खोलकर फुर्ती से नीचे उतर आया। दारा और उसके दोनों साथी भी अपनी कार से उतर आये थे।

"मुझे मालूम था कि तुम भागने में देर नहीं लगाओगे—इसलिए मैंने भी वहां रुककर वक्त जाया नहीं किया।" दारा काला बच्चा की तरफ बढ़ते हुए बोला—"मेरे साथ दुनिया के दो बेहतरीन स्ट्रीट फाइटर इस वक्त मौजूद हैं, जो स्नेक और मंकी फाइट में महारत रखते हैं। आज मैं देखूंगा कि तुम कितने कड़े स्ट्रीट फाइटर हो जो बैंकाक के गली-कूचों में तुम्हारे नाम का डंका बज रहा है पकड़ लो इसे।" उसने अपने गुर्गों को हुक्म दिया—"पहले मैं इसे खत्म करना

चाहता था मगर अब यह मुझे जिन्दा चाहिए, अगर ज्यादा हाथ पैर चलाये तो एक-आध हड्डी तोड़ देना। यह अब मेरे लिए बहुत कीमती हो गया है।"

"बस दो ही आदमी...।" काला बच्चा ने हंसते हुए कहा—"क्या तुम समझते हो कि यह मुझे काबू कर सकेंगे। दारा! मुझे भी तुम्हें जिन्दा ही पकड़ना है लेकिन उस वक्त जब तुम्हारी दौड़ खत्म हो चुकी होगी।"

"अब तुम कुछ नहीं कर सकोगे कुत्ते के पिल्ले—ये दोनों चैम्पियन स्ट्रीट फाइटर हैं, जिन्हें आज तक बैंकाक में कोई हरा नहीं सका।" दारा गुर्राया—

"अब देखना यह है कि कुत्ते की तरह ट्योव कौन करता है मैं या तुम।"

"अटेक...।" दारा के कहते ही दोनों फाइटर स्ट्रीट एक्शन में आ गये। स्ट्रीट फाइटर की विशेषता यह होती है कि वह तंग से तंग जगह में भी अपने प्रतिद्वंद्वी पर सटीक कारगर हमले करता है। वह दोनों बड़े सतर्क अन्दाज में आगे बढ़ रहे थे। उन्होंने दोमों हाथों की हथेलियां खोलकर आगे सीने के सामने क्रास की शक्ल में तान रखीं थीं। काला बच्चा देखते ही समझ गया कि वह कुंगफू के फाइटर हैं—और स्नेक या मंकी फाइट पर उनका ज्यादा रुझान होगा। हथियार के तौर पर मुमकिन था कि उनके लिबास में नानचाकू या खंजर मौजूद हों लेकिन अभी वह अपने आपको खाली हाथ दर्शा रहे थे।

काला बच्चा ने देनों कदम पुख्तगी के साथ जमीन पर जमा लिए थे। किसी भी क्षण वह जमीन को स्प्रिंग की शक्ल देकर उछल सकता था और सात-आठ फुट ऊपर जाकर समरसोल्ट ले सकता था। दोनों एक्र-एक कदम सावधानी से उठाते आगे बढ़ रहे थे। अचानक उनमें से एक हवा में उछला और उसके साथ ही काला बच्चा भी हवा में उछल पड़ा। काला बच्चा ने समर सोल्ट का इस्तेमाल करते ही बैक किक सॉट की आवाज के साथ घुमाई—यह प्रहार उसने हवा में उछले शख्स पर नहीं किया था बल्कि जमीन पर खड़ा शख्स उसका निशाना बना था लेकिन किकस् को हैडक्रास डिफेंस से बचा लिया गया और उछाल मारने वाला काला बच्चा की दूसरी साइड में चला गया, जिसने काला बच्चा पर हमला नहीं किया था बल्किं उसकी बैक साइड की पोजीशन पर उतर गया था और उसी क्षण दोनों ने एक साथ हमला कर दिया।

काला बच्चा रफ्तारी से जमीन पर लेट गया और उन दोनों

के हमले हवा में घूमकर रह गये, लेटते ही काला बच्चा ने स्लीप का इस्तेमाल किया और उसकी एक टांग दोनों में से एक की टांगों से जा टकराई—काला बच्चा ने दोनों हाथों पर अपने शरीर का बैलेंस बनाकर उछाल भरी और इस बार उसकी दोनों टांगें दूसरे प्रतिद्वंद्वी के सीने से जा टकराई वह उलटकर गिरा लेकिन तुरन्त ही संभलकर खड़ा हो गया।

दोनों कारें सड़क पर इस तरह तिरछी खड़ी थीं कि पीछे से आने वाली कारों के लिए आगे बढ़ने का रास्ता नहीं था। पीछे आने वाली कारों के ब्रेक चरमराने लगे और फिर हॉर्न बजने लगे, लेकिन सड़क पर दिलचस्प फाइट का नजारा देखकर लोग कारों से उतर गये और देखते ही देखते लोगों ने दावं लगाने शुरू कर दिए।

उनमें से एक बन्दर की तरह उछल-उछल कर वार कर रहा था जबकि दूसरे ने सांप की तरह हाथों को मोड़कर सांप का फन बनाकर फुंकारना शुरू कर दिया था।

"कोई बीच मे नहीं आयेगा।" दारा ने पिस्तौल निकालकर एक हवाई फायर कर डाला, लेकिन दारा का हाथ अभी पूरी तरह नीचे झुका भी नहीं था कि एक और फायर हुआ। कार में बैठी हुई जानकी देवी ने वह फायर किया था। गोली दारा के पिस्तौल वाले हाथ पर लगी। वह चीख-उछला। पिस्तौल उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरा। जानकी बड़ी फुर्ती से दरवाजा खोलकर नीचे उतर आई थी। दारा ने बहुत बड़ी गलती यह की थी कि काला बच्चा के साथियों को अनदेखा कर दिया था।

"अब अगर तुममें से किसी ने कोई हरकत की तो गोली मार दूंगी।" जानकी ने गुर्राते हुए कहा। दारा एक तरफ खड़ा था और वह दोनों फाइटर भी रुक गये थे—दारा ने अपने गुर्गों की तरफ देखा। जानकी के पिस्तौल का रुख उन्हीं दोनों की तरफ था, वह उन दोनों को ललकार रही थी। दारा ने इस मौके का फायदा उठाकर जानकी पर छलांग लगा दी।

जानकी ने गोली चलाई, मगर इस मर्तबा निशाना खता हो गया। दारा ने आगे बढ़कर बड़ी फुर्ती से उसके हाथ पर जोरदार ठोकर लगाई थी—पिस्तौल जानकी के हाथ से निकलकर दूर जा पड़ा। दारा ने उसे संभलने का मौका दिए बगैर गिरफ्त में ले लिया।

उसी वक्त दोनों फाइटर एक साथ काला पर हमलावर हुए थे—काला बच्चा तेजी के साथ पीछे हट गया, उन्होंने समझा वह डिफेंस पोजीशन के लिए पीछे हट रहा है—इसलिए वह और तेजी

से बढ़े लेकिन यह उनकी भूल थी—काला बच्चा ने उन्हें डिफेंस का झांसा देकर तेजी के साथ आगे कदम बढ़ाये और फिर फुर्ती के साथ नीचे बैठ गया और बायें पैर की एड़ी पर घूमते हुए लात चला दी। इस बार वार कारगर साबित हुआ। उनमें से एक तो पिंडली पर काला के पैर की ठोकर लगने से ढेर हो गया लेकिन दूसरा उछलकर ठीक वक्त पर वार बचा गया, लेकिन काला बच्चा ने मौका नहीं दिया। अपने आपको बायीं तरफ झुकाकर दोनों हथेलियां जमीन पर टिकाकर कलाबाजी खा गया और इस बार काला बच्चा के पैर की ठोकर उसके जबड़े पर पड़ी। वह कराहता हुआ लड़खड़ा कर पीछे गिरा।

काला बच्चा ने उठने में देर नहीं लगाई। पहला प्रतिद्वंद्वी उठकर हमला करने के लिए पर तौल रहा था। काला बच्चा ने उसका पंच रोकने की कोशिश की मगर कामयाब न हो सका। घूंसा वजनी हथौड़े की तरह काला के जबड़े पर लगा और उसका दिमाग झनझना गया था। वह लड़खड़ा गया। इससे पहले कि काला बच्चा संभलता दो और घूंसे उसके जबड़े पर लगे। उसका दांत हिल गया। मुंह में खून का जायका महसूस करके काला बच्चा ने अपने आपको संभाल लिया। काला ने उसका अगला वार रोक लिया। एक हाथ से उसकी कलाई को गिरफ्त में ले लिया और दूसरे हाथ से उसके उसी हाथ के कंधे पर खड़ी हथेली का वार किया। वह बिलबिला कर आगे झुका। काला ने उसकी ठोड़ी पर घुटने से जोरदार प्रहार किया तो वह बिलबिलाता हुआ सीधा हो गया। इसके साथ ही काला ने उसके जबड़े पर घूंसे रसीद करते हुए उसका बाजू छोड़ दिया। वह लड़खड़ाता हुआ अपने साथी पर जा गिरा, जो उठने की कोशिश कर रहा था।

"कम ऑन।" काला बच्चा ने स्टांस बदलते हुए दोनों हाथ आगे निकाल दिए। उसका अन्दाजा खुंदक दिलाने वाला था। उसने अपने मास्टर होचिन से एक बात सीखी थी—"लड़ो मगर अपना दिमाग ठण्डा रखो। प्रतिद्वंद्वी को गुस्सा दिलाओ और मौका पाकर अपना वार कर दो।" काला बच्चा उस वक्त यही पालिसी अपनाये हुए था। वह दोनों यद्यपि उससे कहीं ज्यादा ताकतवर थे और गरम दिमाग भी। काला ने अपना दिमाग ठण्डा रखा था, मगर वह खुन्दक में आ गये थे। वह दोनों उठकर काला की तरफ बढ़े। काला अब भी अपने हाथों को उसी तरह हरकत दे रहा था। वह जैसे ही करीब पहुंचे,काला बच्चा किसी ताकतवर स्प्रिंग की तरह अपनी जगह से उछला और अपने आपको कई फुट ऊपर तक उठाता चला गया और फिर नीचे आते हुए उसने दोनों टांगों को इस तरह झटका कि

उसकी दोनों किकें उन दोनों की खोपड़ियों पर लगीं। यह डबल किक उसे जंगल वाले कैम्प में मास्टर हांगसो ने सिखाई थी और इसके लिए उसे कई हफ्तों तक बड़ी मेहनत करनी पड़ी थी। वह अपनी जगह पर खड़े-खड़े आठ फुट सीधा ऊपर उठ सकता था।

वह दोनों बिलबिलाते हुए दायें-बायें गिरे थे। काला बच्चा जमीन पर पैर टिकाते ही संभल गया। काला बच्चा के इस वार पर बहुत से लोगों ने दाद दी, तालियां बजाई।

हिप लेवंग स्टेयरिंग पर सिर झुकाये बैठी थार-थार कांप रही थी और जानकी देवी को दारा ने दबोच रखा था। जानकी अपने आपको छुड़ाने के लिए पूरा संघर्ष कर रही थी। दारा ने उसे एक-दो कराटे हाथ भी मार दिए थे। उसके होठों से खून भी बह रहा था। काला बच्चा अब दारा की तरफ लपका लेकिन उन दोनों गुण्डों ने उठकर उसे दबोच लिया। अब वह बिल्कुल अनाड़ियों की तरह लड़ रहे थे।

उन दोनों गुण्डों ने काला को बुरी तरह जकड़ लिया था। कुंगफू और मार्शल आर्ट्स की फाइट में इस तरह की जकड़ ठण्डी नहीं होती। प्रतिद्वंद्वी एक-दूसरे को दूर से लात घूसों से ही स्पर्श करते हैं। काला समझ गया कि वह बौखला गये हैं। उसने अपने जिस्म को ढीला छोड़ दिया। वह समझे कि उसकी प्रतिरोधात्मक शक्ति जवाब दे चुकी है, लेकिन काला बच्चा न अपना जिस्म सिर्फ एक लम्हे के लिए ढीला छोड़ा था। उसने एक गहरा सांस लिया और अपनी पूरी शक्ति बाजुओं में समेट ली और जब उसने बाजुओं को झटका दिया तो वह दोनों उछलकर कई फुट दूर जा गिरे थे। काला बच्चा पुश्त के बल पड़ा था। उसने दोनों हाथ सिर के पीछे जमीन पर टिका लिए। पैरों को समेटकर अपने जिस्म को ब्रिज बनाया और एक झटके से सीधा होते हुए सामने की तरफ कलाबाजी खाई। इस मर्तबा उसके दोनों पैर उनके सीनों पर पड़े थे।

"शाबास बॉस! वैरी गुड...।" प्रसाद काला बच्चा को दाद देते हुए चीख रहा था और फिर जानकी देवी की चीख सुनकर वह उसकी तरफ आकर्षित हो गया।

और फिर काला बच्चा ने अपने आपके संभालते हुए देखा कि प्रसाद कार के खुले हुए दरवाजे से किसी परिन्दे की तरह उड़ा और दारा के ऊपर जा गिरा, जो जानकी को बालों से पकड़े उसके जिस्म पर ठोकरें बरसा रहा था।

प्रसाद दारा को साथ लेता हुआ जमीन पर ढेर हो गया। उस

वक्त उसने अपनी तकलीफ की भी परवाह नहीं की थी। वह भी दारा को बुरी तरह रगड़ रहा था लेकिन फिर दारा का दांव चल गया। वह अपने आपको छुड़ाकर फुर्ती से उठ खड़ा हुआ और प्रसाद पर ठोकरें बरसाने लगा। पैर की तकलीफ की वजह से प्रसाद उठने के योग्य नहीं था। वह जमीन पर पड़े-पड़े अपना बचाव कर रहा था।

और फिर कुछ लोगों को आगे बढ़ते देखकर दारा और उसके साथी गड़बड़ा गये। दारा ने उनका इरादा भांप लिया था। अभी तक तो वह सिर्फ तमाशाई थे, जो टू इन वन की फाइट का मजा ले रहे थे लेकिन अब उनमें से कुछ दो-दो हाथ करने के मूड में थे। वह परिस्थिति देखकर दारा ने दौड़ लगा दी। काला बच्चा उस वक्त एक फाइटर से भिड़ा हुआ था। उसका दूसरा साथी दारा को भागते देख भागने लगा तो प्रसाद ने उसकी टांग पर टांग फंसाकर उसे गिरा दिया। काला ने अपने प्रतिद्वंद्वी पर सिर की टक्कर मारी और वह उछलकर दूर जा गिरा। कुछ लोगों ने उसे दबोचने की कोशिश की और काला बच्चा उसे उनके रहमोकरम पर छोड़कर दारा के पीछे दौड़ पड़ा।

दारा ने अपने पीछे भागते काला बच्चा को देख लिया था। काला बच्चा के पीछे तीन आदमी और भाग रहे थे। उनमें से सबसे आगे वाले को काला ने पहचान लिया। वह कांग था। इसका मतलब महाराज के आदमी भी वहां पहुंच गये थे।

"आगे सीवान नदी का पुल था। दारा ने एक बार फिर मुड़कर देखा फिर पुल की साइड वॉल पर चढ़कर दरिया में छलांग लगा दी।

काला बच्चा दौड़ता हुआ वहां तक आया और फिर उसने भी आव देखा न ताव दारा के पीछे-पीछे दरिया में छलांग लगा दी। कांग अपने दो आदमियों के साथ पुल पर आकर रुक गया। नीचे एकदम अंधेरा था। कुछ भी नजर नहीं आ रहा था।

अब इसके सिवा वह कुछ नहीं कर सकते थे कि सुबह की रोशनी का इन्तजार करें और रोशनी के बाद ही पता चल सकता था कि दरिया में इस तरह कूदने से दारा और काला बच्चा का क्या हश्र हुआ था?

समाप्त

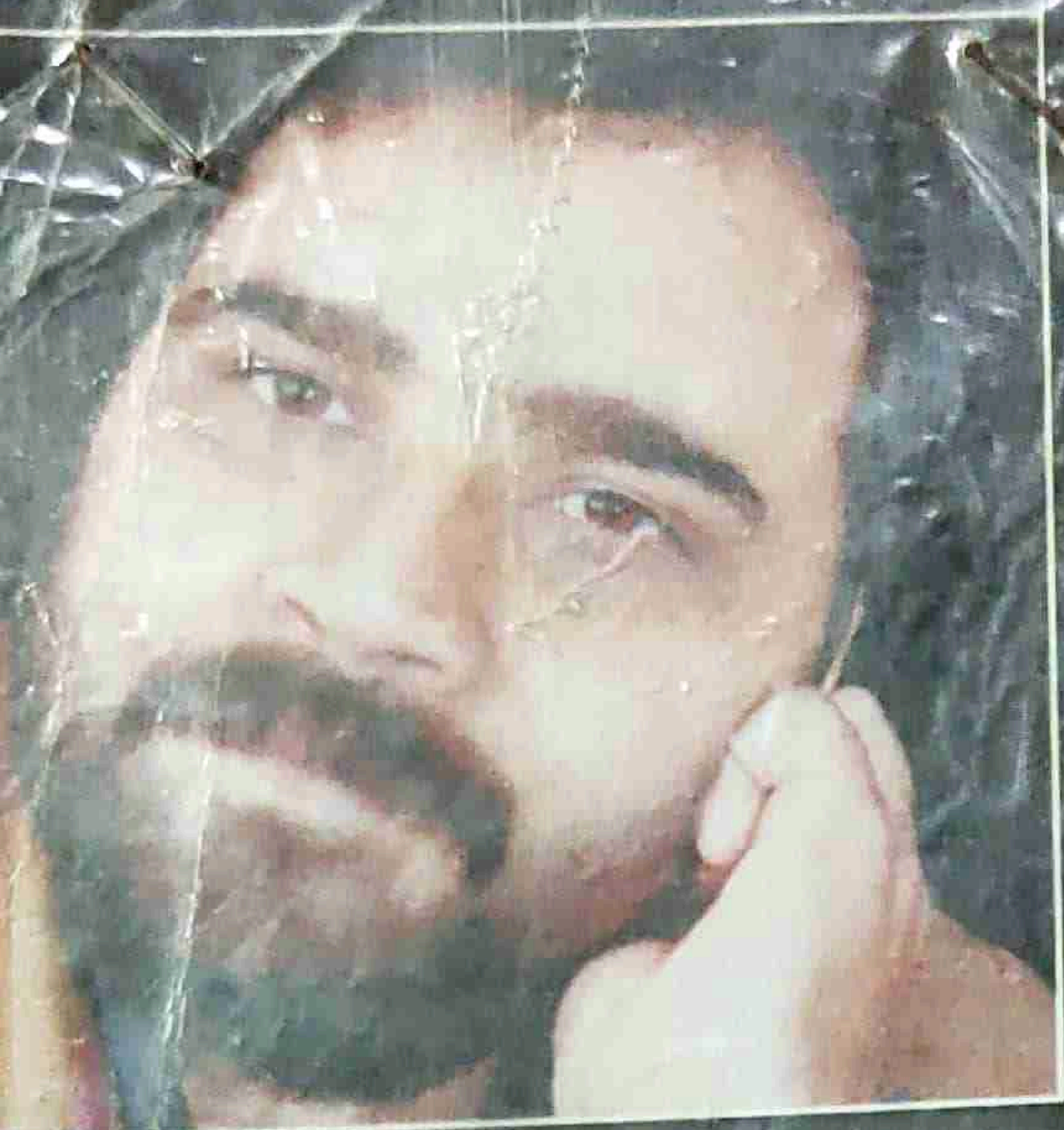

'देवा ठाकुर'
के नेम व असली
उपन्यास
नियमित रूप
से अब
'माया पॅकेट बुक्स'
से भी
प्रकाशित होंगे।

A.H.W. MAYA SERIES

मोटी डमी, अधिक पेज, आकर्षक गेटअप के साथ

आगामी सैट में पढ़िये
देवा ठाकुर का नया उपन्यास

शोरों की कहार

माया पॉकेट बुक्स

RAJ
COMICS
NOSTALGIA

For Comics Novels & Books Request

PLEASE JOIN
@comics4nostalgia
@pustaksangrahalaya